त्रिपुटी

श्री काकासाहब, श्री अप्पासाहब और श्री कमलनयन

[फोटो मॉडर्न फोटो स्टूडिओ, झाझीवार]

हमारे

अुस पारके पड़ोसी

लेखक
काका कालेलकर
अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

आगामी कलका महाखंड

[गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावनामें अुद्धृत]

पुस्तक लिखनेका आज तक मैंने कभी प्रयत्न नहीं किया, अिसलिअे अुसे लिखते समय कैसी अुत्तेजना, कैसा अुत्साह मालूम होता है, अिसका मुझे अनुभव नहीं है। लेकिन प्रस्तावना लिखनेके अिस प्रयत्नके कारण मुझे कितनी ही रातें जागकर काटनी पड़ी हैं!

* * *

मेरे लिअे तो यह अेक अनोखा मान है, अेक विशेष अधिकार है। साथ ही, मेरे लिअे यह अेक अद्वितीय अवसर भी है।

* *

अेक बार अफ्रीकाका परिचय हो जानेके बाद अिस खण्ड और अिसके लोगोंके बारेमें बात करनेका कोअी भी मौका हाथसे जाने ही नहीं दिया जा सकता। और समर्थनके लिअे काकासाहब पासमें हों और कहनेका मौका मिले, यह तो अेक बड़ा लाभ ही माना जायगा।

अफ्रीकाके कुछ भागमें काकासाहबके साथ प्रवास करनेका सौभाग्य मुझे मिला था — मैं अुन्हें सब जगह घुमाकर यह प्रदेश 'दिखानेका' प्रयत्न करता था! और जैसा कि हमेशा होता है, अिस सौदेमें अुलटा मुझे ही लाभ हुआ। अिस 'आगामी कलके खण्डकी' भूमि पर जिस मानव-समूहका विशाल नाटक खेला जा रहा है, अुसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म और गहरेसे गहरे रहस्योंको तेजीसे और अत्यन्त बुद्धिमत्तासे काकासाहबको आकलन करते देखकर मैं मन्त्रमुग्ध हो गया।

वहुत कम लोगोको अिस वातका पता होगा कि सहाराके दक्षिणमें और दक्षिण अफ्रीकाके अुत्तरमे स्थित अफ्रीका खडका प्रदेश युरोपसे लगभग तीन गुना वडा है और वहा अपार सम्पत्ति सुप्त अवस्थामे पडी हुअी है। वहुत थोडे लोग जानते है कि अिस भूभागमे करीव दस करोड मनुष्य अैसे हैं, जो आजके प्रगतिशील युग तक अपनी प्रागैतिहासिक सामाजिक, आर्थिक या सास्कृतिक प्राचीन परम्परामें ही रहते आये है और वाहरके सघर्षके फलस्वरूप अभी अभी ही अुससे वाहर निकलनेके लिअे थोडे छटपटाने लगे हैं।

किसी भी प्रजाके लिअे ठेठ प्रागैतिहासिक कालसे अेकदम अणु-युग तककी हनुमान-छलाग मारना वडा कठिन काम है। अिसलिअे हम सवका यह कर्तव्य है कि हम अिस काममें अफ्रीकाके मूल निवासियोकी मदद करे — वह भी अैसी मदद करें कि अफ्रीका और अुसके वतनी ससारके अितिहासके प्रवाहमे आकर अुसे अधिक शाति और सुलहवाला, प्रगतिशील और (सवसे अधिक महत्त्वकी वात तो यह कि) मानवतापूर्ण वना सकें।

जैसा कि काकासाहव कहते हैं, अफ्रीकाके वतनी असाधारण प्राण-वान मनुष्य है। अिस विपयमे मुझे जरा भी शक नही कि मानव-जीवनके हर क्षेत्रमें पुरुपार्थ करके ससारकी प्रगति और स्थिरतामे वडा असरकारक हिस्सा लेनेकी योग्यता अुनमे है। पूर्व और पश्चिमके हम लोग अुन्हे यह हिस्सा लेने देगे या स्वार्थी और सकुचित दृष्टिसे नअी कठिनाअिया और झगडे खडे करके दुनियामे फैली हुअी अन्धाधुन्धीको और वढायेंगे, यही अेक वडा प्रश्न है।

हम हिन्दुस्तानियोको अफ्रीकामें वडी जिम्मेदारी और कर्तव्य पूरा करना है। यह अीश्वरका ही सकेत है। मेरा खयाल है कि काकासाहव जैसे 'द्रष्टाओ' की मुलाकातो और सम्पर्कसे हमें अिस खड और अुसके निवासियोके प्रति रही अपनी जिम्मेदारियो और कर्तव्योका भान होगा और हम अुन्हे पूरा करना सीखेंगे।

यह पुस्तक बहुत लोग पढ़ेंगे, अिसमें मुझे कोअी शक नहीं है। मुझे अैसी भी आशा है कि वह कुछको प्रेरणा देकर कार्यपरायण भी बनायेगी। क्योंकि अिस दीवानी दुनियामें योग्य विचारसे प्रेरित योग्य आचार द्वारा ही हम शान्ति और सन्तोष प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे आशा है कि अिस पुस्तकका हिन्दीमें अनुवाद होगा और सारा भारत अुसे पढ़ेगा। यह जरूरी है कि हमारे अिन 'पासके किनारेके पड़ोसियों' से हम भलीभांति परिचित हों। अब हम बहुत छोटी दुनियामें रहते हैं, और दुनियाके दूसरे भागमें — खास करके निकटवर्ती भविष्यके अिस महाखण्डमें अर्थात् अफ्रीकामें जो कुछ होगा, अुसके अच्छे या बुरे परिणाम हमें पूरी तरह भोगने होंगे।

आप्पा पंत

नया मिशन

हमारी मुसाफिरीके शुरूमें ही अगर कोअी चीज मुझे अखरी हो, तो वह थी अुस कंपनीका नाम, जिसके जहाजमें हमने यात्रा की। हिन्दुस्तानके स्वतंत्र हो जानेके बाद भी यह कंपनी अपना नाम 'ब्रिटिश अिंडिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी' क्यों रखे? नाममें थोडासा परिवर्तन कर दे तो भी बस है। 'ब्रिटेन-अिंडिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी' कहे, तो हमें कोअी अेतराज नहीं। लेकिन अब हम अपनी खुदकी अिन्डो-अफ्रीकन स्टीम नेवीगेशन कंपनी क्यों न खडी करें? पुरानी कंपनीके साथ अमुक सालका करार किया हो, तो कमसे कम अितना तो करना ही चाहिये कि अुस कंपनीके अधिकारी हमारे लोगोंके साथ घमंड और तिरस्कारका बरताव न करें। अगर करारका पालन ठीक ठीक न किया जाय, तो करार रद्द कर देना चाहिये।

बम्बअी और मार्मागोवाका किनारा छोडनेके बाद आठ दिन तक न तो जमीनका कोअी टुकडा दिखाअी दिया, न कोअी पहाडकी चोटी। हम सीधे मोम्बासा पहुंच गये। तुरन्त मनमें यह विचार आया कि यहाके लोग हमारे अुस पारके पडोसी ही हैं। यहाकी लहरें वहा टकराती हैं और वहाकी लहरें यहाके किनारेसे आकर टकराती हैं। तुरन्त अुनसे आत्मीयताका संबंध बंध गया। और यह खयाल आया कि यह आत्मीयता कोअी आजकी नहीं, अिस जमानेकी नहीं, हमारा पडोस हजारों सालका पुराना है। अफ्रीकामें मैंने जो कुछ देखा, जो कुछ विचारा और जो कुछ कहा, वह सब अिस पडोसी-धर्मसे प्रेरित होकर ही।

पूर्व अफ्रीका मैं गया तो 'देश देखने' के कुतूहलसे और गांधी-स्मारक कॉलेजके बारेमें सलाह देनेके लिअे। लेकिन वहांसे लौटा पडोसी-धर्ममें बंधकर। अफ्रीकी लोगोंके साथका पड़ोसी-धर्म, अफ्रीकामें बसे हुअे हिन्दुस्तानियोंके साथकी आत्मीयता और वहांके अंग्रेजोंके साथका कॉमनवेल्थका संबंध — तीनों मनमें मजबूत हो गये हैं। 'हम आजाद हो गये, अब अंग्रेजोंसे हमारा क्या संबंध है', अिस तरहकी जो वृत्ति मनमें पैदा हुअी थी, वह अफ्रीका जाकर मिट गयी। दो जातियोंका हमारा संबंध अभी टूटा नहीं है। हमारा अेक-दूसरेके साथ अवश्य संबंध है और देनापावना भी है, अिसका विश्वास हुआ।

अंग्रेज लोग — बल्कि युरोपके सारे राष्ट्र अेक समय सारी दुनियामें मिशनरी भेजकर अीसाअी धर्मका प्रचार करते थे। यह प्रवृत्ति आज भी बंद नहीं हुअी है, धीमी जरूर पड़ी है। अीसाअी संस्कृतिकी अेकता कभीकी मिट चुकी है। पश्चिमके राष्ट्र अब अेक-दूसरेसे अलग पड़ गये हैं। अिसलिअे अंग्रेज आज तक जैसा काम धर्मके नाम पर मिशनरियोंके जरिये करते थे, वैसा ही काम वे अपनी संस्कृतिकी भूमिका पर ब्रिटेनके साहित्य, संगीत, कला वगैराके प्रचार द्वारा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसके लिअे अुन लोगोंने 'ब्रिटिश कौन्सिल' नामकी अेक जबरदस्त संस्था कायम की है और अुसे अपार धन भी दिया है। विधान या नियमोंकी सख्ती भी अुसमें नहीं है। अुसके कार्यकर्ताओंको जैसा सूझे वैसा काम वे कर सकते हैं। अिस संस्थाका मुख्य अुद्देश्य यह है कि अनेक देशोंके नौजवानोंके बीच और प्रतिष्ठित, सरकारी और प्रभावशाली लोगोंके बीच काम करके अुन देशोंके लोगोंके मन और दिल ब्रिटिश संस्कृतिके लिअे अनुकूल बनाये जाय और ब्रिटेन तथा अुन देशोंके बीच सद्भाव कायम किया जाय। पश्चिमके अनेक देशोंने अब अैसी संस्थायें कायम की हैं। अैसी संस्थाओंको अुन अुन देशोंकी सरकारोंकी मदद होने पर भी वे संस्थायें सरकारी नहीं होतीं। अुनके कार्यके फलस्वरूप विभिन्न देशोंके बीच राजनैतिक मिठास भी पैदा

होती है, फिर भी वे संस्थायें राजनैतिक नहीं होतीं। धर्मप्रचारका अुद्देश्य तो अुनका होता ही नहीं।

अिस तरहकी अेक संस्था हमारे देशकी तरफसे भी कायम हुअी है। अुसका नाम है Indian Council of Cultural Relations — (I.C.C.R) हमारे सारे विश्वविद्यालयोंके और सांस्कृतिक काम करनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधि अुसमें है। अिस समय अुस संस्थाने अफगानिस्तान, अीरान, टर्की, मिस्र वगैरा देशोंमें अपना काम शुरू किया है। अरबी भाषामें हम अेक सामयिक पत्र भी निकालते है। अिन सारे देशोंके कुछ विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोंमें, हमारी छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन करते है। हमारे देशकी संस्कृति, हमारा राजनैतिक दृष्टिकोण और दूसरे राष्ट्रोंके बारेमें हमारी दिलचस्पी समझानेके लिअे कितने ही नेता अुन अुन देशोंमें घूम आते है।

दक्षिण पूर्वकी ओरके ब्रह्मदेश, स्याम, थाअीलेण्ड, अिंडोनेशिया वगैरा देशोंके लिअे भी अेक विभाग खोलनेकी तैयारी चल रही है।

मुझे लगा कि अफ्रीकाके लिअे भी हमें अेक अैसा ही विभाग खोलना चाहिये। अिस दिशामें मेरे प्रयत्न चल रहे है और अुनका अच्छा स्वागत भी हुआ है*। दुनियाकी परिस्थितिको जाननेवाले और हमारी संस्कृतिको सामने रख सकनेवाले लोग अफ्रीका जाय अफ्रीकी लोगोंके नेता हमारे यहां आकर हमारे मेहमान बनें और हमारा रहन-सहन अपनी आंखोंसे देखें, अुनके प्रति हमारे मनमें रहे सद्भावके वे साक्षी बनें — अिसके लिअे प्रयत्न शुरू हो गये है। हिन्दुस्तानके कमिश्नरके नाते श्री अप्पासाहब पतने वहां अिस तरहका बड़ा अच्छा काम किया है।

---

* यह कहते खुशी होती है कि मेरा सुझाव I.C.C.R. को पसन्द आया और अुसने अपनी कौंसिलका अफ्रीकी विभाग कुछ दिन हुअे खोल दिया है। — का. का.

पोरबंदरवाले सेठ श्री नानजीभाअी कालिदासने मुझे अफ्रीका भेजकर वहाकी स्थिति समझनेका और सेवा करनेका मौका दिया, अिसलिअे अब यह अेक जिम्मेदारी मुझ पर आ गअी है ।

अफ्रीकाके अुत्साही युवक और विद्यार्थी भी जब हमारे देशमें आवें, तब यह जरूरी है कि छुट्टीके दिनोंमें या त्योहारोंके मौके पर हम अुन्हें मेहमानके तौर पर अपने घरोंमें बुलावें और अुन्हें यह अनुभव करावें कि हमारे दिलोमें रंगभेद या वर्णद्वेष नही है । अुन लोगोंका दृष्टिकोण, अुनकी संस्कृति और अुनकी आकांक्षायें सहानुभूतिपूर्वक समझनेका मौका हमें घर बैठे मिले, तो हमें अुस लाभको खोना नहीं चाहिये। अुनके जीवन और रहन-सहनसे परिचित होने पर हमें जो सर्वसमाजिता और अुदारता अपनेमें बढानी पड़ेगी, वह लाभ भी कोअी छोटा-मोटा नहीं कहा जा सकता। स्वतंत्र देशकी संस्कारी और समर्थ प्रजा किसी भी देशकी प्रजासे अलग रह ही नहीं सकती।

काका कालेलकर

हिन्दी पाठकोंके लिअे

पूर्व अफ्रीकाकी ढाअी महीनेकी मुसाफिरीमें मैंने देखा कि वहा पर जो दो लाख भारतीय रहते है, अुनमे से करीब ८० फीसदी गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छके हिन्दू-मुसलमान है। वे सब घरमे गुजराती भाषा बोलते है। अिसलिअे अुनके लिअे और अुनके भारतवासी स्नेही-सबधियो के लिअे मैंने यह पुस्तक गुजरातीमे लिखी। किन्तु पूर्व अफ्रीकाका सवाल सारे भारतवर्षका सवाल है। अिसलिअे यह हिन्दी अनुवाद छापा किया गया है। थोडे ही दिनोमें अिसकी अग्रेजी आवृत्ति भी सक्षिप्त रूपमे प्रकाशित होगी।

१-१२-१९५१ काका कालेलकर

अनुक्रमणिका

अपने मीठे और आत्मीय सत्कारसे
हमारी यात्राको आनन्दपूर्ण बनानेवाले
पूर्व अफ्रीकाके
तीनों रंगके
असंख्य भाई-बहनोंको
कृतज्ञतापूर्वक समर्पित

हमारे

अुस पारके पड़ोसी

१

अफ्रीकाका महत्त्व

पृथ्वीकी भूमध्य रेखा पर अधिकाश समुद्र ही समुद्र है। अेशिया, युरोप और अुत्तर अमेरिकाके विशाल भूखड अुत्तर गोलार्धमें फैले हुअे है। आस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिकाका बडा हिस्सा दक्षिण गोलार्धमे है। अिनमें अेक अफ्रीका ही अैसा भूखड है, जो पृथ्वीकी मध्यरेखाके दोनो तरफ समानान्तर फैला हुआ है। यह भूमध्य रेखा थोडी दक्षिण अमेरिकामें और अुससे थोडी ज्यादा अफ्रीकामें आअी है। (सुमात्रा, बोर्नियो, वगैरा द्वीप भूमध्य रेखा पर है जरूर, लेकिन वे बिलकुल छोटे है। अुनकी गिनती न करें, तो चल सकता है।) भूमध्य रेखाके आसपासकी अफ्रीकाकी भूमिमें ब्रिटिश अीस्ट अफ्रीका और बेल्जियन कागो नामक दो प्रदेश पाये जाते है। जलवायुकी दृष्टिसे, मानव सस्कृतिके विकासकी दृष्टिसे और भारतके प्राचीन, आधुनिक और भावी अितिहासकी दृष्टिसे भी अफ्रीकाका यह प्रदेश बहुत बडा महत्त्व रखता है।

सारे ब्रिटिश अीस्ट अफ्रीकामें अेक या दूसरे रूपमे अग्रेजोका ही राज्य चलता है। भारत परका अपना अधिकार छोड देनेके कारण ही अग्रेज अब अीस्ट अफ्रीकामें अपने राज्यको ज्यादा मजबूत बनाना चाहते है। अिसलिअे वे अफ्रीकी प्रजा और वहा बसनेवाली हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रश्न पर ज्यादा ध्यान देने लगे है। हमारे लोगोने पूर्व अफ्रीकामें काफी अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। और अफ्रीकी प्रजा तो अब जाग्रत होकर अधिक शिक्षण और अधिक अधिकारोकी माग करने लगी है।

अिस प्रदेशके दक्षिणमें सुदूर दक्षिण अफ्रीकामें गोरी और रगीन प्रजाका प्रश्न ज्यो-ज्यो कठिन और पेचीदा होता जाता है, त्यो-त्यो अुसका असर पूर्व अफ्रीका पर भी पडने लगा है।

जिसके साथ सारी दुनियाकी राजनीतिका सम्बन्ध अधिकाधिक वढते जानेके कारण सयुक्त-राष्ट्र-सघ भी अफ्रीकाके विविध प्रश्नो पर ज्यादा-ज्यादा ध्यान देने लगा है।

हिन्दुस्तानके आजाद होनेके वाद ब्रिटिश प्रजाने अुसे अपने कामन-वेल्थमें दाखिल होनेका निमत्रण दिया और हिन्दुस्तानने अुसे स्वीकार कर लिया। दुनियाकी राजनीतिमे यह कदम वहुत वडा महत्त्व रखता है। हिन्दुस्तान और पूर्व अफ्रीका दोनों देश कामनवेल्थके सदस्य है, अिसलिअे वहाके प्रश्नोका हल अेक खास ढगसे ही होनेकी सभावना पैदा हुअी है।

अैसी हालतमें अफ्रीका, युरोप और अेशियाकी तीनो महा प्रजाओंका जो विशाल और असीम सहकार पूर्व अफ्रीकामें चल रहा है, वह मानव-जातिके भविष्यकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वका है। पूर्व अफ्रीकामें दो-ढाओ महीने रहनेका जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, अुस वीच किये हुअे प्रवासकी झलकमात्र करानेवाला वर्णन यहा देनेका विचार है। हिन्दुस्तानके हितका व्यापक विचार करते हुअे अफ्रीकाके वारेमें हमारी भाषाओंमें सैकडो पुस्तकें लिखी जानी चाहियें। अिसके पीछे ठोस अध्ययन, मानव-हितकी विशाल दृष्टि, अर्थरचना और राजनीतिकी सच्ची समझ और मानववशके विज्ञानमें (अेन्थ्रोपॉलॉजी) गहरी दिल-चस्पीके साथ-साथ पृथ्वीके स्तरकी रचनाको समझानेवाले भूस्तर-शास्त्रका ठोस ज्ञान भी होना चाहिये। अफ्रीकाके साथका हमारा सम्वन्ध हम जानते है, अुससे ज्यादा प्राचीन, ज्यादा गहरा और ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। हिन्दुस्तानने आजका आकार ग्रहण किया, अुसे लाखो वर्ष हो गये। अुसके पहले आजका अरव सागर नही था। आजका गुजरात, राजस्थान, गगा-यमुनाका प्रदेश, विहार और वगालका सारा भूप्रदेश समुद्रके गर्भमें था। आजके लकद्वीप और मालद्वीप वडे-वडे पहाडोके शिखर होगे। और आजका दक्षिण हिन्दुस्तान अिस प्रदेशके जरिये अफ्रीकाके किनारे स्थित मेडागास्कर द्वीपके साथ जुडा हुआ था। जिन प्राचीन जानवरोकी हड्डिया अफ्रीकामें मिलती है, अुन्हीकी हड्डिया दक्षिण हिन्दुस्तानमें भी पाअी

जाती है। कुछ विशेषज्ञोंका यह अनुमान है कि अफ्रीकाकी कितनी ही जातिया दक्षिण हिन्दुस्तानसे ही वहा गअी होनी चाहियें। आजके हिन्दुस्तान और अफ्रीकाकी रचनाके वाद वैदिक और पौराणिक कालमें हमारे देशवासी मिस्र होकर नील नदीके अुद्गम तक और वहाके चद्रगिरि नामके पहाड तक पहुचे थे, अैसे अुल्लेख हमारे प्राचीन पुराणोमे मिलते है। मिस्र देशकी अति प्राचीन सस्कृति, ग्रीसकी युनानी सस्कृति, सिन्धु नदीके किनारे विकसित सिन्धवी सस्कृति और अिन तीनोके वीच खिली हुअी अनेक शाखाओवाली खाल्डियन सस्कृति — अिन सवका परस्पर परिचय और सम्वन्ध था। यद्यपि अुस समयका अितिहास अुपलब्ध नही है, फिर भी प्राचीन अवशेषोके आधार पर अत्यन्त प्राचीन समयके अितिहासको शृखलावद्ध करनेके प्रयत्न सफल होते जाते है। और अिस तरह प्राचीनतम अितिहासका प्रकाश मनुष्यके स्वभाव और रहन-सहन पर पडता जाता है।

यह सारा ज्ञान अभी तक केवल कुतूहलका ही विषय था, किन्तु अव मानव-जातिको विनाशसे वचाकर अेक विश्वपरिवारकी स्थापना करनेके महाप्रयत्नमें अिस ज्ञानका वहुत वडा अुपयोग किया जा सकता है। अिसलिअे अिस प्राचीन अितिहासका सारे देशोंके जनसाधारण तक पहुचना वहुत जरूरी हो गया है। दुनियाके अितिहासकार और मानव-हितचिन्तक अिस नअी दृष्टिका विकास करते जा रहे है। हमारी प्रजाका अिस दिशामें पिछडा रहना अुसे महगा पड जायगा।

मेरे अिस सक्षिप्त प्रवास-वर्णनमें यह सव नही आ सकता। दो महीनोमें मैंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और सोचा, अुसीको यहा थोडेमें पेश करनेका खयाल है। अिसमें किसी पाठकको रस आवे और वह ज्यादा गहरा अध्ययन करनेके लिअे प्रेरित हो, तो मुझे सतोष होगा। कमसे कम प्रवास-वर्णन लिखनेका अुत्साह ही लोगोंमें वढे और भाषामें अिस प्रकारका साहित्य खिले, तो भी मुझे पूर्ण संतोष होगा। हमारे देशवासियोने अभी तक कोअी कम प्रवास नही किये है।

अुन्हे जानने, सीखने और विचार करनेके काफी मौके मिले है और आगे तो ये मौके बढते ही जायगे। अिनका लाभ सारी प्रजाको अवश्य मिलना चाहिये। बात अितनी ही है कि आदत न होनेके कारण अभी तक हमारे लोगोको अिस विषयमें कुछ लिखनेका सूझा ही नही। अेक बार यह दृष्टि पैदा हो और लिखनेका रस बढे, फिर तो स्वभावत विशाल, विविध और कीमती साहित्य तैयार होने लगेगा। अैसा साहित्य भारतकी किस भाषामें तैयार होगा, यह प्रश्न गौण है। भारतकी किसी अेक भाषामें कोअी अच्छी व ठोस पुस्तक तैयार हुअी कि दूसरी भाषाओंमें अुसके अनुवाद आसानीसे किये जा सकेंगे। खास प्रश्न तो विशाल और व्यापक रसका है। वह जब पैदा होता है, तब प्रजा जागे बिना रह ही नही सकती। और जगी हुअी प्रजा अपने मिशनको पहचान कर अुसे सिद्ध करनेका प्रयत्न करती ही है। भारतके भविष्यके अैसे स्वप्न मुझे आनन्द देते है।

अफ्रीकाका प्रवास करनेके पीछे मेरा क्या अुद्देश्य था, अैसा प्रश्न कअी व्यक्तियो द्वारा मुझसे पूछा गया है। यात्राके लिअे निकलनेसे पहले, यात्राके दिनोमें और यात्राके अन्तमें भी अिस प्रश्नका अुत्तर मुझे देना ही पडा है।

कथनकी सत्यताकी रक्षाके लिअे मैने हमेशा कहा है कि मेरा पहला अुद्देश्य — भले वह मुख्य न हो — केवल देश-दर्शनका ही है। जिस तरह पुराने भावुक लोग श्रद्धा और भक्तिसे मन्दिरोमें देव-दर्शनके लिअे जाते है, अुसी तरह और अुसी श्रद्धा-भक्तिसे मै देश-दर्शनके लिअे जाता हू। जब तक मै केवल भारत-भूमिको ही पुण्यभूमि मानता था, तब तक अीश्वरने मुझे परदेश जानेका सुअवसर नही दिया। जब मनोवृत्ति कुछ अुदार बनी, मानवताका खयाल पैदा हुआ और बुद्ध भगवानके अुपदेशके प्रति मनमें भक्ति जागी, अुसके बाद ही मुझे ब्रह्मदेश जानेका मौका मिला। और पूज्य गाधीजीके साथ जब सिलोन

(लका) गया था, तब भी बौद्धधर्मका आकर्षण होनेके कारण सिलोन कोअी पराया देश-सा महसूस ही नही हुआ।

हिन्दू सस्कृतिका सच्चा रहस्य समझनेके बाद और ससारके सारे धर्मोंके प्रति समता और आदरका भाव पैदा होनेके बाद अब जैसे सारे धर्म मुझे सच्चे, अच्छे और अपने ही लगते है, वैसे ही ससारके सारे देश मुझे भारत-भूमिके जैसे ही पवित्र और पूज्य मालूम होते है। अत. जिस भक्तिभावसे मै सेतुबन्ध रामेश्वरसे लेकर हिमाचल तककी यात्रा कर सका, अुसी भक्तिभावसे अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। दुनियाकी सारी नदिया मेरे ही सगे-सम्बन्धियोकी लोकमातायें है, हरअेक सरोवर मानस सरोवर जितना ही पवित्र है, हरअेक पर्वत हिमालय जितना ही देवतात्मा है, हरअेक नदीका अुद्गम अीश्वरके आशीर्वाद जैसा ही शुभ और श्रेयस्कर है, अैसी दृढ भावना लेकर ही मै अफ्रीका देखनेके लिअे निकला।

जापान और आसाममें भूकप होता है, ज्वालामुखी फटते है, वगैरा बाते जाननेके बाद भूकपशास्त्रमें — सिसमोग्राफीमें रस पैदा हुआ। अुससे सबन्धित तरह-तरहके यत्र अलीबागकी वेधशालामें देखे, तबसे यह जाननेका कुतूहल जगा कि अफ्रीका खडकी भूमि कैसे बनी होगी।

गुलामोके व्यापारके कारण बदनाम लेकिन लौगकी पैदाअिशसे सुगधित बना हुआ झाझीबार हमारे कच्छ-काठियावाडके हिन्दू-मुसलमानोकी पुरुषार्थ भूमि है, यह जाननेके कारण भी झाझीबारकी यात्राका सकल्प मनमें अुठा था।

पूर्व अफ्रीकाके खारे और मीठे तालाबोकी विशेषताये भी मुझे अपनी ओर खीच रही थी। अुत्तरकी तरफ बहनेवाली सरो-जा (सरोवरसे पैदा होनेवाली) नील नदीका अुद्गम स्थान देखनेकी अिच्छा गगोत्रीके दर्शनो जितनी ही अुत्कट थी और अिसीलिअे अुस स्थानको मैंने गगोत्रीकी तरह नीलोत्रीका नाम दिया।

राजरत्न श्री नानजी कालीदाससे अुनके और अफ्रीकामें रहनेवाले हमारे दूसरे लोगोंके पुरुषार्थ और पराक्रमकी बातें सुनकर यह कुतूहल बढ़ा था कि वह देश कैसा होगा और अुसकी शकल बदलनेमें हमारे लोगोंने कैसा हिस्सा लिया होगा।

अफ्रीकाके मूल निवासी अपनी खोअी हुअी आजादी पुन प्राप्त करनेके लिअे कैसी कोशिश करते हैं, गोरे लोग अुन पर कैसे राज्य करते हैं, रंगभेदके आधार पर प्रदेशभेद पैदा करनेकी लीला वहां कैसी चलती है, यह सब अखबारों और यात्रियों द्वारा जाननेको मिला था। अिसलिअे मनमें यह विचार अुठा कि मानव-व्यापारकी यह विशाल रंगभूमि अेक बार देखनी ही चाहिये।

दस-बारह वर्ष पहले श्री शिवाभाअी अमीन पूर्व अफ्रीकासे आये थे। अुन्होंने अफ्रीकी लोगोंके प्रति हिन्दुस्तानके कर्तव्यके बारेमें महत्त्वपूर्ण बातें की थीं, 'फेसिंग माअुन्ट केनिया' नामक पुस्तक पढ़नेके लिअे भेजी थी और अेक बार पूर्व अफ्रीका देख जानेकी सिफारिश की थी। यद्यपि अुस समय मैंने अुनकी बात नहीं मानी, लेकिन मनमें संस्कार तो जमे हुअे थे ही। अिन सब कारणोंसे दक्षिण अफ्रीका जानेके मौकेसे लाभ अुठाकर पूर्व अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। अिसके अलावा, श्री अप्पासाहब पंत और श्री नानजी कालीदासने अफ्रीकामें गांधी स्मारकके रूपमें अेक कालेज कायम करनेकी और अुसे अफ्रीकाके काले, यूरोपके गोरे और अेशियाके गेहुंवे रंगके सभी विद्यार्थियोंके लिअे खुला रखनेकी योजना मुझे समझाअी और कहा "अिस कल्पनाको पक्का रूप देने और लोगोंको समझानेके लिअे आपकी मदद जरूरी है।" अिस योजनाके लिअे जरूरी पैसा अिकट्ठा करनेकी जिम्मेदारी स्वभावत. मेरी नहीं थी। लेकिन लोकहितकी दृष्टिसे तथा शिक्षाके विकासकी दृष्टिसे योजनाको जांचकर अुसके बारेमें अपना मत देनेका और लोगोंको अिस योजनाके अनुकूल बनानेका काम मैं कर सकता था। मैं जानता था कि यह काम सार्वजनिक भाषणोंके बनिस्बत

खानगी बातचीत और चर्चाके जरिये ज्यादा अच्छा हो सकता है। असलिअे मैंने अैसा ही करनेका सोचा और पूर्व अफ्रीकाकी अनेक शिक्षा-सस्थायें देख लेनेका निश्चय किया। भारत सरकारने असी विषयमें सलाह देनेके लिअे दो विशेषज्ञ वहा भेजे थे। अुनकी रिपोर्ट भी मगा कर मैंने पढी थी।

हमारे देशके कुछ धर्मोपदेशक कभी-कभी पूर्व अफ्रीका जाते हैं। अुनके प्रचारके फलस्वरूप हिन्दुस्तानी लोगोकी नैतिक-सामाजिक स्थिति कितनी सुधरी है, यह देखनेकी भी अिच्छा थी। क्योकि कुछ लोगोके मुहसे अुनकी स्थितिके बारेमें मैंने चिन्ताजनक बाते सुनी थी।

अैसे अनेक कारणोसे अफ्रीकाकी यात्रा करनेका मैंने निश्चय किया। तीन महीनोके अन्तमे आज कह सकता हू कि अिन तीनो महीनोमें मुझे बहुत देखनेको मिला, अुससे भी अधिक जाननेको मिला। मै गाधीजीकी दृष्टिसे अफ्रीकाकी स्थितिकी जाच कर सका। और मुझे लगता है कि अिससे दुनियाकी आजकी स्थिति समझनेकी मेरी शक्ति बहुत बढी है। साधारण तौर पर की हुअी दो-तीन महीनेकी यात्रामे जितना अनुभव और जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अुससे भी ज्यादा मै प्राप्त कर सका हू। क्योकि अिस यात्रामे मुझे अनेक लोगोसे अनेक प्रकारका जितना सहकार मिला, अुतना शायद ही किसीको मिल सकता है। आज तक मैंने गुजराती भाषाकी जो भी थोडी बहुत सेवा की होगी, अुसके फलस्वरूप मुझे पूर्व अफ्रीकाके असख्य गुजराती हिन्दू-मुस्लिम घरोमें प्रेमका स्थान मिला। अफ्रीकामें मै गुजराती भाषाकी सास्कृतिक शक्तिका विशेष दर्शन कर सका।

२

तैयारी

पूर्व अफ्रीका देखनेका अवसर बड़े विचित्र ढंगसे मुझे मिला। नअी दिल्लीमें गांधी-स्मारक-संग्रह (म्यूजियम) तैयार कर देनेकी जिम्मेदारी स्मारक-निधिने मुझे सौंपी। अिसलिअे महात्मा गांधीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुअें, अुनके जीवन-प्रसंगोंके बयान, वगैरा अिकट्ठे करनेका काम मेरे सिर आया। यह सारी सामग्री कालक्रमके हिसाबसे अिकट्ठी करनेके लिअे पहले सौराष्ट्रका और बादमें दक्षिण अफ्रीकाका प्रवास करना स्वाभाविक था। मुझे लगा कि पूर्व अफ्रीका होकर दक्षिण अफ्रीका जानेमें सुविधा रहेगी। विश्वशांति परिषदके कारण भारत आये हुअे श्री मणिलाल गांधीके साथ अिस सारे प्रवासकी योजना सोच ली। अुन्होंने मेरा यह विचार भारत सरकारके कमिश्नर और मेरे पुराने मित्र श्री अप्पासाहब पंतके सामने नैरोबीमें जाहिर किया। अुन्होंने अुसका हार्दिक स्वागत किया, क्योंकि वे अेक मानवहितोंकी चिन्ता रखनेवाले राजनीतिज्ञकी योग्यता और कुशलतासे पूर्व अफ्रीकाके सवालोंका हल खोज रहे थे और अिस सम्बन्धमें अनेक योजनायें तैयार कर रहे थे। अिसलिअे न सिर्फ अुन्होंने मेरे विचारका ही स्वागत किया, बल्कि अैसा आग्रह शुरू किया कि दक्षिण अफ्रीका जब जाना होगा तब होगा, लेकिन पूर्व अफ्रीका तो आपको तुरन्त आ ही जाना चाहिये।

पूर्व अफ्रीकामें ५० वर्षसे भी ज्यादा रहकर केवल अपनी कार्यकुशलतासे करोडपति बने हुअे और सार्वजनिक कामोंके लिअे अनेक दान देनेवाले श्री नानजीभाअी कालीदाससे अप्पासाहबने मेरे संकल्पके बारेमें बात की होगी। अुन्होंने हिन्दुस्तान पहुंचते ही मुझे

पूर्व अफ्रीका आनेका आमत्रण दिया और आर्थिक दृष्टिसे मुझे निश्चिन्त कर दिया।

अपने अनेक कामोके कारण मैं अिस आमत्रणको आगे ही आगे ढकेलता गया। लेकिन जब गाधीजीके जन्मस्थान पोरबदरमें नानजीभाअी द्वारा स्थापित कीर्ति-मदिर देखने मै वहा गया, तब अुन्होने परमिटके लिअे कागजात तैयार कराकर हमारी सहिया ली और हमें — मुझे और चि० कुमारी सरोजिनी नानावटीको — पूर्व अफ्रीका भेज ही दिया।

शान्तिनिकेतन और सेवाग्राममें हो रही विश्वशाति परिषदमें दिसम्बरका महीना बीता। जनवरीका महीना बिहारके प्रवासमे बिताना पडा। २६ जनवरीके स्वातत्र्य-दिवसके अुत्सवके लिअे दिल्लीमे न रहकर मध्यप्रदेशके ५० हजार आदिवासियोके अेक विराट समेलनमें हाजिर रहा। और फरवरीका महीना हिन्दुस्तानकी अीशान्य सीमा पर सदियाके आसपास वहाके आबोर, मिशमी वगैरा वनप्रदेशके लोगोके बीच घूमनेमें पूरा किया। अितना सब करनेके बाद ही मै पोरबन्दर जा सका था। वहा पूर्व अफ्रीका जानेका निश्चय कर लेने पर भी अप्रैलमे राष्ट्रीय सप्ताहके दिनोमें अनुगुल (अुड़ीसा) में जो अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन होनेवाला था, अुसे भला कैसे टाला जाता? वह काम अप्रैलमें पूरा करनेके बाद ही प्रवासकी तैयारी शुरू की।

आजकल जिस किसी देशमें जाना हो, वहाके लोगोको निर्भय करनेके लिअे कुछ खास रोगोके अिजेक्शन लेने होते है। और वहासे लौटते समय भी वहाके कोअी रोग हम साथ न ले आवें अिस हेतु, यानी अपने देशके लोगोको विदेशके रोगोसे बचानेके लिअे भी कुछ खास अिजेक्शन लेने पडते है। अिस तरह हमने कालरा, शीतला और यलो फीवर — अिन तीनो रोगोके अिजेक्शनोकी मुसीबत भुगत ली। भारतमें अब हमारी सरकार हो जानेसे पासपोर्ट पानेमें कोअी कठिनाअी नही हुअी।

निश्चित कब निकल सकेंगे, यह समय पर तय नही हो सका। अिसलिअे 'कपाला' बोटमें हमें दूसरे दर्जेकी सुविधाओसे ही सतोष

करना पडा। ये सुविधायें हर तरहसे अच्छी थी और पैसे भी बच गये। ८ मअी १९५० को हमने हिन्दुस्तान छोडा — नहीं, ८ मअीको स्टीमरमें बैठे, लेकिन स्वदेश छोडा तभी कहा जायगा, जब हमने ९ मअीको मुरगाव (मार्मागोवा) का बन्दरगाह छोडा।

अैसा नहीं कि अिससे पहले मैंने कभी समुद्रयात्रा की ही नहीं थी। स्वदेश कभी छोडा नहीं था, अैसा भी नहीं कह सकता। कलकत्तासे तीन दिनकी यात्रा करके रगून पहुचा था और अुसी रास्ते लौटा भी था। अेक बार बम्बअीसे कराची और कराचीसे बबअी भी जहाजसे ही गया था। और अेक बार तो बबअीसे कोलम्बोकी समुद्रयात्रा भी पूज्य गाधीजीके साथ की थी। लेकिन किसी वक्त यह भावना मनमें नही आअी थी कि स्वदेश छोडकर दूर जा रहा हू। क्योकि यह भावना बचपनसे ही बधी हुअी थी कि ब्रह्मदेश क्या और लका क्या, दोनो हमारे ही देशके दो सुन्दर अग हैं। अिसलिअे वहाके लोगोकी रहन-सहनमें बहुत ज्यादा फर्क होते हुअे भी अुस समय यह विचार नही आया कि मैं परदेश जाता हू या गया हू।

अिस वक्त हमारे यहाका पासपोर्ट वगैरा लेना और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारसे परमिट लेना जरूरी होनेसे यह भावना मन पर जबरन बैठा दी गअी कि मैं परदेश जा रहा हू।

महेता ब्रदर्सके कर्मचारियो द्वारा हमारी सुख-सुविधाका पूरा ध्यान रखा गया था, अिसलिअे हमें तो सिर्फ स्टीमरमें जाकर बैठ ही जाना था।

कपडोका सवाल परेशानी पैदा करनेवाला था। श्री नानजीभाअीने कहा कि जैसे कपडे आप यहा पहनते हैं, वैसे ही वहा भी पहनेंगे तो चलेगा। चि० बालने बडे आग्रहसे कहा कि धोती वगैरा कपडे परदेशमें बिलकुल काम नही देंगे। वहा आपको पायजामा, पेन्ट वगैरा पहनने ही चाहियें। चि० सतीशने अुसका समर्थन किया। श्री देवदास गाधीने कहा कि हमारी धोती परदेशमें नही चलेगी, क्योकि वहा पावोकी पिंडलियोका

खुला रहना असभ्य माना जाता है। धोतीके बदले मद्रासी ढगसे लुगी पहनें, तो हमारी विशिष्टता भी रह जायगी और परदेशके शिष्टाचारका भी पालन होगा। मेरी यह परेशानी देखकर हमारी पार्लमेन्टके स्पीकर श्री दादासाहब मावलकरने यह फैसला दिया कि जहा केवल हिन्दुस्तानी ही अिकट्ठे हुअे हो या खानगीमें मिलना-जुलना हो, वहा धोतीसे काम चलाया जाय। परन्तु जब परदेशके लोगोसे मिलना हो या किसी महत्त्वपूर्ण सभा अथवा पार्टीमें जाना हो, तब हमारी सर्वमान्य हो चली राष्ट्रीय पोशाक ही पहननी चाहिये — और वह पोशाक है चूडीदार पायजामा, बन्द कॉलरवाली अचकन और सिर पर गाधी-टोपी।

दादासाहबकी यह सूचना मुझे हर तरहसे अुचित मालूम हुअी। हमारे बीचका मतभेद दूर हुआ और देखते-देखते मैं चूडीदार पायजामा पहननेकी कलामें पारगत हो गया।

भोजनके बारेमें मैंने तय किया कि परदेश जानेके बाद शक्कर न खानेका अपना बरसोका आग्रह मुझे छोड देना चाहिये। वहा दूध तो गायका ही मिलता है, अिसलिअे दूधका सवाल ही नही अुठता। फिर भी मनमें तय कर लिया कि परदेशमें दूध-घी वगैरा जैसा मिले वैसा ही लिया जाय। शामको सात बजेके बाद न खानेका नियम भी मैंने छोड दिया। सिर्फ अेक निश्चय स्वभावत कायम रखा कि परदेशमें होते हुअे भी मास, मुर्गा, मछली, अडे, वगैरा कुछ नही लूगा। शराबका तो सवाल ही नही अुठ सकता था। अिस तरह मद्यमाससे सुरक्षित रहे, तो काफी है। बाकी नियमोका आग्रह परदेशमें न रखा जाय।

३

समुद्रके सहवासमें

वम्बअीसे मार्मागोवा जाने तक हिन्दुस्तानका पश्चिमी किनारा बाअीं ओर दिखाअी देता था। जिस तरह वच्चेको मा आखोंसे ओझल नहीं होती तव तक यह विश्वास रहता है कि मैं माके साथ ही हू, अुसी तरह किनारा दिखता रहा तव तक अैसा नही लगा कि हिन्दुस्तान छोड दिया है। मार्मागोवा छोड देने पर हमारे स्टीमर 'कपाला' ने स्वदेशसे समकोण वनाते हुअे सीधे विशाल समुद्रमें प्रवेश किया। देखते-देखते हिन्दुस्तानका किनारा आखोंसे ओझल हो गया और चारो तरफ केवल पानी ही पानी फैला दिखाअी देने लगा। रात हुअी और आकाशकी ज्योतिर्मयी आवादी वढी। अुससे अकेलापन वहुत कम हो गया। लेकिन जैसे-जैसे भूमध्य रेखाकी तरफ वढने लगे, वैसे-वैसे हवा और वादलोंकी चचलता वढने लगी। मौसम अच्छा होनेसे समुद्र शान्त था। लहरें थोड़ा-थोडा हसकर वैठ जाती थीं। कुछ लहरें कच्ची छींककी भाति अुठते-अुठते ही शान्त हो जाती थीं। किसी वक्त समुद्रका रग आसमानी स्याही जितना आसमानी हो जाता, किसी वक्त काला स्याह। और जहाज पानी काटता हुआ आगे वढता, तव दोनो ओर अुसका जो सफेद फेन फैलता, वह अुस पर वने हुअे अवरी वेलवूटो-सा शोभा पाता। आसमानी पानी पर अुसकी शोभा अेक तरहकी दिखाअी देती, काले पर दूसरी तरह की। पहले-पहले समुद्रके चेहरे पर लहरोंके अलावा चमडे पर पडी हुअी झुर्रियोंकी-सी स्पष्ट छाप दिखाअी देती। कभी ये सारी झुर्रिया गायव हो जाती और पानी चमकते हुअे वरतनोंकी तरह सुन्दर दिखाअी देता था। जहाज धीरे-धीरे डोलता चल रहा था। जहाज जव कदमें छोटे होते हैं, तव ज्यादा डोलते हैं। वडे जहाज आसानीसे अपनी धीरी

गतिको छोडते नही। सामनेसे लहरें आती हैं, तब जहाज डोलनेके अलावा घुडसवारकी तरह आगे-पीछे हिलता है, जिसे अंग्रेजीमें 'पिचिंग' कहते हैं। यह पिचिंग लम्बे समय तक जारी रहे, तो आदमीको अच्छा नही लगता। लेकिन अुसे रोका कैसे जाय? झूले झूलकर अुकता गये हो, तो झूला बन्द करके अुस परसे अुतरा जा सकता है। लेकिन यहा तो अेक बार जहाज पर बैठे कि आठ दिन तक अुसके हिलने-डुलनेको स्वीकार किये सिवा कोअी चारा ही नही। कभी-कभी शका होती थी कि दोनो गतियोंके मिश्रणसे कही चक्कर तो नही आने लगेंगे? मनमें यह भी डर घर कर लेता कि चक्करकी शका पैदा हुअी, अिसी-लिअे चक्कर आयगे। खाते समय स्वाद लेकर रसपूर्वक खाते हो, तो भी यह शका बनी रहती कि खाया हुआ पेटमें टिकेगा या नही? अिस शकाको मिटाना आसान नही था। जो भी हो, हमने तो अपने आठो दिन खूब आनन्दमें बिताये। लोगोने डरा दिया था कि आखिरी चार दिन कठिन जायेंगे। लेकिन हमें तो अैसा कुछ मालूम नही हुआ। जिस दिन हमने भूमध्य रेखा पार की, अुस दिन कुछ समय तक हवा खूब तेज चली। लेकिन अुससे हम अुदास, गमगीन नही हुअे।

अपनी चारो तरफ जब पानी फैला दिखता है, तब कुछ समय तक मजा आता है। बादमें सारा वातावरण गभीर बन जाता है। लेकिन जब यह गभीरता कम हो जाती है, तो आखें घबराने लगती हैं। हमारी पूरी सृष्टि अुस जहाजमें ही समा गयी! विशाल समुद्रकी तुलनामें वह कितनी छोटी और तुच्छ मालूम होती थी! वह भी समुद्रकी दया पर जीनेवाली। और अुस सृष्टिको छोडकर बाकी सब पानी ही पानी। अितने पानीका आखिर अुद्देश्य क्या है? जमीनका पट चाहे जितना विशाल हो, तो भी अैसा नही लगता कि अितनी जमीन किस लिअे बनाअी गअी होगी? विशाल, व्यापक और अनन्त आकाश देखकर भी अैसा नहीं लगता कि अितने बडे आकाशका निर्माण किस लिअे हुआ होगा? लेकिन समुद्रका पानी देखकर यह विचार

अुठे बिना नही रहता। जमीनमे परिचित आखोको जब अपने चारो ओर पानीका अखड विस्तार देखना पडता है, तब वे घबरा जाती है और अन्तमें अूबकर क्षितिज पर छाये हुअे बादलोंको देखकर आराम पाती है। लेकिन कअी बार ये बादल बिना आकारके और अर्थहीन होते है। आकाश जब मेघाच्छन्न हो जाता है, तब तो अुनकी अुदासी असह्य हो अुठती है। अीश्वरकी कृपा है कि आखिरकार अिस घबराहटका भी अन्त आता है और खुली आखें भी अन्तर्मुख होकर गहरे विचारमें तल्लीन हो जाती है।

रातमें और खास कर बडे तडके तारे देखनेमें मजा आता था। लेकिन 'पूरा आसमान तो हरगिज न देखने देंगे', अैसा कहकर बच्चोकी तरह बादल आसमानके मुह पर अपने हाथ घुमाते रहते थे। अुनकी दयासे जिस समय आकाशका जितना हिस्सा दीखता, अुसीको पढ लेनेका हमारा काम रहता।

गुरुवारका प्रातःकाल होगा। जहाज सीधा चल रहा था और अुसके मुख्य स्तभके बिलकुल पीछे शर्मिष्ठा चमक रही थी। स्तभकी आड़में भाद्रपदाकी चौरस आकृति किसी तरह जम गअी थी। नीचे अुतरते हुअे ध्रुव तारेके पास देवायानीका अुदय हो रहा था। पौने पाच बजे और श्रवण सिर पर दिखाअी देनेवाले मगलके स्थान पर लटकने लगा। हस, अभिजित और पारिजात तीनो मिलकर अेक सुन्दर चदोवा बना रहे थे। बाअी तरफ गुरु, चन्द्र और शुक्र अेक कतारमे आ गये थे। चन्द्रकी चादनी अितनी मद थी कि अुसे छाछकी अुपमा भी नही दी जा सकती। सामने देखने पर बाअी ओर वृश्चिक अपने तीनो नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा और मूलके साथ लटक रहा था। जब कि दाअी ओर स्वाति अस्त हो रही थी। बेचारा ध्रुवमत्स्य (ध्रुव और अुसके पासके छ तारोका समूह) लगभग क्षितिजसे मिल गया था।

दूसरे दिन चन्द्रका पक्षपात शुक्रकी तरफ हो गया। रातमें सप्तर्षिके दर्शन करके हम सोये, अुस समय पुनर्वसुकी छोटीसी नावको हमारे साथ

दक्षिणकी यात्रा पर रवाना हुअी देखकर वडा आनन्द होता था। पुनर्वसुकी नौकामे वैठनेकी चित्राकी तमन्ना अभी पूरी नही हुअी हैं। शायद मघा नक्षत्रकी अीर्ष्या अिसमें रुकावट डालती होगी ! शनिवारके दिन चन्द्र और शुक्रका जोडा शोभा पाता था। आखिर आखिरमें अिन दोनोने नीला रग धारण कर लिया। भाद्रपदाकी चौडी नाली यहा खूव अूची चढी हुअी दीखती थी। ध्रुव कलसे ही लुप्त हुआ है।

सवेरे जव अुषा स्वागत करनेके लिअे मद हास्य करती है, तव सारे क्षितिज पर चादी जैसी चमकती किनारी वन जाती है। अुसके वाद समुद्र प्रसन्न मुद्रामे हसने लगता है और अुषाको प्रगट होनेका मौका देता है।

शनिवारको सामनेसे आता हुआ अेक जहाज दिखाअी दिया। अुसने अपने दीयेका प्रकाश चमकाकर हमार जहाजके साथ शिष्टाचार दिखाया। हमारे जहाजने भी अुसका अुत्तर दिया ही होगा। दोनो जहाज वहुत समीप आ जाते, तो दोनो सीटी वजाते, लेकिन जहा सीटीकी आवाज नही पहुचती, वहा प्रकाश दिखाकर काम चलाना पडता है। पूरे चार दिनके वाद हमारे जहाजके जैसी ही दूसरी अेक सृष्टिको जीवन-पट पर विहार करते देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ। हमारे जहाजके लोग अफ्रीकाके सपने देख रहे थे। सामनेवाले जहाजके मुसाफिर मातृभूमि हिन्दुस्तानके सपने देख रहे होगे। हर जहाजके मुसाफिरोके मनमें चल रहे सकल्प-विकल्पोका अेकन्दर हिसाव लगाया जाय तो कैसा मजा आये!

जहाज पर यात्रियोकी तीन जातिया होती हैं। प्रतिष्ठाकी अस्पृश्यता भोगनेवाले होते है पहले दर्जेके यात्री। अुन्हे ज्यादा सुविधायें मिले तो कोअी चिन्ता नही, लेकिन अुनका वडप्पन अिस वातमें है कि अुनके राज्यमें दूसरा कोअी प्रवेश भी नही कर सकता। अूपरी डेकका वहुत वडा भाग अुनके आराम और खेलकूदके लिअे 'रिजर्व' होता है। दूसरे दर्जेके यात्री भी काफी अच्छी सुविधा भोगते हैं। लेकिन तीसरे

दर्जेके यात्रियोकी गिनती तो मनुष्योंमें होती ही नहीं। अुनके झुडके झुड पशुओंकी तरह चाहे जहा ठूस दिये जाते है। आठ दिन तक मनुष्यको पशुजीवन विताना पडे, यह कोअी मामूली मुसीबत नहीं है।

और अब दूसरे और तीसरेके बीचमें ड्योढा दर्जा निकाला गया है। वह पशु और मनुष्यके बीचका वानर वर्ग कहा जा सकता है। अुसमें भीड तो खूब होती है, लेकिन यही गनीमत है कि यात्री मनुष्यकी तरह सो सकते है।

हम जहाज पर है, अैसा कुछ लोगोंको मालूम हुआ, तो वे हमसे बातें करने आने लगे। अुसमें भी हमारे सुबह-शाम प्रार्थना करनेके समाचार जब जहाजके खलासियो तक पहुचे, तो अुन्होने हमें नीचेके डेक पर शामको प्रार्थना करनेके लिअे बुलाया। लगभग सारे खलासी सूरत जिलेके थे। भजनके पूरे रसिया। वे अनेक भजन जानते और स्वर-तालके साथ गा सकते है। अुनकी भजन-मडली जब जमती, तब वे सारे दिनकी थकान और जीवनकी सारी चिन्तायें भूल जाते। आसमानी रगकी पोशाक पहन कर सारे दिन यत्रकी तरह काम करनेवाले यही लोग है, अैसा जानते हुअे भी यह सच नहीं लगता। अुनके समक्ष मैंने अनेक प्रवचन किये। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि जमीन पर ही दीवालें चुनी जा सकती हैं। समुद्र पर नहीं। अिस-लिअे खलासियोके यहा जात-पातकी दीवारे नही रहनी चाहियें। दरिया पर तो अुन्हें दरियादिल बनना चाहिये।

हम लोग अिस तरह प्रार्थना और भजनमें तल्लीन रहते थे, अुसी बीच जहाजके बहुतसे गोवानी लोगोंने अेक रातको स्त्री-पुरुषोंके नाचका आयोजन किया। अिसके लिअे अुन्होने जो चदा किया, अुसमें हमें भी शरीक किया। अिसलिअे हम हकदार दर्शक बने।

गोवाके अीसाअियोमें युरेशियन शायद ही देखनेको मिलेंगे। धर्मसे अीसाअी लेकिन खूनसे शुद्ध भारतीय अैसे लोगोंने पश्चिमके जो

सस्कार अपनाये है, अुनका असर देखने लायक होता है। कितने ही युगल सयमपूर्वक नृत्यकलाका आनन्द ले रहे थे। कुछ ज़ोडे अैसे गभीर, अलिप्त और यात्रिक ढगसे नाच रहे थे, मानो कोअी सामाजिक विधि पूरी कर रहे हो। जब कि दूसरी कुछ जोडिया नृत्यके नियमोके अनुसार वन सके अुतनी छूट लेकर नृत्यमें और अेक-दूसरेमे लीन दीखाअी देती थी। अेक दो जोडियोकी अुमर और अूचाअी अितनी विषम थी कि मनमे यही विचार आता था कि अितनी वडी विडम्वनाका भोग अुन्हीको कैसे वनना पडा। सकरी जगहमें अितने सारे लोगोका नाच जैसे तैसे पूरा हुआ। अन्त तक जागनेकी अिच्छा न होनेसे ११ वजनेसे पहले ही हम लोग सो गये।

हमारा जहाज पश्चिमकी ओर यानी पृथ्वीकी गतिसे अुलटी दिशामें चलता था, अिसलिअे हमें लगभग रोज ही घडीके काटे घुमाने पडते थे। जहाजकी तरफसे सूचना मिलती कि 'मध्यरात्रीमें आधा घटा कम करो' या 'अेक घटा कम करो'। सृष्टिके नियमको समझकर हम अितना नुकसान अुठानेको तैयार थे। अफ्रीका पहुचने तक हमने ढाअी घटे खोये। (बेल्जियन कागो जाने पर अेक और घटा खोना पडा, अिसका वर्णन यथास्थान आयेगा।)

भूगोलके तथ्य विस्तारसे न जाननेवाले पाठकोके लिअे अितना कह देना जरूरी है कि रेखाशकी हर १५ डिग्री पर अेक घटा घटाना या वढाना पडता है। प्रशात महासागरमें जब जहाज अेशिया और अमेरिकाके वीच १८० रेखाश पर होते है, तव अुन्हें आते या जाते अेक पूरा दिन वढाना या घटाना पडता है। अिस रेखाशको अग्रेजीमें 'डेट लाअिन' कहते है। जिस तरह हमारे यहा अधिक मास आता है, अुसी तरह 'डेट लाअिन' पर जाते हुअे अेक अधिक दिन आता है और आते हुअे अेक दिनका क्षय होता है।

आठ दिनसे न तो कोअी अखवार, न डाक, न मुलाकाती और न कोअी शहर या गाव देखनेको मिला—यहा तक कि पहाड या

द्वीप भी सपनेकी सपत हो गये थे। अैसी हालतमें जब घटेके घटे और दिनके दिन चुपचाप बीत जाते है, तब वार और तारीखका भी ठिकाना नही रहता। हमारे जहाजकी अूचाअीका हिसाब करते हुअे जब मैंने अिस बातकी जाच की कि हमारे आसपास क्षितिज तक कितना समुद्र फैला हुआ है, तो जहाजवालोंसे पता चला कि हमारी आखें अेक बारमें चारो तरफ २५० वर्ग मीलमें फैला हुआ समुद्र देख या पी सकती थी। कितनी बडी शाति! और वह भी डोलती, झूलती, बहती और फिर भी स्थिर। आकाशके आशीर्वादके नीचे शातिका साम्राज्य फैला था। Swelling and rolling peace — abiding and abounding

कौन जाने किस तरह अिस शातिके अनुभवके साथ मुझमें मानव-प्रेम अुमड रहा था और सारी मानव-जातिसे 'स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति' कह रहा था। मानव-जातिका अितिहास आज भी अेकदर सुन्दर नही बन पाया है। अिसी समुद्रने कितने ही अन्याय और अत्याचार देखे होगे, कितने ही गुलामोकी ठडी आहे यहाकी हवामें मिली होगी, और कितनी ही प्रार्थनायें सूर्य, चन्द्र और तारो तक पहुच कर भी व्यर्थ गअी होगी। लेकिन अितना होते हुअे भी अगर मनुष्यके बहे हुअे खूनसे समुद्रमें लाली नही आअी, दुखियोकी आहोसे यहाकी हवा कलुषित नही हुअी और लोगोकी निराशासे आकाशके नक्षत्रो और तारागणोकी ज्योति मद नही पडी, तो मनुष्य-जातिका थोडासा अितिहास पढकर मेरा मानव-प्रेम किस लिअे सकुचित या कम हो? यदि मैं अपने असख्य दोषोको भूलकर अपने पर प्रेम कर सकता हू और अपने विषयमें अनेक आशायें बाध सकता हू, तो मेरे ही अनत प्रतिबिम्बरूप मानव-जातिको मेरा पूरा प्रेम क्यो न मिले?

अैसी भावनाके साथ अफ्रीकाकी भूमि पर मनुष्य-जातिके चल रहे त्रिखड (अेशिया, युरोप और अफ्रीका) सहकारको देखनेके लिअे मैं मोम्बासा पहुचा।

अिन आठ दिनोंमें खूब पढने और लिखनेकी जो आशा रखी थी, वह पूरी नहीं हुअी। लेकिन ये आठ दिन जीवनके दर्शन, चिन्तन और मननसे भरपूर थे।

४

प्रवेशद्वार

मैंने माना था कि मोम्बासा अुतर कर सीधे नैरोबी जाना होगा। मोम्बासामें चार-पांच दिन रहनेका श्री अप्पा साहबने किस लिअे तय किया होगा, यह मेरे खयालमें नहीं आया था। मोम्बासाके बारेमें मेरी अितनी ही कल्पना थी कि वह पूर्व अफ्रीकाका अेक मुख्य बन्दरगाह और व्यापारका केन्द्र है। अिसलिअे जब ११ मअीके सुन्दर प्रभातमें हम मोम्बासा पहुंचे और अुसका हराभरा आकर्षक किनारा देखा, तो हमारे आश्चर्यका पार न रहा। हम कुल आठ जन थे। मेरे साथ चि० सरोजका आना पहलेसे ही तय हो चुका था। आखिर-आखिरमें श्री शरद पडचाने साथ आनेकी अिच्छा बताअी। पासपोर्ट, परमिट वगैराकी व्यवस्था भी तारसे हो सकी। अिस तरह हम तीन हो गये। श्री अप्पा-साहबके आमंत्रण और भारत सरकारकी अनुमतिसे श्री कमलनयन बजाज भी पूर्व अफ्रीका देखनेके लिअे रवाना हुअे थे। अुन्होंने जहाजमें हमारे साथ रहनेके लिअे अपना कार्यक्रम बदला और कुछ असुविधा अुठाकर भी हमारे स्टीमरमें ही जगह प्राप्त की। अपने बच्चोंको देशाटनमें मिलनेवाली शिक्षाका महत्त्व पूरी तरह समझनेके कारण श्री कमलनयनने चि० राहुल और छोटी बच्ची सुमनको भी साथ लिया। अिसके अलावा, खाने-पीनेमें सुविधा रहे, अिस खयालसे अुन्होंने दो नौकर भी साथ ले लिये थे। अिस तरह हमारा आठ आदमियोंका काफिला अफ्रीकाकी भूमि पर अुतरनेके लिअे अक्षरशः अुत्कंठ हो गया था। हम तो क्या, लगभग सारे ही मुसाफिर अफ्रीकाके जिराफकी तरह

अफ्रीकाके दर्शनके लिअे अुत्-कठ होकर (गर्दन अूची अुठाकर) जहाजके कठघरेके पास अिकट्ठे हो गये थे। आखिर-आखिरमें अेक विघ्न पैदा हुआ। जहाज पर किसी बच्चेको छोटी माता निकली थी। अिसलिअे जहाजको क्वारेन्टाअिनमें रखनेकी बात चली। पहले और दूसरे दर्जेके यात्री हर बातमें सुरक्षित होते है, और हम ठहरे भारत सरकारके कमिश्नरके मेहमान! हमें सारी सुविधाये समय पर आसानीसे मिल सकी। हमें जो रुकना पडा, वह दूसरोकी तुलनामें कुछ भी नही था। अुतनेमें नहा-धोकर हमने नाश्ता भी कर लिया। श्री अप्पासाहबकी तरफसे अुनके प्राअिवेट सेक्रेटरी श्री तात्यासाहब अिनामदार सवेरे ही बन्दरगाह पर आ पहुचे थे। अुतरनेका समय हुआ कि खुद अप्पासाहब पत भी जहाज पर आ पहुचे और प्रेमसे मिले। दूसरे लोगोको जहाज पर चढनेकी अिजाजत मिले, अिसके पहले ही अेक पत्र-प्रतिनिधि बन्दरगाहके डॉक्टरके साथ जहाज पर आ गये और अपने धर्मके प्रति वफादारी बताकर अुन्होने मुझसे अेक सन्देश मागा। मैने अुन्हे नीचेका सन्देश लिख दिया, जिसे अुन्होने अुसी दिन कअी अखबारोमें छपा दिया था

> "मै अफ्रीकाके किनारे पर आज पहली ही बार पाव रख रहा हू। मै अिस भूमिको हिन्दुस्तान जितनी ही पवित्र मानता हू। अिस अफ्रीकामें ही दुनियाको महात्मा गाधीका पहला परिचय मिला। अिस अफ्रीका खडमें दुनियाके तीन खडोके मानव परस्पर सहकारके लिअे आकर अिकट्ठा हुअे है और अुस विश्वबन्धुत्वको सिद्ध करनेका प्रयत्न कर रहे है, जो मानव-जातिका अन्तिम भविष्य है। अैसी भूमि पर पैर रखते हुअे मै अुन अफ्रीकन लोगोको प्रणाम करता हू, जिनकी यह मातृभूमि है।"

अुतरते ही हम श्री नानजीभाअीके सुन्दर और विशाल भवनमें जा पहुचे। अुस दिन हमें पूरा आराम लेने दिया गया। शामको मोटरकी मददसे सारा शहर देख डाला—खास करके बन्दरका भाग, किलेका भाग, और बाजार वगैरा। समुद्र किनारे चलते-चलते दीप-स्तभ देखा, सरकारी

मकान देखे, प्रवालके कीडो द्वारा बनाये हुअे पोले पत्थर देखे। और दूसरे दिनसे शुरू होनेवाले भरपूर कार्यक्रमके लिअे तैयार हो गये।

पहली ही बार देखकर मै समझ गया कि मोम्बासा जैसे युरोपियनोका है, वैसे भारतीयोका भी है। अुन्होने यहा काफी चमकीले सार्वजनिक जीवनका विकास किया है। और अुनके आश्रयमें यहाके मूल निवासी अफ्रीकन लोग नये सस्कार ग्रहण करके नअी सभ्यताके अच्छे-बुरे सब तत्त्व ग्रहण कर रहे है।

मोम्बासा अेक टापू ही कहा जायगा। अुसके दोनो तरफ जो दो खाडिया है अुनमें से अुत्तर दिशाकी खाडीमे अरबस्तान और हिन्दुस्तानसे आनेवाले छोटे जहाज लगर डालते है। अिन जहाजोको यहा 'ढाऊ' कहते है। अिन जहाजोकी दक्षिण दिशाकी खाडीमे बडे-बडे स्टीमर आकर ठहरते है। अिस तरफके बन्दरका नाम किलिन्डिनी है। चाहे जिस ओरसे देखिये, समुद्रकी शोभा फीकी पडती ही नही। शहर नये और पुरानेका मिश्रण है।

मोम्बासा बहुत पुराना बन्दरगाह है। लगभग दो हजार वर्ष पहले लोगोने यह खोज निकाला था कि सालके अमुक महीनोमे हवा अीशान्य कोणसे नैऋत्य कोणकी तरफ बहती है और अुस मौसमके खतम होने बाद दूसरे कुछ खास महीनोमे अिससे अुलटी हवा चलती है। अितनी शोध हो जानेसे अरबस्तान और हिन्दुस्तानके बहादुर नाविक दिसम्बरसे अप्रैल तकके महीनोमे अपने-अपने देशसे सीधे अफ्रीकाके किनारे आने लगे, और यहाका व्यापार पूरा करके अगस्तके आसपास वे लौट जाते। अिस तरह यातायात शुरू होनेसे यहाका व्यापार खूब चमका। अिससे चीजो और सस्कारोके लेन-देनका अुत्तम साधन अुत्पन्न हुआ और दुनियाका अितिहास बदला। जहाजोके लिअे मोम्बासा अुत्तम बन्दरगाह है, अिसलिअे अुस पर अधिकार करनेके लिअे अरब और पुर्तगाली लोगोके बीच सदियो तक खूब झगडा चला। पुर्तगालवालोने सन् १६०० से पहले यहा अेक किला बनवाया और अुसका नाम फोर्ट जीसस रखा। अपना नाम अेक लडाअीमें काम आनेवाले किलेको

दिया गया जानकर शान्तिके पैगम्बर ओसाको कैसा लगा होगा ? आजकल अिस किलेसे जेलका काम लिया जाता है और झाझीवारके सुलतानका झडा आज भी अुस पर फहराता रहता है।

यहाके वहुतेरे मकान प्रवालके कीडो द्वारा वनाये हुअे पत्थरोके होते है। प्रथम विश्वयुद्धके दिनोमें अेक वार भारतसे कुछ जहाज यहा आये थे। अुनके पास काफी माल नही था, अिसलिअे जहाजोके लिअे जरूरी वोझके (वेलास्टके) रूपमें पत्थर भरकर लाये गये थे। अुन पत्थरोसे अेक मुहल्लेके अनेक मकानोकी नीव चुनी गयी थी। अिस तरह भारतके पत्थरो पर खडे मकान अफ्रीकामें देखकर मेरे मनमें अनेक विचार पैदा हुअे और चले गये। यदि सौ-अेक साल तक दुनियामें शान्ति वनी रही, तो मोम्वासाका वन्दरगाह भी हमारे वम्वअी जैसा ही विकास करेगा।

मोम्वासामें हम लोग ६ दिन रहे। अिस वीच हमारा खास काम वहाकी शिक्षण-सस्थायें देखनेका था। सारे अफ्रीकामें तीन प्रकारकी शिक्षण-सस्थायें तो है ही। गोरे अलग पढते है, अफ्रीकन लोग अलग पढते है और हिन्दुस्तानी अलग पढते है। हिन्दुस्तानियोमें धर्मभेद और जातिभेद तो होगे ही, होते है। मुसलमानोमे भी आगाखानी (अिस्माअिली), अिशनासरी, वगैरा भेद है। फिर, हिन्दुओमें लुहाणा, वीसा, ओसवाल, जैन, पाटीदार, वगैरा भेद होने ही चाहिये। यह हुअी गुजरातियोकी वात। अिसके अलावा, पजावियोकी सिक्ख शालाये भी है। अिन लोगोमें भी यो ही पडे हुअे दो पन्थ पाये जाते है।

और गोवाके किरिस्ताव लोग खुदको अलग मानकर अलग सस्था चलाते है, सो अलग। लडकियोको शिक्षा देनेवाली सस्थायें कम है, लेकिन है जरूर। और अुनमे भी जात-पातके भेद तो है ही। अिन सस्थाओमें जाति या धर्मके नाते शिक्षाका कोअी भेद नही है। प्रार्थना या धर्मोपदेशोमें अमुक आग्रह पाये जाते है। अिससे धार्मिकता वढनेके वजाय पथाभिमान और साम्प्रदायिकता ही वढी हुअी देखनेमें आती है।

'वे लोग अिस तरह मानते है, हम अुस तरह नही मानते, हमारी मान्यताये और विश्वास अुनसे अलग है, अिसलिअे हम अुनसे अलग है'—अितना बच्चोके मन पर बैठा दिया कि धर्मकी रक्षा हो गअी। अुस पर भी खूबी यह कि ये सब विश्वास पालनेके लिअे नही, माननेके लिअे ही होते है।

अैसी दलीलें की जाती है कि दूसरी जातिके लडके हमारी जातिके बच्चोके साथ पढें, तो हमारी जातिके बच्चोके सस्कार बिगड जायगे और वे भ्रष्ट हो जायगे। लेकिन वे सस्कार कौनसे है, यह कोअी निश्चित नही कह सकता। रहन-सहन तो सबकी अेकसी ही होती है। सच पूछा जाय तो ये सारे पथ, अुनकी जातिया और अुपजातिया अलग-अलग कुटुम्ब-समूह ही है। और सकुचित दृष्टि रख कर अपने-अपने समूहके स्वार्थ सिद्ध करनेके लिअे ही अुत्सुक रहते है। जो लोग आपसमें शादी-ब्याह कर सकते है, अुनकी अेक जाति होती है। अुस जातिके धनी लोग अिस बातका ध्यान रखते है कि अपने दान-धर्मका लाभ अपनी जातिवालोको ही मिले और अिसके लिअे धर्म, सस्कृति और अध्यात्मवादकी बाते सामने रखते है।

अिस जात-पातके भेदोके कारण वहा निरा हिन्दू जैसा कोअी रहा ही नही। केवल अनेक और भिन्न समाजोकी अेक खास सख्याको हिन्दू नामसे पुकारा जाता है। हम अभिमानके साथ यह कहते है कि विविधतामे अेकता हिन्दू धर्मका लक्षण है, लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहारमे विविधता पर ही सारा जोर लगाया जाता है। अगर कोअी अेकता टिकी रही हो, तो वह अेकसी अज्ञानता, अदूरदृष्टि और झक्कीपनमे ही दिखाअी देती है।

कुछ लोग जात-पातके बन्धनोको तोडकर केवल चार वर्ण रखनेकी हिमायत करते है। आज ये चार वर्ण नाममात्रके ही है—वे नाम नही, केवल विशेषण ही रह गये है। वर्णोकी आजकी कल्पना पर विचार करते हुअे अुनका अुपयोग केवल मनुष्यके जीवनको अेकागी बनानेके लिअे ही है। जब तक हम जाति और वर्ण दोनोको खतम

नही कर देते, तव तक हमारी मनुष्यता पूर्ण रूपसे प्रकट नही हो सकेगी। अनेक जगह मैंने लोगोसे कहा कि हमारे धर्मशास्त्रोके अनुसार सतयुगकी स्थिति अुत्तम होती है। अुस युगमे अेक ही अीश्वर और अेक ही वर्ण हो सकता है, अैसा हमारे धर्मशास्त्रोमें कहा गया है। लोग विगडे, युगका ह्रास हुआ, अिसलिअे लाचार होकर अनेक वर्णो और जात-पातके भेद पैदा करने पडे। लोगोके सामने मै राजा भर्तृहरिका यह वचन भी अुद्धृत करता था — 'ज्ञातिश्चेद् अनलेन किम्?' — जाति हो तो आगकी भला क्या जरूरत? यदि आपके पास जातिके झगडे हो, तो समाजको जलाकर खाक कर डालनेके लिअे दूसरी कोअी आग लानेकी जरूरत नही।

और अफ्रीका जैसे दूरके देशमें रहन-सहनके वारेमें जात-पातके वन्धन कोअी पालता भी नही। घर-घर अफ्रीकन नौकर रखे जाते है, जो कपडे धोते है, पानी भरते है, खाना वनाते है और वच्चोको सभालते है। अूचे वर्गके यानी खर्चीली रहन-सहनवाले लोगोके यहा कम ज्यादा मात्रामें अडो, मास और मदिराका व्यवहार होता है। अिसमें अपवाद भी है। लेकिन अपवादकी सख्याका पता न लगानेमें ही वुद्धिमानी है। यहा मेरा अुद्देश्य सामाजिक जीवन पर टीका करनेका नही, वल्कि यह शका अुठानेका ही है कि अैसा जीवन जीनेवाले लोग जात-पातके भेदो और अुनके अलग सस्कारोकी वात कैसे करते होगे।

अलग-अलग शिक्षण-सस्थाअे होनेसे पैसा व्यर्थ वरवाद होता है और शिक्षाका अुद्देश्य पूरा नही होता। शिक्षित लोगोमे शिक्षाके सस्कार कोअी देख नही सकता, लेकिन वडे-वडे सुन्दर मकान आसानीसे देखे जा सकते है। दानशूर लोग मकान वनवानेके लिअे खुले हाथो पैसा देते है। पूर्व अफ्रीकामें अनेक विद्यालयोकी अिमारतें देखकर अीर्ष्या-सी होती है। लेकिन अुन सुन्दर अिमारतोमे मिलनेवाली शिक्षाकी दीन दशा देखकर दु ख हुअे विना नही रहता। कुछ सस्थाओका प्रवन्ध

अच्छा है, लेकिन सब जगह अेक ही शिकायत सुननेमें आती है कि शिक्षक नही मिलते। और मिले हुअे टिकते नही। शिक्षकोका कहना है कि माता-पिता और सस्थाके व्यवस्थापक अितना ज्यादा हस्तक्षेप करते है कि बालकोमे किसी तरहका अनुशासन या लगन पैदा की ही नही जा सकती।

जहा-जहा अच्छे शिक्षक है, वहा शिक्षाका वातावरण तुरन्त मालूम होता है। लेकिन कुल मिलाकर यही कहना पडेगा कि पूर्व अफ्रीकामें हमारे लोगोकी शिक्षा अच्छी हालतमें नही है।

सच कहा जाय तो हमारे लोगोको सारे पूर्व अफ्रीकाके लिअे अेक स्वतत्र शिक्षा-मडल कायम करना चाहिये। अुसमें अुत्तम शिक्षाशास्त्री, अनुभवी समाजनेता और दूरदेशीसे सलाह देनेवाले राष्ट्रपुरुष ही हो। जात-पात या धर्मके भेदभावोको छोडकर सारी शिक्षण-सस्थायें अैसे शिक्षा-मडलके हाथमे सौप दी जानी चाहियें। हर सस्थाका बजट भले अलग रहे। किसी सस्थाका कुछ खास बातोके लिअे आग्रह हो, तो अुनकी रक्षा करनेका वचन भी अैसा मडल दे दे। लेकिन सारी सस्थाअें अेक मडलके मातहत काम करें, तो ही शिक्षाकी दशा सुधर सकती है। अैसे मडलकी प्रेरणा मिले, तो शिक्षक भी तेजस्वी बनेंगे और शिक्षा स्वावलम्बी होगी।

अेक बात देखकर मुझे विशेष सतोष हुआ। यहाकी हिन्दू और मुसलमान दोनो शिक्षा-सस्थाओमें शिक्षा गुजरातीके जरिये ही दी जाती है। सच पूछा जाय तो कच्छ, काठियावाड और गुजरातसे आनेवाले हिन्दू और मुसलमानोका अेक ही समाज है। व्यापारमें तो वे अेक दूसरेके साथ जुडे हुअे ह ही। सामाजिक दृष्टिसे भी कुछ हिन्दू-मुस्लिम परिवारोमें अैसा मीठा सम्बन्ध है, मानो वे अेक ही हो। हिन्दुस्तानके टुकडे हुअे अिसलिअे हमें भी यहा अपने समिश्र जीवनके टुकडे करने ही चाहिये, अैसा समझकर अनेक स्थानोमें हिन्दू-मुसलमानोके बीच वैरभाव पैदा किया गया है। अुसकी शुरुआत किसने की और किसने

बादमे जवाब दिया, अिस सवालको लेकर भी मतभेद और झगडे चलते है। क्योंकि दोनो पक्ष यह मानते है कि अैसा भेद पैदा करनेकी दरअसल कोअी जरूरत नही थी और अैसे भेदसे दोनोको बेहद नुकसान भी हो रहा है।

मैंने अुन लोगोको कअी जगह कहा कि मै भारतसे आया, तब मुझे कअी रोगोंके अिंजेक्शन लेने पडे थे। सचमुच हमारे लोग हिन्दुस्तानसे जब यहा आयें, तो अुन्हें वहाके हिन्दू-मुसलमान झगडारूपी रोगका अिंजेक्शन लेकर ही यहा आना चाहिये। कुछ जगहो पर जैसे सारा सामान धुअेंकी कोठरीमें रखकर 'डिसअिन्फेक्ट' किया जाता है, वैसे ही हिन्दुस्तानसे आनेवाले अखबार भी डिसअिन्फेक्ट करके ही पढने चाहियें। तभी हम अिस जहरसे बच सकेंगे।

हमारे लोगोने पूर्व अफ्रीकामें अपने राजनीतिक अधिकारोकी रक्षा करनेके लिअे जगह-जगह अिण्डियन अेसोसियेशनोकी स्थापना की। अब कुछ लोगोको अिस 'अिण्डियन' शब्दसे अेतराज होता है। यह अधापन अिस हद तक पहुच गया है कि पक्षाभिमानी लोगोकी जिद है कि जिस तरह हिन्दुस्तानके टुकडे पडे, अुसी तरह अिण्डियन अेसोसियेशनोके भी टुकडे होने चाहियें और अुनके फडका बटवारा होना चाहिये।

जिन शिक्षण-सस्थाओमें हिन्दू-मुस्लिम बच्चे अेक साथ पढते है, वहा कही-कही अिस बात पर जोर दिया जाता है कि शिक्षकोकी नियुक्तिमें हिन्दू-मुस्लिम अनुपातका ध्यान रखना चाहिये। व्यवस्था-मडलमें भी जातीय अनुपातका सवाल पैदा होता ही है। हर जगह दोनो समाजोके नेता निश्चित रूपसे यह बात कहते है कि "हमारे मनमें अभी तक अैसा भेदभाव था ही नही। सामनेवाले पक्षकी नियत बिगडी, अिसलिअे आत्मरक्षाकी खातिर हमें सावधान होना पडा और कडे अुपाय काममें लेने पडे।"

भाषाके बारेमें गुजरातीके कारण जो अेकता कायम है, वहा भी मुट्ठीभर पजाबी लोग राष्ट्रभाषाको आगे करके झगड़ा पैदा कर रहे है।

पजावी मुसलमान अुर्दूके हामी है, जव कि पजावके सिक्ख हिन्दीका आग्रह रखते है। सिक्ख लोगोने शिक्षा-विभागके साथ वातचीत करके गुरुमुखीको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करवाया है।

पूर्व अफ्रीकामें महाराष्ट्री लोग अितने कम है कि वे भापाके झगडेमें भाग नही ले सकते। वे सव अपने वच्चोको गुजराती स्कूलोमें भेजते है। अुन्हें गुजरातीके जरिये शिक्षा दी जाती है। और अिससे अुन्हें कोअी नुकसान नही हुआ है। मराठी भाषाके सस्कार कायम रखनेका काम वे घरोमे आसानीसे कर सकते है। पजावी लोग भी यदि अिसी नीति पर चले, तो यहाकी शिक्षाका सवाल आसानीसे हल हो जाय। यहाके लगभग ९० प्रतिशत हिन्दुस्तानी लोग गुजराती जानते ही है। अगर हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, पाकिस्तानकी अुर्दू है, तो पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी लोगोकी सुभीतेकी भापा गुजराती है। धर्मके नाम पर जिस तरह हमारे झगडे चलते है, अुसी तरह अगर हम भाषाके नाम पर भी अधे वनकर झगडे चलायेंगे, तो हमारा हिन्दुस्तानी समाज हर तरहसे छिन्नभिन्न हो जायगा।

प्रवास-वर्णनके आरभमें ही दो महीनोके अपने अनुभवोका निचोड मैंने दे दिया है, क्योकि हर जगह अुसकी थोडी-थोडी चर्चा करनेमें असुविधा होगी।

डॉ० कर्वे मोम्वासामें खास ध्यान खीचनेवाले सज्जन है। वे महर्षि अण्णासाहव कर्वेके सुपुत्र है। वातें करते समय वे पूरे व्यवहारवादी दिखाअी देते है, लेकिन वरसोसे वे पडचा क्लिनिक नामक अक अच्छेसे अच्छा अस्पताल नितान्त सेवाभावसे चला रहे है। पडचा परिवार समाज-सेवा और दानके लिअे मशहूर है। अुनके अुदार दानके कारण ही अिस अस्पतालको 'पडचा क्लिनिक' नाम दिया गया है। डॉ० कर्वे अिस सस्थाके सव कुछ है। महायुद्धके दिनोमें खलासियोके आरामगाहके लिअे वनाअी गअी अेक वडी अिमारत भाडे लेकर अुसमें यह अस्पताल चलाया जाता है। डॉ० कर्वेने वडे प्रेमसे पूरी सस्था हमें

तफसीलवार दिखाअी। अुनके मुहसे अुनके पिताके अनेक जीवन प्रसग सुननेमें मुझे बडा आनन्द आया। अण्णासाहबके जीवनकी कुछ विशेषतायें मैं डॉ० कर्वेसे ही जान सका। अण्णासाहब अेक बार यहा आये थे और बहुत दिनो तक अुन्होंने यहा आराम लिया था।

दूसरे अेक जानने जैसे डॉक्टर है डॉ० शेठ। अुनकी पत्नी मेरे बहुत पुराने मित्र और प्रकाशक काशीनाथ रघुनाथ मित्रकी पुत्री है।

श्री अप्पासाहब पतके मिलनसार स्वभावके कारण और अुनके अधिकारके कारण पूर्व अफ्रीकाके सभी हिन्दुस्तानी अुनकी ओर आकर्षित हुअे है। हमारा सारा कार्यक्रम अुन्हीके द्वारा बनाया होनेके कारण हर जगहके सारे प्रतिष्ठित लोग हमारे स्वागतमें भाग लेते थे। अच्छे-अच्छे स्थानीय कार्यकर्ता कौन है, यह हमें खोजना नही पडता था। कुछ लोगोसे मैने सुना कि "अप्पासाहब पत हिन्दू है, अुनसे हम किस लिअे मिलें?" अैसी भावना रखकर अिस देशके बहुतसे मुसलमान नेता शुरूमें अुनसे दूर-दूर रहते थे। बादमें जब अुन्हें मालूम हुआ कि अप्पासाहबके मनमें हिन्दू-मुस्लिमका कोअी भेद ही नही है, वे सबके है, सबको अपना समझते है, सभीकी सेवा करनेके लिअे तैयार रहते है और गाधीजी तथा जवाहरलाल नेहरूकी अुदार नीति अपनानेवाले अूचे दर्जेके राष्ट्रवादी है, तब वे धीरे-धीरे अप्पासाहबके प्रति आकर्षित होने लगे। आज वे जितने हिन्दुओंको प्रिय है, अुतने ही मुसलमानोको भी प्रिय है। अुन्हें अपने यहा मेहमानके तौर पर बुलानेमें हर आदमी बडे गौरवका अनुभव करता है। वे जब मुसाफिरीके लिअे निकलते है, तब कितने ही लोग अपनी-अपनी मोटरें लेकर अुनके साथ जाते है, ताकि अुनके थोडे सहवासका मौका मिले।

अिसका अेक मनोरजक अुदाहरण यहा देने जैसा है। अेक बार अप्पासाहब युगान्डामें मुसाफिरी कर रहे थे। अुस समय अुनके साथ अैसी ११ मोटरें अिकट्ठी हो गअी थी। यह देखकर वहाके अफ्रीकन लोग कहने लगे "युगान्डाके हमारे 'कबाका' (राजा) की जब सवारी

निकलती हैं, तब अुनके साथ चार-पाच मोटरें होती हैं। ये हिन्दुस्तानके कवाका बहुत बडे होने चाहियें। देखो, अिनकी सवारी ११ मोटरोंमें निकलती है।"

अप्पासाहब जैसे मीठे बोलनेवाले हैं, वैसे ही स्पष्ट बोलनेवाले भी हैं। और अिसलिअे पूर्व अफ्रीकाके तमाम गोरे लोगो पर अुनकी अच्छी छाप पडी हुअी है। हर चीज किस ढगमें रखनेमें लोगोको अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अिसकी कला अुनके पास है। अिसलिअे वे किसी भी आदमीसे सच्ची बात निकलवा लेनेमें सफल हो जाते हैं। अेक आदमीने अेक वाक्यमें अुनका शब्दचित्र दिया था — It is impossible for anyone to be mean in his presence.*

अप्पासाहब यानी अखड प्रवृत्तिके अवतार। यहा आये अुन्हे तीनेक साल हुअे होंगे। अितने अरसेमें अुन्होने ४० हजार मीलकी मुसाफिरी कर डाली है। अिस देशके छोटे बडे सभीको वे पहचानते हैं। अग्रेज अुनसे बडे खुश हैं। अफ्रीकन लोग अुनके प्रति आदरसे और बडी आशासे देखते हैं। और हिन्दुस्तानी लोग तो यह कहते थकते ही नही कि "अप्पासाहब आये और अिस देशमें हमारी अिज्जत बढी। अुन्होने हमे नअी दृष्टि प्रदान की है। अब यहाके लोग हिन्दुस्तानकी प्रतिष्ठा और महत्त्वको समझने लगे हैं। हमें अेक ही चिन्ता है कि जब हिन्दुस्तानकी सरकार अिन्हे यहासे कोअी बडे काम पर भेज देगी, तब हमारा क्या होगा!" अप्पासाहबको अपनी प्रतिष्ठाका जरा भी खयाल नही है। अुनकी नम्रता, अुनका मानव प्रेम और हरअेक आदमीकी खामियोको दरगुजर करनेकी अुनकी अुदारता अुन्हे लोगोके हृदयमें स्थायी स्थान दिलाती है। पुस्तकें पढकर जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, अुससे अधिक और गहरा ज्ञान वे अनेक तरहके अधिकारी पुरुषोके परिचयसे प्राप्त करते हैं। अुनकी दृष्टि तुरन्त मिलनेवाले

---

* अुनके सामने कोअी भी व्यक्ति नीचता कर ही नही सकता।

लाभ पर नही रहती। लेकिन मानवहितके शुभ कार्य पीढी दर पीढी कैसा असर करते रहते है, अिसका अुन्हें अच्छी तरह खयाल है। अिसलिअे कुशल और दूरदर्शी किसानकी तरह वे भाति-भातिके महावृक्षोंके बीज बोते जाते है और सावधानीसे अुन्हें सीचते भी है।

मोम्बासाकी अेक बहुत छोटी और मामूली-सी मालूम होनेवाली शिक्षण-सस्थाकी तरफ मेरा खास ध्यान गया। पूर्व अफ्रीकामें अिस समय शिक्षाकी अितनी कमी है कि अुसका रेशनिंग चलता है। स्कूलोमें हफ्तेमें तीन दिन अमुक विद्यार्थी पढते है और दूसरे तीन दिन दूसरे विद्यार्थी पढते है। सुबह अमुक विद्यार्थियोके वर्ग चलते है और शामको दूसरे विद्यार्थियोकी बारी आती है। अैसा कअी जगह करना पडता है। अैसी हालतमें जो विद्यार्थी लगातार दो बार नापास हो जाय, अुन्हे स्कूलसे निकाल दिया जाय, तो अिसमें आश्चर्यकी क्या बात है?

अैसे अभागे विद्यार्थियोको अिकट्ठे करके अुन्हें जितनी बने अुतनी शिक्षा देनेके लिअे डॉ० शेठके प्रयत्नसे अेक सस्था खोली गअी है। अिसमें हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोके साथ तीन अफ्रीकन विद्यार्थी भी पढते है। पिछडे हुअे, जड और पस्त-हिम्मत बने विद्यार्थियोमें भी शिक्षा ग्रहण करनेका अुत्साह और तेज होता है। साधारण शिक्षण-सस्थाओमें अुन्हे सफलता नही मिलती, अिसका दोष बहुत बार अुनका नही, बल्कि परिस्थिति और शिक्षा-पद्धतिका होता है। सब कोअी जानते है कि अिटलीके अैसे ही लडके लडकियोको पढाते-पढाते श्रीमती मॉन्टेसोरीने अपनी विश्व-विख्यात शिक्षा-पद्धतिका विकास किया था। मोम्बासाका यह 'अिंडियन रिपब्लिक स्कूल' समाजके सामने यह सिद्ध करके दिखा सकता है कि समाज द्वारा परित्यक्त मानवोमें भी अुत्तम तत्त्व हो सकते है।

क्लिनिकवाले डॉ० कर्वेने दूसरी अेक स्वावलम्बी सहकारी प्रवृत्ति शुरू की है। गरीब हिन्दुस्तानियोके लिअे अच्छे-अच्छे मकान बनवाने और सस्ते किराये पर देनेकी वह प्रवृत्ति है। अिस तरह कितने ही गरीब परिवार

स्वच्छ और अिज्जतकी जिन्दगी विता सके है। हमने वे मकान देखे है। जो स्वच्छता और प्रसन्नता मकानोके कमरोमें दिखाओी देती थी, वही कमरोमें रहनेवाली वहनो और वच्चोके चेहरो पर भी हमें दिखाओी दी। स्वच्छ और सुन्दर मकान आत्मगौरव और स्वाभिमानका वातावरण पैदा करते है। नीरोग शरीरमें नीरोग मन रहता है, अिस कहावतको व्यापक वनाकर हम कह सकते है कि सुन्दर मकान हो, तो भीतर रहनेवाले मनुष्योके मन और जीवन भी वहुत हद तक सुन्दर वन सकते हैं।

मोम्वासामें दो-तीन लायब्रेरिया भी हमें पसन्द आने जैसी थी। अेक पुस्तकालयमें पारसियोकी अवेस्तागाथा पर हालमें ही लिखी हुअी कवि खवरदारकी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक भी देखनेको मिली।

नम्रभावसे सात्विक वातावरण पैदा करनेवाले और गाधीजीके विचारोका थियोसाफीके साथ समन्वय करके लोगोके सामने रखनेवाले श्री मास्टरका व्यक्तित्व मोम्वासामें सहज ही लोगोको आकर्षित करता है। अुनके धार्मिक वर्गोका असर आसपासके समाज पर अच्छा पडा है।

जात-पात आदि किसी प्रकारका भेद रखे विना समाजकी सेवा करनेवाली सोशियल सर्विस लीग यहाकी पुरानी सस्था है। मोम्वासाके अेक धनी अरवी व्यापारीने सस्थाकी मदद करके अुसे अपने रहनेका मकान दे दिया है।

मोम्वासा पहुचते ही यहाकी जिस दूसरी प्रवृत्तिकी तरफ मेरा ध्यान गया, वह है वालमन्दिरोकी स्थापना। मैंने सुना है कि स्व० गिजुभाअी वधेकाके लगभग ४० विद्यार्थी अफ्रीकामें जगह जगह वालशिक्षाका महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं। अिन लोगोको शायद यह पता न हो कि स्व० गिजुभाअीने अपना शिक्षाका मिशन पहचाना, अुसके पहले वे पूर्व अफ्रीकामें वकालत करने आये थे और स्वाहिली भाषा

भी होते थे। यहाँ अुन्हें सबसे भाया कि बालकोंको पढ़ाने और अुनके व्यक्तित्वका विकास करनेमें ही अपने जीवनकी सार्थकता है।

गुजरात विद्यापीठके अेक पुराने विद्यार्थी श्री सोमाभाओी भावसार और अुनकी पत्नी सौ. विमलाबहन बाल-शिक्षामें ओतप्रोत हो गये हैं। गिजुभाओीकी शैलीमें अुन्होंने 'अमर गांधी' नामक अेक छोटीसी पुस्तिका लिखी है। अिस पुस्तिकाका स्वाहिली और लुगान्डी भाषामें अनुवाद हो जानेसे वह अमर हो गयी है।

आगाखानी बालमन्दिर भी बड़े सुन्दर ढंगसे चलता है। वहाँके बालकोंकी टीपटाप और प्रसन्नता खास तौर पर ध्यान खींचनेवाली है। आगाखानी समुदाय पर मुझे आगे चलकर लिखना है, अिसलिअे वहाँके टेक्निकल कॉलेज जैसी महत्त्वकी शिक्षण-संस्थाका भी यहाँ अुल्लेख नहीं करूँगा।

मुसलमान कार्यकर्ताओंमें विशेष आकर्षक थे श्री कादरभाओी। अनेक तरहके कामोंमें भाग लेते-लेते वे बूढ़े हो गये हैं। अेक समय अुन्हें श्री आगाखानकी बड़ी मदद थी। संस्था चलानेकी कलामें कादरभाओी अपना सानी नहीं रखते। अुनका अुत्साह आज भी बूढ़ा नहीं हुआ है।

अफ्रीकन लोगोंसे मिलनेके लिअे मैं पहलेसे ही बड़ा अुत्सुक था, लेकिन वे कहीं दिखाओी नहीं पड़ते थे। युनाअिटेड केनिया क्लबमें अुन्हें देखनेका मौका मिला। वहाँ गोरे भी आते थे और अफ्रीकन लोग भी थे। और बातोंके साथ-साथ मैंने अुनसे वर्णव्यवस्थाके प्रश्न— 'रेशियल अेडजस्टमेंट'—के बारेमें दो शब्द कहे, जिसका अुन पर बहुत अच्छा असर पड़ा।

मैंने कहा. "आर्य, अनार्य, द्राविड, आदिवासी, शक, हूण, चीनी, पारसी, पठान, मुगल, पोर्तुगीज, फ्रेन्च, यहूदी, अंग्रेज, वगैरा अनेक जातियाँ भारतमें आकर बसी हैं। मानो सारे मानववंशोंको भारतमें अिकट्ठे करनेकी अीश्वरकी योजना ही हो। ये सब लोग भारतमें

मिलकर सहयोगसे कैसे रहे, अिसके अनेक प्रयोग हमने हजारो वर्षोसे अपने देशमे किये है। अिस सम्बन्धमें हमने कुछ गभीर भूले भी की है, जिनके लिअे हमें कुछ कम नुकसान नही अुठाना पडा। हमने ढेड-भगियोके मोहल्ले खडे किये। अूच-नीचका भाव पैदा किया और वढाया। वहिष्कारका शस्त्र आजमाया और अतमें देखा कि कभी-कभी मूल रोगसे भी आजमाया हुआ अिलाज ही अधिक घातक सिद्ध होता है। परतु हमारे ऋपि-मुनियोने शुरूमें हमें अेक सजीवन मत्र दिया था कि कितने ही प्रयोग करो, परन्तु हिंसाका आश्रय न लो। हमारी आस्तिकताने सर्प-सत्र जैसे घातक प्रयोग तुरन्त रोक दिये। आज हमारे यहा चमडीके भेदके कारण अलग जातिया कायम नही की जाती। स्वतत्र होते ही हमने अस्पृश्यताको दफना दिया। हरिजनोके लिअे हमारे कुअे और भोजनालय, हमारी पाठशालाअें और हमारे मदिर पूरी तरह खुल गये है। हमारे अिस अनुभवसे अफ्रीकामे वसनेवाले तीनो महाद्वीपोके लोग वहुत कुछ सीख सकते है।"

गोवाके अीसाअी लोग सवसे अलग रहते है। अुनके यहा जाकर भी मैंने अुन्हे समझाया कि 'आप अपनी मातृभाषा कोकणीकी अुपेक्षा करते है, यह शाप आपको सता रहा है। आपको तमाम हिन्दुस्तानियोके साथ मिल जाना चाहिये।' गोवाका राजनैतिक सवाल मैंने जानवूझकर नही छेडा। क्योकि मै जानता था कि अुन लोगोमें तीव्र मतभेद है। कुछ लोग पुर्तगालका जुआ अुतार फेंककर भारतीय सघमें मिलना चाहते है और कुछ लोग पुर्तगालके साथका सम्बन्ध कायम रखना चाहते है और अपनी सस्कृति अलग होनेका दावा करते है।

विदेशोमे रहनेवाली हमारी वहनें सगठित होकर काम न करें, तो वह अेक आश्चर्य ही माना जायगा। क्योकि अिन दिनो स्वदेशमें भी वहनोने जात-पात और धर्मका भेद मिटाकर शुद्ध राष्ट्रीय वृत्ति और मानवताकी दृष्टिसे अनेक संगठन करके दिखा दिये है। अधिकारोके वटवारेके लोभमे फसकर जव हिन्दू-मुसलमान

अेक दूसरेके दुश्मन बननेको तैयार हो गये थे, तब भी दोनों जातियोंकी बहनोंने बड़ी अिन्सानियत दिखाअी थी। मोम्बासामें स्त्रियोंकी अेक अच्छीसी संस्था चल रही है और श्रीमती सोबी अुसका सुन्दर नेतृत्व कर रही हैं। यहाकी बहनोंके सामने मैंने अपना संदेश पहले पहल सुनाया कि बहनोंको मानवताके विकासकी दृष्टिसे अफ्रीकी स्त्रियों और बच्चोंको अपनाना चाहिये और अुनकी भी सेवा करनी चाहिये। अैसे नये कदम अुठानेमें बहनोंको पहले पहले संकोच होना स्वाभाविक है। परन्तु बहनोंके प्रधानतया हृदयधर्मी होनेके कारण वे अैसे कदम स्वाभाविक तौर पर बर्दाश्त कर सकती हैं और अिस कामको आगे बढानेमें अुन्हें कठिनाअी नहीं आती। जो बहनें शादी होते ही पतिके घरके अनजान लोगोंको अपना सकती हैं, अुनके लिअे अिस देशकी स्त्रियों और बच्चोंको अपनानेकी बात मुश्किल न होनी चाहिये।

अिस तरह मोम्बासामें जो दिन बीते बड़े कीमती निकले।

थोड़ेमें कहा जा सकता है कि पूर्वी अफ्रीकाके अिस प्रवेशद्वारमें ही यहाके ज्यादातर सवालों और अुनके पीछे काम करनेवाली शक्तियोंका दर्शन हो गया और अिसीलिअे खुली आंखों और जागरूक मनके साथ हम सारी यात्रा कर सके।

५

नैरोबी

नैरोबी केवल केनियाकी ही नही, बल्कि अेक तरहसे सारी ब्रिटिश पूर्व अफ्रीकाकी राजधानी मानी जाती है।

मोम्बासा, टागा, झाझीबार, दारेसलाम और लिंडी वगैरा स्थान समुद्रके किनारे होनेके कारण वहाकी हवा कुछ गरम रहती है। गोरे लोगोको यह माफिक नही आती। हमारे यहाके लोग भी ठडे प्रदेशमें थके बिना जितना काम कर सकते है, अुतना गरम प्रदेशमें नही कर सकते। अफ्रीकामें जहा-जहा अच्छी ठडी हवा है, वही गोरे लोगोने कैसे भी अुपाय करके अुस जमीनको अपने कब्जेमें कर लिया है। हिन्दुस्तानमें भी महाबलेश्वर, शिलाग, शिमला, दार्जिलिंग और चेरापूजी, वगैरा स्थान अग्रेजोने कैसी युक्ति और चालबाजीसे अधिकारमें लिये थे, अिसका अितिहास भुलाया नही जा सकता।

अफ्रीकी महाद्वीपमें बसे हुअे गोरोका केनिया मानो स्कॉटलैंड है। यहाके गोरोके घमडके अुदाहरण अितने प्रसिद्ध है कि अुसकी बात यहा फिर छेडनेकी जरूरत नही। यहाके अफ्रीकी निवासियोको भी यह ठडा प्रदेश बहुत प्रिय होनेके कारण वे अग्रेजोको अिस कार्रवाअी और लूटके लिअे कभी माफ नही कर सकते। अफ्रीकामें सारी सत्ता ज्यो त्यो करके गोरोंके ही हाथमें रखनी चाहिये, अिस बारेमें अधिकसे अधिक प्रयत्न करनेवाले गोरे अिस केनियामें ही है। और अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके मलानकी नीतिके प्रति अिन्हें बडी सहानुभूति है।

मैंने देखा कि यहा जमीन लेकर बसे हुअे गोरोंके जबरदस्त असर तले होने पर भी केनियाके गोरे राजकर्मचारी अितने कट्टर नही है। अुनमें चाहे समझदारी अधिक हो या अिन्सानियत, वे कुछ और

ही ढगसे बोलते हैं। अंग्रेजोंके राष्ट्रीय नेता भी समय-समय पर केनियाके गोरे जमींदारोंसे कहते हैं कि पिछले महायुद्धके बादकी नअी दुनियामें अुनका घमंड अब चल नहीं सकता। फिर भी हम यह बात नहीं भूल सकते कि केनियाके गोरे जमींदार गैरमामूली ताकत और असर दोनों रखते हैं।

अंग्रेज जहां जाते हैं वहां तमाम जमीन सुघड़ और सुंदर बनाते ही हैं। मकान, रास्ते, पानीकी सहूलियत, बिजली, फलफूलोंके बगीचे, आदि तमाम सुविधाअें वे बड़ी लगनसे पैदा करते हैं और जीवनको हर प्रकार सुखकर बनाते हैं।

हमारे यहांके लोगोंको अिस ढगसे रहनेकी आदत नहीं होती। अच्छे-अच्छे मालदार लोग भी कुछ रुपयेके जोर और प्रतिष्ठाके लोभसे अैसी ही सुविधाअें और अैशआरामके साधन पैदा तो करते हैं, परंतु अिस व्यवस्थाको वे कायमी नहीं रख सकते। अैसी स्थितिमें अगर अंग्रेज हमारे साथ रहें, तो कौनसी नीति अपनायें? म्युनिसिपैलिटीके कड़े कानून बनाकर अदालतकी मददसे अुन पर अमल करायें? या यह कहकर कि 'हमें अलग रहने दो, तुम्हें जैसी पसंद हो वैसी व्यवस्था अपने हिन्दुस्तानी विभागमें कर लो,' आबादीके दो हिस्से कर लें? जिन लोगोंमें वर्णका अभिमान नहीं होता, वे पहली नीति पसंद करते हैं और अुससे पैदा होनेवाली तमाम मुश्किलें और कड़वाहट बर्दाश्त कर लेते हैं। जब कि वे लोग, जिनके दिलोंमें भारतीयों और अफ्रीकी लोगोंके प्रति प्रबल तिरस्कार होता है और जो रोज अुठकर नअी-नअी कड़वाहट मोल लेनेमें विश्वास नहीं रखते, दूसरी नीति पसंद करते हैं। और आपसमें बातें करते हुअे हमेशा कहते हैं — 'Let these wretches stew themselves in their own juice' वर्णद्वेष अेक बार जगा कि रेलवेके अलग डिब्बे और ट्रामकी अलग बैठकें वगैरा व्यवस्था तक वह पहुंच ही जायगा।

अेक वात हमें स्वीकार करनी चाहिये कि हमारे यहाके लोग स्वच्छता और शुद्धिके नाम पर पानी वेहद काममें लेते है और जहा तहा कीचड कर डालते है और नगे पैर चलनेके कारण जहा तहा गदगी फैलाते है। हमारे भोजनालय, हमारे पाखाने और हमारे नहानेके कमरे जैसे होने चाहियें वैसे नही होते। वच्चोंकी किस तरह रक्षा की जाय और अुन्हें कैसे स्वच्छ रखा जाय, अुन्हें टट्टी कहा फिराया जाय, आदि वातोमे मध्यम वर्गकी स्त्रिया भी वडी लापरवाह होती है। समाजके नेता अैसी आदतोके लिअे अपने लोगोकी खानगी तौर पर वहुत निन्दा करते है। परतु लोगोके वीचमे जाकर अुन्हें धीरजसे समझानेका काम कोअी नही करता। अितना कहना काफी नही कि फला रिवाज वुरा है। पुरानी आदतोके वजाय अच्छी कौनसी आदते डालनी चाहियें और नये ढगसे सुघडता कायम रखनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये और कौन कौनसी सुविधाअें कायम करनी चाहिये, यह सव अुन्हे व्यौरेके साथ और कअी दफा समझाना चाहिये। अितना ही नही, वल्कि अच्छे अुदाहरणोका पदार्थपाठ भी अुनके सामने पेश करना चाहिये। मनुष्य सुवह अुठकर रास्ते पर दतून करे और जोर-जोरसे आवाज करके गला साफ करे, तो यह समझानेमें हरगिज कठिनाअी नही आ सकती कि यह रिवाज असामाजिक है।

अैसे तमाम जरूरी सुधार सारी जातिमें जारी करनेके वजाय हमारे यहाके लोगोने अग्रेजोकी पोशाक, अुनके खानपानके तरीके और अुनकी सामाजिक सभ्यताकी भाषा अपना ली। परिणामस्वरूप हम लोगोमे अग्रेजोका अनुकरण करनेवाली अेक नअी जाति अुत्पन्न हो गअी है और रुपये-पैसेसे समर्थ होनेके कारण वाकीके समाजसे वह अलग रह सकती है। अिसमें से अनेक सामाजिक और आन्तर-सामाजिक पेचीदगिया पैदा हो गअी है, जिनका हल किसीने अभी तक नही ढूढा।

हमने ता० २१ की शामको मोम्वासा छोडा। रातको गाडीमे डाअिनिग कारमें हमने भोजन किया। गोरोके वीचमें खाना खाते

हुअे हमें कोअी मुश्किल पेश नहीं आयी। हममें से ज्यादातर शाका-हारी थे, परन्तु अुनके बारेमें पहलेसे ही बाकायदा सूचनायें दे दी गयी थीं।

सवेरा होनेसे पहले हम केनियाकी अूंची भूमि (हाअिलैंड्स) पर पहुंच गये थे। ठंडी हवा मीठी चुटकियां ले रही थी और आसपासका अुपजाअू प्रदेश आंखोंको संतोष दे रहा था। मोम्बासा और नैरोबीके बीच अेक भी बड़ा स्टेशन नहीं है। हमने जब 'आथी' नदी पार की, तब मुझे आश्चर्य हुआ कि अितने छोटेसे प्रवाहको नदी कैसे कहते हैं। मैं तो अुसे प्रवाह या नाला कहते हुअे भी संकोच करूं।

नैरोबी पहुंचनेसे पहले ही हमारी ट्रेन वहांके अभयारण्य — नेशनल पार्क — में से गुजरी। अपने डिब्बेकी खिड़कीमें से हम कितने ही जानवरोंको देख सके। अप्पा साहबकी दृष्टि बहुत तेज होनेके कारण वे कितनी ही दूरके जानवरोंको झट देख लेते और हमें बताते। अिनमें 'अेन्टी अेयर क्राफ्ट गन' जैसी लम्बी गर्दनवाले जिराफ, अूंट या हंससे अुधार ली हुअी गर्दनवाले अुड़ना भूले हुअे शुतुर्मुर्ग, अपने सींगोंका अभिमान रखनेवाले हिरण आदि अनेक जानवर हमने देखे।

स्टेशन पर पहुंचते ही बरसातने हमारा शुभ स्वागत किया। हमें श्री तात्यासाहब अिनामदारके यहां ठहरना था। और वे खुद हमारे साथ थे अिसलिअे अुनकी पत्नी शकुन्तलाबहन और अुनकी लड़कियां हमें लेने स्टेशन पर आअी थीं। चि॰ सरोजका अेक पारसी बालमित्र श्री जाल कन्ट्राक्टर अुससे मिलनेके लिअे कभीसे तरस रहा था। वह भी स्टेशन पर आया। स्थानीय नेता तो सभी थे। स्टेशनकी जान-पहचान कितनी ही जरूरी हो, परन्तु अुपयोगी साबित नहीं होती। सौ पचास लोगोंके नाम जल्दी-जल्दी बोले हुअे सुने जायं और अुनके चेहरोंके क्षणिक चित्र अेकके बाद अेक आंखों द्वारा लिये जायं, तो यह सब

किसी कामका नही होता। यह परिचय मेहमानोके सिवाय और सबके लिअे ही बड़े कामका होता है।

नैरोबीमे अिस बार हम कुल ७ दिन रहे। अिन सात दिनोमें कार्यक्रम अितना अधिक भरा हुआ था कि अुसे सारा याद रखना आसान नही। मन पर जो सस्कार पडे, अुन सबकी दिमागमें मक्खनके जैसी मुलायम खिचडी बन गअी। ये सस्मरण बहुत स्वादिष्ट तो है, परन्तु अुन्हें अलग-अलग करना असभव है।

राजधानीके अिस शहरमें बहुतसे युरोपियन मिले। यहाके गवर्नर सर फिलिप मिचेल होशियार आदमी है। साम्राज्यके प्रखर राजनीतिज्ञोमें अिनकी गिनती होती है। परन्तु अिस समय वे छुट्टी पर गये हुअे थे। अुनका काम अुनके चीफ सेक्रेटरी सभालते थे। अुनकी मुलाकातके दौरानमें जो खास बात मेरे जाननेमें आअी, वह अफ्रीकाकी प्राकृतिक परेशानीके बारेमें थी। अुन्होने कहा "अफ्रीकाकी भूमि बहुत अुपजाअू है, परन्तु यहा पानीकी कमी सदा भुगतनी पडती है। यह कमी न होती तो यहा आजसे कअी गुनी आबादी रह सकती थी।" मैंने कहा "आपके यहा बरसात कम नही पडती। अिस बरसातका पानी जगह-जगह तालावोमें रोक रखा जाय, तो बहुतसी दिक्कतें दूर हो जाय। हिन्दुस्तानके पुराने राजा यही करते थे। नहरें खोदनेके बजाय अुन्होने तालाब बनवाने पर अधिक ध्यान दिया था।" मेरी अिस सूचनाका विचार करते हुअे अुन्होने जो कठिनाअिया बताअी, अुन्हें मैं बराबर सुन न सका। वे साहब बहुत ही बारीक आवाजसे बोलते थे और मेरी कानकी मुश्किल छोटी-मोटी नही है। बहुत वर्षोसे दाहिने कानसे सुन ही नही सकता और बाये कानसे जरा कम सुनाअी देता है। परिणाम-स्वरूप जहा बहुत लोग अिकट्ठे हुअे हो, वहा मुझे खूब सभलकर बैठना पडता है। मेरी यह चिन्ता रहती है कि दायी तरफ कोअी महत्त्वका मनुष्य न बैठे, और सभा या भोजके व्यवस्थापक खास महत्त्वके लोगोको मेरी दायी तरफ बिठाते है। परिणामस्वरूप मुझे

कमरको टेढी करके वाया कान आगे लाना पडता है। अिससे वायी तरफ वैठनेवाले मनुष्यका तिरस्कार-सा हो जाता है। कोअी परिचित हो तव तो चिन्ता नही होती, अन्यथा वडी परेशानी पैदा हो जाती है। हर मौके पर कितने लोगोको समझाने वैठू कि सुननेको कान मेरे पास अेक ही है। वातचीतमें भी व्याख्यानकी तरह जोर-जोरसे वोलनेवाले लोग दूसरे लोगोको भले ही अटपटे मालूम होते हो, मेरे लिअे अुनका 'दाक्षिण्य' वडा सुविधाजनक होता है।

अेक अधिकारीने—वहुत करके वे यहाके न्यायाधीश होगे—मध्य अेशिया और अफगानिस्तानकी तरफके अपने अनुभव कहे। अेक वार वहाके चोरोने अुन्हें लूटा। वे अकेले और सामने वहुतसे डाकू थे, अिसलिअे अिन्होने 'गाधीजीकी अहिंसक नीति' अपनाअी। अुन्होंने चोरोसे कहा , "मेरा सव कुछ ले लो, मगर मुझे सताओ मत।" वादमें अुन्होने यह और कहा "मुझे अपनी पतलून तो काममें लेने दोगे न?" चोरोने मजूर किया। फिर कहने लगे "और मेरा टोप मेरे सिर पर न हो तो मुझे चक्कर आ जाय। तेज धूपसे मै वीमार पड जाअू। अिसलिअे मर्जी हो तो वह भी मुझे दे दो।" वह भी तय हो जानेके वाद चोर साहवको साथ ले गये। अिनकी सज्जनतासे वे अितने खुश हुअे कि अुन्होने अिस गोरे मेहमानको अपने घर खानेके लिअे रख लिया और दूसरे दिन अिन्हें अपने प्रदेशकी सीमा तक सही सलामत पहुचा दिया।

जिस गोरे अफसरके हाथमें हिन्दुस्तानी लोगोकी शिक्षा है, अुसके साथ मेरी वहुत वातें हुअी। वर्धा शिक्षाके स्वरूपके वारेमें हमने तफसीलसे वाते की। अप्पासाहवकी लगनके कारण कअी वार गोरो, थोडेसे अफ्रीकियो और हमारे भारतीयोका मिलाजुला श्रोतृमडल हमें मिलता था। अफ्रीकाकी भूमि पर तीनो महाद्वीपोके सहयोगके विषयमें जव मै वोलता, तव तीनोको मेरी वात स्वागतके योग्य प्रतीत होती। परन्तु यह सहयोग असलमें तभी सिद्ध होगा, जव गोरे लोकशासक होनेका अपना

अभिमान छोड दें और गौर वर्णकी महत्ता भूल जाय, हिन्दुस्तानके लोग अिस सहयोगके लिअे तभी योग्य होंगे, जब वे अपनेको केवल भारतके नही परन्तु अफ्रीकाके भी स्थायी निवासी मानें और अफ्रीकी लोगोसे मित्रता पैदा करे तथा अफ्रीकी लोग आलस्य छोडकर शिक्षामें तेजीसे आगे वढें और अहिसक शक्ति पैदा करके दिखा दे।

तीनो जातियोके सहयोगकी सभावना वताते हुअे मै कहता था कि अग्रेज राष्ट्रने अिस दिशामे पहला कदम अुठाया है। हिन्दुस्तानकी पूरी आजादी स्वीकार करनेके वाद ब्रिटिश लोगोने हिन्दुस्तानको (और अिसी तरह लका और पाकिस्तानको भी) अपने कॉमनवेल्थमें समान हकोके साथ अेक सदस्यके रूपमें शरीक होनेका निमंत्रण दिया। गाधीजीने हमारे देशको सलाह दी कि यह निमंत्रण स्वीकार करने लायक है। अव तक ब्रिटिश साम्राज्य या ब्रिटिश कॉमनवेल्थ सिर्फ ब्रिटिश लोगोंका — गोरे लोगोका — अेक कौटुम्बिक साझा था। कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, न्यूजीलैंड, और ऑस्ट्रेलिया सव जगह ब्रिटिश लोगोका राज्य था। भिन्न जाति, भिन्न वर्ण, भिन्न देश और भिन्न सस्कृतिवाले लका, पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोको अपने कॉमनवेल्थमें समान अधिकार देकर अुन्होने अेक वडा कदम अुठाया है, जिसकी मिसाल आजकलके अितिहासमे कही भी नही मिलती। अव कॉमनवेल्थका वधन नस्ल या वशका वधन नही, परन्तु अेक प्रजासत्ताक आदर्शका वधन है।

गोरी जातिका यह कदम आखिरी नही, परन्तु नव-सगठनका पहला कदम है। समय पाकर अिसमें नअी जातियो और नये राज्योके शामिल होनेकी गुजाअिश है। अैसा सगठन हिन्दुस्तानके अितिहासके अनुकूल है। अव जव हम स्वेच्छापूर्वक काफी विचार करके अिस कॉमनवेल्थमें शरीक हुअे हैं, तव हमे अिस कॉमनवेल्थके वफादार रहना चाहिये। वफादारीका यह अर्थ नही है कि अिसके स्याह सफेद सभी कामोमे हम अिसका साथ दे। वफादारीका सच्चा अर्थ यह है कि अिस कॉमनवेल्थके

प्रति हम सदा मित्रभाव रखें, सच्चे अर्थमें और सच्चे रास्तेसे अुसकी अुन्नति चाहें और अच्छे कामोंमें अुसे मदद दें और अुनकी मदद लें।

शासकोंके साथ सद्भावपूर्ण बर्ताव रखना जैसे हमारा फर्ज है, वैसे ही और अुससे भी अधिक यहाके मूल निवासी अफ्रीकी लोगोंके साथ प्रेमपूर्वक सेवकके तौर पर बर्ताव करना हमारा कर्तव्य है। हम अिन लोगोंकी भाषा घरके नौकरोंको हुक्म देने भरको ही सीखते हैं, यह काफी नहीं। हमें अुनकी भाषा अितनी सीखनी चाहिये कि हम अुनके दु:ख-सुखमें शरीक हो सकें, अुनके दु:खमें अुन्हें दिलासा दे सकें, अुनके सुखमें अुन्हें बढ़ावा दे सकें और आत्मोन्नतिके अुनके सारे प्रयत्नोंमें हम अुनके मददगार बन सकें। शिक्षाके मामलेमें हमें हर तरह अुनका मददगार बनना चाहिये। हमारी दानवृत्तिको अब हिन्दुस्तानकी ओर न बहाकर अुस प्रवाहको अपने बच्चों और अिस देशके बच्चोंकी अर्थात् अफ्रीकियोंकी शिक्षाकी ओर मोड़ना चाहिये, जिससे हमारा जीवन यहाके लोगोंको आशीर्वाद स्वरूप लगे और हमारी जड़ें यहाकी भूमिमें मजबूत हो जाय। हम न यहाके आदिम भूमिजन हैं और न यहाके शासक हैं। हम तो सेवाके द्वारा ही यहाके निवासी होनेका अपना अधिकार साबित कर सकते हैं। न सख्याके बल पर और न सत्ताके बल पर, परन्तु अपनी अुपयोगिताके बल पर ही हम अपनी शक्ति पैदा कर सकते हैं।

स्वतंत्र हिन्दुस्तानने मित्रताकी निशानीके तौर पर, और पड़ोसी धर्मके अेक अगके रूपमें, अफ्रीकी विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानमें जाकर पढ़नेके लिअे चार छात्रवृत्तिया दी है। अिसी तरह यहा रहनेवाले भारतीयोंने और बारह छात्रवृत्तिया अफ्रीकियोंके लिअे दी हैं। अफ्रीकी लोग जानते हैं कि यह सब श्री अप्पासाहबके प्रयत्नसे हुआ है। अब जो खादी-विद्या सीखना चाहते हों, अुनके लिअे वर्धाके चरखा सघने ६ छात्रवृत्तिया देनेका निश्चय किया है। और हिन्दुस्तान जाकर जो राष्ट्रभाषा सीखना चाहें, अुनके लिअे हिन्दुस्तानी प्रचार

सभाकी तरफसे तीन छात्रवृत्तिया देनेकी मैंने घोषणा की। अैसी सक्रिय कार्रवाअियोके कारण ही यहाके अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानके प्रति सद्भाव और आशाकी दृष्टिसे देखने लगे है।

कुछ अग्रेज यहा अफ्रीकी लोगोको अब समझा रहे है कि, 'ये हिन्दुस्तानी लोग तुमसे मनमाना नफा लेते है और यह सारा नफा स्वदेश ले जाते है। ये जोकें जब तक है तब तक तुम सिर अूचा नही कर सकोगे।' यह बात सच है कि यहाके हमारे लोग कमानेके लिअे ही यहा आये थे, अिसलिअे जितना नफा खीचा जा सकता हो अुतना खीचते थे। जैसे अग्रेज हिन्दुस्तानका रुपया विलायत ले जाते थे, अुसी तरह, भले ही थोडी मात्रामें सही, हमारे यहाके लोग यहाका रुपया स्वदेश ले जाते थे, यह बात भी सच है। हर साल हिन्दुस्तानसे कितने ही साधु और वहाकी सस्थाओके प्रतिनिधि यहासे मदद ले गये है।

परतु हम लोगोके सम्पर्कमें यहाके लोग बहुत कुछ सीखे भी है। अुन्होने बढअी और दर्जी वगैराके छोटे-मोटे धधे सीखे। रूअीकी खेती अुन्होने सफलतापूर्वक बढाअी। जहा अग्रेज पहुच भी न सके, अैसे दूर-दूरके जंगली अिलाकोमें हम लोगोने हिम्मतके साथ जाकर दुकानें खोली और अपने बालबच्चोको ले जाकर जगलके अफ्रीकियोके बीच बस गये। कुछ जगली लोगोको अेक अेक शिलिंगमें अेक अेक पायजामा देकर हमे लोगोने अुन्हें अपनी नग्नता ढकना सिखाया। और अब तो कुछ अफ्रीकी हम लोगोके साथ रहकर दुकानें भी करने लगे है। हम लोग अुन्हे अपने मुनीमके रूपमें विश्वासपूर्वक रखते है और अिस प्रकार अुनकी और अपनी आमदनी बढ़ाते है। अगर हम लोग बदली हुअी परिस्थितिको पहचान कर अफ्रीकियोकी जागृतिमें मददगार बनें, अपना लोभ कम कर दे और अफ्रीकियोंको अनेक प्रकारसे शिक्षित बनायें, तो हमारा यहा रहना सफल हो।

कुछ लोगोने मुझे खानगीमें कहा "आपकी बात हम शिरोधार्य करनेको तैयार है। यहाके लोगोके लिअे हम भरसक करके रहेगे। परन्तु

हमारा अनुभव कहता है कि यहाके लोग बिलकुल कृतघ्न हैं। अुनके लिअे कितना भी कीजिये, तो भी समय पर आंख बदलते अुन्हें देर नही लगती।" मैं अुनसे कहता हू कि यह बात सच निकली, तो भी मुझे अिससे जरा भी आश्चर्य नही होगा। जिनका देश लूटा गया है, जिन्हें परावलम्बी और भयभीत दशामें हमेशा रहना पडता है, मध्यकालमें जिन्हे पकडकर गुलाम बनाकर बेचा जाता था, अुनके लिअे कृतज्ञता भी कअी बार आत्मघातक सिद्ध होती है। हमारे यहा भी मुसलमानों और हरिजनोंके लिअे अैसी ही शिकायते हम सुनते थे। मराठीमें 'गुलाम' शब्द बदमाश या अक्लमदके अर्थमें अिस्तेमाल किया जाता था — कभी निंदाके तौर पर और कभी कद्रके रूपमें। यह बताता है कि गुलामोंको बदमाशी सीखे बगैर छुटकारा ही नही था। अेक बार अिन लोगोंको स्वावलम्बी बन जाने दीजिये, फिर देखिये अुनमें धीरे-धीरे अिन्सानियतके तमाम लक्षण प्रगट हो जायगे।

परतु मैं यह माननेके लिअे तैयार नही कि ये लोग कृतघ्न हैं। कितने धीरजसे वे गोरोंके तरह-तरहके अन्याय सहन करते आये हैं? हम अैरण लेकर सूअीका दान करें और अितने पर ही यह अुम्मीद रखें कि वे हमारे प्रति अुपकारबद्ध रहे, तो यह किस तरह ठीक माना जा सकता है? अब तक अुनकी रहन-सहन बिलकुल सादी थी। सतोष अुनकी जीवन-पद्धतिका प्रधान गुण है। मिट्टी और फूसके झोपडोंमें वे रहते हैं। अितने विशाल देशमें अुन्होंने अेक भी बडा मकान, मदिर या राजमहल नहीं बनाया। मजदूरी लेकर काम करना अुनके स्वभावमें नही। अिन लोगोंको हमारे जैसे बना देनेके लिअे सरकारने अुन पर 'मुड-कर' (Pol tax) लगा दिया है। कमायें तो ही वे सरकारके शिकजेसे बच सकते हैं। अुनकी सतोपप्रधान सस्कृतिसे अुन्हें विचलित करनेके लिअे जहा अितने प्रयत्न हो रहे हों, वहा अुन लोगोंका जीवन स्वाभाविक रह ही नही सकता।

अितने अधिक मिशनरी अिनकी सेवा करते करते मर मिटते है। अुन्होने कभी यह शिकायत नही की कि ये लोग कृतघ्न है। अिस्लामका और औसाअी धर्मका स्वीकार करने पर भी अिन लोगोमे किसी प्रकारकी कट्टरता नही आअी। अिन बातोको समझनेके लिअे हमें समाजशास्त्रकी गहरी दृष्टि पैदा करनी चाहिये। और अुनके लिअे जो कुछ करें, वह सच्चे धर्मनिष्ठ बनकर निष्काम भावसे करना चाहिये। जहा ऋण चुकानेके लिअे सेवा करनेकी बात हो, वहा सामनेवाला कृतघ्न है या कृतज्ञ, यह देखा ही नही जाता, सद्गुणो पर किसी भी जातिका ठेका नही होता। जहा आत्मा है वहा तमाम सद्गुणोका अुत्कर्ष होगा ही। अर्थात् समय पाकर।

नैरोबीके पास कोअी ३० मील दूर अेक अफ्रीकी नेता श्री पीटर कोअिनागे रहते है। ये भाअी हाल ही में हिन्दुस्तानका सब जगह दौरा करके आये है। भारत सरकारने अुनके लिअे सब सुविधाअे कर दी थी। हम अुनसे मिलने अुनके यहा गये। आदमी बडा पितृभक्त है। अुन्होने अपने पिताका परिचय कराया। अुनकी ६ मातायें अपने-अपने बच्चोके साथ अलग-अलग झोपडियोमे किस तरह रहती है, यह सब अुन्होने बताया। पीटर कोअिनागेने अपनी किकूयू जातिके लिअे दो दो सौ पाठशालाअें चलाअी है। सरकारसे वे मदद नही लेते। गोरोकी नौकरी करने या सरकारी नौकरीमें स्थान प्राप्त करनेका अुद्देश्य न रखते हुअे अपनी जातिकी सेवा करनेकी योग्यता हासिल हो, अिस किस्मकी शिक्षा अिन पाठशालाओमे दी जाती है। अुसी स्थान पर हमें अेक अफ्रीकी बहन मिली—वाजीकू। अुन्होने कातना-बुनना सीखकर अपने कपडे तैयार किये है। हम अुनके स्थान पर गये, तब अुन्होने अेक हिन्दी पाठ पढकर सुनाया और अपनी लिखी हुअी थोडीसी हिन्दी भी दिखाअी।

पूर्व अफ्रीकामें हम लोगोका सबसे बडा सवाल है आन्तरिक अेकताका। हिन्दू-मुस्लिम अेकता जो पहलेसे मौजूद थी, अुसे हमने अकारण तोड दिया और पराये लोगोंके सामने हम हसीके पात्र बने। मैंने अुनसे कहा कि हिन्दुस्तानका पागलपन हिन्दुस्तानमें रहने दीजिये। यह मान लें कि वहा लडनेका कारण था, तो भी वह कारण यहा नही है। अदाहरणके लिये मैंने कहा कि हिन्दुस्तान अुत्तर गोलार्धमें है, पूर्व अफ्रीकाका बडा भाग दक्षिण गोलार्धमें है। हिन्दुस्तानमें जब जाडा होता है, तब अिधर गर्मी होती है। वहा गर्मी हो, तब यहा सर्दी होती है। अैसी स्थितिमें हिन्दुस्तानमें जाडा होनेके कारण यहा गर्मी होने पर भी हम गर्म कपडा ओढकर बैठें और वहा गर्मी पडनेकी खबर लगते ही यहा हम पखा चलायें और ठडके मारे कापने लगें, अिसमें कोअी अर्थ है? यहा आपसमें लडकर हम क्या ले लेंगे? मिल कर रहेंगे तो हिन्दुस्तानके लिअे अुदाहरण स्वरूप बनेंगे। अेकता रखेंगे तो ही तीनो महाद्वीपोंके लोगोंके बीच भाअीचारा पैदा करनेकी कला हमारे हाथमें आयेगी। अिस प्रदेशमें रहनेवाले हमारे मुसलमान करीब सबके सब भारतके ही नागरिक है, पाकिस्तानी नहीं।

युरोपियन लोगोंके साथ बातें करते समय अेक सवाल हमसे बहुत बार पूछा जाता था।

हिन्दुस्तानमें कम्युनिज्म — साम्यवादका जोर बढनेकी कितनी सभावना है?

मैं अुनसे कहता था कि साम्यवादके लिअे हिन्दुस्तानमें जरा भी गुजाअिश नही है, मगर अुसके खास कारण है। आप अग्रेज लोगोने समयानुसार हिन्दुस्तान छोडनेका फैसला न किया होता, तो हमारे यहा साम्यवाद जरूर फूट निकलता। गाधीजीकी पैदा की हुअी हमारे देशकी अहिंसक शक्तिको आप पहचान सके, आपने अुसकी कद्र की और हमारी स्वतत्रताको आपने मजूर किया, अिसका हिन्दुस्तान पर भारी

असर हुआ है। आपके प्रति जो द्वेष था वह मिट ही गया, लोगोको यह भी विश्वास हो गया कि गाधीजीके मार्गसे ही देशकी अुन्नति होगी।

और भी कारण है। जहा सामाजिक, वार्गिक या आर्थिक अन्याय है और गरीवोमें अुनसे मुक्त होनेकी आशा नष्ट हो जाती है, वही साम्यवाद फूट निकलता है। हमारे यहा हमने हजारो वर्ष पुरानी छुआछूतको सपाटेसे नष्ट कर दिया और सामाजिक न्याय स्थापित किया। छोटे-वडे असंख्य राजाओने सिर परका मुकुट अुतार कर प्रजाके चरणोमें रख दिया। जमीदारी प्रथाका भी अन्त करनेके लिअे हम तैयार हो गये है और जमीदार भी अुचित मुआवजा लेकर जमीन छोड देनेको तैयार हो गये है। और हरअेक वालिगको मताधिकार देकर दुनियामें वेमिसाल विशाल निर्वाचिक मडल हम लोगोने तैयार किया है। अैसी-अैसी जवर्दस्त कार्रवाअियोके कारण लोगोमें विश्वास जम गया है कि नेहरू सरकारके हाथो न्याय जरूर मिलेगा। अिसलिअे हमारे यहा साम्यवादके लिअे गुजाअिश नही है। जिस-जिस जगह सरकारी अिन्तजाम ढीला था, वहा-वहा साम्यवादी लोग वखेडा कर सके। लोगोमे सीधा प्रचार करके आनेवाले चुनावोमें जीत जानेकी हिम्मत साम्यवादके पास होती, तो वह वखेडे और धाधलवाजीकी झझटमें हरगिज न पडता। जहा सामाजिक, वार्गिक और आर्थिक न्याय होता है, वहा साम्यवादका डर नही रहता। साम्यवाद समूह-जीवनके रोगकी ही अेक निशानी है।

अेक दिन हमने कवेटे जाकर वहाकी सरकारी अुद्योगशाला देखी। अिस अुद्योगशालामें अफ्रीकी लडकोको वढअीगिरी, लुहारी, टीनका काम, राजका काम, विजलीका काम, दर्जीका काम, मोचीका काम वगैरा धधे सिखाये जाते है। पाठ्यक्रम अेकमे तीन वर्षका रखा गया है। सभी छात्र लगनसे काम करते दिखाअी दिये। कामकी सफाअी भी अच्छी थी। शिक्षक सभी गोरे कारीगर थे। अैसा लगता था कि कुछ अच्छे शिक्षाकार भी होगे। मैने अेक आदमीसे खानगीमे

पूछा कि, "क्या यह खयाल सच्चा है कि अफ्रीकी लडके दूसरी जातियोंके विद्यार्थियोंसे बुद्धिमें कम या मंद होते है ?" अुन्होने जरा सोच कर कहा कि, "आम तौर पर यह बात सच है। परतु जो होशियार होते है वे गैरमामूली होशियार होते है। तीन सालकी शिक्षाके अतमें सभी स्वावलम्बी बन जाते है और अच्छे-अच्छे काम जुटा लेते है।"

पजाबसे आये हुअे सिक्ख लोगोंसे मैने कहा कि कन्नेटे जैसी सस्थाअे यहा बढेगी तो आपका काम यहा नही रहेगा। अभीसे अिन लोगोंको अपने कारखानोंमें काम देते जाअिये, ताकि अुनके और हमारे बीच प्रेमसबध कायम रह सके। अगर हमें यह देश छोडना ही पडे, तो हम यह सतोष लेकर जाय कि हम अिन लोगोंको स्वावलम्बी बना कर ही जा रहे है, हम अिनका आशीर्वाद लेकर ही जा रहे है।

नैरोबीका अेक बडा आकर्षण है यहाके जगली शिकारी जानवरोंका अभयारण्य। यह भाग खासा लबा चौडा ४० चौरस मीलका है। जहा-जहा घाटिया है वहा-वहा थोडेमें पेड है, बाकी सारा भाग घासका खुला मैदान है। अिस प्रदेशमे जानवरोंको मारने, छेडने या सतानेकी सख्त मनाही है। यह नियम सिर्फ मनुष्यो पर ही लागू है। जानवर आपसमें जगलके कानूनकी रूसे जैसा चाहे बर्ताव कर सकते है। अेक जानवरसे दूसरे जानवरकी रक्षा करनेके लिअे भी मनुष्यजाति दखल नही दे सकती। अिस अरण्यमें सिंह है, परन्तु वे पेट भरने जितनी ही शिकार करते है। सिंहको भूख न हो तो वह नजदीक आये हुअे जानवरको भी नही मारेगा। अिस अभयारण्यमें अनेक प्रकारके चतुष्पाद श्वापद, सर्प जैसे अनेक सरीसृप और तरह-तरहके पक्षी रहते है। बहुत कोशिश करने पर भी अिस बार सिंह हमारे देखनेमें नहीं आया। वैसे, हिरण और गायके लक्षणोंवाले बुद्दू नामक जानवर, 'जिब्रा' के नामसे परिचित चित्राश्व, जिराफ वगैरा अनेक पशु हमें देखनेको मिले। अेक हिप्पोको हमने कीचडमें लोटपोट होते देखा। असख्य प्रकारके हिरण यहा घूम रहे

थे। सिंहके होनेसे वे अुदास नही थे। शुतुर्मुर्ग जब नीचा सिर किये चरते हो, तब पहचानना मुश्किल होता है। परन्तु जब वे सिर अुठा कर अिधर अुधर देखने लगें, तब अुनका गर्व देखने लायक होता है। वे अिस ढगसे दौडते है मानो अपने पाखोके नीचे भारी कीमती माल छिपा रखा हो।

नेशनल पार्कमें मोटरमे बैठ कर दौडनेमें हमें अपनी कुतूहल वृत्ति ही प्रेरक होती थी। परन्तु भाअी सूर्यकान्त जैसे हमारे मेजबानोको, जो असख्य बार सारा पार्क रौद चुके थे, हमारे सतोषका ही सतोष था। अुनसे अिन जगली जानवरोकी खासियते सुनते और पुराने प्रसगोका रसपूर्ण वर्णन किये जाते समय हमारा आनन्द द्विगुणित हो जाता था। मेरे खयालसे अिन वर्णनोके बिना पशु-दर्शन ज्यादातर फीका ही रहता।

वापस लौटते समय हमे जो बन्दर दिखाअी दिये, अुनकी हस्ती तमाम जानवरोमें अलग ही मालूम होती थी। मनुष्यको नजदीक देखकर सभी जानवर हट जाते है, परन्तु बन्दर मानो हमे देखकर आलोचना करते हो और हमें तुच्छ समझते हो, अैसा मुह बनाकर ही हटते है।

हमे कअी तरहके जानवरोको वन्य दशामें देखनेसे आनन्द होता है। देश-देशान्तरके और तरह तरहके मनुष्योको अिस प्रकार आकर अपना दर्शन देते हुअे देख कर श्वापदोको क्या खयाल होता होगा? अभयारण्यमें आनेवाले सभी मनुष्य सज्जन और तृप्त होते है, कोअी हमे मारता नही, यह देखकर भी अुन्हे आश्चर्य होता होगा।

अरण्यवासी श्वापदोका जीवन देख कर मेरे मनमे अेक विचार आया। सलामती और शाति प्राप्त करनेके लिअे मनुष्यने सामूहिक जीवनका सगठन किया। राज्य—व्यवस्थाकी स्थापना की। राजा, न्यायाधीश, सेनापति, सेनाअें और पुलिस खडी की। लोगो पर जबरदस्त कर लगाया। अनेक कानून बनाये, व्यक्तिकी स्वतत्रता

पर प्रहार किये, फिर भी हम कितनी हिंसा टाल सके? कितनी शांति स्थापित कर सके? अिन पशुओंकी तरह मनुष्य भी वन्य और अराजक दशामें रहे होते, तो क्या हम आजसे ज्यादा भयभीत हालतमें रहे होते? हमें समझाया जाता है कि आज जितनी मारकाट होती है, मारपीट और लूट होती है, वह अराजक स्थितिकी अपेक्षा बहुत कम है। परन्तु समय-समय पर जो भीषण और अति भीषण युद्ध सहन करने पडते हैं और अुनमें जो मनुष्य-हत्या, लूटमार और बर्बादी की जाती है अुसका हिसाब लगायें, तो यही कहना पडेगा कि राज्य-तंत्र स्थापित करके मनुष्य-हत्या अधिक ही हुअी है। और न्यायव्यवस्थाका विचार करने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अराजक स्थिति कम संतोषजनक है। मनुष्यके हृदयमें जो स्वाभाविक न्यायबुद्धि है, अुसकी अपेक्षा पुलिस और न्यायमंदिरों द्वारा मनुष्यजातिको अधिक न्याय मिलता है, यह मानना भी कठिन है। अभयारण्यमें पशु-पक्षियोंको विश्वासपूर्वक रहते, चरते और फिरते देखकर मुझे तो विश्वास हो गया कि मनुष्य-समाजसे अिसी जगह पर निर्भयता अधिक है। और किसी भी जातिकी संख्या बढ जाय, तो अुसका अिलाज भी वन्य जीवनमें अपने आप किया हुआ होता है। डार्विनका जीवन कलहका सिद्धांत और प्रिंस क्रोपॉटकिनका परस्पर सहयोगका सिद्धान्त दोनों जान लेनेके बाद मनुष्यको अेक बार वन्य जीवन और मानवीय राज्य-जीवनका फिर नये सिरेसे विचार करना चाहिये।

* * *

देवताओंका जन्म कब हुआ और किस ढंगसे हुआ, अिसका विचार करनेवाले अपने पूर्वजोंके मानसिक पराक्रमसे जैसे हम विस्मित और चकित होते हैं, अुसी तरह अिस पृथ्वीकी रचना या महासागर और विशाल महाद्वीपोंकी रचनाकी भी कल्पना करनेवाले और अुसके लिअे विज्ञानका सबूत पेश करनेवाले विद्वानोंकी कल्पनाशक्ति और हिम्मत हमें आश्चर्य-चकित कर डालती है।

अफ्रीका महाद्वीप छोटा-मोटा देश नही है। अुसका सिर लगभग पाच हजार मील चौडा है और अुसका अुत्तरी दक्षिणी विस्तार अिससे जरा अधिक है। अिस महाद्वीपकी रचना किस प्रकार हुअी होगी, अिसका विचार करते समय जैसे सहारा और कलाहारीके दो रेगिस्तानोका विचार करना पडता है, अुसी प्रकार पूर्व अफ्रीकाकी जमीनमे जो प्रचड दरारे पडी है अुनका भी विचार करना पडता है। सैकडो मील लम्बी, ४० से ६० मील तक चौडी और डेढसे ढाअी हजार फुट गहरी दो दरारें, 'रिफ्ट्स' किस तरह पैदा हुअी होगी, अिसकी कल्पना अनेक भूगर्भ-शास्त्री करते है। किसीका मानना है कि हिन्द महासागरके पूर्वी किनारे परका दवाव किसी भी कारणके घट जानेसे ये दरारे पैदा हुअी हे। दूसरे लोग कहते है कि ज्वालामुखीके फटने और पृथ्वीकी सतहमें कोअी गडवड होनेसे ये दरारे अुत्पन्न हो पाअी है। कुछ भी हो, ये दरारे आज असली रूपमें नही है। समय-समय पर ज्वालामुखियोके फटनेसे हरअेक दरारके टुकडे हो गये है। आलवर्ट अेडवर्ड, कीव्हू, टागानिका, रुकवा और न्यान्जा वगैरा तमाम सरोवर मिलकर अेक दरार थी। दूसरी तरफ पूर्वी दरार अियासी, नेट्रन, मागडी, नैवाशा, हेनिगटन, वेरिगो और रुडोल्फ वगैरा सरोवरोसे लगाकर लाल समुद्र होती हुअी फिलस्तीनके मृत समुद्र तक जाती है। और अिन दो दरारोके चिमटेके वीच पकडा हुआ हो, अिस प्रकार विक्टोरिया (अमृत) सरोवर युगान्डा और केनियाके वीच विराजमान है।

अिस पूर्वी दरारका कुछ भाग समतल होनेसे अिसमें मनुष्य और प्राणियोकी वडी आवादी समाअी हुअी है। अिसे देखनेका मौका कैसे छोडा जाता? पिछले युद्धके अिटेलियन कैदियोसे नैरोवीके आसपास वहुतसे रास्ते तैयार कराये गये। अिस रास्ते दरारकी अेक किनारी पर हम अुतर गये और वहासे कोअी ३० मील दूर स्थित सामनेकी किनारी और वीचकी तलहटीमें अुभरी हुअी कुछ मृत ज्वालामुखीकी पहाडिया हम देख सके। कुछ लाख वर्ष पहले जब यह दरार पहले

पहले पड़ी तब कितनी बड़ी आवाज हुआी होगी, जिसकी कल्पना करने पर बालबुद्धिने कहा कि अुस समयकी आवाज सुननेके लिअे न कोअी मनुष्य था, न कोअी जानवर। भयानक मर्मो-विदारक शब्द हुआ होगा, परन्तु डरनेके लिअे वहां कोअी था ही नहीं! आवाज हुआी और वह अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी। आसपासकी जड़ सृष्टिने मूल शब्दकी प्रतिध्वनियां वापिस् की होंगी और वे भी अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी होंगी। आज अिस दरारके केवल अवशेष ही रह गये हैं और अुनमें वनस्पति-सृष्टि, पशुसृष्टि और मनुष्य-सृष्टि अपने-अपने जीवनका आनन्द लेने लगी है। अिस 'रिफ्ट'का दृश्य सचमुच भव्य है। भूगर्भशास्त्रकी जिसे थोड़ीसी भी कल्पना और दिलचस्पी है, अुसकी कल्पनाके लिअे यह दृश्य बड़ा ही अुत्तेजक है।

दूसरे दिन अिस दरारके दूसरे प्रदेशमें हम पुराना अुत्खनन देखने गये। अिस स्थानको 'ओलोर्गेसाअिली' कहते हैं। वहां अेक प्राचीन सरोवरकी तलहटी दस दस हजार वर्षमें कैसे भरती गअी और अुस समयके जानवरोंकी हड्डियां किस प्रकार छोटी बड़ी होती गअीं, यह हमने जान लिया।

मिट्टीके, ज्वालामुखीकी राखके, रेतके और हड्डियोंके जो अलग-अलग पर्त अेक पर अेक जमते हैं अुनका हिसाब करके प्राग्-अैतिहासिक बातोंका कालक्रम तय किया जाता है। हमें सब कुछ समझानेवाले भाअी कहते थे कि बीचमें दस हजार वर्ष तक बरसातकी अेक बूंद तक नहीं पड़ पाअी। परिणामस्वरूप सारी प्राणीसृष्टि मर गअी। अुसके बाद जब नअी सृष्टि पैदा हुअी तब फिरसे जानवर पैदा हुअे और जैसे-जैसे खुराककी कमी दूर होती गअी, वे प्राणी बड़े भी होते गये।

अैसी जगह जो प्राचीन अवशेष अथवा अुनके 'फोसिल' मिलते हैं, अुन्हें अुठा कर ले जाना अपराध है या नहीं? साधारण मनुष्य अिन अवशेषोंका कोअी भी अुपयोग नहीं कर सकते। निरर्थक कुतू-हल तृप्त करनेके लिअे अैसे प्राग्-अैतिहासिक महत्त्वकी सामग्री अुठा

कर ले जाना मानवी ज्ञानके प्रति महाद्रोह है। सवधित देशोकी सरकारोको अैसी तमाम सामग्री सभाल कर रखनी चाहिये और दुनियाके समर्थ विद्वानोकी अन्तर्राष्ट्रीय जातिको अिस सामग्रीका अुपयोग करनेकी छूट देनी चाहिये।

अिस प्रदेशमे जाते और आते रास्तेमे हमने तरह-तरहके अनेक श्वापद देखे। अुनमे भी खास तौर पर जो जिराफ विलकुल नजदीकसे देखनेको मिले, अुनकी शान भुलाअी नही जा सकती। अुनके सिरके सीग अितने छोटे होते है, मानो वायनोक्यूलर चश्मेकी तरह आखोके अूपरसे सिर पर चढा दिये गये हो! जिराफ प्राणी अितना अूचा और लम्वग्रीव होता है, परन्तु अुसके चेहरे परसे अैसा नही लगता कि खुद अुसे यह अटपटा लगता हो। क्या अिन जानवरोको सचमुच अपने पूर्वजोके हजारो वर्षके अितिहासका पता होगा? काल भगवानके अुदरमें प्रवेश करके कल्पनाकी नजरसे देखनेकी शक्ति मनुष्यजातिके पास ही है। वाकीके प्राणियोके लिअे वर्तमान काल ही सत्य होता है। भूत और भविष्य काल अुनके लिअे मायाकी तरह ही होगा। और अिसलिअे वे निश्चिन्त होकर प्राचीन अवशेषोके वीच भी चल सकते है।

'रिफ्ट' वेली और ओरलेगोसाअिली, अिन दो स्थानोके दर्शनसे ताजी हुअी जिज्ञासाको लेकर हम नैरोवीका 'कॉरिन्डन' म्यूजियम देखने और खास तौर पर अुसे अनेक प्रकारसे सजा कर अुपयुक्त वनानेवाले विद्वान डॉक्टर लेकीसे मिलने गये।

मैने सुना कि अिसी म्यूजियममे अेक गाधी विभाग खोलनेवाले है, मगर अभी तक मैने यह नही पूछा कि अिसमें क्या क्या रखा जायगा और अुसकी व्यवस्था कैसी होगी? गाधी म्यूजियम मेरा क्षेत्र होनेसे अिस कल्पनाके प्रेरकोसे मिलकर अुसकी तफसील जान लूगा।

नैरोवीका कॉरिन्डन म्यूजियम सामान्य सग्रहालय नही है। अुसमे सारे अफ्रीका महाद्वीपका रहस्य प्रगट हुआ है। डॉक्टर लेकी दुनियाके अेक प्रखर भूगर्भ-शास्त्री है। अुन्होने वडे-वडे शोध किये है।

अुन्होंने अफ्रीका महाद्वीपका लाखों और करोडों वर्षका अितिहास अनेक अुत्खननोंमें से खोज निकाला है। केवल मनुष्योंके ही नही परन्तु छोटे बडे असंख्य प्राणियोंके अितिहासका श्रेय आज अुन्हींको है। खुदाअी करते करते अुन्हें कुछ खोपडियां अैसी मिली है कि जो बंदर और मनुष्यके बीचकी कडी पूरी कर देती है। बडे अभिमानके साथ अुन्होंने वह खोपडी आलमारीसे निकाल कर हमारे हाथमें रखी और हमें बताने लगे "देखिये, यह आंखके अूपरकी भौंहकी अुभर आअी हुअी हड्डी । यह देखिये मनुष्यका मस्तिष्क समा जाय अैसा अिस खोपडीका बडा पोलापन।" बातों ही बातोंमें अेक चित्रकी तरफ अुंगली दिखाकर अुन्होंने कहा कि "यह जो वंशवृक्ष मैंने तैयार किया है, अिसके लिअे कुछ जानकारी हिन्दुस्तानसे ही मिल सकती है। अपने हिन्दुस्तानके भूस्तर-शास्त्रियोंसे कहिये कि अिसमें मेरी मदद करें, क्योंकि यह काम सारी मानवजातिका है।"

मैंने अुनसे कहा "आप जो चाहते हैं अुस बातकी खोज हिमालयसे पहलेकी शिवालिक पहाडियोंमें ही हो सकती है।" "मैं भी यही मानता हूं" अुन्होंने अनुमोदन किया। यही चर्चा आगे चलने पर मैंने कहा "मेरे जन्मसे पहले ब्रूसफुट नामक अेक भूगर्भ-शास्त्री दक्षिण भारतमें दौरा करता था। अुसे अेक राक्षसी मनुष्यका जबडा मिला था। मेरे पिताजीने अुस जबडेका जो फोटो लिया था वह मैंने देखा था।"

"ब्रूसफुटका नाम मैंने सुना है। अुसको जो जबडा मिला था, वह अब कहां होगा?" अुन्होंने मुझसे पूछा। मैंने कहा कि, "अुस समय मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। शायद मद्रास म्यूजियममें वह पडा होगा। छुटपनमें वह फोटो मेरे पास था। बहुत लोगोंने अुसे देखा है।"

डॉ० लेकीने कहा कि "मनुष्य शरीरसे बडा हो या छोटा, यह सब खुराक पर निर्भर करता है। गेंडा या हिप्पो जैसा प्राणी भी

खुराककी कमीके कारण दस बीस हजार वर्षके भीतर चूहे जैसा छोटा बन जाता है।"

दो-अेक घंटे हमारी बातें हुअी। अुस बीच अरण्योंके सिलसिलेमें वनस्पतिशास्त्र, तितलियोंका शास्त्र, प्रकृतिमें होनेवाली 'मिमिक्री', पशुपक्षियोंके प्रकार वगैरा कितने ही विषय आ गये। साहबका काम करनेका कमरा देखने लायक था। पुस्तकों, रिपोर्टों, नोटबुकों और तसवीरों आदि अनेक वस्तुओंके ढेर जहां तहां पडे हुअे थे। अुनके कपडोंका भी ठिकाना नहीं था। सारे समय अपने काममें मस्त, और कुछ अुन्हें सूझता ही नहीं था। अपने शास्त्रमें अखंडरूपसे रमे रहते थे। जिस जातिमें अैसे मस्त लोग पैदा होते हैं, अुस जातिका मुख सदा अुज्ज्वल रहेगा।

म्यूजियमकी रचना विचारपूर्वक की गअी थी। भिन्न-भिन्न जातिके जानवर अपने स्वाभाविक वातावरणमें रखे गये थे। यह देखकर मुझे बबअीका प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम याद आ गया। मैं मानता हूं कि हरअेक देशके मुख्य-मुख्य म्यूजियमोंके वस्तुपालोंको सरकारी खर्चसे दूसरे बडे-बडे म्यूजियम देखने भेजना चाहिये। और अुनसे अैसा साहित्य तैयार कराना चाहिये, जिसे साधारण आदमी समझ सके।

अेक दिन भाअी सूर्यकान्तने मुझे आकर पूछा "काकासाहब, आपने यहांका किकूयू सरोवर देखा है?" मैंने कहा "नहीं, मेरे सामने किसीने अुसकी बात तक नहीं की।" "आपको अुसे खास तौर पर देखना चाहिये। अूपर जमीन है और नीचे सरोवर है। आप अुस पर चल सकते हैं। परन्तु वह जमीन अिस तरह झूलती है जैसे रबरकी बनी हो।"

मुझे बबअीकी मलबार हिल परका हैंगिंग गार्डन याद आ गया। अितनी तो मैं कल्पना कर ही सका कि किकूयू सरोवरमें अुससे अधिक विशेषता होगी, परन्तु अुसकी स्पष्ट कल्पना नहीं हुअी। अक सुबह सूर्यकान्तभाअी हमें वहां ले गये। किकूयू स्टेशनसे वह अेक फर्लांग भी दूर

नही होगा, परन्तु नैरोबीमें वह ग्यारह मील दूर है। वहा जाते हुअे रास्तेमें हमे किलिमाजारो पहाडके मुन्दर शिखरके स्पष्ट दर्शन हुअे। दो-तीन दिन पहले युनाअिटेड केनिया क्लबमें प्रवेश करनेसे पहले श्री अप्पासाहब अपनी मोटरमें मुझे जल्दीसे ले गये थे और अुन्होने मुझे मूर्यास्तके गेरुआ रगमे रगा हुआ किलिमाजारोका शिखर बताया था। दो-तीन मिनिट देखा होगा कि अितनेमें मूर्यनारायणने अपनी किरण-कृपा समेट ली और अुमी क्षण शिखरकी शोभा विलीन हो गअी।

आज बढते हुअे प्रकाशमें किलिमाजारोके शिखरका दर्शन हमने जी भर कर किया। बडे हाथीकी पीठ हो या किसी औलियाका कमडल औधा रख दिया गया हो, अिस तरह वह शिखर शोभा दे रहा था। हमारे देशमें पर्वत-शिखरोकी कमी नही है। और कितने ही शिखर तो बहुत ही मुदर होते है। परन्तु किलिमाजारो तो किलिमाजारो ही है।

हम किकूयू पहुचे और सरोवरके किनारे मोटरसे अुतरे। किसी बडे विशाल तालावका पानी मूख गया हो और अुसकी तहके कीचडमें काअी और घास अुग आअी हो, अैसा दृश्य था। श्री मूर्यकान्तभाअीने कहा कि, "अिस जमीनके नीचे पानी है। अुस कोनेमें जो पप दिखाअी देता है अुसकी मददसे अिस तालावका पानी खीचकर नैरोबीके कुछ भागोको पानी दिया जाता है। अितना पानी खिचता है, तो भी तालावका पानी खूटता नही।"

डरते-डरते हमने तालावके अूपरकी जमीन पर पैर रखा और आगे चले। जमीन लब-लब-लब हिलने लगी। हमें लगता कि पैरोके नीचेकी जमीन अब फट जायगी और पैर पानीमे चले जायगे। कही-कही पैर दो अिच अिस तरह अदर भी चले जाते जैसे कीचडमें फम गये हो। हम चलते-चलते सरोवरके बीच तक गये और बाअी तरफ मुड कर वापस आ गये। बीच-बीचमें छोटे-छोटे कुअें जैसे खड्डे थे, जिनमें से नीचेका पानी दिखाअी देता था। पानीके

अूपरकी जमीनकी तह आठ नौ अिंचसे ज्यादा मोटी नही होगी। सूर्यकान्तभाअीने अेक लोकोक्ति सुनाअी कि पुराने जमानेमें कुछ अफ्रीकी लडके अिनामकी लालचसे अेक किनारे पर पानीमे डुबकी मार कर सरोवरके अदरमे तैरते-तैरते दूसरे किनारे पर आ जाते थे। अितनी देर सास रोक कर तैरना आसान बात नही थी। अेक बार अेक लडका अिसी तरह डुबकी मार कर गया। वह शायद अदरके जालमें फस गया होगा या अुसका दम टूट गया होगा। वह अूपर आया ही नही। तबसे सरोवरमें अिस तरह डुबकी लगानेकी मनाही कर दी गअी है।

सरोवरका आकार टेढामेढा तिकोना है। अिसे कुदरतका अेक चमत्कार कहा जा सकता है। सरोवरोका स्वभाव अपना मुख अुज्ज्वल और शात रखकर आकाशके अनत तारोको प्रतिबिंबित करनेका होता है। यह स्वभाव छोडकर घास-मिट्टीका घूघट निकालना अिस सरोवरको कहासे सूझा? या आसपासकी पहाडियोने सासपन चला कर अिस बेचारी लडकीको अिस तरह घूघट निकालनेको मजबूर किया होगा? क्या यह लडकी अितनी ज्यादा अुच्छृखल थी कि और किसी भी सरोवरको नही और अिसको पर्दा करना पडा?

दोपहरको लच और रातको डिनर और बीच-बीचमें चाय-नाश्ताका हमारा रोजमर्राका क्रम था। कही हम यह न भूल जाय कि हम हिन्दुस्तानसे आये हुअे 'बडे आदमी' है, अिसलिअे यह सारी व्यवस्था थी। हर बार हमें कुछ न कुछ बोलना पडता था। श्री अप्पासाहबने कह रखा था कि हर जगह नये-नये लोग आते है, अिसलिअे आप अपना सदेश, अुन्हे देनेके लिअे अेक ही रिकार्ड चलाते रहे तो भी हर्ज नही। मगर मुझे यह आता नही। चीज भले अेक ही हो, परन्तु नये लोगोको देखकर अुस चीजको नये ढगसे पेश करनेकी अिच्छा होती है। और कुछ लोग तो सब जगह हमारे साथ होते ही थे। अुन्हे अेक ही चीज, अेक ही भाषामें बार-बार सुननी पडे यह भी मुझे अटपटा लगता था। परन्तु प्रचारकोको अिस मामलेमें ढीठ

बनना ही पड़ता है। किसी भी शोभा या शृंगारके बिना अपनी बात लोगोंके सामने सीधी रखनेकी कला गांधीजीने पैदा करके दिखा दी। परन्तु अिस सादगीमें भी अुनका अनुकरण करना आसान नहीं। मैंने निश्चय किया कि अपने विचारों संबंधी अपनी अुत्कटता पर विश्वास रखकर समय पर जो सूझे वही बोल दिया जाय।

अेक बार मुझे खास विषय दिया गया Non-violence in Peace and War—शांतिकाल और युद्धकाल दोनोंमें अहिंसाका पालन।

विषय जरा विचित्र जरूर था। कुछ लोगोंका खयाल है कि युद्ध शुरू कर देनेके बाद अहिंसाकी गुंजािश ही कहां है? Non-violence in War—युद्धमें अहिंसा—परस्पर विरोधी चीज है।

अुधर कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि जहां हिंसा हो रही हो, वहीं अहिंसाके प्रचारकी गुंजािश है। शांतिके दिनोंमें सभी लोग अहिंसक होते हैं। शांतिका अर्थ ही यह है। तब शांतिके दिनोंमें अहिंसाके पालन या प्रचारका अर्थ क्या?

असलमें मनुष्य-जीवन आज अितना कृत्रिम बन गया है कि युद्धके दिन हों या शान्तिके दिन हों, शान्तिकी साधना अुग्र या अुत्कट रूपमें करनी पड़ती है।

गांधीजीकी अहिंसा कायरोंकी अहिंसा नहीं है। असलमें गांधीजीने कोअी खास बात सिखाअी है, तो वह पूर्ण अहिंसावाला तेजस्वी प्रतिकार है। युद्धके क्षेत्रमें सफलतापूर्वक अिस्तेमाल की जा सकनेवाली अहिंसा ही गांधीजीका सत्याग्रह है। लड़ाअीमें भाग लेनेवाले बहादुर लोग खुद मरनेको तैयार होते हैं और सामनेवाले आदमियोंको मारनेकी कोशिश करते हैं। मरनेकी तैयारी रखना सत्याग्रहीका काम है, मारनेकी तैयारी करना जल्लादका काम है। सत्याग्रही और जल्लाद अेकत्र होकर क्षत्रिय वीर बनते हैं। अिस क्षात्रधर्मका

गाधीजीने शुद्धीकरण किया। जल्लादको निकाल दिया और शुद्ध सत्याग्रहीको रख लिया। अिसीका नाम है Non-violence in War

परन्तु रोज अुठकर सत्याग्रहका हथियार नही चलाना पडता। सत्याग्रह हो या हत्याग्रह, दोनोका प्रसग ही न आये अैसा निष्पाप जीवन वितानेका नाम है Non-violence in Peace अिसके लिअे मनुष्य-जातिको अपना सारा जीवनक्रम ही बदलनेकी जरूरत है।

आज हमारा जीवन अन्याय, अत्याचार और द्वेष पर आधारित है। सामाजिक अूच-नीचपन और अपने-परायेका भाव, आर्थिक बटवारेमे असमानता, राजनैतिक निरकुशता और वाशिक तिरस्कार — 'रेस हेट्रेड' — मानव-जीवनके मुख्य दोष है। जब तक ये दोष बने हुअे है, तब तक हिंसाके लिअे स्थान रहेगा ही।

अेक बार कुछ विदेशी लोग साबरमतीमे गाधीजीसे मिलने आये थे। बहुत करके युद्धविरोधी शातिवादी होगे। गाधीजीने अुनसे कहा कि युद्धोसे मै घबराता नही। युद्धोमे किया जानेवाला रक्तपात मुख्य हिंसा नही है। युरोप, अमरीकाका दैनिक जीवन ही हिंसा पर अवलबित है। सामाजिक और आर्थिक अन्याय हदसे बढ जाता है, तब युद्ध फट पडते है। जैसे मनुष्यको बुखार आता है। अैसी हालतमें बुखार बीमारी नही होता, परतु हाजमा और खून बिगड जानेकी निशानी होता है। अिसी तरह जब सामाजिक न्याय और सामजस्य बिगडता है, तब अुसके चिन्हस्वरूप युद्ध फूट निकलते है।

मनुष्य मनुष्य-जातिको चूसता है, निचोडता है, जबरदस्त आदमी गरीब आदमी पर अपनी हुकूमत चलाता है, यही असली हिंसा है। अिसे हम मिटा सकें और अपना जीवन स्वावलबी और निष्पाप बना ले तो युद्ध करने ही न पडे। जहा कोअी किसीको निचोटता नही, वहा जबरदस्त और जेरदस्तका भेद मिट जाता है। अत्यन्त गरीबी और अत्यत अमीरी अेक ही साथ चलती है। अगर हम समाजमे से गरीबीकी

जड अुखाड दे, तो अमर्यादित अमीरी अपने आप गायब हो जायगी। मेरी शिक्षा यह है कि अन्यायका प्रतिकार करके न्यायकी स्थापना करनेके लिअे हम हिंसाको काममें लेना छोड दें और अहिंसक सत्याग्रहको अपना लें। और साथ ही साथ हम अपने जीवनमें अैसा फेरबदल कर लें कि न हम किसीको लूटें और न कोअी हमें लूट सके। अैमा जीवन बितानेके लिअे हमें भोग-तृष्णाका मयम करना चाहिये। विलासकी वस्तुओंके पीछे पडना छोड देना चाहिये। किमी भी चीजको काममें लानेसे पहले हमें विचार करना चाहिये कि अिस चीजको तैयार करनेमे अिन्सानकी कितनी मेहनत खर्च हुअी है और यह भी सोचना चाहिये कि अिस चीजके तैयार करने और जुटानेमें कितना पाप अिकट्ठा हुआ है।

दुनियाके लोग जीवनका मानदड — स्टैन्डर्ड ऑफ लिविंग — अूचा करनेकी कोशिश कर रहे है। परन्तु भौतिक मानदड अूचा करनेमें वे नैतिक मानदड — मॉरल स्टैन्डर्ड — गिरा देते है और मनुष्यता खो बैठते है। हिन्दुस्तानके ऋषि-मुनियोंने ही नही, परन्तु राजाओं और सम्राटोंने भी देख लिया था कि भोगविलासका अत नही है। राजा ययातिने अपनी मारी जिंदगी भोगविलासमें बिताओी — अरे, अपने लडकेकी जवानी अुधार लेकर भी अुसने मौज अुडाओी, फिर भी अुसकी तृप्ति न हुअी। अतमे अतर्मुख होकर वह बोला, "अिस दुनियामें जितने तिल और चावल है, धन-धान्य और पशु-पक्षी है और जितने दास-दासी और युवतिया है, अुन सबको अिकट्ठा कर लें तो भी वे अेक मनुष्यकी तृप्ति होनेके लिअे काफी नही। अिसलिअे वासना-निवृत्ति ही सच्चा अुपाय है, वही जीवनका रहस्य है।" यह तो हुअी पौराणिक कहानी। अितिहासकालमें सम्राट अशोकने भी यही अनुभव किया और अुसने राज्य-विस्तारका काम छोडकर धर्म-विस्तारका काम हाथमें लिया।

भोगविलासमें मनुष्य तभी रम सकता है, जब वह दूसरोंके सुख-दुखके प्रति बेपरवाह हो जाय। अहिंसाके मूलमें विश्वबंधुत्वका आदर्श है, राष्ट्रपूजाका नहीं।

आजकलके राष्ट्र शांति-रक्षाके लिअे 'बैलेंस ऑफ पावर' अुत्पन्न करना चाहते हैं। अेकके स्वार्थके विरुद्ध दूसरेके स्वार्थको, अेकके सामर्थ्यके विरुद्ध दूसरेके सामर्थ्यको तौल कर शांति स्थापित हो ही नहीं सकती। तराजू बाजारू चीज है, अुससे शांति निर्माण नहीं होती। प्रेम और बंधुत्व ही अुसे पैदा कर सकता है। जो कानून हम कुटुंबके भीतर काममें लेते हैं, वही राष्ट्रोंके बीच अिस्तेमाल करना चाहिये।

हिन्दुस्तानके लिअे अहिंसाका संदेश युगों पुराना है। गांधीजीने अिस सिद्धांतको राष्ट्रोंके बीच लागू करके बता दिया।

दुनियामें बन्धुताकी बातें बहुत होती हैं। परन्तु हरअेक राष्ट्र कहता है कि हमें बन्धुता तभी मंजूर होगी, जब बड़े भाअीका स्थान हमें मिले।

असलमें बड़ा भाअीपन तभी तक निभता है, जब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीके लिअे त्याग करनेको तैयार होता है। छोटा भाअी बड़े भाअीकी आज्ञामें रहे, तब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीका कान पकड़ सकता है। मगर वही छोटा भाअी जब बिगड़ता है और घरसे निकल कर रास्ते पर जा खड़ा होता है, तब बड़ा भाअी अुसका कान छोड़ कर पैर पकड़ता है और अुससे क्षमा मांगकर अुसे घरमें लाता है। यह प्रेमका मार्ग, अहिंसाका मार्ग गांधीजीने राष्ट्र आन्दोलनमें काममें लेकर बता दिया है।

आजकी दुनिया विज्ञानके जोर पर अनेक प्रकारसे समर्थ बन गअी है। परन्तु वह गांधीजीका रास्ता न ले, तो अुसका नाश ही होनेवाला है। अुसने मनुष्यता खो दी है। अगर गांधीजीके मार्ग पर दुनिया न सुधरी और अुसने अमर्यादित सहिष्णुता और असीम धीरज पैदा नहीं की, तो दुनिया आत्महत्या ही करेगी।

मेरा भाषण पूरा होनेके बाद अेक आदमीने पूछा कि, "अगर कोअी सिंह अेक गाय पर वार करे, तो गाय अहिंसा किस तरह पाल सकती है?" अैसे सवाल सदा ही पूछे जाते हैं। मैंने अितना ही कहा "पशु पशुधर्मके अनुसार चलेंगे। मनुष्यको अपना जीवनधर्म पशुओंसे नहीं सीखना पड़ता। हम किस लिअे पशुओंको अपना गुरु बनायें?"

६

थीका

श्री मेघजीभाअी शाह पूर्व अफ्रीकाके अेक होशियार व्यापारी हैं। वे अपना अेक कारखाना दिखानेके लिअे हमें थीका ले गये। यह स्थान नैरोबीसे ३८ मील दूर है। वहां मेघजीभाअीका वॉटलकी छालसे अर्क निकालनेका कारखाना है। रास्ता बहुत अच्छा है। दोनों तरफ सायसल अर्थात् घायपात या रेडेअननकी खेती है। हमारे यहां खेतोंकी बाड़में अननास या केतकीके पत्तों जैसे लम्बे-लम्बे कांटेदार पत्तोंके पेड़ अुगते हैं। तलवार जैसे ये लम्बे पत्ते जब पक जाते हैं, तो अुन्हें तोड़ कर पानीमें सड़ाया जाता है। सड़ा हुआ भाग सूखकर झटकानेके बाद जो रेशे रहते हैं अुनके बड़े-बड़े रस्से बनाते हैं। ये रस्से पानीमें गलते नहीं और बड़े मजबूत होते हैं, अिसलिअे अिस रेशेकी अितनी कीमत है। अिस पेड़को दक्षिण महाराष्ट्रमें रेडेअनन कहते हैं। अंग्रेजीमें अिसे सायसल कहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस सायसलकी खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती है।

वॉटल-बार्क बबूलकी छाल जैसी अेक छाल है। चमड़ा कमानेमें अिसका अर्क बहुत अुपयोगी होता है। वॉटलकी छाल अिकट्ठी करके अुसके टुकड़ोंको अुबाल कर अुसका अर्क निकाला जाता है और अिस अर्कको सुखाकर अुसकी सूखी सलाअियां तैयार की जाती हैं।

थीकामे अेक पहाडीकी गोदमे, काव्यमय स्थान पर वॉटलवार्कका अर्क निकालनेका कारखाना है। हमने यह सब विस्तारसे देखा। अपने कारखानेके लोगोके लिअे मेघजीभाअीने जो सतोषजनक सुविधाअे कायम की है, वे भी हमने देखी।

लौटते हुअे हम थीकाके पासके दो प्रपात देखने गये। अुनमें से अेक प्रपात जहासे सबसे वढिया ढगसे दिखाअी दे सकता था, वहा गोरे लोगोने अेक होटल वनाया है। अैसी जगहो पर पश्चिमके लोगोको जीवनका आनन्द लूटनेकी सूझती है, जब कि हम लोग अैसे स्थानोको तीर्थधान बनाकर वहा अीश्वरका चिन्तन करना पसद करते है। लेकिन यात्राका धाम तय होते ही वहा मदिर और धर्मशालाअे आ ही जायगी। अुनके साथ लोगोके झुड, बाजार और तरह-तरहकी गदगी भी — भौतिक और सामाजिक दोनो तरहकी। यहाकी वढियासे वढिया जगह होटलके कब्जेमें चली जानेसे वहा सुन्दर बगीचा बनाया गया है। नहानेके लिअे अेक बडा कृत्रिम तालाव बनाया गया है। अुसके आसपास कपडे बदलनेके और गर्म पानीसे नहानेके कमरे भी बनाये गये है। भोगविलासके तमाम साधन अिकट्ठे किये गये है। मगर मामूली आदमी वहा नही जा सकता। सिर्फ मालदार और अुनमे भी गोरे लोग ही यह सब आनन्द लूट सकते है। दोनो प्रकारके अच्छे पहलू जमा करके अिसे अेक आदर्श स्थान नही बनाया जा सकता?

आवश्यक अनुमति लेकर हम ये दोनो प्रपात देख आये। अेकका नाम थीका है और दूसरेका चानिया।

पानीका प्रपात नशेकी-सी चीज है। जितना ज्यादा खडे रहिये, अुतना वही रह जानेका मन करता है। दोनो प्रपात काफी मस्तीमे थे। मिट्टीके कारण पानीमें ललाअी आ गअी थी। परन्तु जहा प्रपात गिरता है वहा अैसा चमकता हुआ पीलापन दिखाअी देता था, जैसे सोनेका ही प्रपात गिर रहा हो!

७

नैरोबीका हमारा घर

जब तक नैरोबी छोडा नही, तब तक हमें अैसा नही लगा कि हमारी अफ्रीकाकी यात्रा शुरु हो गअी। मोम्बासा सिर्फ प्रवेशद्वार था। नैरोबी आये तभी लगा कि हम अफ्रीकामें आये है। नैरोबी छोडा तब लगा कि हम अफ्रीकाकी यात्रामें निकले है। तब तक हम मानो अपने घरमें ही थे।

अिसका मुख्य कारण थे हमारे मेजवान श्री तात्यासाहब अिनामदार, अप्पासाहब पन्तके निजी मत्री। श्री अिनामदारके साथ मेरा परिचय बहुत पुराना था। सन् १९३६ में जब अहमदाबादमें गुजराती साहित्य परिषद हुअी थी और पूज्य गाधीजी अुस परिषदके अध्यक्ष थे, तब मै था कलाविभागका अध्यक्ष। अुस समय श्री अिनामदार औडर राज्यमें शिक्षा-विभागके सचालक होगे। अुन्होने वहाकी स्थापत्य-कला पर अेक सुन्दर निबन्ध लिखकर छपाया था, जो मुझे खूब पसन्द आया था। अिसी कारण हम नजदीक आये। अुसके बाद हरिपुरा काग्रेसमें हम फिर मिले। अिनामदारने देशदेशान्तरकी शिक्षा-पद्धतिका अध्ययन करनेके लिअे जापान और युरोपका सफर किया था। औंधके राज-परिवारके साथ अुनका सबन्ध है। अिसलिअे श्री अप्पासाहब पन्त जब भारत सरकारकी तरफसे पूर्व अफ्रीकाके कमिश्नर मुकर्रर हुअे, तब स्वाभाविक तौर पर श्री अिनामदार अुनके निजी मत्रीके रूपमें अुनके साथ आये। मै मानता हू कि अप्पासाहबके बचपनमें श्री अिनामदारने शिक्षाशास्त्रीकी हैसियतसे अुन पर देखरेख रखी होगी।

नैरोबीमें श्री कमलनयन बजाज सकुटुम्ब अप्पासाहबके यहा रहे। स्वराज्य आन्दोलनके अन्तमें देशी राज्योंके सवालके हलके सिलसिलेमें

वे दोनो अेक दूसरेके काफी सम्पर्कमें आये थे, अिसलिअे अुनका साथ रहना ही यथायोग्य था और मैं श्री अिनामदारके यहा रहू यह भी अुतना ही ठीक था। अुनके घरमे घुसते ही सौभाग्यवती शकुन्तला वहनने हमे घरका वना लिया। 'हम' यानी मेरी पुत्री समान मन्त्री चि० सरोजिनी नाणावटी और मेरे साथ आये हुअे श्री शरद पड्या। श्री अिनामदारकी लडकियोंने भी कोअी सकोच रखे विना हमें अपने घरमें स्थापित कर दिया। कुछ कुछ शरमाये हो तो अुनके छोटे भाअी विनयकुमार। आज-कल सव जगह यही देखा जाता है कि लडकियोकी अपेक्षा जवान लडके ही ज्यादा शरमाते है। धीरे-धीरे विनयकुमार भी हमारे साथ घुलमिल गये। अिसका मुख्य कारण था अुनकी सेवावृत्ति। विनयकुमार तो वे जरूर थे, ही परन्तु तरह-तरहकी सेवा करते हुअे विनय कहा तक टिकती? अुन्होने पहले शरदके साथ दोस्ती की, फिर मेरे साथ वातें करने लगे। चि० अुषा तो पहले ही दिन हमारी लाडली वन गअी। प्रार्थनामें भजन गाती, खाते समय हम पर देखरेख रखती। चि० रजनी थोडे ही दिनोमें अुच्च शिक्षाके लिअे हिन्दुस्तान चली गअी। नैरोवीसे मोम्वासा तक रेलसे और वहासे ववअी तक जहाजमें अुसने अकेले ही प्रवास किया। पुराने ढगकी स्त्रिया अैसी हिम्मत नही करती। आज-कलकी लडकियोको सफरके लिअे कोअी साथी मागनेमें शर्म आती है।

तात्यासाहवकी वडी लडकी चि० लताने समाजसेवाकी विद्याकी शिक्षा पाअी है, अिसलिअे वह नैरोवीमें ठोस काम करनेकी तैयारी कर रही है।

अिनामदारके यहा दो विल्लिया, अेक वडा कुत्ता 'वाघ्या' और अेक नीला तोता है। तोतेका काम था घरमें आनेवालोका स्वागत करनेका। और कुत्तेका काम घरकी रखवाली करनेका। कुत्ता अपने नामके अनुसार सचमुच शेर है। घरके लोग कहे कि 'फला आदमी पर न भौंको, वे घरके वन गये है,' तो फिर वह तुरन्त दोस्ती करने

लगता है। बिल्लियोंने दो सिरेके दो रंग पसन्द किये हैं। अिसलिअे अेकका नाम मैंने रखा अमावस्या और दूसरीका पूर्णिमा। बिल्लियां स्वभावसे प्रेमेच्छुक होती हैं। सबसे लाड़ वसूल करती ही जाती हैं।

अैसे घरमें से सफरके लिअे निकलते समय जी भारी होना स्वाभाविक था। परन्तु तात्या खुद हमारे साथ आनेवाले थे, अिसलिअे विशेष बुरा न लगा।

८

दो व्योमकाव्योंका समकोण

नैरोबीसे हवाअी जहाजमें बैठकर हम निकले टांगा जानेको। परन्तु मोम्बासामें हमें हवाअी जहाज बदलना था, अिसलिअे पहले हम नैरोबीसे सीधे समुद्रकी तरफ अुड़े।

विमान यात्रा यानी व्योमकाव्यका आनन्द। जब हम रवाना हुअे, तब मुश्किलसे सूरज अुगा था। नीचे गोरोंकी छोटी बड़ी बाड़ियां और अफ्रीकी लोगोंके झोपड़े दिखाअी देते थे। दोनों जातियां खुले जीवनकी रसिया, मगर अफ्रीकी कमसे कम सुविधाओंसे सन्तुष्ट, जब कि गोरे तरह-तरहके सुभीते पैदा करनेमें शूर हैं। हवाअी जहाजसे नीचेकी ओर देखने पर पहाड़ोंके सिर पर दौड़ते रास्ते और सिरसे नीचे अुतरते हुअे पानीके प्रवाह — सभी कुछ सुन्दर मालूम होता था। अफ्रीकाकी सारी ही जमीन पुराणकालके ज्वालामुखीके अुत्पातसे बनी हुअी है। जिस तरफ जमीन सिंदूर जैसी लाल और अुसके अूपर हरी हरी वनश्री — मानो अिन्द्रलोकके रसिकोंके लिअे खास तौर पर बनाअी गअी विशाल रंगभूमि हो।

जिसे केवल भूगोल-विद्यामें ही दिलचस्पी है, अुनके लिअे भी विमानयात्रा अेक अपूर्व अवसर होता है। अूंची-नीची जमीनकी रचना, पानीका विस्तार, नदियोंका टेढ़ापन और जंगलोंकी समृद्धि प्रत्यक्ष आंखों

देखनेको मिले विना भूगोलवेत्ताकी आत्मा तृप्त नही होती। परन्तु जो आदमी वचपनसे कुदरतकी अुपासना करता आया है, कुदरतके दर्शनसे ही जिसकी आत्मा विकसित होती आयी है और कुदरतके द्वारा ही जो भगवानके दर्शन करनेकी कोशिश करता आया है, अुसके लिअे हवाअी जहाजका सफर अेक आध्यात्मिक महोत्सव ही है।

विमानमें चढते ही अच्छीसे अच्छी जगह देखकर मैं अपनी आखे खिडकीके काचसे लगा देता हू। और भूखे-प्यासेकी तरह सारी दृश्य सृष्टिका पान करता रहता हू।

वाअी तरफ सवसे पहले अिस प्रदेशके देशनायक गिरिराज माअूट केनिया दिखाअी दिये। अुन पर अेक हद तक वृक्ष वनस्पतिकी समृद्धि अुछलती हुअी दिखाअी देती है। अुसके वाद जहा ठड वढती है, सनसनाती हुअी हवा किसी भी वनस्पतिको टिकने नही देती — वहा सव कुछ कोरमकोर होता है। केनियाको प्रणाम करके नजर दक्षिणकी तरफ फिराअी। वहा पहले पहाडोमें अुत्तम माना जानेवाला मेरु पर्वत दिखाअी दिया। (भगवान स्वय ही स्वीकार करते है 'मेरु शिखरिणाम् अहम्।') अुस पर नजर जरा ठहरी कि अितनेमें दूर, वहुत दूर अफ्रीकाका गौरवस्वरूप अद्वितीय किलिमाजारो दिखाअी दिया। कोरी आखोसे जी भरकर देखनेके वाद मैंने अुसे दूरवीनके जोरसे अधिक पास खीच लिया। किलिमाजारोकी वगलमें ही अुसका अेक पडोसी है — मानो सेवा करनेके लिअे तत्पर खडा हुआ कोअी किंकर हो। किलिमाजारोके सिर पर श्वेत मुकुट होनेके कारण अैसा सहज ही लग सकता है कि सारे अफ्रीकी महाद्वीपका राज्यपद अुसीका है। दूरसे अुसका शिखर सफेद गुम्वजकी तरह अडाकार दिखाअी देता है। परन्तु असलमें अुसके सिर पर ज्वालामुखीका द्रोण (क्रेटर) है। किसी-किसी तरफसे जव विपरीत दिशाके किनारेका सिरा दिखाअी देता है, तो विश्वास होता है कि अूपर द्रोण जरूर होगा। डॉ० लेकीने हमसे कहा था कि किलिमाजारोके ज्वालामुखीके अदरकी गर्मी धीरे-धीरे वढती जा रही है और अिसलिअे

अदरकी तरफका वर्फ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। अगर यही हाल रहा तो किसी समय यह ज्वालामुखी फिरसे सजीव भी हो सकता है।

'यह कब होगा?'

'यह नही कहा जा सकता। वह २०-२५ वर्षके भीतर भी फट सकता है, या दो सौ, चार सौ वर्षके बाद भी फट सकता है।' भूगर्भ-शास्त्रियोंके पास संख्याकी कजूसी नही होती। जैन पुराणोंकी तरह हजारोंकी संख्याकी अिनके यहा गिनती ही नहीं होती।

हमारा विमान आगे चला और देखते-देखते बाओं तरफ बादलोंके टोले अुमड आये। सूर्यकी किरणोंके कारण दाओं तरफ कोहरेमें अिन्द्र-धनुषका अेक पूरा गोलाकार वन गया। और अुसके केन्द्रमें हमारे हवाओ जहाजकी छाया! मानो कोओ देवदूत आकाशमार्गमें हम जैसे मनुष्योंको अिन्द्रलोकमें पहुचानेके लिअे तैयार हुआ है।

थोडी ही देरमें दूर सामनेकी तरफ हिन्द महासागर दिखाओ देने लगा। दर्शन होते ही अुस महापुरुषको मैंने प्रणाम किया, क्योंकि अुसकी लहरें मेरी जन्मभूमिको स्पर्श करती है। हवामें हम जरा नीचे अुतरे और मोम्बासाका टापू स्पष्ट दिखाओ देने लगा। हवाओ जहाजोका यह नियम होता है कि अेक बडी प्रदक्षिणा किये बगैर जमीनको स्पर्श नही किया जा सकता, अिसलिअे नीचे अुतरते-अुतरते आसपासकी सारी शोभा सब तरफसे देखनेको मिल जाती है। वहा थोडासा आराम करके हमने छोटा-सा नया विमान लिया। अुसमें दस आदमी ही बैठ सकते थे। अुनमें से पाच तो हमी थे। नैरोबीसे मोम्बासाका रास्ता पश्चिमसे पूर्वको था। मोम्बासासे टागाका रास्ता अुससे समकोण बनाकर अुत्तरसे दक्षिणको जाता था। अब अेक नया ही दृश्यकाव्य नजरके सामने अुपस्थित हुआ। बाओं तरफ समुद्रके अद्भुत रग — घडी भरमें गहरा नीला रग तो घडी भरमें हरा! दूर पेम्बाका टापू दिखाओ दिया। अुसमें आसपासके समुद्रका हराथोथा जैसा हरा रग, अुसके बाद नारियलके सिरके जैसा काला हरा रग और कोओ अूची पहाडी

आ जाती थी तब अुसका सिंदूरी रंग — अिन सबकी शोभा आकर्षित करती थी। दाअी तरफ किनारेके फेनकी सफेद चचल रेखा नाच रही थी। टांगाके आसपास जमीनमें घुसे हुअे समुद्रके हाथकी तरह 'बैकवाटर्स' चमकते है।

देखते देखते जर्मन निर्मित चौकोर शहर टांगा दिखाअी दिया और हमने दुबारा चक्कर काटकर अुसकी सख्त जमीन पर पैर रखा।

९
टांगा

हवाअी जहाजके बन्दरगाह यानी विमानके अड्डे पर श्री आदमभाअी करीमजी अपने बालक लतीफके साथ आये थे। टांगासे थोडी दूर लिसोटो नामक अेक ठडा शहर है। वहा मेरे अेक स्नेहीके सम्बन्धी डॉ० दिव्यकृष्ण रहते है। वे खुद टांगा नही आ सकते थे, अिसलिअे अुन्होने अपनी पत्नी और लडकेको भेजा था। ये लोग भी हवाअी अड्डे पर आकर मिले।

यहा भी हमारी मडली दो-तीन घरोमे बट गअी। श्री अप्पासाहब और कमलनयन आदमजीके यहा ठहरे। हमारा डेरा टांगाके प्रसिद्ध वकील मनुभाअी देसाअीके यहा था। जाते ही कअी मिलनेवाले आ गये। अुनमें बढिया अग्रेजी बोलनेवाले और अिस अिलाकेकी हालतको अच्छी तरह जाननेवाले दो अफ्रीकी भाअी भी थे। अुनके साथ बहुत बाते हुअी। हिन्दुस्तानकी सहानुभूतिके कारण अफ्रीकी लोगोमे बहुतसी आशाअें पैदा हो गअी है। 'अब हम बिलकुल अनाथ नही है। अेक समर्थ पडोसी हमारे जीवनमें दिलचस्पी ले रहा है।' अैसा अिस जातिको अनुभव होने लगा है और अिसीलिअे आअिंदा अिन लोगोके प्रति हमारा रवैया बदलना चाहिये। जबसे

अिन लोगोंने यह बात सुनी है कि गांधी स्मारक कॉलेज खुलेगा, तबसे वे अुसकी स्थापनाकी बाट देख रहे हैं।

पहले पहल रीगल सिनेमामें अेक सार्वजनिक सभा हुअी। अिस सभाके बिखरते ही तुरन्त बहनोंने अुस स्थान पर कब्जा कर लिया। अुनके सामने भी हमारा व्याख्यान हुआ। अिसके साथ ही आर्यकन्या मंडलकी तरफसे लड़कियोंके नृत्य-संगीत वगैरा रखे गये थे। यहां महा-राष्ट्री और गुजराती बहनोंने मिलकर संगीत कलाका अच्छा वायुमंडल जमा लिया है।

रातको अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे जो भोज रखा गया था अुसमें गोरे भी आये थे।

दूसरे दिन आदमभाअी करीमजी और अुनकी पत्नी जेबुन्निसाबहनके साथ हम अुनका चायका बगीचा देखने गये। यह बगीचा टांगासे ६०-७० मील दूर स्थित अुसुम्बारा पहाड़की चोटी पर है। पहाड़की वन्य शोभा देखते-देखते हम पुरानी सरकार द्वारा विकसित परन्तु अब कुछ बिगड़ते हुअे वानस्पत्यम् (बोटेनिकल गार्डन) तक पहुंचे। वहां हमें मेंगोस्टीनका अेक फल मिला। हममें से कुछ लोगोंने अुसे देखा या चखा नहीं था। कलकत्तेमें यह फल खूब मिलता है। पूर्व अेशियाकी तरफका यह स्वादिष्ट मेवा है।

हर जगह नअी-पुरानी संस्थाओंके कारण हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पैदा होता ही है। व्यक्तिगत रूपसे हिन्दू-मुसलमान खूब प्रेमसे मिल-जुलकर रहते हैं। पर संस्थाका नाम आया कि तुरन्त कअी सवाल खड़े हो जाते हैं। यहां मेरे हाथों अेक 'अिंडियन कल्चरल सोसायटी' (हिन्दुस्तानी संस्कृति मंडल) का अुद्घाटन हुआ। अुसका विधान तैयार करनेमें भी मुझे दिलचस्पी लेनी पड़ी।

तीसरे दिन सवेरे मैं आग्रहपूर्वक 'वॉर सिमेटरी' — जंगी श्मशान भूमि देखने गया, क्योंकि मैं जानता था कि पिछले महायुद्धके समय हिन्दुस्तानके अनेक सिपाहियोंने यहां अपने प्राण अर्पण किये थे। १९१५ में

मारे गये अिन चार पाच सौ लोगोमें ग्वालियरकी तरफके महाराष्ट्री, राजस्थानके राजपूत, काश्मीर-जम्मूकी तरफके हिन्दू, मुसलमान, डोगरे और कुछ मद्रासी थे। अफ्रीकाकी भूमि पर जिस जगह मेरे देशभाअियोने अपना खून वहाया, अुस स्थानके वारेमें मेरे मनमे आदरकी भावना जाग्रत हुअी। अिसीलिअे अिन वीरोकी श्मशानभूमि देखनेका मेरा आग्रह था। दारेस्सलाममे भी भारतीय वीरोकी अैसी ही अेक श्मशानभूमि है।

टागा छोडनेसे पहले हम वहाका करीमजी स्कूल देखने गये। वहाके प्रिंसिपल मि० पैरी मुझे अुत्तम शिक्षाशास्त्री मालूम हुअे।

हवाअी जहाजने जव फिरसे हमें लाद कर अुठाया, तव अेक ओर समुद्र तथा दूसरी ओर कलके देखे हुअे अुसुवारा पहाडको देखते समय परिचयका आनन्द होता था।

१०

शान्तिधाम दारेस्सलाम

अव हम झाझीवार होकर दारेस्सलाम जानेको निकले। रास्तेमे फिर वही हराभरा दृश्य। आज भी समुद्रमे छोटे वडे कअी टापू दिखाअी देते थे। अुनमे से कुछ पानीसे वाहर सिर अूचा कर सके थे और नारियल आदि वनस्पति सृष्टिका भार वहन करते थे, जव कि कुछ द्वीप अभी तक पानीसे वाहर सिर नही निकाल सके थे। अिन सवको मैने पन्नालाल नाम दिया है। मेरा विश्वास है कि देवताओमें रसिकता हो, तो वे अिनमे से अेक अेक द्वीपको अुठाकर अपनी-अपनी अुगलीके लिअे अुसकी अगूठी वना लेगे। द्वीप जरा वडा हो तो अुसके वीचमें चमकता हुआ भाग होगा ही, जिसका रग गेरुअे और सिंदूरके वीचका ही माना जायगा। अुडते-अुडते हम अैसी जगह आये, जहा नीचे समुद्र और दोनो तरफ जमीनके किनारे दिखाअी देते थे। वाअी ओर झाझीवारका टापू और

दाअी तरफ अफ्रीकाका महाद्वीप। जगवार (झाझीवार)के अूपर पहुचे तो नीचेसे विद्युत्-सकेत मिला कि नीचे कोअी मुसाफिर नहीं, जो हमारे विमानमें सवार होना चाहता हो। हमारे विमानमें भी जगवारमें अुतरने-वाला कोअी था नहीं, अिसलिअे हमारे विमानीने कहा, "हम यहा नहीं अुतरेगे। जगवार देखना हो तो अूपरसे ही देख लीजिये।" अुसने विमानका बाया पख ठीक नीचे झुकाया कि तुरन्त हम घनी आबादीवाले जगवार शहरका पूरा दर्शन कर सके। हमें सतुष्ट हुआ देखकर विमानीने अपना विमान फौरन सीधा कर लिया और हम दारेस्सलामकी तरफ वायुवेगसे बढे। देखते-देखते दारेस्सलामका अविस्मरणीय समुद्र तट आखके सामने विशाल होने लगा। हम सारा शहर पार करके दूसरे किनारे पर अुतरे और दारेस्सलामके अपने अनेक मेजबानोके अधीन हुअे।

दारेस्सलाम टागानिका प्रदेशकी राजधानी है। जर्मन लोगोंने टागाकी तरह यहा भी अपनी नगर-रचना कला खूब आजमाअी है। अुसके बाद भी समुद्रके किनारेका यह शहर देखते-देखते बढता रहा। यहाके अेक गोरे नगरसेठने बातो ही बातोंमें कहा "रिक्शा चलने लायक छोटे रास्ते जो शुरुमें तैयार किये गये थे, वे अब असुविधाजनक हो रहे हैं। अुस समय किसने कल्पना की थी कि दारेस्सलामके रास्तो पर दिन-रात बडी-बडी मोटरें दौडने लगेगी?" मैंने हसते हुअे अुनसे कहा "हमारे यहा बच्चोके लिअे कपडे बनाये जाते है, तब जल्दी-जल्दी बढनेवाले शरीरोका हिसाब रखकर ही कपडे ब्योंते जाते हैं।" सफरमें जैसे नैरोबी हमें अपना घर जैसा लगा, अुसी तरह दारेस्सलाम भी हमारा घर बन गया। क्योंकि दारेस्सलामको मुख्य केन्द्र बनाकर हम अेक बार ठेठ दक्षिणमें लिण्डी तक हो आये। फिर यहासे निकल कर जगवार हो आये और बादमे थोडासा आराम करके हमने टागानिका अिलाकेमें प्रवेश करनेके लिअे मोरोगोरो और डोडोमाकी रेलवे यात्रा की। अिस प्रकार तीन बार दारेस्सलाम जानेका काम पडनेसे वह घर जैसा बन गया। परन्तु अिससे भी

अधिक हमारा डेरा अेक अत्यन्त सात्विक, धर्मपरायण और प्रेमी कुटुम्वमें रखा जानेके कारण हमारे लिअे दारेस्सलाम सव तरह घर जैसा वन गया। श्री जयन्तीलाल शाह और अुनकी पत्नी मुक्तावहन दोनोने हमें घरका वुजुर्ग वना दिया। अुनके घरकी रहन-सहन हमें सव तरह अनुकूल रही। घरके छोटे वच्चोने भी हमे पूरी तरह अपना लिया। श्री जयन्तीभाअी थियोसोफिस्ट है, अिसलिअे हमारी सुवह-शामकी प्रार्थनामें सारे कुटुम्वी आत्मीय भावसे शरीक हो जाते। पहले दिन अुनके मकानकी छत पर ही प्रार्थना की। प्रार्थनाके समय ही पूर्वी समुद्रमे से नहा-धोकर अूपर निकले हुअे सूर्यनारायणके पावन दर्शन हम कर सके, अिसलिअे अुस स्थानके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हुआ। दूसरे दिन प्रार्थनाकी जगह वहासे हटाकर नीचेके दीवानखानेमें रखी गअी, क्योकि वाहरके कअी लोग अुसमें शरीक होनेके लिअे आने लगे। आखिरी दिनोमें शहरके हिन्दू मदिरोके व्यवस्थापकोने माग की कि आप अपनी प्रार्थना हमारे यहा क्यो न करें। वहुतसे नगर-निवासी अुसका लाभ अुठा सकेंगे। हमने अुनसे कहलाया . "चूकि हम सर्व-धर्म-समानताको मानते है, अिसलिअे हमारी प्रार्थनामे कुरानशरीफकी आयते भी होती है और अीसाअी आदि दूसरे धर्मोके स्तोत्र भी होते हैं। हिन्दूधर्ममें भाषाभेद और धर्मभेदकी आपत्ति नही होती, परन्तु आपमे से किसीके मनमे आजकलके वातावरणके कारण आपत्ति हो तो नाहक दिल खट्टे हो जायगे। अिसलिअे हमारी सर्व-धर्मी प्रार्थनाकी आपके यहा गुजाअिश हो तो ही हम आपके मदिरमें आ सकेंगे।" अुन लोगोने तुरन्त विना सकोचके विश्वास दिलाया, "हमे जरा भी अेतराज नही। सव लोग आपकी सर्व-धर्मी प्रार्थनाका स्वागत करेंगे।" हिन्दू समाजकी अिस अुदारतासे मुझे आश्चर्य कुछ न हुआ मगर आनन्द जरूर हुआ। हिन्दुस्तानमें नोआखलीमें गाधीजीकी प्रार्थनामे मुसलमानोने रामधुन पर अेतराज किया था और दिल्लीमें हिन्दुओने 'अल्फातिहा' पर आपत्ति की थी। ये दोनो प्रसग मुझे याद आये।

गांधीजीकी सर्व-धर्म-समानताके कारण दोनों जगहके अैतराज मिट गये थे, यह बात भी मुझे याद आयी। परधर्मके बारेमें हिन्दूधर्ममें कभी असहिष्णुता थी ही नहीं। मैं जानता हूं कि आअिंदा भी वह जड़ नहीं पकड़ेगी। अिसीलिअे मुझे दारेस्सलामका सुंदर वातावरण देखकर आनन्द होने पर भी आश्चर्य न हुआ।

पूर्व अफ्रीकामें जो हिन्दुस्तानी मुसलमान हैं, अुनमें से ज्यादातर नामदार आगाखानके अनुयायी हैं। वे अपनेको अिस्माअिली कहते हैं। जो आगाखानी नहीं हैं, अुन्हें यहां अिस्नाअशरी कहते हैं। यहां जो पंजाबसे आकर बसे हुअे मुसलमान हैं, वे अलग हैं। जिनका वतन पाकिस्तानमें है, अैसे मुसलमान यहां नहींके बराबर हैं। अधिकांश कच्छ-काठियावाड़से ही हैं। घरोंमें गुजराती बोलते हैं, पाठशालाओंमें गुजरातीके मार्फत ही पढ़ते हैं। आगाखानी मुसलमानोंके रीति-रिवाज दूसरे मुसलमानोंसे कुछ अलग होते हैं। वे हजरत अलीको मानते हैं। मक्काकी यात्राके बारेमें अुन्हें आग्रह नहीं है। माननीय आगाखान असलमें ओीरानकी तरफके हैं। आजकल ज्यादातर विलायतमें रहते हैं। अुनका घोड़ोंका शौक सारी दुनिया जानती है। घुड़दौड़में आगाखानके घोड़े सबसे अच्छे माने जाते हैं। माननीय आगाखान जैसे अिस्माअिली लोगोंके धर्मगुरु हैं, वैसे ही ब्रिटिश साम्राज्यमें वे अेक अच्छे माने राजनैतिक पुरुष माने जाते हैं। अुनका असर बहुत है और अुसे अिस्तेमाल करके वे अपने अनुयायियोंकी बढ़तीके लिअे सदा तत्पर रहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस्माअिली जमात सबसे अधिक संगठित है और हमेशा माननीय आगाखानकी सलाहके अनुसार ही चलती है।

कुछ वर्ष पहले यहांके अिस्माअिली लोगोंने माननीय आगाखानकी ६० वर्षकी हीरक जयन्ती मनाअी। अिसके लिअे अुन्होंने दुनिया भरसे हीरे अिकट्ठे करके माननीय महोदयकी हीरक-तुला की। और अुन हीरोंकी जितनी कीमत हुअी, वह अुन्हें भेंट कर दी गअी। अलबत्ता, हीरे अपनी-अपनी जगह वापस चले गये।

गुरुभक्तिका यह ढग लोक-विलक्षण कहा जायगा। माननीय आगाखानने अिस रकमके बडे भागका ट्रस्ट बनाकर यहाकी अपनी कौमको ही सौप दिया और अुस रुपयेसे अब अिस कौमके अुत्कर्षके लिअे अनेक योजनायें अमलमे लायी जा रही है। किसी गरीब किन्तु होशियार खोजाको पूजी चाहिये, तो वह भी अिसमें से बिना ब्याज मिल सकती है। अितनी बडी रकमका सचालन ट्रस्टके द्वारा होता हो, तो कुछ लोग अुसकी नीतिके बारेमें आलोचना करेंगे ही। परन्तु सब बातोको देखते हुअे अिस कोषसे यहाकी खोजा कौम अेकदम आगे बढ गअी है।

ना० आगाखान अेकाग्र निष्ठासे अपनी कौमके दुन्यवी हानि-लाभका विचार करके अुसे दूरदेशी भरी सलाह देते है। अुदाहरणके लिअे यहाके अपने लोगोसे अुन्होने कहा कि, "झाझीबारमें अब ज्यादा भीड करके नही रहना चाहिये। वहाके वैभवकी अब मर्यादा आ पहुची है। अब अधिक लोगोके वहा रहनेमे सार नही है। अब आपको अधिकसे अधिक सख्यामे टागानिका जाना चाहिये। वह प्रदेश बहुत विशाल है और अुसमें भावी अुत्कर्षके बढिया साधन है।"

अुन्होने अपने लोगोको यह भी सलाह दी कि, "लडके-लडकियोकी शिक्षाकी तरफ ज्यादा ध्यान दीजिये। अिन सबको अग्रेजी पढाअिये। मानो अग्रेजी मातृभाषा ही हो, अितने अुत्साहसे यह भाषा सीख लीजिये। यह वाछनीय है कि लडकिया पुराने ढगकी पोशाक छोडकर फ्रॉक पहने। जितने अधिक लोग विलायत जाकर पढ आवे अुतना अच्छा।"

अिसमे आश्चर्य नही कि मुसलमान होनेके ही कारण यहाके मुसलमानोकी भावना और निष्ठा पाकिस्तानकी ओर है। अब तक हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे वे यहाके अिडियन अेसोसियेशनोमे खुलकर शरीक होते थे और अुनमे प्रमुख भाग लेते थे। अब वे अपनेको अलग मानते है। सुना है ना० आगाखानने अुन्हे सलाह दी है कि अब वे हिन्दुस्तान-पाकिस्तानके झगडेमें न पडें, हिन्दुस्तानके लोगोका विरोध न करें, मगर अपनी निजी अुन्नति पर सारा ध्यान दे।

ना० आगाखानका प्रयत्न अफ्रीकामें वसनेवाले दूसरे मुसलमानोंको भी अपनानेका है। अिस देशके मूल निवासी अफ्रीकी लोग अरबोंके असरके कारण खासी सख्यामें मुसलमान बन गये हैं। कहा जाता है कि अिन लोगोंको भी संगठित करनेकी ना० आगाखानकी मुराद है।

ना० आगाखानके अनुयायी अिस्माअिली लोगोंके रीति-रिवाजोंमें कुछ रिवाज हिन्दुओं जैसे हैं। वे घरोंमें गुजराती बोलते हैं और रोजमर्राके व्यवहारमें कट्टर नहीं हैं। अिसलिअे अुनके साथ मिठासके साथ रहनेमें हिन्दू लोगोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती। कच्छ-काठियावाडकी तरफके होनेके कारण अुनका और गुजराती हिन्दुओंका संबंध ज्यादातर अत्यन्त मीठा होता है। यह अेकता दोनोंके लिअे लाभदायक है। अिसलिअे मैंने यहांके तमाम लोगोंको सलाह दी कि "'हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, पाकिस्तानकी अुर्दू है, और महात्माजी दोनोंकी मिली-जुली हिन्दुस्तानी चलाना चाहते हैं' — अिन विवाद या झगडेमें न पडकर गुजराती द्वारा जो अेकता सिद्ध हुअी है और मीठा संबंध बना है अुसीको अधिक मजबूत कीजिये और शक्तिके अनुसार हिन्दी और अुर्दू दोनोंका अध्ययन कीजिये। और मुख्य बात यह है कि भाषाके झगडेमें पडना ही न चाहिये। अंग्रेजी सीखे बगैर यहां काम नहीं चल सकता। शिक्षामें जैसे आगे बढा जा सके वैसे बढिये और यहांकी जो अफ्रीकी जनता है अुसे हर तरह अपनाना अपना फर्ज समझिये।

"गांधीजीकी शिक्षा है कि सब धर्म सच्चे हैं। सारे मजहब अच्छे हैं। अिसलिअे हमें अिस्लाम और अीसाअी धर्म दोनोंके प्रति सद्भाव बढाना चाहिये। अिन दोनोंकी असली तालीम हमारे धर्मकी शिक्षासे अलग नहीं है। सभी अीश्वरभक्ति और सदाचारमें विश्वास रखते हैं। सभी विषयवासना पर विजय प्राप्त करनेके हामी हैं। और भगवान सभीका होनेके कारण सभी मनुष्यता बढानेके लिअे बंधे हुअे हैं। अिस-लिअे हमें धर्मभेदकी तरफ बिलकुल ध्यान न देकर सबके साथ

भाअीचारा वढाना चाहिये। किसी भी तरहका पक्षपात मनमें न लाया जाय। दूसरे लोग सकुचित सगठन करें, तो अुनसे द्वेष न किया जाय। परन्तु अपनी अुदारताका असर अुन पर डालते रहे।"

पूर्व अफ्रीकाके कुछ अीसाअी मिशनरियोने अफ्रीकी लोगोकी वहुत गहरी सेवा की है। यहा तक कि अैसे मिशनरियोकी सेवाके प्रतापमे अफ्रीकी लोगोमें वहुत जागृति हुअी है और अिसलिअे यहाके अग्रेज शासक अिस प्रकारके मिशनरियोके कामके वारेमें किसी अशमे सशक और नाराज रहते है। कुछ लोग कहते है कि, "अिन मिशनरियोकी सेवाके वदौलत ही अफ्रीकी अीसाअी गोरोसे समानताकी वाते करते है। अिससे अिस्लाम अच्छा, शासनके विरुद्ध झगडा तो नही करता।" अिस्लामके वारेमें कैसी राय!

ना० आगाखानकी जो हीरक-तुला हुअी, वह अिसी दारेस्सलाममें हुअी थी। यहा अिस्माअिली लोगोकी सख्या अच्छी है। वे सगठित है। लडके-लडकियोकी शिक्षा पर वे विपुल धन खर्च करते है। पाठशालाओमें अनुशासन अच्छा रहे, अिसलिअे अग्रेज शिक्षक-शिक्षिकाअे रखनेका भी अुनका आग्रह रहता है। कितनी ही छोटी-छोटी अुम्रकी खोजा लडकियोको अध्यापिकामें वनकर कक्षाओको पढाते मैंने देखा। यहा अेक वात दर्ज करनी ही चाहिये कि यह शिकायत आगाखानी स्कूलोके वारेमे भी सुनी जाती है कि 'अच्छे शिक्षक मिलते नही, जो मिलते है वे टिकते नही। नतीजा यह होता है कि पैसा खर्च करने पर भी शिक्षा खराव होती है।' मा-वाप जानते नही कि खुद रुपयेके पीछे लगे होनेके कारण वे ही सर्वत्र पैसेका वातावरण फैलाते है। जैसे दुनियाभरके मा-वापकी यह अिच्छा पूरी नही होती कि हम भले ही कैसे भी हो तो भी हमारे वच्चे धर्मनिष्ठ और चरित्रवान होने चाहियें, अुसी तरह शिक्षाके वारेमें विलकुल अुदासीन मा-वापके हाथोमें जिन सस्थाओका अधिकार है अुन सस्थाओमें अच्छे शिक्षक टिकेंगे नही, और शिक्षाका वातावरण वनेगा नही।

पाठशालाओंकी शिक्षाका वायुमडल मा-वाप किस तरह विगाडते है और अुसे कैसे चुपचाप सहन करना पडता है, अिसकी शिकायत यहाके केवल देशी शिक्षक ही नही करते, अग्रेज भी करते है।

मोम्बासामें मुसलमानोंके लिअे अेक वडी सस्था काम कर रही है — 'मोम्वासा अिस्टिटचूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन'। वहाके अेक गोरे अध्यापकसे मैंने यो ही कहा कि, "पूर्व अफ्रीकाके लिअे मुस्लिम युनिवर्सिटी वनानेका अिरादा सुना जाता है।" अुसने हस कर कहा कि, "अिसमें शक नही कि शिक्षाका यह अेक वडा केन्द्र होगा, परन्तु अेक ही जातिकी शिक्षाके लिअे वधी हुअी सस्थाको युनिवर्सिटी शब्द कैसे लागू किया जा सकता है? युनिवर्सिटी तो युनिवर्सल ही होनी चाहिये न?"

समय और अुत्साहके अभावमें मैंने अुनसे यह कहनेका विचार छोड दिया कि हिन्दुस्तानमें वनारस हिन्दू युनिवर्सिटी है, अलीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी है और जामिया मिलिया अिस्लामिया भी है। अिन युनिवर्सिटियोंमें दूसरी जातियोंके विद्यार्थी लिये जाते है, परन्तु अिन सस्थाओंका सगठन जातीय ढग पर ही किया गया है।

मोम्वासाकी 'अिस्टिटचूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन' में औद्योगिक शिक्षाको प्रमुख स्थान दिया गया है। थोडे ही दिनोंमे वहा जहाजरानीका कालेज खुलनेवाला है। समुद्रका किनारा, अच्छे-अच्छे मकान, होशियार अध्यापक, विशाल भूमि और विपुल वन — जव अितनी सुविधाअें मिली हुअी है, तो फिर सस्थाका विकास होना ही चाहिये।

अिस सस्थाके लिअे ना० आगाखानने वहुत वडा दान दिया है और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारने वचन दिया है कि अिस प्रकार जितनी रकम आपकी तरफसे अिकट्ठी होगी अुतनी ही सरकारकी ओरसे, कॉलोनियल डेवलपमेण्ट फडकी तरफसे दी जायगी।

अिसमें शक नही कि यह अिस्टिटचूट जव धुआधार काम करेगी और पूर्व अफ्रीकाकी मुस्लिम सस्थाअें अुसके साथ शरीक होगी, तव यह शिक्षाका अेक जवरदस्त केन्द्र वन जायगी।

दारेस्सलाममे भी मैंने अनेक शिक्षासस्थाओसे और भारतवासियोके नेताओसे जोर देकर कहा कि हमारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अच्छी बुनियाद पर नही है, यह मै अच्छी तरह जानता हू। शिक्षाको जीवनकार्य बनाये हुअे शिक्षक भी आज हमारे पास नही, यह भी मैं जानता हू। परन्तु हमारी मुख्य कठिनाअी यह है कि यहा अुच्च शिक्षाका कोअी साधन ही नही है। अुच्च शिक्षाके अभावमें हमारी सारी जाति, शिक्षाकी दृष्टिसे, वामन अवतारकी तरह बौनी हो गअी है। हिन्दुस्तानसे भी अच्छे शिक्षक कितने लायेंगे? वहासे बहुत लोग नही आयेंगे। यहाके अिस सहारामें बाहरसे नदी बहानेसे यहा कुछ नही अुगनेवाला है। यही पर अुच्च शिक्षाकी सुविधा करेंगे, तो ही अन्तमे हम यहा अपने बीचसे अच्छे शिक्षक पैदा कर सकेंगे। हमें दीर्घदृष्टिवाले मजे हुअे नेता भी अिसी शिक्षासे मिलेंगे। हम अपनी सस्थाअे जातीय आधार पर खडी न करे। अच्छेसे अच्छे अध्यापक जहासे मिले वहीसे हम अेकत्र करेंगे। अच्छे अग्रेज मिलेंगे तो अुन्हे भी ले लेंगे। भारत सरकारसे अच्छे विद्वानोको अुधार लेंगे और अुच्च शिक्षाकी अेक सस्था खोलेंगे। शुरू-शुरूमे अुसमें विद्यार्थी थोडे होंगे, परन्तु देखते-देखते यह सख्या बढेगी। अफ्रीकी लोगोके लिअे अिस सस्थामे खास सहूलियत रखेंगे। हमारे बच्चे तो होंगे ही। और मेरा विश्वास है कि भले ही बहुत ही थोडी सख्यामें सही, कुछ अग्रेज युवक भी हमारी सस्थामें अवश्य भरती होंगे। अिस खयालसे नही कि और कही अच्छी सुविधा नही है, बल्कि अिस नैतिक कारणसे कि यहा तीनो जातियोके — काले, गोरे और गेहुअे रगके विद्यार्थियोको समान भावसे अुच्च शिक्षा दी जाती है, कुछ गोरे मा-बाप ही अपने बच्चोको यहा भेजेंगे और कुछ नवयुवक मा-बापके विरोधके बावजूद भी आयेंगे। गोरे विद्यार्थियोकी तादाद नही के बराबर होगी। मगर जो आयेंगे अुनका अुद्धार होगा। और कोअी नही आयेगा तो भी हमारा कुछ बिगडेगा नही। हम अेक अच्छीसे अच्छी सस्था चला कर दिखायेंगे। अिस सस्थाके साथ गाधीजीका

नाम जोडनेमें कोअी आपत्ति होनेका कारण नही। यह सही है कि अुसमें गाधीजीकी शिक्षा-पद्धति तुरत जारी नही होगी। गाधीजीकी पद्धति युरोप-अमरीकाके कुछ समर्थ शिक्षाशास्त्रियोके गले अुतर गअी है। जिनका असर हिन्दुस्तानमे नही, परन्तु युरोप-अमरीकासे यहा आयेगा। गाधीजीका नाम होगा तो कुछ नैतिक अूचाअी और गरीब दलित जनताके अुद्धारका आदर्श अुसमें रहेगा। हम जितना रुपया जमा करेंगे, अुतनी मदद सरकार भी हमें दिलायेगी।

हमारे बच्चोको हिन्दुस्तान या विलायत भेजनेसे यहाके प्रश्न हल नही होगे। नअी और अुच्च शिक्षा द्वारा हम यहा नअी सस्कृति स्थापित करेंगे। अेक कालेज कायम हो जायगा, तो अुसके आसपास अनेक प्रवृत्तिया गुथ जायगी। गाधी-टैगोर व्याख्यानमाला जारी करेंगे। यहाकी जातियोंकी भाषाओंमें अच्छा साहित्य तैयार करा कर अुन भाषाओंकी सस्कारशक्ति बढायेंगे। जिस जातिकी भाषा समर्थ हुअी, वह जाति भी समर्थ होगी ही। क्योंकि भाषा और साहित्य जातिका आध्यात्मिक दूध है। यहाकी ब्रिटिश नीतिकी सकीर्णता मुझे मालूम है। वह हमें अन्त तक नही सता सकेगी। आजकलकी दुनियाकी हालत ही अैसी है कि सकुचित नीति भविष्यमें अुन्हें नही पुसायेगी। अगर हम अफ्रीकी जनताकी सच्ची सेवा करेंगे, तो हमारी जडें यहा अवश्य मजबूत होगी। शर्त यह है कि हमें नग्न स्वार्थ छोड देना चाहिये और यहाकी जनताके हितोको प्रधानता देनी चाहिये।

गाधी स्मारक कॉलेजकी कल्पनाके प्रति लोग धीरे-धीरे अनुकूल होते जा रहे है। मुझे विश्वास है कि यह काम अवश्य शुरू होगा और अुसके द्वारा बहुत अच्छे परिणाम निकलेंगे। परन्तु अच्छे कामोमें विघ्न भी अधिक होते है।

दारेस्सलाम हिन्द महासागरके पश्चिमी किनारेका आभूषण है। जैसे बम्बअीमें चौपाटीका गोल समुद्र कोलाबाके प्रकाश-स्तभसे लगा कर मलाबार हिल तक फैला हुआ है, वही बात दारेस्सलामकी भी है।

समुद्रस्नानके लिअे यहा अितनी अधिक अच्छी जगहें है और वहासे समुद्रके रग अितने सौम्य, सुन्दर और विविध दिखाअी पडते है कि अुन स्थानोको छोडनेका जी ही नही करता। हिन्दुस्तानमे कारवारका बदरगाह भी अैसा ही सुदर है यद्यपि वहाका दीपस्तभ यहाकी अपेक्षा अधिक शोभा देता है। अुत्तर पूर्वके समुद्र तट पर ओशियन रोड है। यह रास्ता जहा समुद्रकी तरफ आगे जाता है, वहा हमारे यहाके लोगोने अेक सुदर बगला वना कर अिस स्थानकी कद्र की है। अिस समय वहा ओशन ब्रीझके नामसे अेक युरोपियन होटल चलता है। आरामके लिअे यहाके किनारेकी अपेक्षा अधिक अच्छी जगह शायद ही कही मिल सके। दारेस्सलाममें जहा तहा नारियलके पेड नीचेके मनुष्योको आशीर्वाद देते हुअे खडे दिखाअी पडते है। जहा-तहा अच्छे नये मकान बन रहे है। और अिस प्रकार शहरकी शोभा और सुविधाअें बढती जा रही है। कागोके बेल्जियन लोगोने यही बदरगाह अपने लिअे पसद किया है। अुनका अिलाका मध्य अफ्रीकाके पश्चिमकी तरफ है। परन्तु पश्चिमकी तरफ अुन्हे समुद्र तट नहीके बराबर ही मिला है। बेल्जियन कागोके पूर्वकी ओर टागानिकाका लबा सरोवर है। अुसका आकार लाल मिर्चके जैसा लबा पतला है। अिस सरोवरके पूर्वी किनारे पर जो किगोमा बदरगाह है, अुसके और दारेस्सलामके बीच सात सौ मीलकी अेक सीधी रेलवे जाती है। यह रेलवे सारे टागानिका प्रदेशको अुत्तर और दक्षिणमें विभाजित करती है। युद्धके समय रक्षाकी दृष्टिसे यह रेलवे बडे ही महत्त्वकी है। रुआडा-अुरुडी अिलाकेकी तरफ या अुसुम्बुरा शहरकी तरफ जानेके लिअे यही रास्ता सुभीतेका है।

दारेस्सलाममे अफ्रीकी बालकोकी शिक्षाकी दो सरकारी सस्थाअे हमने देखी। लडकोकी सस्थामें पढाअीका काम अुनसे सख्तीके साथ कराया जाता है। वहाके मुख्य अध्यापकने बातो ही बातोंमें कहा, "जो लडके चौदहवें वर्षमें शादी कर सकते है, अुन लडकोको अिसी अुम्रमें अपने भविष्यका खयाल करके लगनके साथ पढना ही चाहिये। क्या

आपको अैसा नही लगता ? बच्चे है कह कर दरगुजर किया जाय, तो वे कभी अूचे नही अुठेंगे और अपनी सारी शक्ति प्रकट नहीं कर सकेंगे। पढाया जाय प्रेमपूर्वक परन्तु लडके पढाअीमें ढिलाअी करें तो सहन नही करना चाहिये।" अुस गोरे शिक्षककी बात सच थी। अुनके विद्यार्थी लगनसे पढ भी रहे थे।

जब हम लडकियोकी पाठशाला देखने गये, तब वहा खेलकी छुट्टी थी। कुछ लडकिया खाने बैठी थी, कुछ खेल रही थी। अुनके घुघराले बाल और अुस्तरेसे निकाली हुअी मागें खास तौर पर देखने लायक थी। दुनियाके दूसरे मनुष्योसे अफ्रीकी लोगोके बाल बिलकुल भिन्न होते है। अुनमें भी सुन्दरता लानेका ये लोग बहुत प्रयत्न करते है। और अुसमें सफलता मिलती ही न हो, सो बात नहीं। यहाके हरअेक प्रदेशकी बाल सवारनेकी पद्धति अलग है। ये सब प्रकार फोटो-आल्बममें अेकत्र किये जाय, तो अफ्रीकी रसिकताका अेक सुन्दर सग्रह तैयार हो जाय। अफ्रीकी लोग दूसरी जातियोके साथ विवाह करें, तो अुनकी सन्तानकी चमडीका रग बदल जाय। परन्तु कहा जाता है कि बालोके मामलेमें अफ्रीकी असर स्थायी दिखाअी देता है। अैसी रायें कहा तक सच होती हैं, यह कोअी नही देखता। कुछ सिद्धान्त अिसीलिअे बिना जाच किये स्वीकार कर लिये जाते हैं कि लोगोको वे आकर्षक लगते है।

अफ्रीकी लोगोके लिअे सरकारकी तरफसे कअी स्थानो पर वेलफेअर सेन्टर्स खुले हुअे हैं, जहा ये लोग आजादीके साथ अिकट्ठे हो सकते है, खेल खेलते हैं, अखबार पढते हैं, रात्रिवर्ग चलाते है और जीमें आये तो वहा शराबका सेवन भी कर सकते हैं।

सारे पूर्व अफ्रीकामें शराब खुले तौर पर अिस्तेमाल की जाती है। हमारे यहाके लोगोने भी अिस रिवाजमें वहा बडी प्रगति की है ! कुछ अच्छे और प्रतिष्ठित लोग जब सूर्यास्तके समय शराब पीते है और मस्त होकर बातें करते हैं तब हमें अजीबसा लगता है। सभी कहते हैं कि कुछ लोग अपवादस्वरूप नही पीते। कौन अपवादस्वरूप है और

कौन नियमके अधीन है, यह जाच करने या जान लेनेकी मैंने हिम्मत नही की। मैंने यही माननेमें सुविधा समझी कि जो हमारे सम्पर्कमें आते जाते हैं अुनमें से अधिकाश नही पीते।

हमारे सम्मानमें जो भोज रखे जाते, अुनमें युरोपियन लोगोको भी आमत्रण होनेके कारण अुनके लिअे शराबकी सुविधा रखी जाती थी, और फिर हमारे यहाके लोगोमें भी जैसी जिसकी रुचि होती, वह अुसी तरह करता था। यह यहाका सर्वमान्य रिवाज है। जब मेरे जैसा कोअी आता है तब अिन लोगोको यह प्रश्न पूछनेमें मजा आता है कि "आप यह सब कैसे निभा लेते है?" मै यह कहकर सतोष कर लेता कि "विदेशमें सारा समाज जिस रिवाजको मानता है, मै अुसका काजी बनने नही आया हू। मैं अपने सिद्धान्तका पालन करके सतोष रखता हू। मद्यपान-निषेधका मिशन लेकर आया होता, तो दूसरा ढग अख्तियार करता।" दारेस्सलामको ध्यानमें रखकर यह सब नही लिखा है। युगाडामें यह सवाल खास तौर पर विशेष महत्त्वका बताया गया था।

अफ्रीकन वेलफेअर सेण्टरोमें ग्रामोफोन चलता देखकर मैंने अफ्रीकी सगीतकी माग की। अफ्रीकी भाषाओमे लिखे गये गीत और युरोपियन राग — अैसे प्रकार मिशनरी लोगोने बहुतसे चलाये है। अिनका सगीत अुच्च कोटिका होता है। अमरीकामे प्रशसित 'निग्रो स्पिरीच्युअल्स'के बारेमे हम जानते है। मुझे यहा अफ्रीकी भाषा, अफ्रीकी छन्द, और राग भी अफ्रीकी, अैसा सगीत चाहिये था। अेक ही प्लेट अिस प्रकारकी थी और अुसमे भी राग शुद्ध अफ्रीकी नही था। अरबी सगीतका असर अुसमें स्पष्ट जान पडता था।

हरअेक जाति अपने सगीतमें अपनी आत्मा अुडेलती है और अपने सारे अितिहासका हृदय पर जो असर हुआ हो, अुसे अपने सगीतके द्वारा व्यक्त करती है। अिसलिअे अफ्रीकी लोगोका सगीत सुननेको मै अुत्सुक था। जहा जहा कुछ भी अवसर मिला, वही मैंने अफ्रीकी सगीत सुननेका प्रयत्न किया। और जानकार लोगोसे अुनकी राय पूछी। अफ्रीकी रागोमे

युद्ध सबधी कोअी राग होता है या नहीं, रणमदके स्वर अुनमें मिलते है या नहीं, अिसकी मैंने जाच की। लोगोने कहा कि वीररसके स्वर तो नहीं मिलते, परन्तु अुत्सवों और त्योहारों वगैराके राग, विवाह-गीत और विजय-गीत मिलते हैं। मैंने जो थोडासा सगीत सुना, अुसमें विषाद और निराशाके स्वर स्पष्ट दिखाअी देते थे। अच्छी असर होने पर भी यह विशेषता कायम थी। श्री जयतीभाअीने कुछ अफ्रीकी रेकॉर्ड लाकर सुनाये। अुन परसे अूपरकी राय मजबूत हुअी। परतु दूसरी तरहका सगीत अफ्रीकी लोगोंके पास नहीं है, यह कहने जितना अनुभव मुझे नहीं है। सगीतका मर्म समझनेवाले लोगोको अफ्रीकी सगीतका गहरा अध्ययन करना चाहिये। हमारे यहा सगीतशास्त्रकी जितनी अुपासना हुअी, अुतनी अुसके मर्मकी नहीं हुअी। अिसलिअे बहुत लोग 'साअिकोलॉजी ऑफ म्यूजिक' से अपरिचित रहते है।

दारेस्सलाममें अेक अच्छा-सा अफ्रीकी म्यूजियम है। म्यूजियम है तो छोटा, परन्तु अत्यत कीमती है।

अफ्रीकी लोग जब शिकारको जाते है, तब नोक पर जहरसे बुझाये हुअे तीर लेकर जाते है। पुराने जमानेके तीरोंकी नोक भी लकडीकी होती थी और हमारी तकलीकी नोककी तरह अुसमें आकडा रहता था। तीर जानवरको लगा कि अुसका सिरा तुरत टूट जाता है, जानवरके शरीरमें घर कर लेता है और नोकके जहरसे जानवर मर जाता है। मुझे कहा गया कि म्यूजियमके वस्तुपालने अफ्रीकामें काम आनेवाले अैसे जहरोंका गहरा अध्ययन किया है।

अफ्रीकाके मध्यभागकी किसी गुफामें चालीस हजार वर्ष पहलेका जो अेक चित्र चित्रित है, अुसकी नकल अिस म्यूजियममें रखी गअी है। पशुओंकी हूबहू शक्लें और शिकारके प्रसग अिस चित्रकी खासियत है।

अफ्रीकाकी सारी सस्कृति ग्रामीण ढगकी है। अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सब जगह झोपडे ही झोपडे दिखाअी देते है। अीट-चूने या

पत्थरका अेक भी मकान प्राचीन अफ्रीकियोने नही बनाया। चमडे या वल्कलके अुनके कपडे, लकडीमें खोदी हुअी नावें, कौडियो, कान्चके टुकडो और मणियोकी कारीगरी, लकडी और चमडेके अुनके बाजे, अैसी बहुतसी चीजें देखनेको मिली। कुल मिलाकर अब तक हम कोअी पाच म्यूजियम ही देख सके।

पूर्व अफ्रीकामें जहा-जहा महाराष्ट्री मिले, वही अुच्च अभिरुचि वाला सगीत, अच्छासा नाटच और अहिंसाके सिद्धातके प्रति अश्रद्धा सुननेको मिली। महाराष्ट्री लोग गाधीजीकी बात समझनेका पूरा प्रयत्न करते हैं। परन्तु अेक खास पक्षके नेताओके अखड प्रचारका असर अुनके मस्तिष्क पर अितना हो गया है कि वे किसी भी तरह अिस बातको नही मान सकते कि गाधीजीका आदर्शवाद व्यावहारिक भी है। अुन्हे धीरजके साथ समझानेकी जरूरत है।

दारेस्सलामका व्यायाम मडल वहाके युवकोमें अच्छा काम कर रहा है। व्यायाम मडलमे सेवाका वातावरण होने और शरीर-सवर्धनकी तरफ ध्यान दिया जानेके कारण धर्मोपदेशकी अपेक्षा भी व्यायाम मडलोके जरिये चरित्रकी दृढता अधिक अच्छी तरह सपादित होती है।

अिसी शहरमें अेक अफ्रीकी सस्थाने हमें पार्टी दी थी। अुसमे सदाकी भाति भाषण होनेके बाद बढिया प्रश्नोत्तर हुअे। गाधीजीके सिद्धातोको समझनेके लिअे और हिन्दुस्तानका रुख जान लेनेके लिअे हर जगह अफ्रीकी लोग बडे अुत्सुक होते हैं। "आप लडाअी किये बगैर और खून बहाये बिना कैसे स्वतत्र हो सके? आपकी यह कला हमे सिखाअिये।" अिस तरह हर जगह अफ्रीकी लोग हमसे पूछते। यहा आनेके लिअे परमिट देते समय यहाकी सरकारने हम पर किसी किस्मकी शर्त नही लगाअी थी, यह सच है। परन्तु अिसी कारण मेहमानकी हैसियतसे मेरे लिअे मर्यादाअें रखना जरूरी था। अिसलिअे अिस प्रकारकी शका भी मुझे पैदा नही करनी थी कि यहा आकर

अफ्रीकी लोगोंको मैं यहांकी सरकारके विरुद्ध भड़काता हूं। अिसके सिवाय माखनसिंह नामक अेक हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पर अिन दिनों अेक मुकदमा चल रहा था, जिससे सारा वातावरण क्षुब्ध हो गया था। अिन सब बातोंका विचार करके मैंने हर जगह गांधीजीके रचनात्मक कार्योंका महत्त्व समझाकर संतोष मान लिया। रचनात्मक कार्योंसे जनताकी शक्ति किस तरह बढ़ती है, अुनमें आत्मविश्वास कैसे आता है और जनताका संगठन करना किस प्रकार सरल हो जाता है, यह सब कहकर ही मैं रुक जाता था। सत्याग्रह या असहयोगकी बात मैं जानबूझकर नहीं कहता था। गांधीजीका अंग्रेजी साहित्य सर्वत्र मिलता ही है। गरज होगी तो ये लोग पढ़ लेंगे।

मैं मानता हूं कि अिस देशमें अब भी कुछ समय तक गोरोंके लिअे स्थान है। हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रता मान लेनेके बाद अंग्रेजोंका अंतिम आधार अफ्रीका ही है। अगर ये लोग भविष्यको पहचान कर अफ्रीकाके लोगोंके साथ और यहांके भारतीयोंके साथ अच्छा बर्ताव करें, तो अंग्रेज जाति अपना भी अुद्धार कर सकेगी और अितिहास-विधाता परमेश्वरकी योजनाओंमें भी अपना ठोस हिस्सा दे सकेगी। आज तो यहांके गोरोंमें यह दूरदृष्टि दिखाअी नहीं देती। आज वे अितना ही सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी लोगोंको सता कर किस तरह भगा दिया जाय और यहांके लोगोंको जकड़कर कैसे काबूमें रखा जाय।

मैं मानता हूं कि यह स्थिति लम्बे समय तक नहीं टिक सकती। कॉमनवेल्थके नेता अिकट्ठे होकर अिन तमाम नीतिमें तब्दीली करेंगे और यहांके लोगोंको अच्छी शिक्षा देकर यहांकी नीति सुधारेंगे।

आजकल फोटोग्राफीके आ जानेसे चित्रकलाको बड़ा नुकसान पहुंचा है। अगर कोअी पूछे कि अफ्रीकी लोग कैसे दिखाअी देते हैं, तो अुनके सामने हम अफ्रीकाकी दस बीस जातियोंके प्रतिनिधिस्वरूप कुछ फोटो रख सकते हैं — अितने बढ़िया फोटो कि अुन लोगोंको प्रत्यक्ष देखने जैसा सन्तोष मिले। परन्तु अफ्रीकी मूर्तिकार अपनी

जातिकी जैसी कल्पना करेगा और अुसकी मूर्ति बनावेगा, वह किसी भी फोटोसे नही मिलेगी। फिर भी अुस मूर्तिके भीतर अफ्रीकी लोगोका चेहरा, अुनका स्वभाव और हजारो वर्षके अनुभवकी अेकत्र की हुअी छटा — तीनो हमे अेकत्र देखनेको मिलेंगे। अिसके लिअे मैने हरअेक म्यूजियममें अैसी मूर्तिया देखनेका अवसर ढूढा। नैरोबी, दारेस्सलाम, झाझीबार, डोडोमा और कपाला — अितने स्थानोके म्यूजियम हमने देखे। अिसके सिवाय झाझीबारके सुलतान, वहाके रेसीडेण्ट, दारेस्सलामके गवर्नर, युगाण्डाके कबाका यानी राजा वगैरा बडे लोगोके मकानो और दीवानखानोमें स्थानीय कारीगरीकी जो खास चीजे रखी रहती है अुन्हे मैने ध्यानसे देखा। किंग्ज कॉलेज बुडो, मेकरेरे कॉलेज, गायाजाका मिशन स्कूल वगैरा स्थानो पर पुरानी व नअी चित्रकला देखनेको मिली सो भी देख ली। जगबारमें मुझे कोअी अच्छी मूर्ति नही मिली। वह मैने दारेस्सलाममे बडी दुकानोके आगे रास्ते पर बैठकर बेचनेवाले लोगोसे खरीद ली। ये कारीगर कुशल हो या मामूली, वे अपने देशकी परपरागत कारीगरीको अच्छी तरह पेश करते ही है। काले और सफेद रगके लकडोमें से खोदी हुअी ये मूर्तिया अफ्रीकी जीवनकी प्रतिनिधि है। अुनके कान, अुनकी आखें, अुनके होठ, अुनकी ठोडी — चारो जगह अुनके स्वभावका प्रतिबिंब पडता है। युरोपियन लोग अफ्रीकी लोगोकी मूर्तिया लकडीमें खोदकर अपने घरोमें रखते है और अुनके हाथोमें थाली या तश्तरी देते है। यह मुझे बिलकुल पसद नही। यह जाति हमेशाके लिअे घरके बॉय या नौकर बननेके लिअे पैदा नही हुअी। नौकरकी मूर्ति रखनी ही हो तो अपनी जातिकी मूर्ति ही अच्छी। अिसकी अपेक्षा हाथमें तीर और ढाल लेकर शिकार करते हुअे जगली अफ्रीकियोकी मूर्तिया हजार दर्जे अच्छी।

११

प्रार्थना-प्रवचन

महात्मा गाधीने अेक वार आश्रमकी व्याख्या करते हुअे कहा था कि, "प्रार्थना पर — सामूहिक प्रार्थना पर जिन लोगोका विश्वास है, अुनका सघ ही आश्रम है।" किसी भी धर्मका आदमी आश्रमकी प्रार्थनामें शरीक हो सकता है। कोअी खास तरह की प्रार्थना ही करनी चाहिये, अैसा आग्रह नहीं है। जिसने सभी धर्मोको अपनाया, अुसे सभी धर्मोकी प्रार्थनायें गानेमें सकोच नहीं होता। थियोसोफीने भी सब धर्मोके सिद्धान्तोका आदरपूर्वक अध्ययन करने पर बहुत जोर दिया है। अिसलिअे हमारी आश्रमकी प्रार्थनाके प्रति थियोसोफिस्ट लोगोका सद्भाव विशेष होता है। मोम्बासामें श्री मास्टरकी गाधी सोसायटीमें, दारेस्सलाममें श्री जयन्तीभाअीके वातावरणमें और जगबारमें अुनके पिताजीके चलाये हुअे थियोसोफिकल प्रार्थना-मदिरमें जो प्रार्थनायें हमने की, वे सचमुच सामूहिक प्रार्थनायें थी। क्योकि अनेक लोग अुनमें भक्तिभावसे शरीक होते थे। अिन प्रार्थनाओके साथ जो प्रवचन किये गये, अुनका सार यहा दिये देता हू।

प्रार्थना अेक दृष्टिसे देखा जाय तो हृदयका स्नान है और दूसरी तरहसे देखा जाय तो दिलकी खुराक भी है। प्रार्थनाके वातावरणमे अगर हम तल्लीन हो सके, तो हृदयमे जमे हुअे अनेक कुसस्कार और मलिन सकल्प धीरे-धीरे मिट जाते है और शुभ सकल्प मजबूत और विकसित होते जाते है। प्रार्थनामें हम कुछ मागें या न मागें, भगवानकी सन्निधिमें खडे रहनेसे सारा वायुमडल अपने आप पवित्र होता जाता है। कितनी ही परेशानिया अपने आप हल हो जाती है और समूहमें की गअी प्रार्थना द्वारा अुसमे सम्मिलित होनेवाले लोगोके बीच अेक

प्रकारकी आत्मीयता और आत्म-परायणता पैदा हो सकती है। समाज अनेक तरहसे गिरा हुआ हो, हारा हुआ हो और छिन्न-भिन्न हो गया हो, तो भी अुसमें नया चेतन पैदा करनेमे प्रार्थना समर्थ है। प्रार्थना मनुष्यजातिकी आखिरी पूजी है। और कुछ भी बाकी न रहा हो, तो भी प्रार्थना हमें धीरज और नअी आशा प्रदान कर सकती है। अिसलिअे मनुष्यको सद्भावपूर्वक प्रार्थनाका रिवाज कायम रखना चाहिये। अगर प्रार्थनाकी आदत हो तो कठिन अवसर पर अुसीकी अचूक शरण लेना सूझता है। और अिस प्रकार जैसे समुद्रमें डूबनेवाले मनुष्यके लिअे रबरके कडे या कॉर्कके जैकट काम आते है, वैसे ही प्रार्थना काम आती है। हरअेक कुटुम्बमें और कुछ नही तो रोज अेक बार सवेरे या शामको सब लोगोको साथ मिलकर प्रार्थना करनेका रिवाज रखना चाहिये। और अुसके अन्तमें, अुसी पवित्र वातावरणमें घरके सुख-दुखकी और मेल या झगडेकी बाते छेडनी चाहिये। हरअेक खानदानके लिअे यह बडी शिक्षा है। जैसे व्यक्तिकी आत्मा होती है वैसे ही कुटुम्ब, जाति या सस्थामें भी हम आत्मा जाग्रत कर सकते हैं।

अिसी तरह हमारे मदिर भी सारे समुदायकी आत्माकी जाग्रतिके लिअे अिस्तेमाल किये जा सकते है। मदिरोमें मूर्ति हो या न हो, यह गौण चीज है। परन्तु मूर्तिकी पूजाके साथ आचार धर्मका झगडा पैदा हो जाता है। यह नही कहा जा सकता कि मूर्तिको नहलाने-खिलानेमें कोअी खास धार्मिक वृत्ति पैदा होती ही है। हिन्दू समाजमें जहा खानेकी बात आअी, वहा चौका-बेचौका, छुआछूत और अूचनीचका भाव वगैरा असख्य बातें पैदा हो जाती हैं। शुद्ध और नित्यतृप्त भगवानके लिअे नहाने-खानेकी बात न भी रखें तो काम चल सकता है। भोग रखना ही हो तो सूखे या हरे मेवे और मिठाअीका रखा जा सकता है। पूजाके लिअे पुरोहित नही रखने चाहिये। जिसके हृदयमे भक्तिकी अुमग हो, वही अपने लिअे पूजा करे। रोज सवेरे अुठकर माता-पिताके पैरो पडनेकी जिसकी आदत है, वह अगर समयके अभावमें यही काम

किसी नौकर या चपरासीके द्वारा कराये तो अुनसे जितना मतलब पूरा होगा, अुतना ही पुरोहितके द्वारा पूजा करानेमे हो सकता है। पैरो पडना मा-बापकी जरूरत नही है, यह तो पुत्रके हृदयकी अुर्मि मानी जायगी। अिसमें अेवजी नही रखा जा सकता।

हमारे मन्दिर बनते है कितनी भक्तिसे! परन्तु बादमें अुनमे स्वच्छता कायम नही रखी जाती। मन्दिरोमें दिये जानेवाले दानका सद्व्यय नही होता। मन्दिरोकी आय भगवानके भोगविलासमें अिस्तेमाल नही होनी चाहिये, परतु लोककल्याणके ही काम आनी चाहिये। समाजका चरित्र सुधारनेवाले अनेक कार्य मन्दिरो द्वारा हो। मन्दिरोकी जमीन, दीवारो और कटहरोको दिनमें कअी बार गीले कपडेसे पोछकर साफ करना चाहिये। मदिर अतरबाह्य स्वच्छताका स्थान होता है। वहा लोगोको व्यक्तिगत और सामाजिक दोनो तरहकी सफाअीके नियम सीखनेकी सुविधा होनी चाहिये। जहा तहा पानी बिखेर कर गीलापन और कीचड पैदा नही करना चाहिये। नाम-सकीर्तनके नामसे चिल्ला कर मदिरका वातावरण नही बिगाडना चाहिये। जिन्हे मूर्तिके दर्शन पर आपत्ति न हो, अुन तमाम लोगोको मन्दिरमें आने देना चाहिये — भले ही वे किसी भी धर्मके हो। दर्शनके लिअे आनेवाले लोग बाहर जूता अुतारकर मन्दिरमें जाते है, तब अुनका ध्यान जूते चोरी जानेके डरसे अकसर वही होता है। अिसके बजाय छोटीसी थैलीमें जूता रख कर वह थैली साथ रखनेकी आजादी दी जाय, तो जूतेकी भी रक्षा हो जाय और भगवानका ध्यान भी बना रहे। पुराने लोगोने कहा है — 'शुष्क चर्म तु काष्ठवत्' अर्थात् सूखा चमडा लकडीके तमान है। अिसलिअे अुसको छुआछूत न मानी जाय।

मदिरो द्वारा धार्मिक ग्रथोके सग्रह, अुनके अध्ययन, प्रकाशन और चर्चाकी सुविधा होनी चाहिये। मदिर अतिथिशाला भी हो और मनुष्य तथा जानवरोंके लिअे रुग्णालय भी हो। हरअेक धर्मके त्यौहार अुचित परिवर्तनके साथ मदिरो द्वारा मनाये जा सकते है। अिस प्रकार हरअेक

मदिरको धर्मसेवाकी अेक अद्यतन (अप-टु-डेट) सस्था बनाया जा सकता है।

हमारा धर्म सनातनके नामसे पुकारा जाता है। सनातनका अर्थ हैं हमेशाका। कोअी भी वस्तु सडे नही, बिगडे नही और स्वच्छ और ताजी रहे, तभी अुसे हमेशाकी या टिकाअू कहा जा सकता है। सनातन अर्थात् नित्य नूतन। जैसे बहती हुअी हवा शुद्ध होती है, बहता हुआ पानी स्वच्छ होता है, अुसी तरह समय-समय पर जिसमे सुधार और फेरबदल होते रहते है वही सनातन धर्म माना जाता है। हम अिसी प्रकार करते भी आये है। बीचमें यह काम रुक गया, क्योकि विचार जागृति मन्द पड गअी और रूढिधर्मने जोर पकड लिया। अब हमे धर्मके सस्करणकी, सुधारकी प्रवृत्ति फिरसे अपनानी चाहिये।

पामर लोगोने तेज धर्मसे डर कर अेवजी धर्म चलाया। "गोदानके बदले सवा रुपया दे दो।" "त्यागके बजाय दानसे काम चला लो।" "जीवन परिवर्तनके स्थान पर नाममात्रका प्रायश्चित्त सुझा दो।" अैसे अनेक अेवजी धर्म हमने चला दिये है। नतीजा यह हुआ कि धर्म मद और नि सत्व हो गया। सत्यनारायणकी ही अुपासनाको देखिये। अुसमें सत्यनिष्ठा पर जोर दिया है। वचनपालनका माहात्म्य बताया है। परन्तु यह सब मन पर जमा देनेके लिअे डर और लालचकी दो हीन असामाजिक वृत्तियोकी शरण ली गअी है। "सत्यको छोडोगे — धोखा दोगे तो अमुक अमुक हानि होगी। सत्यको मानोगे तो फला लाभ होगा," अैसी बनावटी फलश्रुति बताकर लोगोको सत्यनिष्ठ नही बनाया जा सकता। सत्यनिष्ठाके कारण ही मनुष्य सत्यका पालन करे तो ही वह अुन्नत होगा।

धार्मिक कहानिया हमे बताती है कि भगवान कभी-कभी चाहे जैसा रूप धारण करके हमारी परीक्षा लेते है। "वह कुष्ठ रोगीका रूप धारण करेगा, भिखारी बनकर आयेगा। वह यवनके रूपमे प्रगट होगा और हमारी धर्मनिष्ठाकी जाच करेगा।" अैसी कहानी सुने बाद

मनुष्य अनजान या विचित्र आगन्तुकसे डरता है। हम यह क्यो न समझ लें कि हरअेक मनुष्य अीश्वरका ही रूप है ? हरअेक मानवके द्वारा प्रतिक्षण अीश्वर हमें कसोटी पर चढाता है। अैसी भावना दृढ हो जाय तो हर क्षण और हर प्रसग नित्य साधना और अखड आनन्दका वन जायगा।

भीतर देखने पर अीश्वर अन्तर्यामी है। वाहर देखें तो वह जगत् स्वरूप है। अीश्वरने अनेक अवतार धारण किये, अुससे पहले भगवानका सवसे पहला, सवसे वडा और सनातन अवतार तो यह सृष्टि ही है। भगवान हमें सृष्टिके रूपमे अखड दर्शन देते हैं। गीता हमें यही विश्वात्मैक्यका धर्म सिखाती है।

गीता हमारा सर्वोच्च धर्मग्रथ है, परन्तु हम अुसे केवल हिन्दू धर्मका ही न समझें। गीता-धर्म सिर्फ हिन्दुओका धर्म नही है, वह विश्वधर्म है। हम गीताके हैं। गीता सवकी है, सिर्फ हमारी नही। गीता-धर्म सुननेके लिअे हम तमाम दुनियाको वुलायें। अिसकी दीक्षा देनेकी भी वात नहीं है। वह जिसके हृदयमें अुदय हो अुसका अुद्धार हो जाय, अिसीलिअे हम गीतामदिर न वनाने लगें। गीता सभी धर्मोंमें प्रवेश कर सकती है। गीता केवल माननेका धर्म नही, परन्तु आचरण करनेका धर्म है। अुसमें ज्ञानी, भक्त, योगी, पडित, त्रिगुणातीत और स्थितप्रज्ञके जो लक्षण दिये हैं वे सव अेक ही है। मनुष्य-जातिके लिअे वे सर्वमान्य आदर्श हैं। समाज वना रहे और सर्वांगीण अुन्नति करे, अिसके लिअे जो सद्‌गुण मनुष्यको पैदा करने जरूरी हैं, गीतामे वे सव दैवी सम्पत्तिके वर्णनमें दे दिये है। अिसलिअे गीता समाजधर्म भी है और मोक्षधर्म भी। अभ्युदय और नि श्रेयस — अिहलोककी अुन्नति और आत्माका अुद्धार दोनो अेक साथ प्राप्त करनेकी कुजी गीताने मनुष्य-जातिको दी है। अिसीलिअे गीताधर्मी लोगोने श्रीकृष्णको 'जगद्-गुरु' कहा है।

हमने समाजधर्मके रूपमें चातुर्वर्ण्यकी स्थापना की। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार समाजोपयोगी वृत्तिया है। कुछ लोगोमें

अेक वृत्ति प्रधान होती है, कुछमें दूसरी। परन्तु हरअेक मनुष्यको ये चारों वृत्तिया अिकट्ठी ही अपनेमें पैदा करनी पडेगी। नही तो मनुष्यका जीवन अेकागी और पगु हो जायगा। अकेला ब्राह्मण, अकेला क्षत्रिय, अकेला वैश्य या अकेला शूद्र सम्पूर्ण मनुष्य नही है। गाधीजीमे ये चारो वृत्तिया अिकट्ठी विकसित हुअी थी। हमें अब चार अलग-अलग वर्ण और असख्य जातिया छोड देनी चाहियें और हरअेक व्यक्तिमे मानवताके सम्पूर्ण विकासका आग्रह रखना चाहिये। गीताका सन्यास, सन्यास आश्रम नही, परन्तु ब्रह्मचारी, गृहस्थी आदि सभी लोगोके लिअे आवश्यक अलिप्त और अनासक्त वृत्ति है।

और अब तो हमें सभी धर्मोंका आदरपूर्वक अध्ययन करके सब धर्मोंको अपनाना है। अलग-अलग धर्मोंके बीचका झगडा सिर्फ चर्चा और तुलनासे नही मिटेगा। सभी धर्मोंको स्वीकार करनेसे सच्ची धार्मिकता अूपर निखर आयेगी और विधि-विधानका मैल नीचे बैठ जायगा। हमारा बनाया हुआ अूचनीचका और अपने-परायेका भाव धर्मका अग नही है, परन्तु निरा अधर्म है। छुआछूतके साथ अूचनीचका भाव भी हमे निकाल देना चाहिये। हिन्दुस्तानसे अितनी दूर आ गये है, तो हमें शुद्ध धर्मका चिन्तन करना चाहिये और सामाजिक दोष निकाल देने चाहिये। रोटी-बेटी व्यवहारके पुराने नियम अब कामके नही है। जहा सभी धर्म हम अपने मानते हो, वहा धर्मपरिवर्तन करनेकी कोअी जरूरत भी नही और अुसमे कोअी पाप भी नही।

हमारे तमाम कामोमें सर्वोदयकी दृष्टि होनी चाहिये। जो सबसे पीछे है अुसे आगे लानेका विशेष प्रयत्न होना चाहिये। अेकके साथ अन्याय करके दूसरेका भला करने लगेंगे, तो वह सर्वोदय धर्मका द्रोह होगा। अिस तरह विश्वबन्धुत्वका हनन होता है। आत्मशुद्धि भी सामाजिक कर्तव्य ही है। अहिंसाके बिना समाजकी धारणा नही हो सकती और सत्यनारायणका दर्शन भी नही हो सकता।

१२

किटुंडा

भूमध्य रेखा पार करते समय जैसे मनमें गभीर भाव प्रगट हुआ था, वैसे ही अब तो दक्षिणमें लिंडी बन्दरगाह तक और मूगफलीके विराट प्रयोगवाले नाचिग्वे तक ठेठ दक्षिणमें पहुचनेवाला हू, अिस खयालसे भी मन गभीर हो गया। ६ जूनको हमने पहली बार दारेस्सलाम छोडा। लिंडी तक का २०० मीलका सफर समुद्रके किनारे-किनारे मोटर द्वारा हो सकता था। परन्तु हमें वक्त बचाना था अिसलिअे पन्त दम्पती, कमलनयन, छोटा राहुल, चि० सरोज और मै सवेरे दारेस्सलामसे विमान मार्गसे रवाना हुअे। यह आस्मानी रास्ता पहले जमीन परसे और फिर समुद्र परसे जाता था। अिसलिअे समुद्रका बढिया गुलाबी रग, बीच-बीचमें छोटे-बडे द्वीप आते तब पन्नेका हरा रग, माफिया, सोंगोसोंगो वगैरा द्वीपोंकी शोभा, आदि सब कुछ अपेक्षानुसार था। दाअी तरफ पहले किसूजू दिखाअी दिया। अुसके बाद रुफीजी नदीके असख्य सुन्दर मोड और समुद्रसे मिलनेके अुसके अनेक मुख देखकर आनन्द ही आनन्द हो गया। सचमुच अिस नदीको रूपवती कहना चाहिये। अिसके बाद दो-तीन छोटी-छोटी नदिया समुद्रसे मिलती नजर आअी। और अब लगभग नामशेष रह गये किलवा नामक दो बन्दरगाह दिखाअी पडे। अेक है किलवा-किविजी और दूसरा है किलवा-किसिवानी। अिस दूसरे बन्दरगाहसे पुराने समयमें न्यासा सरोवर तक जानेका रास्ता था। यह सारी शोभा देखते देखते हम लिंडी हवाअी अड्डे तक पहुच गये। लिंडी बन्दरगाह और शहरसे यह विमान केन्द्र लगभग १४ मील दूर है। लिंडीका बन्दरगाह भूमध्य रेखासे दस डिग्री दक्षिणमें

है। बन्दरगाह बहुत ही शान्त माना जाता है। लुकलेंडी नामकी अेक छोटीसी नदी खूब चौडी होकर यहा समुद्रसे मिलती है।

लिंडीमें खानावाना खाकर शाम पडते ही अेशियन लोगोकी अेक सभा करके हम नदीके अुस पार किटुडा पहाडी पर रातको सोने गये। शामकी सभामे हिन्दुस्तानके हिन्दू-मुसलमानोके सिवाय बहुतसे अरब भी आये थे। अरबोका अफ्रीकाके साथका सबध हमारे जैसा ही पुराना है। अिसके सिवाय अरब लोग शुरूसे ही स्थानिक लोगोके साथ मिलते-जुलते रहे है। अुन्होने अफ्रीकाके पूर्वी किनारे पर छोटे मोटे कअी राज्य भी स्थापित किये थे। पुर्तगाली लोगोके साथ वे कअी बार हारजीत खेले है। अरबी और पुर्तगाली दोनो सस्कृतियोके अवशेष तमाम किनारे पर जगह जगह फैले हुअे है। पुर्तगाली लोगोने बहुत कुछ खो दिया, फिर भी आज मोजाम्बिकका अुपजाअू और मनोहर प्रदेश अुन्हीके हाथमें है। और अक्षाशकी ठीक अितनी ही अूचाअी पर अफ्रीकाके पश्चिमकी तरफ अगोलाका मुल्क भी अुनके पास है।

अरबोका दबदबा अब नही रहा। थोडी बहुत सस्कारिता अभी तक कायम है। पूर्व अफ्रीकाकी स्वाहीली भाषा पर अरबी भाषाका असर बहुत है।

लुकलेंडी खाडी पार करनेमे रात पड गअी। सामनेकी तरफ हमारे लिअे मोटर मौजूद थी। अुसमें बैठकर अूपर चढते समय अेक तेन्दुआ दिखाअी दिया। मोटरके प्रकाशसे चौंधिया कर अुसने नजर फेर ली और देखते देखते पासके जगलमे ओझल हो गया। तेन्दुअेके शरीर परके धब्बे सुन्दर होते ही है। परन्तु अुसकी दुमकी मोडदार बनावट विशेष आकर्षक होती है। अिस दुमके कारण यह जानवर प्रौढ दिखाअी देता है। श्री मेघजीभाअी शाहके सायसलके खेत पार करके पहाडी पर अुनकी विशाल कोठीमें हम जा पहुचे। कोठी बनाने-वाले मूल मालिककी कल्पना विशाल थी। कमरे, बरामदे, छत सभी विस्तृत और मजबूत है। हमने छत पर जाकर दक्षिणके तारे देखे।

जय, विजय और त्रिशकुको आसमानमें अितना अूचा चढा हुआ देखकर वहुत ही आश्चर्य हुआ। वृश्चिककी शोभा अनोखी थी। सोनेसे पहले और, सवेरे जल्दी अुठकर तारे खूव देखे, परन्तु हमारा जी नही भरा। दूसरी वार जव देखने गये तव आकाशके वादलोने हमारे अुत्साह पर पर्दा दाल दिया और हमें विस्तर पर पहुचा दिया।

सुवह अुठकर देखा तो लुकलेडीकी खाडी शान्तिसे सो रही थी। वह जिन पहाडियोके वीच होकर आती थी, वे पहाडिया भी निद्रा-सुख अनुभव कर रही थी। अन्तमें भगवान सूर्यनारायण अूपर आये और अुन्होने अपनी किरणोसे अुन सवको जगाया। करस्पर्शसे प्रसन्न हुअी खाडी तुरन्त चमकने लगी। पहाडियोका मुख अुज्वल हुआ और अुन्होने हमें अपनी ओर यात्रा करनेका आमत्रण दिया।

आठ वजे रवाना होकर सायसलके अनेक खेत देखते देखते और सायसलकी परवरिशकी तकसील सुनते सुनते हम २८ मील पहुचे। वहा श्री घीरूभाअी पोपटकी अेक सायसल फैक्टरी थी, अुसे देखने गये। अिससे पहले नचिंग्वे ग्राअुन्डनट स्कीमके लिअे सामान ले जानेके लिअे जो अेक छोटासा वन्दरगाह तैयार किया गया है वह हमने देखा। वहासे नअी रेलवे वन रही है और पम्प करके पेट्रोल भेजा जाता है। चाहे जैसे जगलमें विज्ञानके साधन लाकर वहासे चाहे जहा सही सलामत ले जानेकी गोरे लोगोकी तत्परता प्रशसनीय है। और अुनके अैसे काम सफलतापूर्वक पूरे करनेमें यहाके हमारे हिन्दी लोगोकी अुपयोगिता, लगन और वहादुरी भी अुतनी ही स्तुत्य है। नअी सृष्टि पैदा करके वहा व्यवस्था स्थापित करनी हो, तव गोरे लोगोका किया हुआ प्रवध समझ लेने और अुसे वफादारीके साथ अमलमें लानेमें हमारे यहाके लोगोकी वरावरी करनेवाली कोअी जाति नही है। फौजके सेनापति और जहाजोके कप्तान भी हमारे यहाके लोगोके अिस गुणकी मुक्त कठसे वडाअी करते हैं।

यह सब देखकर हम लिंडी पहुचे, तो वहाके प्रोविंशियल कमिश्नर मि० पाअिकने हमें दोपहरका खाना खिलाया। अुनके साथ वार्तालाप करके हम हिन्दू मडलमें गये। वहा अधिकाश बहनें ही थी।

पूर्व अफ्रीकामें हमारे सन्मानमें जो अनेक भोज और चाय-पार्टिया दी जाती थी, अुनमें युरोपियन अधिकारी बिना किसी सकोचके आते थे। परन्तु किसी युरोपियन अधिकारीने हमें अपने यहा खानेको बुलाया हो, अैसा यह अेक ही अुदाहरण है। मि० पाअिक अत्यन्त सज्जन मनुष्य है और अुदार विचारोंके है। हममें से जो लोग बिलकुल निरामिषाहारी थे, अुनके लिअे अुन्होंने अपने यहा बहुत अच्छा अिन्तजाम किया था। अुनके यहा और गोरे मेहमान भी आये थे, अिसलिअे बातचीतका रग अच्छा जमा।

यहाके अिण्डियन अेसोसियेशनकी चाय-पार्टीमें रिवाजके अनुसार हमारे भाषण हुअे। अुनमें श्री कमलनयन बजाजका भाषण जरा सख्त और युरोपियन लोगोको चुभनेवाला था। परन्तु मि० पाअिकने अुस पर जरा भी आपत्ति न की।

रातको किटुडामें मेघजीभाअीकी कोठी पर बडा खाना था। वहा भी गोरे काफी सख्यामें आये थे। वर्धा शिक्षाकी योजना वगैरा अनेक विषयो पर रसिक चर्चा हुअी। श्री मेघजीभाअी अत्यन्त होशियार और सस्कारी अुद्योगपति है। अुनके साथ अुनकी लडकी हसा भी किटुडा आअी थी।

१३

दुनियाभरके लिअे मूंगफली

युरोपीय महायुद्धके अन्तमें सारी दुनियाकी चिन्ता रखनेवाले होशियार अंग्रेज लोगोंने देखा कि विलायतमें और सब जगह वनस्पतिकी चर्बी यानी तेल और खलकी कमी पैदा होगी। अुन्होंने खूब जल्दी अनेक देशोंमें मूंगफली बोकर अुस कमीको पूरा करनेका बीड़ा अुठाया और अेकसे अेक अधिक प्रचंड योजनायें स्वदेशके सामने रखीं। युद्धके कारण निचोटा जाकर भी अिंग्लैंडने पालियामेन्टकी मंजूरी लेकर यह काम शुरू किया। पानीकी तरह पैसा खर्च करके अुन्होंने अिस योजनाको प्रारंभ किया। जमीनकी जो तपास सर्वे करनी थी, सो हवाअी जहाजसे कर ली। हिसाबनवीस मिलनेसे पहले काम शुरू भी हो गया। बडे बडे ट्रेक्टर और बुलडोजर लाये गये और जहाजोंमें काम आनेवाली लोहेकी बडी बडी जंजीरें ट्रेक्टरोंसे बांधकर जंगलके पेड जमींदोज करना शुरू कर दिया गया। मूंगफली और सूरजमुखीके फूलोंमें से तेल निकालना शुरू किया गया। सारी योजना देखकर लोगोंको अैसा ही लगता था कि लडाअीकी तैयारी हो रही है। जब काम खूब बढा तब पता चला कि रुपया तो पानीकी तरह खर्च हो रहा है, परन्तु आयके नाम पर शून्य। बादमें जांच होने लगी। पता चला कि हिसाबका कोअी ठिकाना नहीं। जहाजमें काम आनेवाली जंजीरें पुरानी होनेके कारण टूट गअीं। नअी तैयार कराकर लानी पडीं। बडा शोर मचा। यह भी विचार हुआ कि सारी योजना छोड दी जाय क्या? परन्तु बहादुर अंग्रेज जाति युद्धकी तरह आर्थिक योजनामें भी हार मानकर बैठ जाने वाली नहीं थी। अब अिस योजनाको पक्के आधार पर चलानेके लिअे अुसमें आवश्यक सुधार होने लगे हैं।

यह सब काम देखने लायक था, अिसीलिअ हम अिधर आये थे। ८ जूनको सवेरे हम रवाना हुअे। लिंडी होकर ९३ मीलका सफर करके नाचिग्वे पहुचे। वहा अिस जबरदस्त योजनाको अमलमें आते देखा। रास्तेमें मिन्गोयो और म्टामा दो स्थानो पर रास्ता बदलना पडा। पेट्रोलका नल रास्तेके किनारे किनारे जाता था। फौजी टैंकोंमें परिवर्तन करके अुनके ट्रेक्टर बनाये गये थे। बडे बडे बुलडोजर जमीनको साफ करते थे। अेक साकलको दो सिरो पर दो ट्रेक्टर चलाते हैं। अिसलिअे साकलके जोरसे जगलके बडे बडे आठ दस पेड भी अेक साथ अुखड कर गिर जाते हैं। यत्रके जोरसे मनुष्य कितना राक्षसी काम कर सकता है, यह देखकर मैं तो स्तम्भित हो गया। अुसी क्षण मेरे मनमे विचार आया कि गोरोकी देखभाल भले ही हो, परन्तु अिन ट्रेक्टरो और बुलडोजरोको चलानेवाले अफ्रीकी लोग ही हैं। अितना प्रचड राक्षसी काम जिनके हाथो पूरा कराया जाता है, अुनकी बुद्धिका विकास हुअे बगैर नही रह सकता। होशियारीके साथ साथ अुनकी महत्वाकाक्षा भी बढेगी। भारतीयोके सहायक बनकर अिन लोगोने अब तक बढअीगिरी और दर्जी वगैराका काम सीखा। दुकानोमें बैठकर हिसाब भी रखने लगे। माल बेचते खरीदते अुनमें आधुनिकता आ गअी है। अब मूगफलीकी अिस विराट योजनाको सफल करनेमें जब वे पूरी तरह भाग लेंगे, तब चाहे जैसे कारखाने वगैरा चलानेकी हिम्मत अुनमें पैदा हो जायगी। फिर अिन लोगोको दबाकर रखना किसी भी राज्यके लिअे असभव हो जायगा।

कार्यालयमें जाकर हम वहाके मुख्य अधिकारियोसे मिले। अुन्होने बारीक जानकारीवाले नकशो पर सारी योजना हमें पहले समझाअी। फिर वे हमारे साथ घूमे। अुनमें से अेक अनुभवीने कहा "अैसी कोअी योजना हाथमें लेनेसे पहले अुस जगह पानीकी क्या सुविधा है, यह जाच करनी चाहिये। अिस जाच पर और पानीकी सुविधा पर योजनाकी आधी पूजी लग जाय, तो भी मुझे आपत्तिकी बात मालूम नही होगी। बडे

पैमाने पर खेती करनेके लिअे भूगर्भ-विद्याका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये।" अिस भाअीने दो तीन नकशे हमारे सामने रखकर हमें वताया कि यहाकी भूमि हिन्दुस्तान या युरोपकी भूमि जैसी नही। ज्वालामुखीकी वनाअी हुअी अिस जमीनमें हिन्दुस्तान जैसी खेती नहीं हो सकती। भाअी स्विनूवर्न और कॉफमेनसे अनेक प्रकारकी तफसील जान लेनेके वाद मुझे तो विश्वास हो गया कि अितनी वडी योजनामे भी विकेन्द्रीकरणका सिद्धान्त ध्यानमें रखा जाय, तो सव वातोको देखते हुअे लाभ ही है।

यह सारी योजना देख लेनेके वाद हमने वही भोजन कर लिया। अिस योजनाके सिलसिलेमें जमा हुअे दुकानदार आदि जो भारतीय थे, अुनके साथ वैठकर हमने महत्त्वपूर्ण वार्तालाप किया। अुनके आतिथ्यके लिअे धन्यवाद देकर हम वहासे विदा हुअे। अिस प्रदेशमें काजूके पेड भी वहुत है। मै नही जानता कि काजूसे तेल निकल सकता है या नही। [अिसके छिलकेमें से जरूर तेज तेल निकलता है] परन्तु अिस मेवेके प्रति मुझे वचपनसे पक्षपात है। हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारे पर काजूकी पैदावार वहुत होती है। ये पेड अफ्रीकासे ही हिंदुस्तानमें आये दिखते है। कहा जाता है कि यह पुर्तगालियोकी सेवा है।

नचिंग्वेसे लौटते समय मोटरमें से सूर्यास्तकी शोभा कअी तरफसे देखते हुअे यात्राकी वहुत कुछ थकावट हम भूल गये। यहा तक कि रातको सोनेसे पहले मै छत पर जाकर श्रीमती नलिनीवहन पतको आकाशके तारे विस्तारपूर्वक वता सका। श्री तात्या अिनामदार भी अिसमें शरीक हो गये।

सवेरे हम किटुंडासे चले। पास ही श्री मेघजीभाअीके दो मायसलके कारखाने थे। अेककी मशीनरी पुराने ढगकी है, जव कि दूसरेकी अद्यतन है।

सायसलका धधा पहले पहल युरोपियन लोगोने शुरू किया था। अिसमें वे लोग कामयाव नही हुअे। धीरे धीरे गोरे हट गये और यह धधा हमारे यहाके लोगोके हाथमे आ गया।

युगाण्डा ट्रास्पोर्ट कम्पनीका भी यही हाल हुआ। पहले गोरोने अुसका ठेका लिया, परन्तु पहले ही साल ७५००० शिलिगका घाटा खाया। अन्तमें अुन्हे यह ठेका आगाखानी लोगोको दे देना पडा। पहले ही वर्षमें घाटा ७५००० से घटकर ३००० पर आ गया और अुसके वाद तो अव ये हमारे लोग २० या २५ फी सदी मुनाफा वाटते है। जहा व्यवस्थाशक्तिमें कोअी जाति अुन्नत हो जाती है, वहा सीधी स्पर्धामे अुसे कौन हरा सकता है? अैसे लोगोको दवानेके लिअे राज करनेवाली जाति यदि हर वार कानून और मनमानीकी शरण ले, तो अुस जातिका मानस विकृत हो जाता है और समय परिपक्व होते अुसकी अधोगति हो जाती है।

लिंडीसे दारेस्सलाम जानेको रवाना होनेसे पहले दूसरे कितने ही काम करने पडे। लिंडीके मुसलमान अेक-दो मस्जिदोका जीर्णोद्धार करना चाहते थे। अिस सिलसिलेमे वे श्री अप्पासाहवको और हमें वहा ले गये। अप्पासाहव तो सभीके आदमी ठहरे। हरअेक काममें अुनकी सहानुभूतिकी आशा रखी ही जाती है और वे भी लोगोको निराश नही करते। कही न कहीसे मदद देना अुन्होने मजूर किया और मस्जिदका काम आगे वढानेकी सिफारिश की।

लिंडीमे जो सरकारी अिंडियन स्कूल चल रहा है, अुसका सचालन गावके लोगोके हाथमें दिया हुआ है। अिस सचालनमें हिन्दू-मुसलमानोके साथ होनेसे हाल मे ही झगडे पैदा हो गये है। अिन झगडोकी तफसीलमे मै नही जाअूगा, परन्तु अुनसे जो निष्कर्ष निकलते है वे अुल्लेखनीय है। मुसलमानोमें जव तक जागृति नही होती, तव तक वे कुछ नही वोलते। जैसे चलता हो चलने देते है। जव त.

यह हाल रहता है तब तक हिन्दू मुसलमानोंकी तारीफ करते हैं कि, "ये लोग कितने अच्छे हैं। मतभेद या झगडा है ही नहीं।"

अैसी व्यवस्थामें हिन्दुओंके मनमें मुसलमानोंके विरुद्ध पक्षपात करनेकी बात तो नहीं होती, परन्तु मुसलमानोंकी संस्कारिता और बुद्धि-शक्तिके बारेमें आम तौर पर हिन्दुओंमें विशेष आदर नहीं होता। मुसलमानोंमें जागृति आते ही यह बात अुन्हें खलने लगती है। सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेकर काम करते करते अपनी योग्यताका असर डालने और अपनी कमियां दूर करनेके बजाय वे तुरन्त साम्प्रदायिकता खडी कर देते हैं और मुसलमानोंकी हैसियतसे अपने हक आजमानेकी कोशिश करते हैं। "अधिकांश शिक्षक हिन्दू ही क्यों हों? हमारे शिक्षक भी होने चाहियें।" अैसा आग्रह शुरू होते ही हिन्दू शिकायत करते हैं कि, "चाहे जैसे ठोठ या संस्कार-हीन शिक्षक आप भर दें तो काम कैसे चले? हमारे बच्चोंकी शिक्षा खराब हो, यह हम कैसे सहन करें?" शिक्षकोंकी योग्यता नापनेमें हिन्दू या मुसलमान दोनों व्यवस्थापक तटस्थ होकर विचार नहीं कर सकते। धीरजपूर्वक शिक्षकोंको मौका देकर तैयार होने देना चाहिये, अितनीसी बात हिन्दू नहीं समझते। और अितनासा मुसलमानोंके ध्यानमें नहीं आता कि चाहे जैसे शिक्षक ले आनेसे लडकोंकी तालीम बिगडती है। व्यवस्थापक व्यवस्थाका विचार करते समय दोनों जातियोंके बालकोंकी शिक्षाका समान आस्थासे विचार करें और अेक दूसरेके प्रति विश्वास और आदर रखें तो झगडे मिट जायं। अपने-अपने स्वार्थोंकी तनातनी हो जाने पर लोग अितने अंधे हो जाते हैं कि वे निरा स्वार्थ भी समझना छोड देते हैं और आत्मनाश तक चले जाते हैं। अिसमें भी अगर किसीके सगे-सम्बन्धीकी नियुक्तिका प्रश्न आ जाय, तब तो अंधापन जहरीला बन जाता है। जहां किसी अेक जातिके शिक्षकोंका बहुमत हो, वहां दूसरी जाति यह आग्रह रखेगी ही कि "आबादीके अनुपातमें या विद्यार्थियोंके हिसाबसे या रुपयेकी

जो मदद दी गअी हो अुसके लिहाजसे हिन्दू या मुसलमान शिक्षकोंकी सख्या रहनी चाहिये।" (अिसमें अगर कोअी पारसी या अीसाअी शिक्षक आ गये हो, तो अुन्हे अपनी तरफ खींचनेका प्रयत्न दोनो तरफसे होगा ही। और अिसमें से भी झगडे पैदा होंगे।)

अपनी ही जातिके अधे स्वार्थका आग्रह रखनेसे किसीका भी स्वार्थ पूरा नही होता। केवल अभिमानका पोषण होता है और सार्वजनिक जीवन विगडता है। फिर नेता कहते हैं कि हम लोगोके लिअे लोकतत्र अनुकूल ही नही है। मेरी जातिके शिक्षकोका बहुमत हो या अनुपात अधिक हो, तो मै अवश्य कहूगा "शिक्षक योग्यतानुसार नियुक्त होने चाहियें। अनुपातसे क्या होगा?" परन्तु यदि मेरी जातिके शिक्षकोकी सख्या कम हो, तो मै तुरन्त कहूगा कि, "मुझे स्वय आपत्ति नही, परन्तु मेरी जातिका विश्वास आप खो वैठेंगे। फिर अपनी जातिको समझाना मेरे लिअे कठिन हो जायगा। अिसलिअे वस्तुस्थितिको स्वीकार करके समझदारीके साथ अनुपातका सिद्धान्त कायम कीजिये।" अिसमे भी अनुपात जनसख्याका, विद्यार्थियोका या रुपयेकी मददका रहे? अिस सवाल पर झगडा रहेगा ही।

नोआखालीमें अेक अस्पतालमें बीमारोको भरती करनेमे भी जातिका अनुपात रखनेका आग्रह मैंने देखा था और अिस कारण अेक खास जातिके गभीर रोगियोको भी निकालकर दूसरी जातिके नामके वीमारोंको विस्तर दिये गये थे। वहाका अधिकारी कहता था, "अिसमे हमारी कुछ नही चल सकती। जातिको और किसी तरह समझाया ही नही जा सकता।"

अेक जगह तो मुझे मालूम है कि जेलके कैदियोके मामलेमे भी जातीय अनुपातकी चर्चा हुअी थी। परन्तु अिन तफसीलोमे मै यहा नही जाअूगा।

श्री कमलनयनने सुझाया कि, "व्यवस्थापकोमें हिन्दुओका चुनाव मुसलमान करें और मुसलमानोका हिन्दू करे, तो शायद

झगडा मिट जाय। थोडे दिन आजमा कर देखिये।" लोगोंने तुरत कहा कि, "अैसा करनेसे तो सभी निकम्मे लोग जमा हो जायगे।" दोनो जातियोके स्वभावकी कमजोरी अिस जवावमें पूरी तरह व्यक्त होती थी। अिस तरह जव मामला विलकुल विगड जाता है, तव दोनो पक्ष अेक पाठशालाकी दो पाठशालायें वना देते है। खर्च दुगुना हो जाता है। पराअी सरकारके पास अलग-अलग ग्राण्टकी अर्जिया भेजी जाती है और प्रतिष्ठा खोकर अुसकी आलोचनायें सुननी पडती है। अैसी परिस्थितिसे लाभ अुठानेका मौका किसी सरकारने नही छोडा।

अेक दूसरेको प्रेमपूर्वक और आत्मीयताके साथ अपनाकर और थोडा नुकसान अुठाकर भी साथ रहनेमें ही श्रेय है। और साथ रहनेके लिअे दूसरे पक्षके प्रति विशेप अुदार रहना चाहिये, अितनीसी वात अगर दोनोको सूझ जाय तो ही सच्चा अुपाय हो सकता है।

साढे वारह वजे तक मायापच्ची करके हम विमानमें वैठे और डेढ वजे दारेस्सलाम पहुचे। रास्तेमें फिर समुद्रके रगो और छोटे वडे द्वीपोने हमारी आखोका स्वागत किया। जिन टापुओका सिर समुद्रसे वहुत अूचा नही आता, अुन टापुओ पर वनस्पति या मनुष्यकी आवादीकी गुजाअिश नही होती। अैसे द्वीपोमें से धीरे-धीरे अूपर निकल आनेकी कोशिश करनेवाले कच्चे या वच्चे द्वीप कितने होगे और लहरोकी मारसे घिसते-घिसते पानीके नीचे डूव चुके, जीर्ण और वृद्ध टापू कितने होगे?

गगा या ब्रह्मपुत्रा नदीके किनारे रेतके जो टापू समय-समय पर तैयार होते है, अुन्हे वगला भापामें चर कहते है। समुद्रके चर नदीके चरोंमे ज्यादा स्थायी होते होगे। समुद्रके रगमें अिस वार गुलावी छटा अधिक थी और अुसमें आकाशमें दौडनेवाले वादलोकी छायाने धूपछाह जैसी शकल पैदा कर दी थी।

१४

जंगबारके विविध अनुभव

श्री अप्पासाहब कहने लगे, "झांझीबार अफ्रीकाकी संस्कारदात्री माता है। माता अब वृद्धा हो गअी है। अब अिसके पास पहलेकी-सी शक्ति नही रही। परन्तु अिसी कारण हम अुसकी संस्कारिताकी कद्र न करें तो ठीक नही।" झांझीबार (गुजरातियोका जंगबार) हिन्दुस्तानके साथ प्राचीन कालसे सम्बद्ध है। अितिहासके शुरू होनेसे पहलेकी बात छोड दें, दो हजार वर्षसे जहाजोका जो आवागमन जारी है, अुसे भी छोड दें; परन्तु वास्को-डी-गामाके हिन्दुस्तान आनेसे पहलेका जंगबार और हिन्दुस्तानका व्यापारिक सम्बन्ध अितिहास-विदित है।

सन् १८३२ के आसपास मस्कतका सुलतान कुछ कच्छी भाटियोको लेकर झांझीबारमें आकर बसा। तबसे यहा अिस वंशका राज है। किसी समय झांजीबारका राज्य पूर्व अफ्रीकामें खूब दूर तक फैला हुआ था। आज सब अंग्रेजोके अधीन है। अितना ही नही, खुद झांझीबारमें भी सुलतानका अधिकार नाममात्रका है। असली सत्ता ब्रिटिश रेजीडेण्टके हाथमें चली गअी है।

झांझीबार आज लौंगके व्यापारके लिअे मशहूर है। किसी समय अफ्रीकी लोगोको पकड लाकर गुलामोके रूपमें बेचनेके व्यापारका झांझीबार बडा केन्द्र था। पकडकर लाये हुअे गुलामोमें से कितने ही मर जाते, कुछ भाग जाते और बाकी बाजारमें बेचे जाते थे। अिस व्यापारके अवशेष ठेठ अभी तक रह गये थे। ब्रिटिश लोगोका दावा है कि अुन्होने गुलामीका व्यापार मजबूतीके साथ बन्द न किया होता, तो अफ्रीकाकी कुछ जातिया अब तक नामशेष हो गअी होती।

मनुष्यको गुलाम बनाकर घरके कामके लिअे, खेती और बगीचेके लिअे, और राजमजदूरके रूपमें रखनेकी प्रथा प्राचीन कालमें हरअेक देशमे थी। हा, गुलामोके कष्टोके मामलोमें भिन्न-भिन्न देशोमें फर्क था।

चाणक्यने अपने अर्थशास्त्रमें लिखा है कि आर्योको दास बनाकर हरगिज नही रखा जा—सकत न आर्यः दासभावं अर्हति। आजकी दुनियाने यह नियम मनुष्य-जातिके लिअे लागू किया है। अेक मनुष्य दूसरे मनुष्यकी मेहनतसे गलत तौर पर लाभ अुठाकर आडेटेढे ढग पर अुसे आज भी गुलामके रूपमें अिस्तेमाल करता है। परन्तु अिसे हम गुलामी नही कहते।

दारेस्सलामसे झाझीबार तक केवल ४६ मीलका समुद्री अंतर है। विमानसे अफ्रीकाका किनारा दीखना बन्द होनेसे पहले ही झाझीबार दीखने लगता है। अुडे और अुतरे, अितनेमें झाजीबार आ जाता है। विमान कपनीके व्यवस्थापकोकी चालाकीके कारण बादमें आये हुअे कुछ गोरोको हमारे वायुयानमें जानेको जगह मिल गअी और बादमे वे कहने लगे कि आप सब अपने सामानके साथ नही जा सकते। विमान अितना बोझा अुठा नही सकता और जोखम तो अुठाया ही नही जा सकता। थोडीसी झिकझिकके बाद हमने भलमनसाहत की और तय किया कि हममें से अेक आदमी दोपहरके वायुयानमें आ जाय। हवाअी जहाजवालोकी चालाकी समय पर पूरी तरह ध्यानमें आ गअी होती, तो हम अैसी भलमनसाहत न दिखाते। शरद पडचा भी और किसीके विमानमें आ सके। अिस प्रकार हमारा दल तीन टुकडोमे झाझीबार पहुचा। रहनेके लिअे हम दो घरोमे बट गये थे। श्री अप्पा-साहब और नलिनीबहन अपने पुराने मित्र श्री सिघवाके यहा रहने चले गये, जबकि बाकी सब श्री मूलजी वेलजी कपनीके श्री छगनलालभाअीके यहा ठहरे। सात सात मेहमानोको अेक साथ घरमे रखना और अुनको सब सुविधाअें देना, यह हमारी बहनें ही कर

सकती है। श्रीमती कान्तावहन और अुनकी देवरानी लीलमवहन अैसी लगती थी मानो सगी वहनें ही हो। दोनोने वडे प्रेमसे हमारा आतिथ्य किया। घरके वच्चोको अिस तरह आतिथ्यकी तालीम मिलनेसे हरअेक भारतीय कुटुवमें अिस परपराकी सुगध कायम रहती है।

झाझीवार अेक स्वतन्त्र दुनिया है। शहरका मुख्य भाग काठियावाडके घनी आवादीवाले किसी पुराने शहर जैसा है। वनारसकी टेढीमेढी तग गलियोके साथ अुसकी सहज तुलना हो सकती है। आजकलकी मोटरें अुसमें से कैसे जाय ? कुछ गलियोमें घरोकी दीवारोके कोने जरा जरा काटकर अैसी सुविधा की गअी है कि छोटी मोटरे निकल सकें। वनारसकी गलियोमें चलते हुअे अकसर आश्चर्य होता था कि अितना टेढामेढापन मनुष्य कैसे पैदा कर सका होगा ? यहा भी यही भावना पैदा हुअी।

जहा जाय वहा स्थानदेवता और वास्तुदेवताके दर्शन तो करने ही चाहियें। अिस हिसावसे हम यहाके सुल्तानसे मिलने गये। रेजीडेण्टसे भी मिल आये। हर जगह सभ्यतानुसार कहनेकी वाते कह दी। सुलतान अधेड अुम्रके सस्कारी मजेदार आदमी है। जरा-जरा हिन्दुस्तानी वोल लेते हैं। अुनके घरमें स्थानीय कलाकी कुछ वस्तुअें और कुछ अैतिहासिक तसवीरें देखनेमें आअी। अुनकी सुल्ताना युरोपियन पोशाकमें थी। मुझे तो अेशियाअी पहनाव ही ज्यादा रुआवदार और कलायुक्त लगता है। सुलतानके यहाकी सभ्यता प्रभावशाली थी।

रेजीडेण्ट साहवके यहा हमने शिक्षाके वारेमें वाते की। अुनके वगलेसे समुद्रके दर्शन वहुत ही आकर्षक थे। स्थानीय कारीगरीकी वडी-वडी वस्तुअें यहा भी रखी हुअी थी।

झाझीवारमे हमारा कार्यक्रम भरा हुआ होने पर भी आनददायक था। अेक दिन हम लौंगका कारखाना देखने गये। कुछ लोगोने कहा था कि वाजारमें जो लौग मिलते है, वे तेल निकाल लेनेके वाद वची हुअी छूछमात्र है। मैं अिसे मान नही सका था। लौंगका तीखापन और

अुसकी खुशबू तेल निकालनेके बाद टिक ही नही सकती। झाझीबारमें हमने देखा कि हम जो लौंग खाते है, वह असली लौंगके फूलकी लाल कली होती है। अिस कलीके नीचेके डठल लौंग जैसे ही तीखे होते हैं। कलिया तोड लेनेके बाद नीचेके डठल अिकट्ठे करके अुन्हे अुबाल लिया जाता है और अुसमें से लौंगका तेल या अर्क तैयार करते है। तेल निकाल लेनेके बाद जो छूछ रह जाती है, वह अुस कारखानेमें ही अीवनके तौर पर काममें ली जाती है। मैं यह नही समझ सका कि खादके रूपमें अिसका अुपयोग क्यो नही होता। अिस छूछका ढेर करके कहा रखा जाय? और खादके रूपमें कोअी ले जाय, तो अीधनसे सस्ता पडे या महगा? यही अिसमें मुख्य सवाल है।

पहले दिन हम वहाका कन्याविद्यालय देखने गये। पुराने जमानेमें स्त्रिया अपने लिअे काममें लिये जानेवाले 'अबला' और 'भीरु' वगैरा विशेपणोसे खुश होती, किन्तु आज आप अिस आदर्शको अपनानेके लिअे तैयार है? अिस किस्मका सवाल पूछकर मैंने विद्यालयकी कन्याओके सामने नये जमानेकी बाते कही। हमारी लडकिया नये विचार समझने और स्वीकार करनेमें वडी तेज होती है। परन्तु सामाजिक रिवाज, रूढि और बधन देखते देखते अुनका अचार बना डालते हैं। हमारे लोग शिक्षाका महत्त्व समझने लगे है, अिसलिअे जहा तहा कन्याविद्यालय स्थापित हो रहे हैं। परन्तु यह विचार कोअी नही करता कि अिस शिक्षा द्वारा कैसी स्त्री तैयार होनी चाहिये। हमारे समाजको कैसी स्त्री चाहिये, यह कोअी नही कह सकता। युरोपियन लोगोमें जो समाज-सेविकाअें हम देखते हैं और वे जैसा तेजस्वी जीवन विताती है, अुसे देखकर हम अुनका आदरपूर्वक गुणगान करते हैं। परन्तु वैसी स्त्रिया हमारे यहा तैयार करनेके लिअे जैसा वातावरण चाहिये, वैसा वातावरण पैदा करनेमें हमारा विश्वास नही!

झाझीवारमें अरब लोगोका असर अधिकसे अधिक पाया जाता है। यह पता नही कि अीरानकी तरफके लोग यहा कब आये होंगे। परन्तु

आज जो शीराजी कहलाते है, वे तो बिलकुल अफ्रीकियो जैसे ही हो गये है। ये लोग स्वाहीली बोलते है। मूल निवासी अफ्रीकी लोगोकी और अिन शीराजी लोगोकी भाषा और रहन-सहन अेकसी हो जाने पर भी मुझ पर यह असर पडा कि अिनके बीच पूरी तरह आत्मीयता पैदा नही हुअी। खास व्यक्तित्व न हो और लोग अेक दूसरेमें घुल-मिल जाय तब क्या परिणाम हो, यह समाजशास्त्रका अेक गभीर प्रश्न है। अिस बारेमे मनमें विचार बहुत आते है, परन्तु अुनमें से अभी कोअी अैसी चीज नही निकली, जो समाजके सामने रखी जा सके।

यह हुअी शीराजी कहलानेवाले लोगोके बारेमें बात। यहाके अरब लोगोकी स्थिति अफ्रीकी लोगो जैसी नही है। हिन्दुस्तानी लोगोकी तरह वे भी यहा व्यापार करते है। कारीगर भी है। अग्रेजी शिक्षा पाकर अुजले रोजगार भी करते है। अुनके पास राज-नैतिक महत्त्वाकाक्षा कितनी टिकती है, यह थोडेसे परिचयमें हमें क्या मालूम हो सकता है? पुराना वैभव अब रहा नही और नअी महत्त्वाकाक्षाका अभी ठीक-ठीक अुदय नही हुआ — अैसी हालतमें ये लोग है। अेशियनके रूपमें अरब लोग भारतीयोमें मिल सकते है। हिन्दुस्तानके मुसलमान आसानीसे अुनके साथ अेकरूप हो सकते है। अिससे जो नये सस्कार और नये बल पैदा हो जाय सो सही। अिस मुल्कके करोडो आदिवासियोकी सेवा करनेका अेकमात्र आदर्श रखनेवाले लोगोके लिअे बहुत चिन्ता करनेकी कोअी बात नही। जहा सेवा करके ही जीवन कृतार्थ करना है, वहा जीवन आसान और सरल बन जाता है। हरअेक समाज मनमें सकुचित महत्त्वाकाक्षा रखे और अुसकी पूर्तिके लिअे षड्यन्त्र रचे और जबर्दस्ती करे, तो कठिनाअियोका अन्त ही नही आ सकता। यहाके कुछ अरब नेताओके साथ बहुत बाते हुअी। अुनके सामने गाधीजीकी सर्व-धर्म-समभाव और जनताकी जागृतिके

लिअे गाधीजी द्वारा प्रसारित रचनात्मक कार्यक्रमकी वातें हमने कीं। जिनसे वे प्रभावित हुअे।

पश्चिमी सस्कृतिसे अगर हम विज्ञान, समाजसेवा और सगठन-विद्या ले लें और अुनका राजनैतिक आदर्श छोड दें—भोग और अैश्वर्यके लोभमे फसकर नीतिके आदर्शको तिलाजलि दे देनेकी भूल न करें——तो ही हम दुनियाकी सच्ची सेवा करके शान्तिकी स्थापनाके लिअे जरूरी वातावरण तैयार कर सकेंगे।

झाझीवार शहरमे अच्छे पानीकी जरा भी मुश्किल नही। शहरके पास ही अेक जगह जमीनमें पानी अितना छलाछल भरा है कि जरा खड्डा खोदा कि वहा पानी अिकट्ठा होकर वहने लगता है। अिस प्रकार अनेक झरने तैयार करके अुनमेंका पानी अेक जगह अिकट्ठा कर लिया गया है। अुस स्थानको चमचम कहते हैं। यहाका पानी पप करके सारे शहरको पहुचाया जाता है। झाझीवारके समुद्र-द्वारमें जो जहाज आते है, अुन्हे भी अिसी खजानेसे ताजा पानी दिया जाता है। जव जहाज पानी लेने नही आते, तव फालतू पानी समुद्रमें छोड देना पडता है।

यह अितना अधिक पानी आता कहासे है, अैसा प्रश्न मनमे अुठना स्वाभाविक है।

यही मालूम होता है कि अिस ओर वरसात खूव पडती है, अिसलिअे वरसातका पानी जमीनकी अनुकूलताके कारण भीतर ही भीतर जमा होता होगा। परन्तु कल्पनाशील लोगोको अैसी अुत्पत्ति कैसे जचे? वे कहते है कि अफ्रीका महाद्वीपमें यहासे लगभग २५० मील दूर स्थित पर्वतराज किलिमाजारोका पानी जमीनके नीचेसे, और समुद्रके नीचेसे भी आकर यहा निकल आता है। पानी अितना अधिक अच्छा है कि वह किलिमाजारोसे ही आया हुआ है, यह माननेमें कल्पनाशक्तिको सन्तोष होता है।

झाझीवारमें नारियलके पेड वहुत है। नारियलके पेडोकी आवादी ही यहा मुख्य मानी जाती है। यहाके कच्चे नारियलके पानीकी खूव

प्रशसा होती है। हमारे यहा कच्चे नारियलके डाव, अडसर और शहाळे वगैरा जैसे नाम है, वैसे यहा अुसे मडाकू कहते है। यहाके लोगोमे अेक मीठी मान्यता है कि जिसने अेक वार यहाके मडाकूका पानी पी लिया, अुसे अिसे फिर चखने झाझीवार दुवारा आना ही पडता है। झाझीवारकी प्राकृतिक शोभा और यहाके लोगोके आतिथ्यका विचार करते हुअे यहाके मडाकूका अैसा असर हो, तो अिस पर किसीको आपत्ति नही हो सकती।

मस्कतके सुलतानके साथ जो भाटिया लोग यहा आये, अुनकी निष्ठा और होशियारी पर सुलतानका अितना विश्वास था कि राज्य व्यवस्थाके अधिकाश विभाग अुन्हीको सौंपे गये थे। अिस डरसे कि हिन्दू धर्मकी रूढियोका यहा कैसे पालन होगा, ये भाटिया लोग अपने कुटुम्ब-कवीले यहा नही लाते थे। सुलतानने अुन्हे वहुत समझाया कि "आपके धर्मपालनकी सारी सुविधायें मै-कर दूगा। पानीके सुभीतेके लिअे कहिये तो चादीके नल लगवा दू।" परन्तु हमारे 'धर्मनिष्ठ' लोगोने सुलतानकी वात नही मानी!

जव यहा अग्रेजोका जोर वढा, तव वे यहाके भाटियोको ही हिन्दू जातिके प्रतिनिधि मानते थे। आजकलके सार्वजनिक युगमें सव हिन्दू जातियोने मिलकर हिन्दू-मडलकी स्थापना की। अिस कार्रवाअीके प्रति भाटिया लोगोमे अभी तक प्रसन्नता पैदा नही हुअी है।

हिन्दू जातिका सगठन भी जहा अितना कठिन है, वहा युगधर्म पुकार कर कहता है कि, 'हिन्दुओका नही, परन्तु तमाम हिन्दुस्तानियोका सगठन करो।' और यहा अफ्रीकामे तो अिससे भी आगे वढ कर तमाम अेशियावासियोका सगठन करनेसे ही काम चलेगा। युगधर्म पहचान कर अद्यतन सगठन करनेके मामलेमे हम दो क्रान्तियोंके वरावर पिछडे हुअे है।

हिन्दुस्तानके स्वतत्र होते ही पडित जवाहरलालजीने तुरत अेशियाके तमाम देशोके प्रतिनिधियोको वुलाकर अुन्हे हिन्दुस्तानका

सदेश सुनाया कि "हम स्वतत्रता, शाति और बधुत्वके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध है। जहा स्वतत्रता नहीं वहा अुसे स्थापित करनेकी कोशिश करनी चाहिये। जहा यह कोशिश जारी हो, वहा भारतकी सहानुभूति और नैतिक सहायता मुमुक्षु राष्ट्रके पक्षमें ही होगी, हम साम्राज्यवादके विरोधी है। हम अहिसा द्वारा ससारमें सर्वत्र बधुत्व स्थापित हुआ देखना चाहते है।"

खून बहाये बिना हम अपनी आजादी जबरदस्त ब्रिटिश साम्राज्यसे ले सके, अिस कारण दुनियामें हमारी प्रतिष्ठा बढी है। अेशियाके देश आशाकी नजरसे हमारी तरफ देख रहे है। अैसी स्थितिमें जब अेशियाके प्रतिनिधि दिल्लीमें अिकट्ठे हुअे, तब अुन्होने सुझाया कि हिन्दुस्तानको अेशियाका नेतृत्व स्वीकार करना चाहिये। जवाबमें पडित नेहरूने कहा कि घरके बडे भाअी या बुजुर्ग होनेकी हमारी आकाक्षा नही है। गाधीजीने भी घोषणा की कि हम सगठन करके अेशियाकी राजनैतिक अिकाअी स्थापित करना नही चाहते। सारी दुनिया ही हमारी अिकाअी है।

फिर भी अेशियाके देश मदद मागे, तो हम अिनकार नही कर सकते। अेशियावासी सब अेक है, अिस प्रकारकी भावना अेशियासे बाहर जा बसे हुअे अेशियावासियोके मनमें जाग्रत रहेगी ही। आज नही तो कल वह अवश्य अुदय होगी। अैसी स्थितिमें अफ्रीकामें रहनेवाले हम 'हिन्दू' या 'हिन्दुस्तानी' आदि सकुचित नाम धारण करें, अिसके बजाय यही अुचित होगा कि हम अेशियाअी या अेशियनका नाम धारण करे।

अफ्रीकामे बसनेवाले कबीले (ट्राअिब्स) अनेक है। अिनके बीच आज कोअी राजनैतिक अेकता सिद्ध नही हुअी है। फिर भी 'अफ्रीकी' के समान नामकी महिमासे ही वे अेक होने लगे है। युरोपमें भी अनेक देश है, जो आपसमें लडते भी है। फिर भी सस्कृति और महत्त्वाकाक्षाकी दृष्टिसे अुनका अेक खास रवैया होनेके कारण वे युरोपियन नामसे पुकारे जाते है। अब अफ्रीकन और युरोपियन अिन दो शब्दोकी जोडका हमारा नाम अेशियन ही हो सकता है।

अिसलिअे आअिंदा हमे अपने लोगोका सगठन अेशियन नामसे करना चाहिये। और अुसमें हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, गोआ आदि घरका भेद भूलकर अरबस्तान, सीलोन, ब्रह्मदेश, चीन, जापान आदि देशोके जो कोअी थोडे या बहुत लोग अफ्रीकामें बसते हो अुन सबको भी अपन साथ लेना चाहिये। पाकिस्तानके प्रति सहानभूति रखनेवाले भारतीय मुसलमानोको राजी करनेकी खातिर नही, लेकिन हमारा स्वाभाविक विशाल नाम धारण करनेके लिअे हम अेशियन नामसे ही पहचाने जाय। अरब आदि हमारे सारे पडोसी अिस नामके नीचे हमारे साथ चलनेको रजामद होगे। गोअन जैसे हिन्दुस्तानके निवासियोकी भी, जो अिस मुश्किलमे पडे है कि वे किस नामसे पुकारे जाय, कठिनाअी मिट जायगी।

अेक बात मुझे स्पष्ट करनी चाहिये, क्योकि मै अपने विचार छिपाना नही चाहता। गोअन लोगोको मै सोलह आने हिन्दुस्तानी मानता हू। वे खुद भी जानते है कि वे हिन्दुस्तानी ही है। अुनमें से कुछ लोग धर्मसे अीसाअी हो गये और पुर्तगाली लोगोके कुछ रिवाज अुन्होने अपना लिये, अितने ही से यह बात नही हो गअी कि वे हिन्दुस्तानी नही रहे। परन्तु आजकलके लोग सास्कृतिक राष्ट्रीयता जैसी पवित्र वस्तुको भी ताकमे रखकर अपने क्षणिक स्वार्थका विचार करके कभी घोषणा करते है कि वे हिन्दुस्तानी है और कभी कहते है कि नही। नौकरीका स्वार्थ, व्यापारमे मिलनेवाली सुविधाअें, राजनैतिक प्रतिष्ठा वगैराका विचार करके लोग पगडी बदलनेको तैयार हो जाते है। हिन्दुस्तान जब परतत्र था और परतत्र देशके नागरिकोके रूपमें अफ्रीकामें हमारी हस्ती प्रतिष्ठा-हीन थी, तब कुछ भारतीय मुसलमान अपने अरब होनेका दावा करते थे और अिस प्रकार स्वतत्र नागरिककी प्रतिष्ठा पाते थे।

मोजाबिक और आगोलामें सफलता प्राप्तिकी दृष्टिसे कुछ गोअन लोग अपनेको हिन्दुस्तानी न बता कर पुर्तगाल निवासी बतानेमें लाभ देखते हैं। अगर कल भारत सरकार यह घोषणा कर दे कि जो पुर्तगालके निवासी है अुन्हे हिन्दुस्तानमें विदेशी बनकर रहना पडेगा,

अुन्हें हिन्दुस्तानके नागरिककी हैसियतसे कोअी हक नहीं मिलेंगे, तो मैं मानता हू कि यहाके अधिकाश गोअन हिन्दुस्तान जाते ही अैलान कर देंगे कि हम हमेशासे हिन्दुस्तानके ही निवासी हैं। बम्बअी और मंगलोर जैसे शहरोंमें जितने अधिक गोअन रहते हैं और रुपया कमा कर गोवा भेजते हैं कि यह कमाअी बन्द हो जाय, तो वे खुद तो मुश्किलमें पड ही जायगे, परन्तु गोवाकी सरकारको भी अपना कामकाज चलानेमें कठिनाअी अनुभव होगी। अीसाअी लोग अीसाअी हैं, जिसमें किसीको अिनकार नहीं। जहा पुर्तगालका राज्य है वहा पुर्तगालके कानून चलेंगे, यह भी जाहिर है। परन्तु अिसे वे नही समझते कि अपनी हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताकी बात वे सुविधानुसार बदलते रहे, तो अपनी आत्मप्रतिष्ठा खो बैठते हैं।

पाकिस्तान हिन्दुस्तानका ही अेक भौगोलिक अग है। देश अेक, संस्कृति अेक और हित-सबध अेक। अैसा होते हुअे भी अलग हो जानेमें स्वार्थ देखकर कुछ लोगोंने अेक ढोंग चलाया, वह चल गया परन्तु अुसमें भयकर परिणाम पैदा हुअे। जो हुआ सो हुआ। अब अैसी बातोंका विरोध करनेमें सार नही। जो आदमी कहे कि, 'मैं हिन्दुस्तानी नहीं', अुसे जबरदस्ती नहीं समझाया जा सकता कि, 'तू हिन्दुस्तानी ही है।' हिन्दुस्तानी होनेके लाभ स्पष्ट होंगे, तब वह अपने आप अपनेको हिन्दुस्तानी कहेगा। वह अपने आपको हिन्दुस्तानी न कहे तो अिसमें हमें क्या हानि है? दो घोड़ोंकी सवारी करनेकी नीति पर चलकर जो दोहरा लाभ अुठाना चाहते हैं, अुन्हें हम अुदार बनकर लाभ अुठाने दे तो अन्तमें हमें लाभ ही है। यह लाभ अगर हम न देख सकते हो तो किसी दिन अुन्हें कह दें कि 'दोनो तरहके लाभ आपको नही मिल सकते।' अिससे अधिक हमारे हाथमें क्या है? अगर हममें दूरदृष्टि हो तो हम देख सकेंगे कि लोगोंको दोहरा लाभ अुठाने देनेमें हमारा सच्चा या विशेष नुकसान नहीं है। किसी दिन हमें अिससे लाभ ही होगा। और अगर न हो तो भी क्या हुआ? कोअी मनुष्य स्वार्थसे प्रेरित होकर सुविधाके समय सत्य बोले और अुससे लाभ अुठाये, तो

हम अुनका अिनकार क्यों करें? हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे भारत सरकारसे कुछ लाभ चाहेंगे और अुठायेंगे। और साथ ही साथ पाकिस्तानके प्रति निष्ठा रखकर सन्तोष मानेंगे। गोअन अीसाअियोंकी भी यही बात है। यहांके लोग मानते हैं कि गोअन आदमी अीसाअी ही होता है। सही बात यह है कि गोअन अीसाअी गांवामें सिर्फ ४५ प्रतिशत हैं। हिन्दू वहां ५२ फी सदीसे ज्यादा हैं।

सिक्ख लोगोंमें भी कुछ कहते हैं, 'हमारा धर्म अलग है, हमारा समाज अलग है, हम हिन्दू नहीं हैं।' मैं खुद मानता हूं कि सिक्ख धर्म हिन्दू धर्मका ही अेक पन्थ है। अंग्रेजोंके राज्यकालमें मुसलमानोंको जब ज्यादा अधिकार मिलने लगे और हिन्दू रहनेमें घाटा ही दिखाअी दिया, तब सिक्ख लोगोंने घोषणा की कि, 'हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' अुन्हें अिस तरह कहने देनेमें हिन्दुओंको कोअी हानि दिखाअी नहीं दी। मुसलमान भी कोअी अेतराज नहीं कर सके। अिस प्रकार सिक्ख, जो सौ फी सदी हिन्दू थे — और अब भी हैं — अलग हो गये। अैसी हालतमें कोअी सिक्ख जोर देकर कहे कि मैं हिन्दू नहीं, तो मैं जरा भी आपत्ति न करूं। कुछ सिक्ख कहने लगे हैं, 'धर्मसे हम अलग हैं, समाजके रूपमें हम अेक हैं, हमारी राष्ट्रीयता हिन्द — अथवा हिन्दुस्तानी है।'

मन्दिरोंके देव-द्रव्यको नये कानूनके शिकंजेसे बचानेके लिअे चंद जैन भी कहने लगे हैं कि, 'धर्मकी हैसियतसे हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' ज्यों ज्यों कानून बनेंगे, त्यों त्यों धर्म, समाज, नागरिकता और राष्ट्रीयताके मामलोंमें यह खेल जारी रहेगा। कोअी कहेगा 'हम फलां हैं।' कोअी कहेगा 'हम नहीं हैं।' यह गड़बड़ी बढ़ते-बढ़ते अन्तमें धर्मोंका महत्त्व अपने आप नष्ट हो जायगा। 'कोअी व्यक्ति या समूह दो राष्ट्रोंके अेक साथ नागरिक रहें तो हर्ज क्या?' अैसा पूछनेवाले लोग पैदा होने लगे हैं। वे नहीं समझते हैं कि दोनों राष्ट्र स्थायी मित्र हों या सदाके लिअे अहिंसाकी नीति स्वीकार करते हों, तो ही यह चीज बन सकती है। हिन्दुस्तान और पुर्तगालके बीच लड़ाअी

छिड़े और अनिवार्य फौजी भर्ती शुरू हो जाय, तब मनुष्य दो में से अेक ही देशका नागरिक रह सकता है। जब सब युद्ध मिट जायंगे और सब जगह मित्रता या बन्धुत्व स्थापित हो जायगा, तब मनुष्य विश्व-नागरिक बन सकेगा।

आज भी हर कोअी मनुष्य विश्व-नागरिक बन सकेगा — अिस शर्त पर कि वह घोषणा करे कि, 'किसी भी देशके नागरिकका कोअी विशेष अधिकार मुझे नहीं चाहिये। जिम्मेदार मनुष्यकी हैसियतसे मैं अपने तमाम फर्ज अदा करूंगा। और अगर अुनसे ज्यादा या संकुचित फर्ज मुझ पर लादे जायंगे और वे मेरे विश्व-बन्धुत्वसे बाहर होंगे, तो मैं अुन फर्जोंसे अिनकार कर दूंगा और अुससे पैदा होनेवाली तमाम सजायें खुशीसे सहन करूंगा।'

आज मैं पाकिस्तानी लोगोंके साथ, हिन्दुस्तानके मुसलमानोंके साथ, सिक्ख लोगोंके साथ, गोअन या जैन लोगोंके साथ कोअी झगड़ा नहीं करूंगा। मेरी अिस नीतिसे मैं अुन्हें विचार करनेवाले बना सकूंगा। झगड़ा करनेसे मेरी और अुनकी दोनोंकी प्रगति रुक जायगी और तीसरे ही लोग अिससे लाभ अुठायेंगे। मैं दुनियाके सामने नाहक हंसीका पात्र क्यों बनूं? हम सब अेशियन हैं, अेशियन कहलायें, अिससे जिसे शरीक होना हो हो जाय, न होना हो वह न हो। समय आने सबको शामिल होना ही पड़ेगा। तब तक यही अुत्तम नीति है कि हम धीरज रखें। और हम दूसरा कर भी क्या सकते हैं कि जिससे सार निकले?'

जहां जायें वहांकी संस्थायें देखनेका रिवाज होना ही है। आबीजानमें अेक अफ्रीकन वेलफेयर सेन्टर हमने देखा। अुसकी अिमारत अच्छी है। लोग अुससे कितना लाभ अुठाते हैं सो भगवान जाने। 'जनताके हितमें कुछ पैसा खर्च कर देनेसे हमारा अच्छापन दिखेगा' — अिस वृत्तिसे अुदासीन सरकारकी तरफसे असे काम किये जाते हैं। वहां अेक दवाखाना (क्लिनिक) हमने देखा। कोअी डॉक्टर न मिलनेके कारण वह बंद पड़ा है। हिन्दुस्तानी डॉक्टरोंको सरकार युरोपियन डॉक्टरों जितना वेतन या

अधिकार नही देती। कोअी डिग्रिया लेकर पास हुआ हो और सरकारको वह डिग्री जचती न हो, तो अैसे आदमियोको सरकार धधा भी नही करने देती। मराठीमे अेक कहावत है, 'मा घरमे खिलाये नही और पिता वाहर जाने दे नही'—तो अैसी हालतमें वालक करे क्या? यही हालत यहाकी जनताकी हो गअी है। सरकारको अिस स्थितिसे शर्म नही आती और जनताको वह असह्य नही लगती, यह देखकर मनमे वडा आश्चर्य और दु ख हुआ।

जव पास ही अेक प्रसूतिका अस्पताल हमने देखा और यह नजर आया कि वह अच्छी तरह चल रहा है, तव वह दु ख हम कुछ भूल गये। अिस प्रसूतिगृहमे अेक चौसठ वर्षकी वूढी युरोपियन नर्स काम करती है। मैंने मान लिया कि यह वुढिया किसी मिशनकी तरफसे काम करती होगी। मैंने अुससे पूछा, "आप किस मिशनकी है?" अुन्होने कहा कि, "मै अिस अस्पतालकी ही हू।" अिस वृद्धाके कार्यकी लोगोमे कद्र है। यह अस्पताल वनाया अेक दो मुसलमानोने और अुसे चलाती है यहाकी हिन्दू, मुसलमान आदि सारी जनता। अिस प्रकार मिल कर काम होता देखकर वडा आनन्द हुआ।

अेक रातको हिन्दू-मडलकी तरफसे व्यायामके प्रयोग हुअे। प्रयोग अच्छे थे। हाथोमें मशाले लेकर चलनेके खेल मजेके दिखाअी देते है। अैसा नही लगता कि अुनमे व्यायामका कोअी विशेष तत्त्व हो, परन्तु नाचती हुअी ज्वाला देखनेका आनद तो है ही।

दारेस्सलाम और झांझीवार दोनोमे मेरे लिअे अेक वडी दिक्कत पैदा हो गअी। मेरे वनावटी दातोकी वत्तीसीमे (सच कहू तो अूपरकी पोडशीमें) अेक दरार पड गअी। वह धीरे-धीरे वढने लगी। खाते समय होनेवाली कठिनाअी सह ली जाती, परन्तु खाते या वोलते समय दरारकी नोकमे जीभ कट जाती थी। यह दु ख हदमे ज्यादा हो गया। अैसे दत्तक दातोकी मददके वगैर खाया नही जाता और सभाओमें साफ तौर पर वोला नहीं जाता। वोलने लगे तो कष्ट

हो, और यहा देश देखनेके सिवाय हमारा मुख्य काम तो खाना और बोलना ही था। भोजनवीर और भाषणवीर अिस तरह घायल हो जाय, तब जगमें क्या करे? अतमें शनवारके अेक भले गोरे दत-वैद्यने छुट्टीके दिन होते हुअे भी मेरी बत्तीसी ठीक कर देनेका काम हाथमें ले लिया और कुछ ही घटोंमें वह ठीक कर दी।

अितना कष्ट अुठानेके बाद ही गाधीजीकी सलाहका महत्त्व मनमें बैठा कि समझदार आदमीको अेक फालतू चश्मा और दातकी फालतू बत्तीसी हमेशा साथ रखनी चाहिये।

झाझीबारके टापूकी बावन मीलकी लबाओ और २४ मीलकी चौडाओमें आकर्षक दृश्योंकी अितनी बहुतायत है कि अुसे सौंदर्यका सग्रहालय कह सकते है। अेक दिन हम कूम्बाका समुद्रतट देखने गये। बडे-बडे शख, कौडिया और सीप देखकर हम आश्चर्यचकित हो गये। प्राणी-सृष्टिमें दो विभाग दिखाओ देते है। मनुष्य और पशु-पक्षीकी हड्डिया अुनके शरीरके अदर होती हैं और मास अूपर चिपटा रहता है। जब कि सीप और शखोंमें मास अदर होता है और हड्डिया चमडी और घरके स्थान पर होती हैं। कछुअेका भी यही हाल है।

वनस्पति सृष्टिमें भी क्या अैसा नही है? छुहारेमें हड्डीके स्थान पर माना जानेवाला बीज पेटमें होता है और खानेका स्वादिष्ट भाग बाहर होता है। आमका भी यही हाल है। जब कि बादाम और अखरोट वगैरा फलोंमें मीगी अदर होती है और अुसे सुरक्षित रखनेवाला कवच बाहर होता है। नारियलका हाल अिससे भी अलग है। अुसका मगज या खोपरा सबसे अदर होता है। टोकसी अुसके अूपर और टोकसीकी रक्षाके लिअे सबसे अूपर जटा होती है। अूचे पेड परसे फल गिर जाय तो टोकसी (खोपडी) के टुकडे टुकडे ही हो जाय। अुनकी रक्षाके लिअे कुदरतने जटाके रेशोंकी गद्दी बना दी है।

अिस ओरके समुद्र तटके पत्थर विचित्र प्रकारके होते हैं और लहरें अिन पत्थरो पर प्रहार करके अुन्हे अनेक चित्र-विचित्र आकार

दे देती है। देखकर मनमे खयाल आता है कि लहरोकी अिस कारीगरीकी कद्र करे या अिनके धीरजकी?

झांझीबारमे अेक गुफा है। अुसके भीतर, पुराने जमानेमे, पकड़ कर लाये गये गुलाम रखे जाते थे। हम आम या आलूका ढेर लगाते है और अुमे बेचनेसे पहले जो सड जाय अुन्हे फेक देते है और फेकते समय कहते है कि 'बहुत नुकसान हो गया', अिसी तरहकी यहा रखे गये गुलामोकी स्थिति थी। अुनकी रहन-सहनकी हालतमें सुधार कौन करे? जानवरोसे भी खराब हालतमें अुन्हे रखा जाता था। बस, जो मर गये अुन्हे फेक दिया और अुनकी कीमत दूसरे जीते रहनेवालो पर चढा दी, हो गया।

झांझीबारका म्यूजियम दो अिमारतोमे बटा हुआ है। बनानेवालेने अिस पर बडी मेहनत की है। लिविंग्स्टन जैसे पादरी सशोधकोके अितिहासके साधन यहा मिलते है। मनुष्य-सृष्टि, प्राणी-सृष्टि और समुद्र-सृष्टि तीनोके अवशेष यहा मिलते है। तीनोके जीवनक्रमके अध्ययनके साधन यहा अुपलब्ध है। परन्तु अैसा नही लगता कि अिन म्यूजियमोको जीवित अर्थात् अद्यतन रखनेकी कोअी परवाह करता हो। आज अैसे म्यूजियमोको म्यूजियम न कहकर म्यूजियमोके ममी कहना चाहिये। हिन्दुस्तानमे अधिकाश म्यूजियम अिसी प्रकार ममीका रूप धारण करके पडे है। हमारा पुराना साहित्य, हमारे धर्म, कितने ही रीति-रिवाज और हमारी सस्कृतिके कुछ अग कभीमे मृत बनकर नष्ट होनेके किनारे खडे है। जब तक रूढिवादियोका आग्रह कायम था, तब तक ये तमाम चीजें ममीके रूपमें भी सुरक्षित रहती थी। अब अुतनी सुरक्षितता भी नही रही। बहुतसी चीजे गिरती जा रही है, सडती जा रही है या मिटती जा रही है। अितनी ही आशा रखे कि अब अुनका खादके रूपमें अुपयोग हो सकता है।

पासका पैम्बा द्वीप झांझीबारका अुपनगर कहा जा सकता है। दक्षिणकी तरफका माफिया बहुत दूर है, अिसलिअे झांझीबारके जीवन

पर अुसका कोअी असर नहीं। समुद्रका किनारा, अिस किनारे पर स्थित गाम्वें (वाड़िया) और अिन वाडियोंमें रहनेवाले हरअेक वर्गके लोग सब मिलकर आशीर्वादकी शोभा पैदा करते हैं। और लोगोंके पेड़ अुस शोभामें वृद्धि करके सारे टापूको सुरभित करते हैं।

अेक दिन शामको, दिन भरके कार्यक्रमोंकी थकावट मिटानेके लिअे हम समुद्रके किनारे गये। वहां अेक भव्य राजमहल खड़हर होकर पड़ा है। अुसे महेवी महल कहते हैं। भव्य मकानोंके खडहर भी भव्य दिखाअी देते हैं। और जब अिन खडहरोंके बीचमें वृक्ष और लताअें अुग आती हैं और अिन खडहरोंकी रक्षा करनेका प्रयत्न करती हैं, तब अुनकी शोभा अितिहासके पठन जैसी ही आकर्षक होती है। अिस खडहरके आसपास योजनापूर्वक लगाये गये पुराने पेड़ और अुनके बीचमें अपने आप अुगे हुअे दूसरे पेड़ सारे वायुमंडलकी गंभीरतामें वृद्धि कर रहे थे। श्मशानी हो या नारियलकी वाडी हो, अपने-अपने परिसरका वातावरण मनुष्यके हृदय पर प्रभाव डाले बगैर नहीं रहता। अिस स्थानको देखनेके लिअे आये हुअे हमारे जैसे और लोग भी वहां मिले। हमें पहचाननेवाले होनेके कारण अुन्होंने बातें छेड़ीं।

हमें महसूस हुआ कि प्रकाश और अन्धकारके बीच गंभीर और पवित्र बने हुअे अिस जल और स्थलके बीचके स्थानकी कद्र प्रार्थनामें ही हो सकती है। हम समुद्रके किनारे जाकर बैठ गये। सूर्यास्तके बादका प्रकाश मिट रहा था। लाल सन्ध्या विदा ले रही थी। हमारी प्रार्थना शुरू हुअी। प्रार्थनाके अन्तमें बहनोंने भावपूर्ण भजन गाये। हमें यह देखकर विशेष आनन्द हुआ कि हमारी प्रार्थनाके साथ ताल देनेके लिअे किनारेके सात दीपस्तम्भ अपनी सफेद और लाल रोशनी अकझक झलका रहे थे। प्रार्थनाका असर हृदय पर गंभीर हुआ और समुद्रकी हवाके कारण वह वहां अंकित भी हो गया।

किसी भी स्थान पर दो-चार दिन रह कर अधिकसे अधिक प्राप्त किया हो, तो जिस तरहके लोगोंके आतिथ्यके कारण यह सब कुछ

आनदपूर्वक हो सका, अुन लोगो — बच्चो और बडो दोनो — से बिदा लेते समय बुरा लगता है। परन्तु ये प्रसग भी रोजमर्राके हो जानेके कारण मनका विषाद हसकर निकाल देनेकी कला भी आ जाती है। अिन सब लोगोके साथ पत्रव्यवहार रखनेको जी तो बहुत चाहता है परन्तु यह हो कैसे? अकसर पुराने दिनोकी याद करते समय बिजलीकी चमककी तरह अनेक व्यक्तियोका स्मरण ताजा हो आता है और मनमे जिज्ञासा अुठती है कि क्या भिन्न जीवन-प्रवाहवाले वे सब लोग भी हमें अिसी तरह कभी-कभी याद करते होगे?

१५

मोरोगोरो

हवाअी अड्डे पर सारा झाझीबार अुलट पडा था। अितनी बडी सख्याके लोगोके साथ बातें करनेके प्रयत्नमें किसीके साथ बातें न हो सकी और परिणामस्वरूप मनमे विषाद ही रहा। वायुयानमे हम घरके ही नौ जने थे। अिसलिअे सारा वातावरण विशेष रूपसे घरके जैसा हो गया। छोटासा सफर। हरअेक खिडकीमे से दिखाअी देनेवाली सुदरता देखनेके लिअे अेक दूसरेको बुलाते बुलाते समय पूरा हो गया। और हम फिर वापस घर, याने जयतीभाअीके घर, पहुच गये। दो दिन वहा रह कर और सारे कार्यक्रम बाकायदा पूरे करके विदाका वही अनुभव किया, और १५ जूनको रातकी गाडीसे रवाना हुअे। अिस बारकी यात्रा किनारे किनारे न थी, परन्तु अेकदम अफ्रीका महाद्वीपके पेटमें घुसनेकी थी।

दारेस्सलामसे मोरोगोरो और वहासे डोडोमा तकका सफर रेल द्वारा पश्चिमसे पूर्वकी तरफ हुआ। फिर वहासे मोटरके रास्ते कअी तरहके नये-नये अनुभव करते करते हम अुत्तरकी तरफ जाकर ज्वालामुखीके मुह न्गोरोगोरो गये। वहासे आगे मोशी अरुशाके पासके

किलिमाजारो और मेरुके अुत्तुग शिखरोकी अेक प्रकारसे प्रदक्षिणा करके, अम्बोसेलीके सूखे हुअे तालावके आसपासके अभयारण्यमें रहनेवाले वन्य श्वापदोके साथ अेक रात विताकर अुनके दर्शनसे धन्य होकर अुत्तरमें वापस नैरोवी जा पहुचे।

दारेस्सलामसे श्री डी० के० पटेल साथ आये। हमारे ट्रेड कमिश्नर (वाणिज्य दूत) श्री शान्तिलाल पटेल भी साथ थे। अिस ओरका प्राकृतिक सौन्दर्य विलकुल अलग ही था। और जमीनकी पैदावार भी दूसरी ही थी। तरह-तरहके पहाड देखते-देखते सुवहके साढे छ वजे मोरोगोरो पहुचे। श्री शिवाभाअी पटेलके यहा डेरा था।

मोरोगोरोके पहाड अवरकके वने हुअे है। अिस पहाडमें श्रीमती विलिस नामकी अेक युरोपियन महिलाने अेक होटल खोल रखी थी। मानो मनुष्योके लिअे मजिल हो! पास ही मोरोगोरो नदीका अुद्गम भी है। वहासे आगेकी घाटिया और अुसके वादके मैदानका विस्तार अच्छा मालूम होता था। महिला अितनी होशियार है कि कुछ गोरे यहाकी स्वास्थ्यप्रद हवा और अुनकी ममत्वपूर्ण सेवासे लाभ अठानेके लिअे अपने छोटेसे छोटे वच्चोको भी कुछ समयके लिअे यहा छोड जाते है।

नये ही वने हुअे सिनेमाघरमें मोरोगोरोके लोगोके सामने हमारे भाषण हुअे।

यहासे हम ३२ मील पर मगोले हो आये। जिस चीजको देखनेके लिअे हम तरस रहे थे, वह चीज हमें वहा मिली। दुकान चलानेके लिअे नही, किन्तु वाकायदा खेती करनेके लिअे कुछ होशियार गुजराती भाअी यहा आकर वस गये है। ये लोग यहा ५००-५०० अेकडके ३२ खेतोमें सहयोगी ढग पर खेती कर रहे है। जिस प्रकार हिन्दुस्तानियो और अफ्रीकियोके वीच जो जीवन-विनिमय होता है, वह दोनोके लिअे सचमुच पोषक हो सकता है। हमारे अिन किसानोंने कितनी होशियारीसे अिस कामको जारी रखा है! सरकारी नीतिके कारण अुनकी कठिनाअी कैसे वढ गअी है, भारत सरकार और भारतके रूअीके व्यापारी

जरासी राहत दें तो कितनी बढ़िया मदद हो सकती है — ये सब बातें तफसीलसे प्रमाण और अुदाहरणों सहित और जोशके साथ समझानेका काम श्री जेठाभाअी पटेलने किया। श्री जेठाभाअीने जीवनकी धूपछांह बहुत देखी है और सब तरहसे मजे हुअे आदमी हैं।

मोरोगोरोके पास हमने अेक सुन्दर नर्सरी देखी — बच्चोंकी नहीं, परन्तु फलफूलवाले पौदोंकी। अिस प्रकार पहाड़में घूमनेमें जो आनन्द आता है, अुसे अनुभवी ही जान सकता है।

मोरोगोरो छोड़ते-छोड़ते वहांके महाराष्ट्री डॉक्टर म्हैसकरके यहां हमने फलाहार किया। कोअी डॉक्टर मिले तो अुस देश और खास तौर पर अुस स्थानकी जनताके बारेमें, अुसके बीच फैले हुअे रोगोंके विषयमें और साधारण जनताके जीवट ('वैटेलिटी') के बारेमें मैं पूछे बिना नहीं रहता। अूपर-अूपरसे अच्छे लगनेवाले अनेक समाजोंके बारेमें भीतरी बातें जाननेमें आती हैं, अिससे कभी-कभी दुःख होता है जरूर। परन्तु समाजके निरीक्षण और अध्ययनके लिअे यह सारी चीज कीमती होती है। अैसी जानकारी अिकट्ठी करते समय किसी भी व्यक्तिके बाबत न पूछने-कहनेका धर्म दोनों ओरसे अच्छी तरह पाला जाता है। हरअेक डॉक्टर अपने बीमारोंकी बातें गुप्त रखनेको बंधा होता है। कुछ डाक्टर यह चीज नहीं जानते। तब अुन्हें अुनके अिस धर्मका भान कराना पड़ता है। डॉ० म्हैसकर जिम्मेदार आदमी दिखाअी दिये, अिसलिअे अुनके साथ अुचित मर्यादामें रहकर मैं बहुतसी बातें जान सका।

तारीख १७ को शामको हमने मोरोगोरो छोड़ा। आसपासके पहाड़ हमारे साथ हमें पहुंचाने दूर तक आये थे और अुनके सिर पर सिंहकी तरह छलांग मारता हुआ चन्द्रमा भी हिरणको पेटमें रखकर हम पर नजर रखता था।

१६

डोडोमा

रेलगाड़ीको क्या? आधी रातके बाद साढ़े तीन बजे डोडोमा आकर खड़ी हो गअी। अैसे समय हम गाड़ीसे अुतरें और गांवके लोग आकर हमारा सत्कार करें, अैसी व्यवस्था राजनेताओंको तो क्या, भूतोंको भी मंजूर न हो। अिसलिअे हमने रेलवालोंसे अिन्तजाम कर रखा था कि हमारा डिब्बा वहीं तोड़ कर गाड़ी चली जाय। परन्तु अितनी सुविधा हासिल करनेके लिअे हमें पहले दर्जेके टिकट होने पर भी दूसरे दर्जेमें सफर करना पड़ा। अुसमें सुविधा अेक कम नहीं थी। प्रतिष्ठा कम हो जाने पर हमें अेतराज नहीं था। सवेरे सात बजे श्री दारा कांगा, अुनकी पत्नी महेरबानू और कुछ और नगरनिवासी हमको लेने आये। हममें से अेक दल श्री दारा कांगाके यहां रहा। बाकीके हम, सब तरह सुभीतेवाली डोडोमा रेलवे होटलमें रहे। हां खर्चकी दृष्टिसे हम भी ग्रामवासियोंके ही मेहमान थे।

हिन्दुस्तानमें क्या और यहां अफ्रीकामें क्या पारसी जाति संख्यामें छोटी, लगभग नगण्य होने पर भी केवल अपनी भलाअी, चतुराअी और सर्व-समाजितासे अेकदम निखर आती है और अपनी सुगंध फैलाती है। अुसमें केवल व्यापारीकी दूरदेशी नहीं होती, अिन्सानियतका भी बहुत बड़ा हिस्सा होता है। पारसी लोग देहातमें रहते हों, शराबकी दुकान चलाते हों और काफी नफा कमाते हों तो भी आसपास किसीका दुःख देखते ही तुरंत पिघलकर मदद करने अवश्य दौड़ जायंगे।

कुछ लोग रुपया कमाते हैं, सो केवल पूंजी बनानेके लिअे, जमा करके रखनेके लिअे, और पृथ्वीमाताका दिया हुआ धन अुसीके पेटमें फिर गाड़ देनेके लिअे, कुछ लोग कमाते हैं अैश-आराम, मौज-शौक

और अशोभनीय व्यसनोमें अुडा देनेके लिअे, कुछ कमाते है अपने कुटुम्बियो और बहुत हुआ तो जातिवालोको हर प्रकारकी मदद देनेके लिअे, अैसे लोग तो बिरले ही होते है जो जातिपाति, धर्म या देशका कोअी भेद रखे बिना, जहा भी दु ख या कठिनाअी हो वही अुपयोगी बननेके लिअे धन कमाते है। पारसी जाति आरामसे रहनेमें विश्वास करती है। अपनी जातिके गरीबोको दान भी काफी और व्यवस्थित रूपमे देती है। परन्तु यही न रुक कर वह दूसरे धर्मो, दूसरी जातियो और दूसरे देशोके लोगोको भी दानके समय भूलती नही। अिसलिअे महात्मा गाधीने पारसियोको 'परोपकारी पारसी' कहा है।

हिन्दुस्तानमें पारसियोने अेक और तरह भी अपना स्थान सुशोभित किया है। वे हिन्दू और मुसलमान दोनोमे आजादीसे घुलमिल सकते है, और अिस तरह कभी दोनोके बीच प्रेम-शृखलाकी कडी बन जाते है। खाने-पीनेमें वे मुसलमानोके साथ छूटसे शरीक हो सकते है और धार्मिक भावना और तत्त्वज्ञानकी खोज अिन दो बातोमे वे हिन्दुओमे अनेक प्रकारसे अेकरूप हो सकते है। औसा ससीहके अुपदेश और मिशनरियोके कार्यकी भी वे कदर करते है और कुशल व्यापारी होनेके कारण हरअेक सरकारके साथ मीठा सबध भी रखते है।

शिक्षाका महत्त्व अच्छी तरहसे जाननेके कारण जहा व्यावहारिक शिक्षाका सवाल आता है, वहा पारसियोका कदम आगे ही रहता है। चूकि ये लोग मानते है कि अिहलोकका जीवन सुखी बनाया जाय और मनुष्य मनुष्यके बीचका सबध मिठासभरा बनाया जाय, अिसलिअे पारसियोका जीवन हिन्दुस्तानके लोगोको कभी खटका नही। सर्व-समाजिताके युगधर्ममे पारसियोका जीवन अुपयोगी और शोभायुक्त है।

अैसी जातिको हरअेक सामाजिक अवसर पर अपनाना हमारा फर्ज है। अगर हिन्दू सकीर्ण वृत्ति रखकर पारसियोको या औसाअियोको

अपनानेमे सकोच रखेंगे, तो वे साबित कर देंगे कि अुनके विरुद्ध मुसलमानोंके जो आक्षेप है वे सच ही है।

अूपरकी सब बातें सिर्फ अिसीलिअे लिखनेको प्रेरित नहीं हुआ हू कि डोडोमामें अेक सज्जन पारसी परिवारके साथ परिचय हुआ। किन्तु अुसके भिन्न कारण है। वह अिस प्रकरणमें यथास्थान आयेगा।

श्री दारा कीकाके यहा बढिया नाश्ता करके हम डोडोमाका खनिज सग्रहालय — जियोलॉजिकल म्यूजियम देखने गये। यह सग्रहालय कअी प्रकारसे याददाश्तमें रखने लायक है। अब तक मैंने जितने सग्रहालय देखे, अुनमें से कुछ तो अिस तरहके थे, जो शुरूके अुत्साहमें जितने बन गये सो बन गये और बादमें अुनमें कोअी वृद्धि नहीं हुअी। अिन्हे मैंने ममी-म्यूजियम नाम दिया है (यानी जिनके प्रति अुत्साह मर गया है, परन्तु जिनका कलेवर ज्योंका त्यों कायम है।) दूसरे कुछ म्यूजियम समय-समय पर वृद्धि द्वारा अद्यतन किये जाते है। परन्तु अुनका कोअी अुपयोग करता है या नहीं, अिसके बारेमें व्यवस्थापक अुदासीन होते है। यह खनिज सग्रहालय अैसा था जिसका अुपयोग ज्ञानकी अुपासनाके लिअे और साथ ही सरकार और जनताको जानकारी देनेके लिअे व्यवस्थापक खुद ही करते थे।

टागानीकामे खनिज सपत्ति बेशुमार है। हीरे और सोनेकी खाने तो है ही। किन्तु यह चीज सचमुच सपत्ति नही है, परन्तु सपत्तिके प्रतीकके रूपमें काममें ली जाती है। जिन खनिज पदार्थोंका व्यवहारमें अधिकसे अधिक अुपयोग है, वे पदार्थ यहा अिकट्ठा करके रखे गये है और अुन पदार्थो पर कअी प्रकारके प्रयोग भी हो रहे है। खनिज पदार्थोंको सान पर चढाकर पॉलिश करना, तेजाबमें डालकर अुनकी खूबिया जाचना, भट्टीमें पकाकर अुनमें होनेवाले फेरबदल देखना हरअेक पदार्थका पृथक्करण करके खोज निकालना कि अुसमे से क्या क्या मिल सकता है — वगैरा अनेक प्रकारके प्रयोग यहा हो रहे है। सी० आअी० डी० विभागके पुलिसवाले जैसे अभियुक्तको धमकाते है,

फुसलाते हैं, नशेमें चूर कर देते हैं या कभी तरहसे तंग करते हैं और युक्ति-प्रयुक्तिसे अुसका सब रहस्य जान लेते हैं, अुसी तरह ये विज्ञानशास्त्री जड पदार्थों, वनस्पतियों और प्राणियोंके पीछे पडे रहते हैं। यह लगन अेक बार लगी कि जन्मभर अुससे चिपटे ही रहते हैं। अैसे लोगोंने ही मानवजातिके ज्ञानमें कीमती वृद्धि की है और भौतिक अुन्नतिको गति प्रदान की है। अैसे प्रयोगों पर प्रयोगशालाओंके और दूसरे बहुतसे खर्च करने पडते हैं। जो जाति यह खर्च करनेको तैयार नहीं होती, वह किसी भी क्षेत्रमें आगे नहीं बढ सकती। अिस म्यूजियममें किस किस किस्मकी चीजें रखी गअी हैं और अुनमें से कौनसी वस्तुअें दुर्लभ हैं अिसकी सूचियां देनेका यह स्थान नहीं है। हम लोगोंको अभी कितना करना बाकी है, अिसका विचार मनमें घोटते-घोटते अुस म्यूजियमसे मैं वापस लौटा। भूमिके पेटमें क्या-क्या भरा है, अिसका विचार करते करते अिस बातकी तरफ ध्यान जाना ही था कि भूमि परके पहाडोंकी रचना कैसी है। डोडोमाके बिलकुल नजदीक अेक पहाडीके सिर पर कुछ चिकने पत्थर अिस तरह रखे हुअे हैं कि अेक खास तरफसे देखने पर हूबहू अैसा भासित होता है मानो सिंह बैठा है और हम अुसकी जांघ देख रहे हैं। अंग्रेजोंने अुसका 'लॉयन हिल' जो नाम रखा है, वह ठीक ही है।

रिवाजके अनुसार दोपहरका लंच हुआ अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे। अुसमें कअी अंग्रेज आये थे। अिसलिअे मुझे यहां अंग्रेजीमें ही भाषण करना पडा। दोपहरको सब अिधरकी मूंगफलीकी योजना देखनेके लिअे डोडोमासे ५२ मील दूर स्थित कोंग्वा केन्द्र पर गये। हमारा कितना ही लिखनेका काम चढ गया था। अुसे निपटानेके लिअे सरोज और मैं पीछे रह गये। कोंग्वामें भी वैसा ही काम था, जैसा नाचिंग्वेमें देखा था। अिसलिअे वहां न जानेमें कुछ खोना नहीं था।

मैं पीछे रह गया तो मेरे भाग्यमें अेक दो सभायें और कुछ मुलाकातें आ गअीं। शामको हिन्दू-मंडलके सामने मेरा भाषण था।

दूसरे दिन मुझे स्त्रियोंकी सभामें वोलना पडा। श्रीमती शहरवानू कीका हमारे साथ आअी थी। मैंने देखा कि श्रीमती कीकाको शिक्षामें वडी दिलचस्पी है। शादी करनेसे पहले वे शिक्षाका ही काम करती थीं। पूर्व अफ्रीकाकी प्राथमिक शिक्षाका विचार करनेके लिये अगर कोअी सस्था वनाअी जाय, तो अुसमें श्रीमती कीकाको लेना ही चाहिये। वातो ही वातोंमें अुन्होंने मुझसे कहा कि, "मुझे शिक्षाकी तरह साहित्यमें भी रस है। हम जो कुछ पढते हैं सो अग्रेजीमें ही। यह भी जाननेमें नहीं आता कि गुजरातीकी अच्छी पुस्तकें कौनसी हैं। मैंने यहाके हिन्दू-मंडलसे कहा कि वाकायदा फीस लेकर मुझे मडलकी सदस्या वनाअिये, ताकि आपके पुस्तकालयसे पुस्तके मगाकर मैं पढ सकू। वे कहते हैं कि, 'मडलकी सदस्या आप नहीं वन सकती। आपको जितनी पुस्तकें चाहियें, हम यो ही पढनेको दे देंगे।'"

अव अिस तरह मुफ्त कितावें लेकर पढना हरअेक आदमीको पसन्द नहीं होता। लोगोको अैसा ही लगेगा कि 'आप हमारे मडलकी सदस्या नहीं वन सकती', यह कहकर हिन्दुओंने अपनी सकीर्णता प्रगट कर दी। हिन्दू कहेंगे कि पारसी लोगोको हिन्दूके रूपमें कैसे स्वीकार किया जाय? अिधर पारसियोको यह खयाल होगा कि हिन्दू सस्कृति और हिन्दू रीति-रिवाजके वारेमें हमारे मनमें जो आदर है, अुनकी कुछ भी कदर नहीं? हम पास आना चाहते हैं और ये लोग हमें दूर रखना चाहते हैं।

सही अुपाय यह है कि मडलके अुद्देश्योंमें यही लिखना चाहिये कि, "जो हिन्दू हैं या जो हिन्दू सस्कृतिके प्रति सद्भाव रखते हैं, वे सव अिस मडलके सदस्य वन सकते हैं। हिन्दू धर्मकी किसी रूढिके सिलसिलेमें चर्चा हो रही हो, अुस समय अिस प्रकारके वाकीके लोग मत नहीं दे सकते। अन्य सव प्रकारसे अुन्हें सस्थाके सदस्य माना जायगा।"

अितनी व्यापकता न सूझे तो पुस्तकालयके लिअे अलग नियम बनाकर बाहरके लोगोंको अुसके सदस्य बनाया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि सबके साथ मिलनेकी अुत्सुकता होनी चाहिये। आम तौर पर हिन्दू लोगोंमें स्वयपूर्णताका खयाल होता है और अिस कारण वे बिना विचारे दूसरे लोगोंसे दूर रहते हैं। 'हम अलग स्वभावके हैं और हमारा व्यवहार दूसरे लोगोंको खटकता है', अितनी स्पष्ट बात भी हिन्दुओंके ध्यानमें नही आती।

Oh, would some power the gift give us,
To see ourselves as others see us.

आज दुनियाके दरबारमें हिन्दू लोगोंके प्रति सहानुभूति रखनेवाली जातिया बहुत कम हैं। सिर्फ किसीके भी हाथका और कुछ भी खाने-पीनेको तैयार हो जानेसे हमने अलग-थलगपन छोड ही दिया, अैसा नही होता।

अेक बार बम्बअीमें हिन्दूसभाका अधिवेशन हुआ होगा। लाला लाजपतराय अध्यक्ष थे। अुन्होंने अेक सीधा सवाल पूछा "असलमें हममें जातीय सकीर्णता नही है। हम तमाम भारतवासियोंको साथ लेकर चलना चाहते हैं। ये मुसलमान ही साम्प्रदायिकता पैदा करके हमसे अलग रहते हैं, अिसीलिअे हम खुद साम्प्रदायिक बनकर पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी तमाम जमातोंको अपनेसे दूर क्यों रखें? मुसलमानोंको हमारे साथ शरीक न होना हो तो न हो, जो शरीक होनेको तैयार हैं, अुन्हे हम आदरपूर्वक क्यो न बुलायें?"

असलमें वह जमाना अैसा था कि अगर हमने पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी कौमोंको आदरके साथ अपने सामाजिक जीवनमें शरीक कर लिया होता, तो मुसलमान भी हमसे दूर न जाते। हममें राजनैतिक सकीर्णता तो थी नही। हमारा अपराध, हमारा अलग-थलग-पन सामाजिक क्षेत्रमें था। अुसकी सजाके तौर पर हमें राजनैतिक

अन्याय सहन करना पडा, हमारी राष्ट्रीयताका हनन हुआ और मानवजातिके दरवारमें हम दूसरे लोगोंकी सहानुभूति खो बैठे।

और फिर भी हमने अपना अलग-थलगपन अभी तक नहीं छोड़ा। हमारे कुछ धार्मिक विचार और रिवाज अधार्मिक हैं। अुन्हें हम छोड देंगे तभी मनुष्यकी हैसियतसे हम तरक्की कर सकेंगे।

डोडोमामें कोअी प्रचारक आया होगा। अुसने 'आत्मा नहीं, पुनर्जन्म नही, अीश्वर अवतार नही लेता, मूर्तिपूजा ढोंग है' वगैरा वगैरा बातें कहकर यहाकी बहनोंको भडका दिया होगा। अिसलिअे अेक बहन अिस बारेमें मेरे विचार जानकर कुछ आश्वासन प्राप्त करने मेरे पास आअी। मैंने ये सब प्रश्न अुच्च भूमिका पर ले लिये और अुनकी चर्चा की। अुन बहनको संतोष हुआ, अुन्होंने माग की कि हम स्त्रियोंके सामने भाषण देकर आप ये सब बातें हमें समझाअिये।

खानगी समय लेकर मुझे जो खत-खतूत लिखना था सो रह गया और दोपहरको बहनोंकी सभामें जाना पडा। मैंने वहा घर और समाजकी सफाअीके बारेमें, भोजनके बारेमें और अैसे ही दूसरे अिहलोकमें अुपयोगी विषयोंकी बातें कही। सर्व-समाजिताके महत्त्व और अफ्रीकी बहनोंको अपनानेके बारेमें तो जरूर कहा ही। अिसे तो मैं किसी जगह भूलता या छोडता ही नहीं था।

कास्वा गये हुअे हमारे साथी चार बजते बजते वापस आये। तुरत ही हम मिसेज पाअिकके यहा चायपार्टीमें गये। लिंडीके वर्णनके समय मैंने लिखा है कि, 'गोरोंने हमें अपने यहा खानेको बुलाया हो, अैसा मि० पाअिकका अेक ही अुदाहरण था।' अुसमें अितना संशोधन करना चाहिये कि डोडोमामें अुनकी भाभीने भी हमें अपने यहा अपने गोरे मित्रोंसे मिलने बुलाया था।

रातको श्री दारा कीका और श्रीमती कीकाकी तरफसे स्वेच्छा-भोजन था। अिसे फ्रेंच और अंग्रेज लोग 'बुफे' कहते हैं। स्वेच्छा-

भोजनकी खूबी यह होती है कि खानेकी सब तरहकी चीजें तैयार करके अेक मेज पर रख देते है। पास ही रकाबिया, चम्मच, काटे, हाथ रुमाल वगैरा रखे रहते है। मेजबान और मेहमान सब अुस मेजके पास जाते है और हरअेक आदमी अेक अेक रकाबी लेकर अुसे जो और जितना चाहिये, परोस लेता है और जी चाहे वहा बैठकर या घूमते-घूमते खाने लगता है और अलग-अलग लोगोके साथ बाते करता है। अिस प्रकार आग्रह करके अधिक परोसना और अन्न बिगाडना टल जाता है। 'अपना हाथ मो जगन्नाथ' के हिसाबसे हरअेक मनुष्य अपनी रुचिकी चीज पसन्द करके परोस लेता है और अेक जगह बैठनेकी बात न होनेसे बहुतसी कुर्सियो और मेजो या पट्टोकी व्यवस्था करनेकी जिम्मेदारी नही रहती। लोग घूमते-घूमते खाय तो कअी लोगोके साथ थोडा-थोडा बोल सकते है, दोस्ती बढा सकते है। गभीर लोग दो-चार कुर्सिया जमा करके वहा बैठकर खाते-खाते चर्चा कर सकते है। श्री अप्पासाहबके अफ्रीका आनेके बाद यह प्रथा हमारे लोगोमे काफी फैली। यह कअी तरहसे सुविधापूर्ण तो है ही।

भोजनके बादके भाषणमे मैने कहा कि मनुष्य-जातिका आदर्श त्रिविध माना गया है। स्वतत्रता, समता और बधुता। ये तीनो आदर्श सिद्ध करनेके लिअे मनुष्य-जातिको महान क्रातिया करनी पडी है।

फ्रास देशने राजनैतिक समता स्थापित की। परन्तु अुसके लिअे खूनकी नदिया बहाअी गअी और सामती प्रथाका, फ्यूडेलिज़मका अन्त किया गया। अुसके बाद रूसने अुतनी ही रक्तरजित क्राति करके अपने यहा समताकी स्थापना की और पूजीपति वर्ग और खानगी सपत्तिका अत किया। अब बधुता स्थापित करनेके लिअे अेक अनोखी क्राति करनेकी बारी हिन्दुस्तानके भाग्यमें आअी है। अिसके लिअे पहले हिंसाका अत करना पडेगा। और शहरी सस्कृतिको सीमित करके गावोका अुद्धार करना पडेगा। अिस बधुताकी क्रातिके

परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और वाणिक न्याय तीनोंकी स्थापना होगी।

जिसका नतीजा यह होगा कि अफ्रीकाकी भूमि पर भारतकी मिश्रित संस्कृति, युरोपकी अितिहास सिद्धसंस्कृति, और अफ्रीकाकी आदिम संस्कृति तीनोंका समन्वय हो जायेगा। और अुसमें से अेक नयी संस्कृति अुत्पन्न होगी, जिसका प्रधान स्वर होगा बन्धुता, यह बन्धुता मनुष्य मनुष्यके बीच ही नहीं, परन्तु वर्ण वर्णके बीच भी स्थापित होगी।

अितने विस्तारसे नहीं परन्तु अिसी प्रकारका भाषण मैंने दिया। अुसके बाद अप्पासाहब बोले। अुनका भाषण बहुत सुन्दर था। अेशिया महाद्वीपकी पुनर्जागृति और अहिंसक पद्धति द्वारा संघर्ष मिटानेकी आवश्यकता अुनका विषय था। दूसरे दिन डोडोमा छोडनेसे पहले हम दो-तीन पाठशालायें देख आये। अिंडियन पब्लिक स्कूलके हेडमास्टर श्री कुरेशी फौजसे निवृत्त हुअे आदमी हैं। अिसलिअे अुन्होंने विद्यार्थियोंको कवायद अच्छी सिखाओी है। अिसका लाभ हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंने ही अधिक प्राप्त किया है, यह असर मेरे मन पर हुआ। यहां लडकियोंकी शिक्षाके लिअे आगाखानकी कन्या पाठशाला अलग है। वहां श्रीमती टर्नबुल नामकी अंग्रेज महिला बडी लगनसे काम कर रही हैं। अिंडियन पब्लिक स्कूलकी लडकियोंको खडे-खडे खो खो खेलते देखकर मुझे बडा आनंद आया।

यहांकी रेलवे दारेस्सलामसे मोरोगोरो और डोडोमा होकर टबोरा पार करके आगे किगोमा तक जाती है। किगोमा टांगानिका सरोवरका पूर्वी किनारेका बंदरगाह है। वहांसे जहाजमें बैठकर बेल्जियन कांगोमें जाते हैं।

हमारे लोग हिन्दुस्तानसे दारेस्सलाम आते हैं, वहांसे रेल्वेके रास्ते किगोमा और वहांसे जहाजके रास्ते अुसुम्बारा। यह आखिरी बंदरगाह टांगानिका सरोवरके अुत्तर किनारे पर स्थित है।

१७

ङ्गोरोंगोरो

पूर्व पश्चिम जानेवाली रेलवेको छोडकर अब हमने डोडोमासे नैरोबी तक जानेवाला अुत्तरका मोटरका रास्ता पकडा। अिस प्रदेशमे न बडे जंगल हैं और न बडे पहाड। हमारे सौभाग्यसे श्री बदरु नामक अेक भाअी अपनी मोटरमें नैरोबी जा रहे थे। अप्पासाहबके प्रति प्रेमके कारण वे हमसे मिल गये। अिसलिअे हमारी मंडली तीन सवारियोंमें आरामसे सफर कर सकी। श्री कमलनयनने अेक मोटरगाडी टांगामें खरीदी थी। वह डोडोमा आ पहुंची थी। अेक वह और दूसरी भाअी बदरुकी और तीसरी बॉक्स गाडी किराये कर ली थी।

बरसातके दिनोंमें रास्ते परसे मोटरें जानेसे कअी खड्डे-खोचरे हो जाते हैं, जो सूखनेके बाद मोटरोंको परेशान करते हैं। यह मुश्किल टालनेके लिअे रास्तेके खड्डे-खोचरोंकी हजामत करनेवाली मोटर मनुष्यने बनाअी है। लोहेका अेक मोटासा अुस्तरा रास्ते पर चलाने लगे, तो सूखे हुअे कीचडकी अुठी हुअी नोकें कट जाती हैं और अुनकी मिट्टी खड्डोंको भरती जाती है।

अिसके सिवाय रास्ता सुधारनेका अेक देहाती अुपाय है। जंगलकी झाडियां अिकट्ठी करके रास्तेकी आधी चौडाअी तक पहुंचने लायक अेक ब्रश तैयार कर लिया जाता है। चुनाअीके काममें मॉज देनेके लिअे जो कूंचा तैयार किया जाता है, अुसके जैसा ही यह ब्रश होता है। लम्बी रस्सी बांधकर यह ब्रश रास्ते पर फेरनेसे रास्ते परकी मिट्टी समान रूपमें फैल जाती है, जिसके कारण मोटरोंकी दिक्कत बहुत कुछ घट जाती है। रास्ते सुधारनेके ये दोनों प्रकार हमने देखे। हमारे यहां कुछ खास स्थानों पर ये जारी किये गये हैं।

रास्तेके दोनों ओर दूर दूर तक, जैसे क्रिकेटके क्षेत्रपाल खडे हों अुसी तरह गोरख-चिन्च अर्थात् चिरमुल्लाके विशालकाय पेड खडे थे। अैसे पेड पूर्वी किनारे पर भी बहुत है। दारेस्सलामके आसपास तो बहुत ही हैं। अिस अिलाकेका नाम टागानिका न होता तो मैं अिसे चिरमुला नाम देता।

आधुनिक सभ्यतासे अलग पडे हुअे अिस देशमें जहा-जहा बस्ती है, वहीं हिन्दू और मुसलमान गुजराती अपनी अपनी दुकानें खोलकर बैठे हैं। अिनके बीच कोअी झगडा नहीं है (क्योंकि यहा संस्कृति, सभ्यता और अखबार नहीं पहुचे हैं!)। रास्तेमें कोन्डोवा नामक अेक छोटासा गाव था। वहा दूरसे पानी लाकर गावको बडी राहत पहुचाअी है। हम यहा न ठहर कर आगे बबाटी पहुचे और वहा अेक मुसलमान भाअीके यहा दोपहरका भोजन किया। अिनके छोटेसे दीवानखानेमें अेक सादा जर्मन चित्र था। अुसमें सिंहोंका चित्रण बडे अच्छे ढगसे हूबहू किया हुआ था।

यहासे आगे चलकर सारा प्रदेश बदल गया। बाअीं ओर अेक विशाल खारे पानीका सरोवर था। अुसका नाम मनियारा है। अिस सरोवरके आसपास जगली शिकारी जानवर बहुत हैं। साफयूनी गावके पास रास्ता फट गया। वह रास्ता पकडकर हम आगे बढे। बाअीं तरफ तालाब और दाअीं ओर लोर्मिसिगुर पर्वत। पहले आया कराटू गाव, अुसके बाद आया ओल्डियानी। कराटूके पास भाअी बदरुकी मोटर बिगड गअी। हमने अुन्हें रास्ते पर छोडकर आगे जानेसे अिनकार कर दिया। जगलमें वे अकेले और अिस पर भी अेक पैरमें कुछ कमजोरी। अुन्हें अिस तरह कैसे छोडा जाय?

मगर वे माने ही नहीं। कहने लगे, 'मैंने अैसे सफर बहुत किये हैं। मैं अपनी मोटरको पहचानता हू। वह घटे भरमें ठडी हो जायगी और मान जायगी।' आखिर हमने अुनकी बात मान ली और

ओल्डियानी चले गये। वहा पहुचते ही जब अेक बसको भाअी बदरूकी मददमे भेज सके, तभी हमारे मनकी घबराहट कम हुअी।

अिस प्रदेशमे कुछ युरोपियनोने सुन्दर खेतीवाडी की है। कॉफी, चाय, गेहू वगैराकी खेती करके वे अच्छा कमाते है और अच्छी तरह रहते भी है। परन्तु हम अिधर जो आये थे सो अुनकी खेतीवाडी देखनेके लिअे नही, बल्कि यहाके अेक प्रसिद्ध सुप्त ज्वालामुखीके मुहके भीतर हाथी और सिह जैसे वन्य पशु रहते है, अुस स्थानको देखनेके लिअे।

अधेरा होनेकी तैयारी थी। हमने ओल्डियानी छोडकर ङ्गोरोगोरो जानेका रास्ता लिया। गोरोके कितने ही शाम्बे पार किये और पहाड चढने लगे। प्रारम्भमे ही अेक दो खरगोश मोटरके प्रकाशमें दिखाअी दिये। अिसलिअे आशा बधी। थोडे आगे गये तो अेक तेदुआ — नही, तेदुआ छोटा होता है — चीता दिखाअी दिया, जिसे अग्रेजीमें 'लेपर्ड' कहते है। मोटरके प्रकाशमे चौंधियाकर वह अेक तरफ हट गया और अुसने अेक पेडके छोटेसे कोटरमें छिप जानेकी कोशिश की। मोटर नजदीक आअी तो अुसकी जगह पर जरा अधेरा हो गया। अिससे लाभ अुठाकर, अिधर अुधर देखकर, जरा दुबक कर अुसने दौड लगाअी और देखते देखते जगलमे गायब हो गया। हम जरा आगे बढे। अधेरा जम गया था। आकाशका चद्रमा छाछसे भी पतली चादनी बरसा रहा था। अितनेमें मोटरके सामने अेक बडा जानवर दिखाअी दिया। हाथी है या गेंडा है, अिसका विचार करें अितनेमें खोपडी परके दो सीगोने बता दिया कि यह वन-महिष है। जगलके शिकारी हाथी, गैंडे या शेरसे अितने नही डरते जितने महिषसे डरते है। महिष जबरदस्त ताकतवाला जानवर है। हाथी या शेर भी अिसका नाम नही लेते। शिकारी कहते है कि बाकी सब जानवरोका स्वभाव समझा जा सकता है और अुनसे निपटा जा सकता है। महिष भूखा हो या न हो, अुसे आप छेडें या न छेडें, वह अकेला

हो या झुण्डमें हो, जहा अुसे आपके प्रति शक हुआ कि अुसने आप पर हमला किया ही समझिये। और अुसका झपाटा अितना जोरदार होता है कि अुससे शायद ही कोअी बच सके।

हमारे सामनेका महिष खूब मस्तीमें आया हुआ जानवर दिखाअी देता था। सामने रास्ते पर आडा खडा रहकर डोल रहा था। दूरबीन लेकर देखा तो अुसके गले और गरदनकी तरफके बाल काफी लम्बे दिखाअी दिये। थोडे ही समयमें अुसने सिर फेरकर मोटरकी तरफ टकटकी लगाअी। हमने अुसे अच्छी तरह देखनेके बाद मोटरकी रोशनी बन्द कर दी। काफी समय तक अच्छे चन्द्रप्रकाशमें हम अेक-दूसरेके दर्शन करते रहे। अुनका विचार हम पर हमला करनेका नही था। परन्तु हम हमला नही करेंगे, अिसका क्या भरोसा? अिसलिअे अुसने थोडी देर हमारी बाट देखी। अुसे विश्वास हो गया कि हम कुछ भी नही कर रहे है, तो वह रास्तेके बाअी ओरके जगलमें विलीन हो गया। रास्तेके दाअी तरफ अूचा पहाड था। बाअी तरफ अुतार था। दिनका वक्त होता तो यह देखनेको हम ठहरते कि वह कहा गया। हम आगे चले। अेक स्थानसे ङ्गोरोगोरोके मुखके भीतरका भाग कुछ कुछ दिखाअी देता था। तालाब जैसा था। वहा चादनीका प्रकाश स्पष्ट हो रहा था। अूपर पहुचे तब आसपास कुछ भी दिखाअी नही दे सकता था। अूपर सरकारकी तरफसे यात्रियोके लिअे बनाया हुआ दस-बीस झोपडोका कैम्प था।

अुसमें हमारे रहनेकी सुविधा की गअी थी। अेक व्यापारी अपने यहा से ३०-४० कम्बल ले आये थे। पीनेका पानी तो ढेर सारा था। अेक बडी झोपडीमें खानेकी तैयारी की गअी थी। अुसकी दीवार पर महिषोके सिरकी हड्डिया और सींग टगे हुअे थे। हम लोगोने अेक अेक झोपडी पसन्द कर ली और अपने बिस्तर आप बिछा लिये। सवेरे अुठते ही ४० मील चौडा और कोअी १०० चौरस मीलके क्षेत्रफलवाला ज्वालामुखी दिखाअी देगा तब कैसा लगेगा, अिसका विचार

करते करते हम सो गये। मनियाराके आसपास हमने असख्य हिरण, शुतुर्मुर्ग, चित्राश्व (जिब्रा), जिराफ और वुद्दू वगैरा जानवर देखे थे। अव सवेरे क्या क्या दिखाअी देगा, अिसकी कल्पना कर रहे थे। अितनी अूचाअी पर ठढ तो होती ही है। हम खूव सोकर अुठे, प्रार्थना की और वाहर निकले। जहा देखो वही कोहरेका क्षीरसागर था! कोहरा कपाल, आखो और कानोको गुदगुदाता और आगे चलने लगे तो दो तीन हाथ हट जाता और पीछेकी तरफसे नजदीक आ जाता। आसपास घूमने पर वडे-वडे पेड कोहरेमे भूत जैसे लगते और पास जाने पर अुनकी छाल पर जमी हुअी और नीचे लटकती हुअी काअीके कारण वे रीछ जैसे लगते थे। अुन पेडोके नीचे हमारी 'लाग केविन' वडी सुन्दर लगती थी। यह स्थान ८५०० फुट अूचा है, अिसलिअे ठड और कोहरा दोनो लम्वे समय तक रहते है। हमें दोपहर तक अरूशा होकर मोशी जाना था, अिसलिअे कोहरा मिट जानेकी प्रतीक्षा नही की जा सकती थी। हम तुरन्त रवाना हो गये। हमारी पार्टीमे से श्री कमलनयन और कुछ और आदमी पीछे रह गये। १० वजे वाद वे सारा ज्वालामुख और अुसके भीतरके कुछ जानवर देख पाये।

अफ्रीकाकी भूमिका अितिहास ज्वालामुखियोका अितिहास कहा जा सकता है। अूपर अेक जगह कहा गया है कि लाखो वर्ष पहले पूर्व अफ्रीकाकी भूमिमें ३०-४० मील चौडी और ३००-४०० मील लम्वी और हजारो फुट गहरी दो दरारें पडी थी। वे कैसे पडी, कव पडी, अुस समय अुनका रूप क्या था, यह हम आज नही जान सकते। अितना ही जानते है कि ये दरारें पडनेके वाद वीचमे ज्वालामुखी सुलगे। अुन्होने दरारका कुछ भाग भर दिया। परिणामस्वरूप कुछ सरोवर तैयार हुअे और नदिया वहने लगी। यह सव कुछ अेक ही समय अेक साथ हुआ हो, सो वात भी नही। जो फेरवदल होनेवाले थे, वे स्थायी हुअे हो सो भी नही। १९३८ और १९४८ तक कुछ

ज्वालामुखियोने सिर अूचा किया यानी मुह खोला और अुनमें से अग्निरस वहने दिया।

झोरोगोरोका ज्वालामुख कव वना, यह हम नही जानते। परन्तु जव अितना वडा ज्वालामुख अग्निरससे खदवदा रहा हो, तव अुसके सिर पर कोअी १०० मील तक पक्षी भी अुडनेकी हिम्मत नही करते होगे। आज यह सव शात हो गया है। अिस ज्वालामुखका पेंदा सीधे मैदान जैसा हो गया है। अुसमें पानी जमा होता है और जगल अुग आये है। ये पेड यहा किसने वोये होगे? जगलके पेडोंके वीज खा-पचाकर अनेक छोटे वडे पक्षी यहा आये होगे। विष्टामें से ये वीज वोये गये और अुनके वडे जगल हो गये। कुछ जानवर यहा आहार ढूढते हुअे आये होगे। अितनी अूचाअी पर वे कैसे चढे और यहा अुन्होने स्थायी निवास कैसे किया, अिसका अितिहास अुन जानवरोंके वशज कहासे जानें? और जानें तो भी हम अुनसे यह अितिहास कैसे प्राप्त कर सकते है? नगै रक्षित अिति नगरम्, यह नगरकी व्याख्या सच हो, तो अफ्रीकाके श्वापदोका यह अरण्यनगर है। किसी समयके ज्वालामुखीके सिर पर ठड और कोहरेका अनुभव करते हुअे हम अेक रात विता सके, यह वात भी हमें वहुत सतोष दे सकी। अुसी रातको अमरीका — ओटावासे आया हुआ चि० सतीशका अेक प्रेमपूर्ण पत्र मुझे अुस स्थान पर मिला, अुसका भी मन पर वडा असर पडा। कहा हिन्दुस्तान, कहा केनाडाकी राजधानी ओटावा और कहा यह शिकारी जानवरोका अरण्यनगर! परन्तु लेखनकला और पत्रव्यवहारके आधुनिक साधनोंके कारण अैसी स्थितिमें भी हम अेक दूसरेके साथ हार्दिक सम्पर्क साध सके।

१८

दो पर्वतराज

ङोरोगोरोसे अरुशा और वहासे मोशीकी दौड लगाकर हमें तीसरे पहर तक व्याख्यानके लिअे पहुचना था। अिसलिअे सुवह जल्दी नाश्ता करके ङोरोगोरो छोडा। पहाड परसे जरा नीचे अुतरे कि कोहरेके बादल अूपर रह गये। अब नीचे ओल्डियानीकी तरफका सुन्दर दृश्य नजरके सामने फैल गया। धूप और बादलोकी धूपछाहके कारण सारी जमीन स्वर्णभूमि जैसी लग रही थी। कराटू तक वापस आये और फिर जिराफ, शुतुर्मुर्ग और तरह तरहके हिरण बहुत नजदीकसे देखनेमें आये। अेक हिरण हमारे नजदीक पहुचने तक निर्भय होकर हमें देखता हुआ ही बैठा रहा। परन्तु अन्तिम क्षणमें अुसने विचार बदल दिया और अैसी छलाग मारी मानो हवाअी गोला हो! यहा हमने पहली बार जिराफको दौडते देखा। सुबह ही मैंने कहा था कि सिर पर दूरबीन जैसे सीग लेकर खडे हुअे जिराफ हमने बहुत देख लिये। यह प्राणी दौडता होगा तब कैसा दिखाअी देता होगा? और कुछ ही घटोमे जिराफ पानीकी लहरोकी तरह दौडता हुआ हमारे देखनेमें आया। अुसकी सुडौल गति देखकर अैसा ही लगता है कि जान बचानेके लिअे भी यह कलावान प्राणी बेढगेपनसे दौडनेको तैयार नही होता!

कराटूमें अेक गुजराती भाअीने बडे प्रेमसे हमे केसरिया दूध पिलाया। जाते समय हम अुनके यहा नही ठहरे, अिस पर हमे अुलहना दिया और पक्के केलोकी अेक फली और तरह-तरहके फल हमारी मोटरमे लाद ही दिये! अिन लोगोका कैसा निष्काम प्रेम था? हमने अुनके लिये क्या किया था। क्या कर सकते थे? अुनके या हमारे जीवनमे दुबारा मिलनेकी सभावना भी कम थी। फिर भी घरके

आदमियोकी तरह ये लोग हमारे साथ व्यवहार करते रहे। अपनी होशियारी या बहादुरीके बखान करना भी अुन्हें नही सूझता। सारे पूर्व अफ्रीकामें हमें जहा तहा अैसे ही गुजराती भाअी मिले हैं और हर जगह हमने अिसी प्रेमकी बाढका अनुभव किया है।

हम अगारक पर्वत तक सीधे अुत्तरमें गये। मोडुली गावको बाअी ओर रखकर हमने पूर्वकी ओरका रास्ता लिया। थोडे ही समयमें हमें अफ्रीकानिवासी मेरु पर्वतके दर्शन हुअे। अुसका शिखर बादलोंमें ढका हुआ था और अुसका विस्तार पौन सौ मील तक फैला हुआ था! फिर आया अरुशा शहर। बडा ही सुन्दर। युरोपियन लोगोने अिसे नदनवन बना दिया है। हमें यहा तक लानेवाले श्री त्रिलोकीनाथ बोरा यहीं अुतर गये और हम अिन्हींकी मोटर लेकर आगे मोशी गये। रास्तेमें दोनो ओर अग्रेजोके अनेक शाम्बाओ (अस्टेट्स) की शोभा हम देख सके। बीचमें हमने अुपा नदी पार की। कितने ही मीलो तक फैले हुअे घासके बीहड देखे। टागासे अरुशा तक आनेवाली रेलवेको हमने तीन बार पार किया। पहली बार हमने यहा तारके खम्भे देखे। और अन्तमें —

जिसकी धुन बहुत दिनोंसे लगी हुअी थी, वह किलिमाजारो पर्वत नजदीकसे दिखाअी दिया। पहले तो बादलोमें धनुपकी रेखाकी तरह अेक सफेद सुरेख किनारी दिखाअी दी। मनको यह विश्वास हो जानेके बाद कि यह बादल नही परन्तु पहाडकी चोटी है, हमने देखा तो किलिमाजारो अपने सिर परका बादलोका पटल धीरे धीरे हटा रहा है। कैसा वह गभीर और भव्य दर्शन था! मानो कर्पूरगौर महादेव बुद्ध भगवानका अवतार लेनेके लिअे अपनी जटा अुतार कर यहा ध्यानस्थ बैठे हो! आज किलिमाजारोके सिर पर हमेशासे ज्यादा बर्फ थी। अिसलिअे अुसके नीचे अुतरते हुअे रेले खूब दूर तक पहुचे हुअे दीखते थे। शिखरकी रचना अितनी सुन्दर मालूम होती थी कि यह जानते हुअे भी कि अुसके सिर पर ज्वालामुखीका

द्रोण (मुह)है, यहासे वह सच्चा प्रतीत नही होता था। हृदयके अुद्गार निकाल डालनेकी पुरानी आदत रही होती, तो मैंने जरूर कहा होता "अद्य मे सफलम् जन्म, यात्रा च सफला अियम्।"

हमारी मोटर हमे सपाटेसे मोशी और अुसके वैभवशाली पहाड किलिमाजारोकी तरफ ले जा रही थी। रास्ता टेढामेढा होनेके कारण दर्शनकी खूबिया क्षण क्षण बदल रही थी। बादमे मैंने जाना कि मोशीका अर्थ धुआ है। किलिमाका अर्थ पहाड और अन्जारोका अर्थ अूचा या चमकता हुआ। दोनो अर्थ अिस पहाडके लिअे जचते हुअे थे। किलिमाजारोका विस्तार भी बहुत चौडा है। अूपर चढनेका रास्ता अुसके पीछेकी तरफ है। दूसरे दिन हम अुस रास्तेसे अेक अफ्रीकी मुखियाका घर देखने गये।

मोशीमें हम बहुत ही थोडे समय रह सके। परन्तु अुस समयका अुपयोग अच्छा हुआ। श्री सदरुद्दीन — माननीय वलीमुहम्मद नजर-अलीके लडके — के यहा हमारा डेरा था। श्रीमती सदरुद्दीन बडी चतुर महिला थी। अुनके यहा खा-पीकर ताजा होकर हम सभामे गये। अितनेमें श्री कमलनयनकी मडली भी आ पहुची। प्लाजा थियेटरमें काफी भीड लगी हुअी थी। बहनोकी सख्या भी अच्छी थी। यहां पहली बार मैंने अपनी राय जाहिर की कि हिन्दुस्तानके स्वतत्र होनेके बाद अेशियाकी अनेकवशी जनता हमारी तरफ प्रेम और अुमगभरी नजरोसे देखने लगी है। अिसलिअे अब हमे अेशियाके प्रतिनिधि बनकर अेशियन नाम धारण करना ही पडेगा। अिस सभाके बाद तुरन्त किलिमाजारोकी बिलकुल सीढियो पर अेशियन अेसोसियेशनकी चायपार्टी थी। यहा अप्पासाहबका बडा प्रभावशाली भाषण हुआ। अिस प्रदेशमें रहनेवाले चाग्गा अथवा वाचाग्गा लोगोकी अेक सस्था है। अिन लोगोको शिक्षा देकर अुन्हे आगे लानेवाले मि० बेनेटके साथ मुलाकात हुअी। अेक आदमी सोच ले तो अफ्रीकी लोगोके लिअे कितना कर सकता है, अिसका वे अुत्तम नमूना थे।

यहाकी पार्टीमें अेक महाराष्ट्री डॉक्टर, दो गोअन, अनेक सिक्ख भाअी और गुजराती हिन्दू थे। अिस्माअिली भाअी तो वडी तादादमें जमा हुअे थे। रातको यहाके हिन्दू भाअियोके साथ खास वार्तालाप रखा गया था, जो ९ से ११ वजे तक चला। अैसे वार्तालाप हमारी यात्राका सर्वोत्तम भाग माने जायगे। अिनमें हम कुछ भी सकोच रखे विना हिन्दू मुसलमानोके सम्वन्धके वारेमें आजादीके साथ वोल सकते थे, लोगोकी भावनाअें और अुनकी मुश्किलें जान सकते थे और अनेक भूमिकाअें वनाकर हम अपना दृष्टिविन्दु अुन्हे समझा सकते थे। मोशीमे वहाके डिप्टी कमिश्नर मि० जॉन्स्टन मिले। आदमी स्वभावसे वडा सज्जन और विचारोका अुदार था। कोअी घटे भर वैठकर अुन्होने वहुतसी वातें की। और अुनसे वहुत कुछ जाननेको भी मिला।

दूसरे दिन हम चाग्गा लोगोके वेलफेयर सेटरकी अेक वाडी देखने मरागू गये। अुस वाडीके पास चाग्गा लोगोके अेक नेता — मुखिया पेट्रोका सुन्दर निवासस्थान है। अुनके मेहमान वनकर हमने देख लिया कि अफ्रीकी परिवार कैसे रहते है। अुनके नये मकानके पीछेवाली वडी गोल झोपडी हम भीतरसे देख आये। विलकुल अधेरेमें अिन्सान और हैवान साथ-साथ कैसे रहते है, यह देखकर हिमालयके पहाडी लोगोकी याद आ गअी। परन्तु वहा अितना अधेरा नही था। अफ्रीकी लोग गायका दूध भी पीते है और अुसका खून भी पीते है। गाय या वछडेको खभेसे वाधकर अेक वाणसे अुसके गलेकी नस कैसे काटते है और आवश्यक लहू निकाल लेनेके वाद घाव कैसे वन्द किया जाता है, अिसके वारेमें हमने विस्तृत वाते सुनी। प्रत्यक्ष प्रयोग देखनेकी मेरी हिम्मत नही हुअी, अिसलिअे मैं वहासे खिसक गया। हमारे दलके लोगोने क्या क्या देखा, सो मैंने पूछा भी नही। श्री पेट्रोके साथ वर्धाके ग्रामअुद्योगो और नअी तालीमके वारेमें वाते की। हाथकी कताअी और वुनाअीकी खादी और हाथके वने हुअे कागजके नमूने वगैरा देखकर अुन्हें महसूस होने लगा कि हम भी अैसा ही

क्यों न करें? वादमें मैंने अुन्हें वडे विस्तारसे समझाया कि शहदकी मक्खीका पालन कैसे किया जाता है और अुनका नाश किये विना शहद कैसे निकाला जाता है। और अुन लोगोंने भी खूब ही दिलचस्पीके साथ यह सब सुन लिया।

मुखिया पेट्रोकी वाडीके मकअीके गरम-गरम भुट्टे हमने चखे। अुसके दाने अितने वडे और मीठे थे कि यहाके वीज हिन्दुस्तानमें ले जानेकी जीमें आ गअी। मकअीका आटा अफ्रीकी लोगोंका मुख्य भोजन है। अिसके साथ वे अेक प्रकारके वेमिठास केले पकाकर खाते है। और अेक प्रकारके शकरकन्द भी सेंक कर खाते है। अिन शकरकदोका स्वाद भी हमारे शकरकद जितना मीठा नही होता। अफ्रीकाकी मकअीका स्वाद हमने कअी जगह लिया है, परन्तु स्वादमें यहाकी मकअीकी वरावरी कोअी नही कर सकती।

लौट कर हमने खाना खाया और अरुशाके लिअे रवाना हो गये। रास्तेमें फिर किलिमाजारोके भव्य दर्शन हुअे। अगले दिनके दर्शनोके कारण आजका दर्शन वासी भी नही लगा और अुसका नशा भी कम नही हुआ। परन्तु परिचयकी आत्मीयता अवश्य अुमड आअी। सारा रास्ता पहचाना हुआ था, अिसलिअे हम आसानीसे पौने चार वजे अरुशा पहुच गये। वहा हमारे मेजवान श्री नरसीभाअी मथुरादास थे। श्री नरसीदासभाअी श्री नानजी कालीदास महेताके भतीजे होते है। अुनका घर अरुशाभरमें तमाम सुख-सुविधाओसे भरा हुआ सबसे अद्यतन (अप-टु-डेट) माना जाता है। अरुशामे अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे चायपार्टी हुअी। अिसमें वहाके प्रातीय कमिश्नर और अुनकी पत्नी आअी थी। सारी पार्टीमें जो युरोपियन थे, अुनमें ग्रीक और डेन लोग भी थे। अेशियन लोगोमे हमारे हिन्दुस्तानी लोगो — गोअनो सहित — के अुपरात अरव वगैरा थे और अफ्रीकी लोगोमें स्थानीय अेविसीनियन और सोमाली भी थे। लोग चाय और खाद्य पदार्थोंके साथ न्याय करनेमें मशगूल थे, जव कि मेरा सारा ध्यान मेरुकी

प्रचड मूर्तिकी तरफ था। अिन दिनो मेरुके सिर पर बर्फका मुकुट नही होता, परन्तु मुकुटके विना भी वह आसपासके प्रदेशके राजाकी तरह ही सुशोभित था। किलिमाजारो और मेरु जबसे अूपर निकल आये है, तबसे अफ्रीकाके शिकारी जानवर और मनुष्य, नदिया और सरोवर—सबके सुदीर्घ अितिहासके वे साक्षी है। प्राचीन कालके कितने ही अफ्रीकी नेताओने अिन दो पहाडोकी शपथ खाकर अपनी मित्रता दृढ की होगी या शत्रुसे वैर लेनेकी प्रतिज्ञा पर मुहर लगाअी होगी। ये दो पहाड कोअी सकल्प नही करते। पक्षपात नही करते। अपने सिर पर जितनी वर्षा हो, अुसके छोटे वडे झरने बनाकर अुसा (usa), पगानी (pangani), त्सावो (tsavo), जो कोअी नदी अुनमे लाभ अुठाना चाहे अुसे जीवन अर्पण करते रहते है।

सार्वजनिक सभामें अनेक पजावी और गुजराती वहनें वगैरा मिश्रित श्रोता थे। हिंसा अहिंसाका प्रश्न तो छेडा ही था।

रातके भोजनमें वडे-वडे दो सौ लोग मौजूद थे। अग्रेजोकी सख्या यहा सबसे ज्यादा थी, Non-violence in peace and war (युद्धकाल और शान्तिकाल दोनोमें अहिंसाकी नीति) के वारेमें मै थोडासा बोला। वहुतसे विदेशियोने अिस चर्चामे भाग लिया। अुसमें अपने कर्तव्यका गहरा विचार करनेवाला अेक गोरा पुलिस अफसर था। अुसने विशेप वातें करनेके लिअे दूसरे दिन मिलनेकी अिच्छा प्रगट की। सवेरे अपराधो और अुनके लिअे दी जानेवाली सजाओकी काफी तात्त्विक चर्चा हुअी। अैसा जान पडा कि यह आदमी अपने कर्तव्यके वारेमें गहराअीमें जाकर विचार करता है। हमारे लोगोकी आर्थिक नीतिमत्ता यानी अीमानदारीके वारेमें अुसका अूचा खयाल नही था। केवल नरसीभाअीके वारेमें अुसने आदरके वचन कहे थे। मुझे वे केवल शिष्टाचारके शब्द नही लगे।

सुवहकी चर्चाके वाद हम अेक अैसा तालाव देखने मोशीके रास्ते रवाना हुअे, जो अरुशाके गलेका मोती जैसा लगता है। डेल्टी

(Deluti) सरोवरका श्रेय भी ज्वालामुखीको है। अुसका आकार देखते ही यह मालूम हो जाता था। अिस तालावके किनारे श्रीमती रॉयडन नामकी अेक अग्रेज महिलाने सुन्दर मकान और अुससे भी सुन्दर वगीचा वनाया है। महिला अितनी होशियार है कि पिछले युद्धके दिनोमें अपनी और दूसरे गोरोकी १४ अेस्टेटें वही सभालती थी। और अिस महिलाकी जिज्ञासा अितनी प्रखर कि मिश्रके पिरेमिडो और अुनके सवधकी गूढ विद्याके वारेमें भी वह जानती थी। दीवानखानेमें अुसने जो चित्र रखे थे, वे भी अ्ची अभिरुचि व्यक्त कर रहे थे।

१९

ब्रह्मक्षत्री साहस

अव तो नमगा होकर आम्वोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमे अेक रात विता कर नैरोवी जाना वाकी था। परन्तु रास्तेमें अेक होशियार भारतीय युवक रजनीकान्त ठाकोरकी खेतीवाडी देखनी थी। वह यहा आल्डोनिअू शाम्वाके नामसे पुकारी जाती है। वहा जाते हुअे रास्तेमे ही जो पहाडिया दिखाअी दी, वे हरी, चिकनी और मनोहर थी। खेतीवाडीमें अच्छे अच्छे जानवरोका पालन हम देख सके। गायें, साड और अन्य पशु यहा खास शास्त्रीय ढगसे रखे जाते है। गायका दूध अिकट्ठा करके अुसमें से मक्खनके सिवाय पनीर (चीज) वनाया जाता है। दूधमें से पनीर कैसे वनाया जाता है, अिसकी सारी क्रियायें हमने यहा देखी। रजनीकान्तके पिता श्री सत्येन्द्र त्र्यवक ठाकोर यहा वेटेसे मिलने आये थे। अुनसे अिस तरफका वहुतसा अितिहास जाननको मिला।

हमारे लोग ज्यादातर देहात या शहरोंमें दुकान खोलकर देशी-विदेशी माल बेचनेका ही काम करते है। हाल ही में अुन्होंने मायसल, वॉटल या शकरके कारखाने शुरू किये है। परन्तु खेतीवाडीका काम करनेवाले लोग नही के बराबर ही हैं। अिसलिअे मोरोगोरोकी तरफके मगोलिया पटेल और आल्डोनेअूके ठाकोर दोनो अुज्ज्वल अपवादके रूपमें नजरके सामने आते है।

गुजराती ब्रह्मक्षत्रिय जातिकी होशियारीका मैंने बखान किया, तो सत्येन्द्रभाअी कहने लगे "परन्तु हमारे लोग घरघुस्सू है, यह आप क्यो भूल जाते है? अितने गुजराती यहा आये है, अुनमें ब्रह्मक्षत्रियोकी सख्या कितनी है? हमारे लोग अभिमान ही अभिमानमें रह गये।" हमारे लोगोने अभी तक काफी होशियारी नही दिखाअी, अैसी आलोचना करके ही अपने लोगोके प्रति अपनी आत्मीयता अनुभव करनेवाले कुछ लोग होते है। मेरी गणना भी अिसी कोटिमें होती है, अिसलिअे मैं सत्येन्द्रभाअीकी अपने लोगोकी आलोचनाका रहस्य अच्छी तरह समझ सका।

२०

अभयारण्यमें प्रवेश

हम नमगा पहुचे। यहासे आवोसेली जानेका रास्ता फटता है। नमगामें मराठी बोलनेवाले दो होशियार कोकणी मुसलमान भाअी रहते है। अिनमें से मोहम्मद अुमर साहबके साथ मेरी बहुत बातें हुअी। अुनके पिताने और अुन्होने अग्रेजोको कैसा छकाया, अपने लोगोका होनेवाला अपमान टालनेके लिअे अुन्होने यहा कैसे देशी होटल खोला वगैरा बाते अुन्होने कही। जगलके जानवरोके पीछे भटकनेकी धुनमें अगर किसीको दूसरा नबर लेना पडे, तो वह मोहम्मद अुमर साहब नही। मोहम्मद साहबने आसपासके आदिवासी मशाअी लोगोकी अितनी ज्यादा

सेवा की है कि ये लोग हरअेक काममें अुनकी सलाह लेते हैं और अुन पर पूरी तरह विश्वास रखते हैं। होटल खोलनेके लिअे जब अुन्हे जमीन चाहिये थी, तब अग्रेज लोग अुन्हे जमीन मिलने नही देते थे। यह मुश्किल मालूम होते ही मशाअी लोगोने अपनी जमीनमें से अच्छा टुकडा निकाल कर दे दिया। सरकारी अफसरोने मशाअी लोगोसे धमका कर पूछा कि, "हिन्दुस्तानी आदमीके प्रति अितना पक्षपात क्यो करते हो?" मशाअी लोगोके नेताओने अुडता हुआ जवाब देनेके बजाय सीधा ही कह दिया कि, "मोहम्मद साहब हमारे पुराने दोस्त हैं, हमारे हितैषी हैं। अुनके प्रति कितना ही पक्षपात करनेमें हमे खुशी ही होती है।"

कअी तरफसे नदियोका प्रवाह आकर जैसे समुद्रमे मिलता है, वही नमगामे हमारे काफलेका हुआ। डोडोमासे चले तब श्री अप्पासाहब, श्री अिनामदार, सकुटुब कमलनयन, सरोज और मै और शरद पडचा अितने हम थे। अरुशासे श्री नरसीभाअी और अुनके भाअी हमारे साथ हो गये। ङ्गोरोगोरोसे श्री जशभाअी देसाअी, अुनके लडके निरजन और श्री शहाणेके लडके अजित हमारे साथ शरीक हो गये। आल्डोनिअूसे श्री रजनीकान्त और मिल गये। 'सर्व अेव महारथा !' अलबत्ता यह रथ तैलवाहन था। अब नमगामें नैरोबीसे आये हुअे डॉक्टर और श्रीमती नाथू, सौ० नलिनीबहन पतकी सहेली श्रीमती लीला फाटक और चि० सरोजके बचपनके मित्र और सहपाठी श्री जाल कण्ट्राक्टर — ये सब आ पहुचे। सारा काफला अुमगके साथ आबोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमे प्रवेश करने लगा। मोटरे, लारिया और ट्रको जैसे महारथ और अुनमे बैठे हुअे हम महारथियोके अस्त्रशस्त्र देखने लायक थे। बन्दूक और पिस्तोलके बजाय हमारे पास टॉर्च और दूरबीन थी। हम जानवरोको मारनेके लिअे नही, परेशान करनेके लिअे नही, परन्तु देखनेके लिअे निकले थे। जो कोअी अिस अभयारण्यमें प्रवेश करता है, अुसे सकल्प कर ही लेना पडता है कि

'अभय सर्व भूतेभ्य , शम् नो अस्तु द्विपदे, शम् चतुष्पदे। झाड और झंखारमें से हम पूर्व दिशामें चले। रास्तेमें थूहरके विशाल वृक्ष हमारा स्वागत कर रहे थे। और कुछ काटेदार पेड पक्षियोंको अभयदान दे रहे थे।

सो किस तरह? साप और दूसरे प्राणी वृक्षो पर चढकर पक्षियोंके घोसलोंमें से अडो और बच्चोको खा जाते थे। अिसके विरुद्ध अुपायके तौर पर पक्षी अपने घोंसले हमेशा पेडके सिरे पर, पतली पतली डालियोंके साथ, चीनी लालटेनकी तरह, लटका देते है। अैसी डालियोंके नीचे अगर तालावका पानी हो, तो ज्यादा अच्छा और डालिया अगर काटेवाली हो तो वह और भी अधिक रक्षण है। अिस प्रकार शत्रुसे हरअेक प्रकारकी रक्षा करनेवाले ये पेड तमाम पक्षी जातिका आशीर्वाद लेते है।

कोअी ३० मीलका जगल पार करनेके वाद हमने दक्षिणका मार्ग लिया। वहासे सूखे हुअे आम्बोसेली सरोवरका रेगिस्तान शुरू होता था। जहा देखो वहा रेत, रेत और रेत! और सामनेकी तरफ अपने पवित्र दर्शनोका लाभ देनेके लिअे किलिमाजारो खडे ही थे।

सारा रेगिस्तान पार करके हमने अभयारण्यमें प्रवेश किया। वहा हिंस्र पशुओने हमें अभयदान नही दिया था, परन्तु हमारे जैसे मनुष्योकी सरकारने वहाके तमाम पशु-पक्षियोंको अभयदान दिया था। लम्बे समयकी सुरक्षितताके कारण यहाके पशु भी मनुष्यके प्रति बडे सौम्य हो गये हैं। और अिसलिअे हम भी निर्भय हो गये थे। अिस प्रकार सब तरहसे अभयारण्य माने जानेवाले अिस प्रदेशमें हमने अुत्सुक नेत्रोंसे प्रवेश किया। अेक वात स्पष्ट करनी चाहिये। यहाके तमाम पशु-पक्षियो और वृक्ष-वनस्पतियोको सिर्फ अिन्सानकी तरफसे ही अभय दान है। वे आपसमें अहिंसक होनेके लिअे वधे हुअे नही है। और वधे हो तो खायं क्या? और हाथीको अगर सूडसे या सिरके धक्केसे

पेड गिरानेकी लीला न मिले, तो वेचारेके लिअे सारा जीवन वेस्वाद और भारस्वरूप वन जाय।

पूर्व जन्ममें हमने क्या पुण्य किये होगे कि अनजान मुल्कमें अैसे जगलमे हम किसी धर्मात्मा सम्राटकी तरह भयानकसे भयानक पशुओका अहिंसक शिकार कर सके। जशभाअीने कहा, "हम जल्दीसे सामनेकी पहाडी पर जाते है, आप हमारे पीछे पीछे जल्दी आअिये। शामके वक्त अकसर वहा हाथी अिकट्ठे होते है। पहाडी परसे अच्छी तरह दिखाअी देंगे।" जगलका अिलाका। यहा किसीने कोअी रास्ते नही वनाये है। जैसे सूझे और जैसे जचे वैसी मोटरे चलाना। मेरे मनमें क्षण क्षण पर विचार आता था कि सयोगवश मोटरें यहा अटक जाय तो हमारा क्या हाल हो? कोअी पशु क्रुद्ध होकर हमला कर दे और अुसी समय मोटर फेल हो जाय, तो मनुष्य क्या कर सकता है?

जव तक मृगयाका रग नही जमा था, तभी तक अैसे विचार मनमे आ पाये। अेक बार अुत्साहकी भट्टी गर्म हुअी कि हम वहाके वातावरणके साथ अेकरूप हो गये। जितना हमारा विश्वास अपने पैरो पर था, अुतना ही मोटरो और लारियो पर जम गया। फिर तो खड्डे क्या और टीले क्या, झखार क्या और पत्थर क्या — हमारे लोगोने मोटरे चला ही दी। और मोटरे भी अितनी अुमगमें आ गअी थी कि जिधर मोडिये अुधर मुडती थी। मनुष्योको भी चढना कठिन प्रतीत हो, अैसे स्थान तक पहाडी पर हमारी मोटरें चढ गअी। चार चार छ छ आखोसे हमने चारो किनारे देखे, परन्तु अेक भी जानवर दिखाअी नही दिया। मानो अुन्होने हमारे विरुद्ध षड्यन्त्र ही कर लिया हो। हम निराश हो गये। कमी पूरी करनेके लिअे सध्याकाल मनानेके खातिर पहाडी पर आया हुआ अेक पक्षी हमें हसने लगा। अितना गुस्सा आया अुस पर! परन्तु करते क्या? गुस्सेको जेवमे रखकर अुतरे। खूब ही भटके। हाथीकी लीद कही भी दिखाअी दे, तो यह देखकर कि वह ताजी है या सूखी हुअी, हम साश या निराश हो जाते।

अब तो अंधेरा भी हो गया। मोटरोंके दीयोंने अपनी आंखें खोली, अितनेमें दूर भैंसके जैसी कोअी चीज दिखाअी दी। नजदीक जाने पर निश्चय हो गया कि नाक पर सींगका भार अुठाने-वाला अेक जबरदस्त गैंडा है। क्षण भरमें अुसके पास ही हमने अेक बच्चा देखा। विश्वास हो गया कि गैंडी है। अपने बच्चेको सभालती सभालती घूम रही है। हम घडी घडीमें दूरबीन चढाकर देखते, फिर नीचे रख देते। मैंने देखा कि गैंडी लगडाती है। किसी अैसे ही दूसरे जबरदस्त प्राणीके साथ झगडा हुआ होगा। हमने विचार किया कि सवेरे अगर अुसके खूनकी बूंदें दिखाअी दें, तो अिसका स्थान ढूंढ निकालेंगे।

दूसरी पार्टीमें कमलनयन वगैरा थे। अुन्हे तीन सिंह दिखाअी दिये। हम अुस तरफ पहुचे तो ये तीनो सिंह अैसे खिसक गये कि अुनमें से अेक ही की पीठ जरा दिखाअी दी। सिंहकी जाव या अुसकी दुम पहचाननेमें देर नही लगती। कहने लगे कि अिस ओर तीन तीन नही परन्तु कोअी १५ सिंह घूम रहे थे। खैर, हम जरा अूबकर अपने डेरेकी तरफ मुडे। अिस अरण्यमें कुछ सरकारी झोपडे है। अुनमें और लोग रहे थे या नही सो पता नही। परन्तु हमारा डेरा दूसरी जगह स्वतंत्र था। अुसका स्थान खोज निकालनेमें देर लगी। डेरेमें जाते ही अुसका बादशाही ठाठ देखकर मै तो हक्का-बक्का ही रह गया। आश्रमवासी यात्री हू या कोअी अरण्य-रसिक शाहजादा हू? छोटे छोटे कअी तम्बू — अुनके आगे बरामदे जैसे शामियाने, कुरसी, मेज, गद्दे, लालटेनें, खानेपीनेकी हर किस्मकी चीजें — सोडा, लेमनेड, कोको-कोला, फल, मेवे अित्यादि — अेक भी वस्तुकी कमी नही थी। जगलमें पीने लायक स्वच्छ पानीकी सुविधा शायद ही मिलती है। राजा दुष्यन्तके साथ शिकारमें जानेवाला अुसका दोस्त माढव्य भी शिकायत करता था कि शिकारमें जाने पर जगलके पत्ते सडनेसे कडवा जहर हो गया पानी पीना पडता है और रथमें बैठकर श्वापदोंके पीछे दौडनेमें शरीरकी

तमाम हड्डिया ढीली हो जाती है। यहा लोहेके अेक वडे पीपेमें पीने लायक पानी भरा था। वही हमारा हौज और वही हमारी टकी था। पीपा जरा जमीन पर अुलट कर हमें लोटा दो लोटा जितना चाहिये पानी दे देता। कुछ पजाबी वहने खास तौर पर आकर हमारे लिअे पूरिया तल रही थी और तरह तरहके साग तैयार कर रही थी।

शिकारका व्यवसाय करनेवाले युरोपियन लोग अिधर बहुत है। अुनके वरावर ही या अुनसे ज्यादा होशियार हमारे अेक भाअीने भी यह व्यवताय हाथमें लिया है। अिनका नाम है श्री तरलोकसिह। अुन्होने और अुनके साथी श्री राणाने अप्पासाहवके प्रेमके कारण और स्वदेशसे महात्माजीके आदमी खास तौर पर आये है, अिस खयालसे हमारे लिअे अिस दूर दुर्गम जगलमे तमाम सुविधाअे जुटा दी थी। और स्वय आकर तमाम वातो पर देखरेख रखते थे। अितना ही नही, खुद सारा काम भी करते थे। वर्तन वगैरा धोनेके लिअे पानीकी सहूलियत देखकर ही केम्प खडा किया गया था। यही स्थान हाथियोका भी माना हुआ होनेके कारण शामको जब तम्बू तन रहे थे, तब कुछ हाथी यहा दर्शन देकर गये थे। परन्तु हमारे भाग्यमे अुस रातको अुनका दर्शन नही लिखा था।

जगलमे अितनी सुरक्षितता अवश्य होती है कि जहा धूनी जल रही हो या मनुष्योके हाथोमें मशाले हो, वहा जगली जानवर पास नही आते। परन्तु वीस पच्चीस कदम आगे जाने पर आप सुरक्षित नही है। कोअी जानवर ताकमे वैठा हो, तो पशुदेवोके लिअे भी दुर्लभ हमारा लहू अुसे चखनेको मिल जाय। अिसलिअे रातको अग्निके प्रकाश जितनी दुनिया ही सुरक्षित माननी चाहिये। परन्तु शौच जानेकी हाजत हो तब क्या किया जाय? हाथमे टॉर्च और लोटा लेकर अधेरेमें गये विना काम नही चल सकता। पशुओका डर और मनुष्यकी शर्म दोनोके वीच प्रसगानुसार अुचित हिसाव लगाकर मैंने अन्तर तय

कर लिया। विल्लीकी तरह मिट्टीमें खड्डा किया और अुसी मिट्टीको खड्डा भरनेके लिअे काममें ले लिया और आरामसे लौट आया। खा-पीकर तम्बूमें जाकर बैठे और प्रार्थना की। मनमें विचार आया कि हिन्दुस्तानसे चार हजार मील दूर, श्वापदाकीर्ण अिस जगलमें हिन्दुस्तानके लोग कितने आये होगे? और अुनमें भी गभीरतापूर्वक भगवानका स्मरण करके वैदिक मत्रोसे प्रार्थना करनेवाला क्या कोअी आया होगा? भारतके समस्त ऋषि-मुनियोका स्मरण करके मैंने भक्तिभावसे प्रार्थना शुरू की। श्री जाल कण्ट्राक्टर अुसमें प्रेमसे शरीक हो गये। और भी कअी लोग थे। प्रार्थना हुअी और हमने सोनेकी तैयारी की। अितनेमें पता चला कि श्री अप्पासाहब, कमलनयन और कुछ और लोग चुपचाप खिसक कर शिकारी जानवर देखने निकल गये है। हम झुझलाये। मैंने तुरन्त मोहम्मद साहबसे कहा, 'अगर लॉरी तैयार कर सके तो हम भी चलें।' हम गये। घोर अधकारमें — अनजान जगलमें — हम चले। मोटरोके आने जानेसे जो रास्ते पड जाते है, वे रातको अच्छी तरह दिखाअी नही देते। कही कही झूठा भ्रम भी हो जाता है कि रास्ता होगा। भटकते भटकते हमें अप्पासाहब वाली पार्टी लौटती हुअी दिखाअी दी। अुन्होने कहा कि, 'अेक गैंडेने हम पर हमला किया था। हम वहासे भागे परन्तु दिशा भूल गये। टकराते और कुटने-पिटते वापस आ रहे है।' हमारे जीमें आया कि हमें भी कुछ न कुछ अनुभव लेना चाहिये। हम भी पेट्रोल या लॉरी पर दया किये बगैर खूब भटके। श्वापद भले ही न मिले हो, परन्तु मोटरके प्रकाशमे झाड-झखारके तने देखने और पगपग पर जोखम अुठानेका मजा तो आया ही। अपवादके रूपमें अेक गैंडा चरता हुआ और अेक जरख हमसे डरकर भागता हुआ दिखाअी दिया। गैंडेके दीखते ही भाअी जालको काव्य सूझा और अुन्होने ललकारा "छुप छुप बैठे हो जरूर कोअी बात है, पहली मुलाकात है, पहली मुलाकात है!" अुस गैंडे पर अिस प्रेमकाव्यका कोअी असर हुआ हो, अैसा लगा

नही। गैंडे लोगोका प्रेम करनेका ढग कैसा होता है, यह हम कहा जानते है ?

हम अितने थक गये थे कि दूसरे दिनका सदुपयोग करनेका सकल्प न होता, तो सुबह आठ बजे तक अुठते ही नही।

नीद तो चार ही घटे मिली, परन्तु हम अितने गहरे सो लिये कि चार बजे ताजा होकर जगे और फिर प्रार्थना करके तैयार हो गये।

साढे पाच बजे निकल गये। दिन अुगा। परन्तु भाग्य जागनेके लक्षण नही दिखाअी दिये। खूब भटकते भटकते दूर अेक हाथी दिखाअी पडा। हमने तरसती आखोसे अुसे देख लिया। अितनेमे वह पासके अेक गावके खेतमे जाकर गायब हो गया। अफ्रीकाके हाथियोके कान बहुत ही बडे और चौडे होते है। हममे से दो जने मोटरसे अुतर कर हाथीके पीछे दूर तक चले गये थे। वक्त बचानेके लिअे हमने अुन्हे वापस बुलवा लिया। अुस हाथीके मुख पर अैसा भाव दिखाअी नही देता था कि हम सारे प्रदेशमें अकेले पडे है। "मुझे क्या ? सारा राज मेरा ही है", अैसी अनिरुद्ध चालसे गजराज घूम रहे थे। 'मुबारक हो आपको अपना राज्य' कहकर हम वहासे चल दिये। मोरनी और मुर्गीके बीचका रूप धारण करनेवाले गिनीफाअुल, कुछ बदर और चार पाच तरहके हिरण हमने देखे। अुन्हे देखनेमे मजा तो आया। परन्तु यह हमे कैसे महसूस होता कि अुनके दर्शनोसे हमारा दिन कृतार्थ हुआ ? हम तो तरस रहे थे सिंह, हाथी, गैंडे और महिष जैसे प्रचण्ड और भयानक प्राणी देखनेको। अतमे अेक दिशासे निराश होकर हम दूसरी तरफ गये। वहा हाथियोकी ताजा लीद देखकर हमारा अुत्साह बढा। वहा थोडी दूर पर दो हाथी घास अुखाडते मिट्टी अुडाते स्वच्छद खडे थे। अिन्सानको देखकर हाथी भडकता नही। लेकिन अगर अिन्सान आवाज करे या हवाके कारण अिन्सानकी गध अुसकी सूड तक पहुच जाय, तो हाथीको क्रोध आता है। अिसलिअे

हम मुल्लमखुल्ला परन्तु चुपचाप मोटरसे अुतरकर हाथीकी तरफ जाने लगे। हाथीने हमें देख लिया, परन्तु अपना वनविहार रोका नहीं। जब हम विशेष नजदीक गये, तब अुसे पसन्द नहीं आया। हमें धमकानेका भी अुसका अिरादा नहीं था। अुसने सिर फेर लिया और धीरे-धीरे वहांसे खिसक गया। तब हमने अुसे छोडकर दूसरे हाथीकी तरफ अपनी मोटर हांकी। फिर अुतरकर हम अुसके निकट गये। अुसने भी थोडे समय हमें सहन करके नया रास्ता ले लिया। यह समझकर कि दिन सफल हुआ, हम लौट रहे थे कि हमारे साथके अेक अफ्रीकीने अिशारा किया कि 'पास ही अेक सिम्बा (सिंह) है।' तुरन्त हमारा सारा ध्यान हमारी दोनों आंखोंकी पुतलियोंमें आकर बैठ गया। परन्तु हमें शेरको देखनेकी जितनी अुत्कंठा थी, अुतनी अुत्कंठा शेरको अिन्सानको देखनेकी नहीं थी। अिसलिअे वह हमारी मोटरके नजदीककी घास और झाडियोंमें से बाहर आकर दूसरे रास्तेसे भीतरकी तरफ लुप्त हो गया। अयाल नहीं थी अिसलिअे हम समझ गये कि सिंहनी है। सिंह ताकतवर जानवर भले ही हो, परन्तु क्रूर नहीं दिखाअी देता। अुसके मुंह पर सज्जनता छाअी होती है। अुसमें जरासी तुच्छता की छटा होती है, जो अिन्सानको देखकर यों ही बढ जाती है। सिंहनीने हमारी तरफ देखा और चली गअी। परन्तु अितने से हम पर यह असर पड गया कि हम लोग अुसकी नजरमें कुछ नहीं। सिंहको देखनेके आनन्दमें अपमान और तिरस्कारकी यह भावना मिला कर ही हमें लौटना पडा।

सारा सामान मोटरों और लॉरियोंमें भर लिया और पिछली रात और आजकी सुबह जिन भाअी-बहनोंने हमारी सेवामें बिताअी थी, अुनका आभार मानकर हम रवाना हुअे।

बहुत कुछ देखा। हमारी वनयात्रा सफल हुअी, यह भावना लेकर हम लौटे। अितनेमें अेक आदमीने आकर मानो हमारे कानमें कहा, 'जरा मुड कर बायें जायंगे तो वहां कितने ही हाथी हैं।' हमारी अुत्सुकता तुरत जग

अुठी और हम हाथियोकी तलाशमें निकल पडे। हमें अधिक भटकना भी नही पडा। अेक, दो, चार करते करते आठ हाथी हमने पेडकी डालिया तोडकर पेटके अर्पण करते देखे। हम अुतर कर हाथियोकी तरफ चलने लगे। अुनमें अेक हाथी छोटा था। अुसकी नजर हम पर सबसे पहले पडी। अुसने अपनी सूड हमारी तरफ अुठाओ और दोनो कान चौडे फैलाकर हमें सूचित किया कि, 'आप लोग कितने ही अच्छे हो, हमारे खयालसे अिष्ट नही हे।" हाथी सूड अूची करे और कान फैलाये, तो समझ लेना चाहिये कि वह नाराज हो गया है। हम जरा ठिठके और छोटा हाथी नरम नरम डालिया तोडकर खाने लगा। हमारी हिम्मत बढी तो आगे चले।

अगर हाथी हम पर हमला करते, तो हम सहीसलामत मोटर तक दौड सकते या नही, यह सन्देहास्पद है। और मोटर भी हाथीके आगे सुरक्षित नही है। मोटरका पहिया सूडमें पकडकर अुसे अुलट देनेमें हाथीको देर नही लगती। और दो हाथी मिलकर मोटरको मत्थेसे धक्का लगायें तो तुरन्त स्वीकार करना पडे कि मोटर लोहेकी नही परन्तु मोमकी बनी हुअी थी। फिर भी हम जिज्ञासासे कुछ न कुछ आगे बढे। आज तक अिस जिज्ञासाके कारण कम लोगोने प्राण नही गवाये। परन्तु जिज्ञासा कभी कभी जिजीविषासे भी अधिक प्रबल सिद्ध होती है। हमारा अविनय देखकर हाथी नाराज हुअे। परन्तु हम पर क्रुद्ध नही हुअे। सवेरे अुठ कर अिन दो पैरवालोको कौन छेडे, यह विचार करके अिन लोगोने अुस स्थानको छोडकर जाना तय किया। परन्तु व्यवस्था न रखें तो वे हाथी नही। तलवार निकाली हुअी हो, अिस तरहके दो दातोवाला अेक बडा हाथी सबसे पीछे रहा। अेक आगे चला। हथिनी और बच्चे बीचमें रहे और अिस प्रकार आठोका यह जुलूस अेकके बाद अेक वनमें चला गया। जल्दबाजी जरा भी नही पाअी जाती थी। मानो वे यह समझते हुअे चले कि वनदेवीकी सवारी गभीरताके साथ ही चलनी चाहिये। हमने वह जुलूस जी भर कर देखा। 'अुसके

चले जानेके बाद हम थोडे समय वहा खडे ही रहे, मानो देखा हुआ सारा दृश्य हमारे समक्ष विद्यमान ही हो!

पालतू हाथियोंके जुलूस हम कअी बार देखते हैं। आठ-आठ दस दस हाथी, अरे पचास पचास हाथी तक हम अिकट्ठे ला सकते है। परतु स्वच्छन्द विहार करते हुअे आठ हाथियोको अेक जगह कौन ला सकता है? और वे आठ कैसे! लम्बे लम्बे और मुडे हुअे दातोंवाले, पेडोकी छोटी मोटी डालिया तोडकर खा जानेवाले। मै अिन प्रचण्ड गभीर प्राणियोको देखकर धन्य धन्य हो गया। जब अुनका जुलूस चला तब अैसा ही मालूम हो रहा था, मानो समस्त वनकी महत्ता चल रही हो। वह दृश्य जन्मभर भुलाया नही जा सकता।

लौटते समय हमारी पार्टिया अलग अलग हो गअी। जो जल्दी रवाना हुअे, वे सीधे रास्ते गये। हम अपने गजानन्दकी जुगाली करते करते चले। और दाहिनी ओर जानेके बजाय बाअी तरफ मुडे। हमारी दिशा ठीक है या नही, अिसकी जाच करनेके लिअे मै बार बार पीछे मुडकर किलिमाजारोकी तरफ देखता था। मुझे लगा कि कोअी भूल हो रही है। परन्तु मोटरकी पगदडी दूसरी नही थी। मै नकशा देखता जाअू और कहता जाअू कि "दिशा-भूल हो गअी है।" और लोग कहे "नहीं, ठीक है।" सभी अनजान! हरअेकके दिमागमें आत्मविश्वास और अविश्वासकी लहरें अेकके बाद अेक अुठती जाती। जो आदमी विश्वासके साथ चलता, वह कुछ समय बाद विश्वास खो बैठता, तब तक दूसरे मस्तिष्कमें गडबडी हो जाती। फिर वह दिशा बताना स्वीकार करता और नया घोटाला कर देता! 'नैको मुनिर्यस्य वच प्रमाणम्'— अेक भी अैसा समझदार नही मिलता था कि जिसके वचनको प्रमाण मानकर चला जा सके।

अेक बार तीन महाराष्ट्री वनमें घूम रहे थे। अुन्होंने अेक नेवला देखा। अेक आदमी बोल अुठा, "सुमग, सुमग, सुमग!" दूसरा क्रुद्ध

होकर बोला, "सुमग सुमग क्या करता है ? अिसका नाम तो मुसग है।" तीसरा समझदार बनकर कहता है, "जान लिया, जान लिया! अिसका नाम है घुमस।" नेवलेके लिअे मराठीमें सच्चा नाम है मुगुस! अुन्हीके जैसी हमारी स्थिति थी। सतोष अितना ही था कि वक्त सवेरेका था। हम रेगिस्तानमें अुगी हुअी छोटी घासमें से जा रहे थे, अिसलिअे दूर तक देख सकते थे। और पेटमे नाश्ता था और मोटरमे पेट्रोल था। हम अिस तरहसे दिशा बदल बदल कर जा रहे थे कि किसी अनजान आदमीको अैसा लगता कि अिन लोगोको किसीने आम्बोसेलीकी लम्बाअी चौडाअी बाकायदा माप लेनेकासर्वे (survey) काम सौंपा है। और ये लोग अुसे अेक खास समयके अदर पूरा करके अिनाम कमानेके लिअे भागदौड कर रहे हैं।

पहले तो रास्ता भूलनेमें भी मजा आया, परतु धीरे धीरे नाश्ता पचने लगा और पेट्रोलका धुआ हो गया। अब अगर रास्तेमें ही पेट्रोल खतम हो जाय तो ? हमने मोटरका भोपू बजाकर दसो दिशाओमें घोषणा कर दी कि हम रास्ता भूल गये हैं। परतु वापस प्रतिध्वनि करनेके लिअे कोअी पहाडी भी नजदीक नही थी। ध्वनि अतरालमें विलीन हो गअी और मैदानकी शाति पूर्ववत् स्थापित हो गअी।

काफी वक्त निकलनेके बाद हमारी ही पार्टीकी अेक मोटर दाहिनी ओर दूर दूर धूल अुडाती हुअी दौडती दिखाअी दी। हमने अुन्हे देख लिया और अुस दिशामें दौड लगाअी। परतु वे स्थिर नही थे। बीचमें कोअी रास्ता मिलता तो यह समझकर कि वह हमसे सयाना समझदार है, अुसकी सलाहके अनुसार चलते। परतु वह कोअी हमारे लिअे वहा खडा नही था। थोडासा आगे जानेके बाद मूक रास्तेकी सलाह मानने पर पछता कर हम फिर अपना दिमाग चलाते। अिस प्रकार करते करते मैदान पार करके हम झाडियोके जगलमें पहुचे। वहा रास्ता मिलनेमें काफी देर लगी। मोटरको सख्त भूख लगी थी। वह कोअी मनुष्य नही कि खुराकके बगैर काम चला सके।

दोपहर होते हुअे भी पक्षियोके घोसलोने हमारा प्रेमसे स्वागत किया, हमें आगेका रास्ता बताया और हम ज्यो त्यो करके नमगा पहुच गये और वहा थोडा खा लिया।

नमगा, जो कल हमारा मिलन स्थान था, आज विदाअी और बिखर जानेका स्थान बना। कुछ लोग अरुशाकी तरफ गये, कुछ नमगामे ही रह गये और बाकीके सब लोग तीन मोटरोमें बट गये और नैरोबीकी तरफ चल पडे। रास्ता सुन्दर था। यहा अभयारण्यका आश्रय न लेने-वाले कितने ही श्वापद हमारे देखनेमें आये। खास तौर पर जिराफ, शुतुर्मुर्ग, वुद्दू और चित्राश्व। १०२ मीलका रास्ता काटकर हम नैरोबी पहुचे। अब नैरोबी शहरके पास स्थित अभयारण्य हमें सादा और बेमजा लगने लगा। अुसी दिन मुझे स्व० गिजुभाअीकी पुण्यतिथिकी सभामें जाना था, अिसलिअे हमारी मोटरने विशेष वेगसे दौड लगाअी। हम नैरोबी पहुचे और हमारी पूर्वी अफ्रीकाकी यात्राका पूर्वार्ध पूरा हुआ।

२१
फिर नैरोबीमें

नैरोबीमे दो ही दिन रहकर हम युगाडाकी यात्रा पर निकलनेवाले थे। नैरोबीमें आते ही भाअी वसन्त नायक और श्रीमती कान्ताबहनके स्वामित्वके बालमदिरकी तरफसे होनेवाले गिजुभाअी अुत्सवमे मुझे भाग लेना था। मैंने अिन लोगोसे कहा कि, "स्वर्गीय गिजुभाअीने बालशिक्षाके लिअे फकीरी ली, अुससे पहले वे वकालत करनेके लिअे पूर्वी अफ्रीका आये थे और अुन्होने स्वाहिली भाषा सीखी थी। यह बहुत लोगोको मालूम नही होगा। आज गिजुभाअीके ४० शिष्य अुसी पूर्वी अफ्रीकामें बालशिक्षाका काम कर रहे हैं। यह कितना सुन्दर है।"
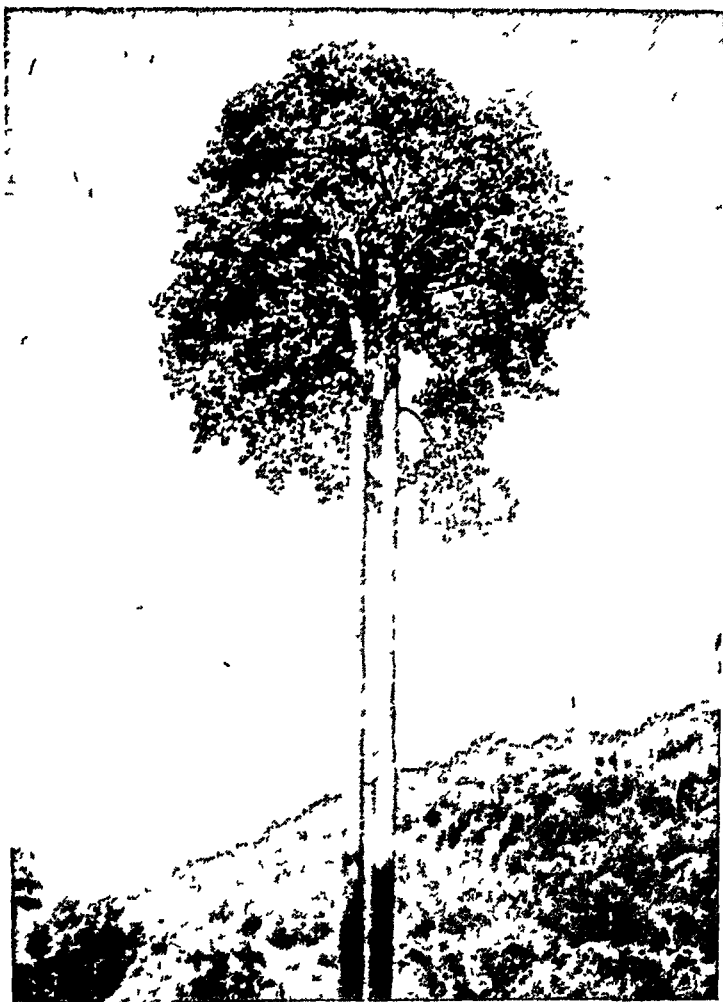
'वृक्षनसे मत ले'

दो होते हुअे भी अेक [पृ० ७५

स्तन्यदायिनी — वंशवृद्धिकी चिन्ता अिन्हें नहीं है।

सन्तोषी संस्कृतिके प्रतिनिधि
टांगानिकाके वतनी [पृ० ४६
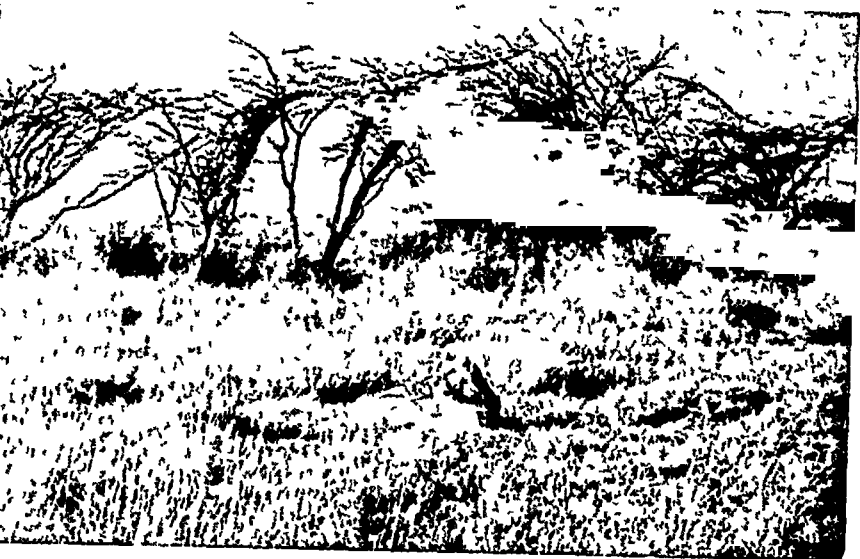
तुम्हारी तरफ कौन देखे ? — अफ्रीकी वनराज [पृ० २७१

थूहरका महावृक्ष [पृ० १५०

धरतीमाताके बालक मसाओी लोग [पृ० १४९
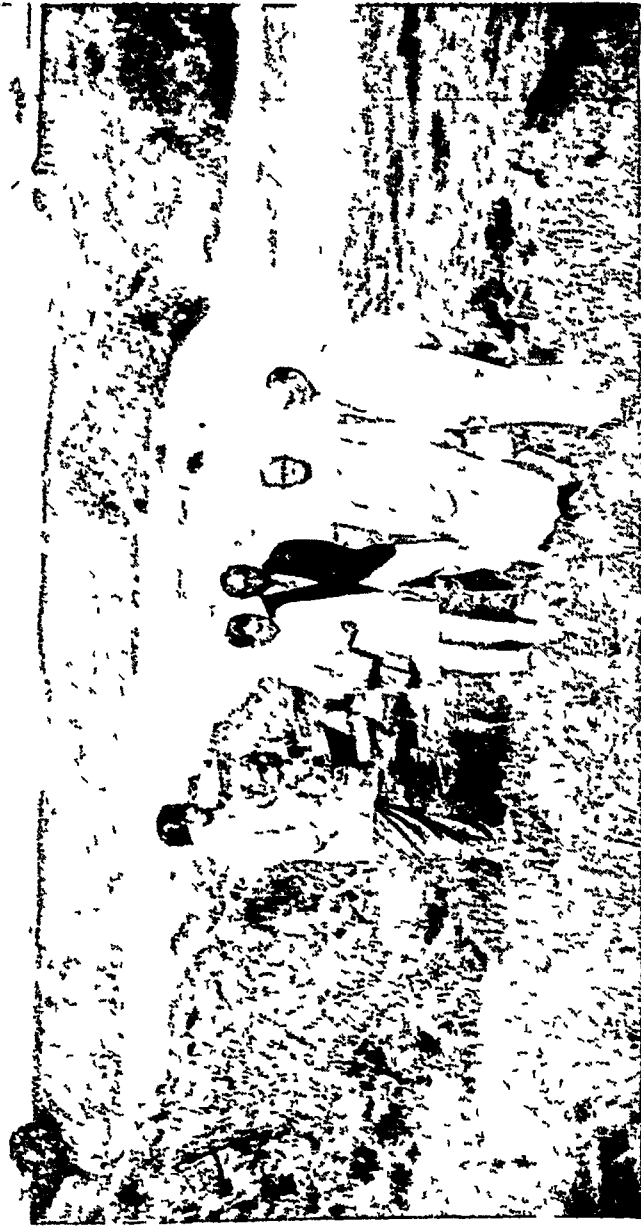
अन्तिम दृश्य?

[पृ० २०६

थोडे ही दिनोमें अिस प्रपातकी जगह बिजलीका कारखाना खडा होगा।
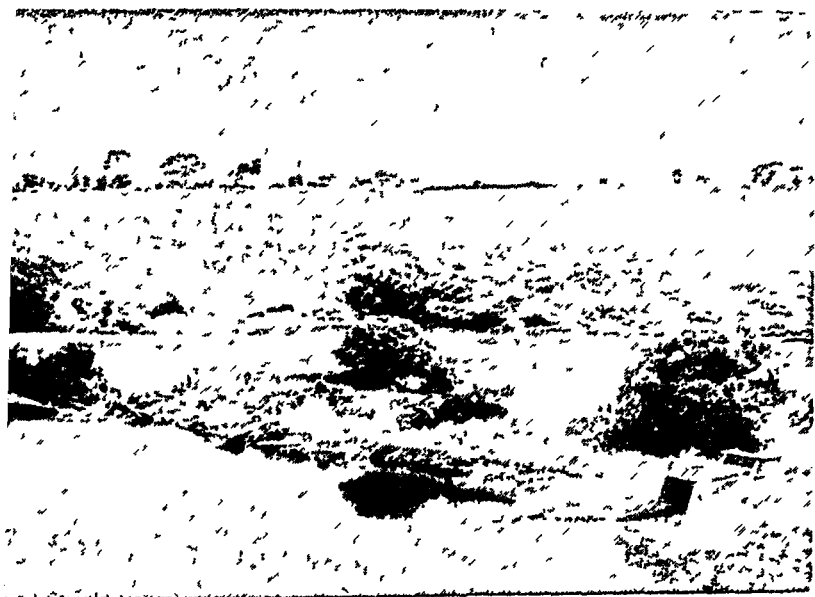
छलांग मारनेसे पहलेकी शान्ति — नील नदीका जन्मस्थान [पृ० १९९

अफ्रीकी नेताओंके बीच [पृ० २८५
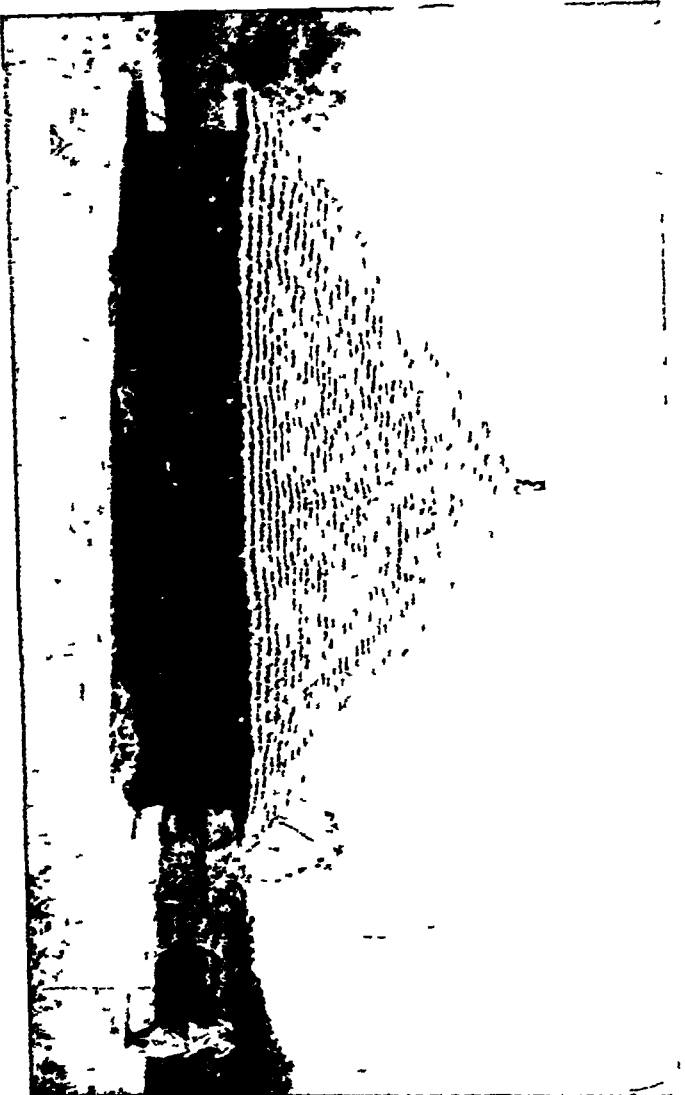
अफ्रीकी संस्कृतिकी परिसीमा

[पृ० ४६

बालशिक्षाका महत्त्व लोगोको समझाया और खानगी सस्थाओको भी खुले हाथो मदद देनेकी सिफारिश की।

रातको भाओी अिब्राहीम नाथूके यहा भोज था। बहुतसे युरोपियन आये थे। मैने अेक छोटासा भाषण दिया। बादमे प्रश्नोत्तर हुअे। हालाकी युरोपियनोने प्रश्न नही पूछे, परन्तु अुनकी बाते प्रश्नके रूपमे ही अिब्राहीमभाओीने रखी। अुन्होने कहा कि, "हिन्दुस्तानी लोग छोटे-छोटे धन्धोमे से अफ्रीकियोको खदेड रहे है और अिसलिअे कुछ लोगोका यह विश्वास है कि वे अफ्रीकियोके शत्रु है। अिस बारेमे आपका क्या कहना है?"

मैने कहा, "आपने प्रश्न अच्छा पूछा। जबसे पूर्वी अफ्रीकामे आया हू, तबसे हर जगह अपने देशके लोगोसे शिकायत करता रहा हू कि, 'आप अफ्रीकी लोगोके साथ काफी मिलते-जुलते नही। आपको अपने धन्धोकी खूबिया अुन्हे सिखानी चाहिये, अुन्हे साथ लेना चाहिये,' वगैरा वगैरा। अिसलिअे आज अगर अुनके पक्षमें जो कुछ कहने लायक है, वह कह दू तो अुनके साथ कुछ न कुछ न्याय होगा और मेरा भी भला ही होगा।

"आप कहते है कि, 'छोटे-छोटे धन्धोमे से हिन्दुस्तानियोने अफ्रीकी लोगोको निकाल दिया है।' अिसका जवाब क्षणभर बाद दूगा। परन्तु बडे-बडे धन्धोका क्या हाल है? सबसे बडा धन्धा राज्य करनेका है। वह तो अफ्रीकियोके हाथमे था। पर अब किसके हाथमे चला गया है?

"अब मुझे बताअिये कि कौन कौनसे धन्धे अफ्रीकियोके हाथमे थे, जो हिन्दुस्तानियोने अुनसे छीन लिये है? अैसा अेक भी धधा बता सकेगे? अुल्टे मै आपको अैसे अुदाहरण दे सकता हू, जहा बेचारे हिन्दुस्तानी अैसे जगली अिलाकेमे जाकर रहे, जहा अग्रेज भी नही पहुच सकते, और वहा बिलकुल नगे रहनेवाले लोगोको अेक-अेक शिलिगमे अेक-अेक पायजामा देकर कपडा पहननेवाले बनाया। जो काम वे खुद करते, अुसमे अफ्रीकियोको सहायक बनाकर हमारे लोगोने

अुन्हें बटअीका काम सिखाया, दर्जीका काम सिखाया, और तरह तरहका भोजन बनाना सिखाया। अिसीलिअे तो वे लोग अंग्रेजोंके बड़े अुपयोगी नौकर बन गये।

"हमारे लोगोंने यहां रेलवे बना दी। अुन काममें कितने ही भारतीय भाअी जंगली जानवरोंके पेटमें पहुंच गये, कितने ही मलेरियाके शिकार बन गये। अिस प्रकार हमारे लोगोंने यहां अंग्रेजों और अफ्रीकियोंकी कम सेवा नहीं की। यह नहीं है कि हम लोगोंको बड़े-बड़े शब्दोंमें अपनी सेवाका बखान करना नहीं आता। अैसे भी लोग होते हैं जो बेशुमार धन भी लेते हैं और सेवाकी बात करते हैं। और अैसे लोग भी होते हैं जो जानकी जोखिम अुठाकर सेवा करते हैं, केवल पेट भर लेते हैं और सेवाका नाम लेनेमें संकोच अनुभव करके नम्रतापूर्वक कहते हैं कि, 'हम यहां पेटके लिअे आये हैं।' अैसे लोगोंकी निन्दा करना किसीको भी शोभा नहीं देता।

"और दूर जंगलमें दुकान खोलकर रहनेवाले हमारे लोग कमाते भी कितना हैं? अगर वे अैश-आराममें रहकर फिजूलखर्ची करते और दुराचार फैलाते तो अुनके हाथमें कुछ न रहता। हमारे लोगोंका स्वभाव है कि बापका कर्ज सिर पर न रखें। कानूनके अनुसार कर्ज चुकाना लाजमी न हो, तो भी लड़का बापका कर्ज चुकाये बगैर नहीं रहता। अिस प्रकार अगर किसीने यहां किफायत करके रुपया बचाया हो और हिन्दुस्तानमें भेजकर बापको ऋणमुक्त किया हो या किसी शिक्षासंस्थामें या मंदिरके जीर्णोद्धारके लिअे रुपया दिया हो, तो अिसकी अितनी शिकायत क्यों? हमारे लोगोंने अफ्रीकियोंका सारा देश कब्जेमें तो नहीं किया, जिनके बीच रहकर वे सेवा ही करते रहे हैं। हमारे लोगोंकी रक्षाके लिअे फौज नहीं रखनी पड़ी। हमारा रहना अफ्रीकियोंको अगर बुरा लगता, तो जंगलोंमें हम अरक्षित और अकेले जाकर रह नहीं पाते।

"अब मैं अुनसे कहता हूं कि आप शिक्षामें आगे बढ़िये। अपने बच्चोंको अच्छीसे अच्छी शिक्षा दीजिये। अफ्रीकियोंको भी अुनका

लाभ दीजिये। यहाका रुपया यही खर्च कीजिये। आप जिस देशमे रहते है, वह कॉमनवेल्थका सदस्य है। हम भारतवासी भी राजीखुशीसे अिस कॉमनवेल्थमे रहे है, अिसलिअे अग्रेजोके साथ हमारा सबध मित्रतापूर्ण रहना चाहिये।

"वर्णभेदके कारण अुत्पन्न होनेवाला अलग-थलगपन किसी दिन अवश्य दूर होगा और हम सब मिलकर अिस देशमे विश्व-कुटुम्बकी स्थापना कर सकेंगे।"

अिन्ही दिनोमे विलायतके अेक प्रसिद्ध पत्रकार आये हुअे थे। कहा जाता है कि अुन्हे हिन्दुस्तानियोसे न मिलने देनेका पूरा प्रयत्न हुआ था। परतु अिस भोजमें अुन्हे निमत्रण दिया गया और वे आये। अुन्होने शर्त रखी थी कि "मै आ तो जाअूगा परतु मुझसे बोलनेके लिअे न कहियेगा।"

मेरे भाषणके बाद अुन साहबसे नही रहा गया। अुन्होने कहा "आजके मेहमान नम्रतासे कहते है कि 'अिस देशमें केवल दो महीने रह कर सर्वज्ञकी तरह अुपदेश करनेका — 'ग्लोब ट्रॉटर' का काम मै नही करूगा।' मै तो यहा तीन ही दिनसे आया हू और फिर भी अपनी राय देना चाहता हू! तीन बरस पहले अिसी तरह अेक बार मै यहा आया था। अुस वक्त हिन्दुस्तानियोके बारेमे बहुतसी प्रतिकूल बाते सुनी थी। अिस बार कम्पालामे मैने देखा कि अेक भारतीयने अुस शहरको बढिया पार्क दिया है। अेक टाअुन हॉल बना दिया है। अिन लोगोने अफ्रीकी लोगोके लिअे छात्रवृत्तिया दी है। मै समझ नही सकता कि वे क्या करें? ये लोग अगर थोडा पैसा स्वदेश भेज दे, तो कहा जाता है कि They are bleeding Africa white — वे अफ्रीकाका खून चूस रहे है, और यहा घरबार बना कर यहाके होकर रहना तय करें, तो कहा जाता है कि ये लोग अफ्रीकाको खरीदने बैठे है। तो आखिर ये लोग करें क्या? अिस समय अिन २० मिनिटोमे मै जितना समझ सका हू, अुतना बहुत घूमकर भी

न समझ सकता। आपके जैसे लोगोंको यहा अकसर आना चाहिये और गलतफहमिया दूर करनी चाहिये।"

हमारे दोनोके भाषणोंका युरोपियन मेहमानो पर क्या असर हुआ सो जाननेमे नही आया। हिन्दुस्तानी मेहमान खुश हुअे, अिसमे आश्चर्य नही। परतु मै मानता हू कि अुन्हें अपने कर्तव्यका भान हुआ। श्री वार्टलेटकी मौजूदगीका परिणाम बहुत अच्छा हुआ।

दूसरे दिन सवेरे यहाकी अेक प्रारम्भिक पाठशालाके आचार्य मिलने आये। अुन्होने शिक्षण-कलाका अेक सवाल छेडा कि, 'प्रारभ अक्षरोमे किया जाय, शब्दोसे किया जाय या वाक्योसे किया जाय? प्रारम्भिक अिकाअी किसे माना जाय?' राजनैतिक और सामाजिक बाते कर करके अूबे हुअे मुझको यह विषयान्तर खूब भाया। मैने अुनसे कहा कि, "गुजराती, हिन्दी वगैरा स्वभाषा सिखाते वक्त हमे लेखन द्वारा भाषा सिखानी ही नहीं चाहिये। हमे भाषाका ज्ञान प्रारभमे मौखिक ढगसे ही देना चाहिये। लेखनकी जल्दी न करनी चाहिये। लिखना-पढना सीखनेसे पहले बालक सुन्दर साहित्य-गद्य और पद्य-बहुतसा सुनें, कठस्थ करे, सवादोका अभिनय करें, पत्र लिखायें, वर्णन लिखायें। अितनी तैयारी होनेके बाद भाषाकी अिकाअी ढूढनेकी जरूरत नही। विचारोकी अिकाअी वाक्य है, अिस बारेमे शका नही। परतु लिखनेमें सच्ची अिकाअी अक्षरमें भी नहीं और शब्दमें भी नही, सच्ची अिकाअी 'सिलेवल' है। सिलेबलका अर्थ है अेक स्वर और अुसके आधार पर बोले जानेवाले अेक या अधिक व्यजन मिलकर तैयार होनेवाली ध्वनि। यह सिलेबल ही हम बारहखडी द्वारा बच्चोको सिखाते है। हमारे अक्षर 'लेटर्स' नहीं, परतु 'सिलेबल्स' है। हरअेक अक्षरके भीतर अकार छिपा ही रहता है। अिसलिअे अग्रेजीमें जिस ढगसे अिस विषयकी चर्चा होती है, वही ढग हमारी भाषामें लानेकी जरूरत नही।"

मेरे सक्षिप्त अुत्तरसे मेरे अुस व्यवसाय-बन्धुको पूरा सतोष नही हुआ। मेरे पास अधिक समय होता, तो यह सब विस्तारपूर्वक समझाता।

मेरे अेक मित्रके अेक सबधी लिमोटोमे रहते थे। वे अपनी पत्नी और बच्चेको लेकर मुझसे मिलने आये। वे डाक्टर थे और आगे पढाओके लिअे विलायत जाना चाहते थे। अुनके सामने यह सवाल था कि पत्नीको साथ लेकर अुन्हें नर्सिंगके लिअे तैयार कर लिया जाय तो दोनोके लिअे ठीक रहे। परन्तु ६ बरसके बच्चेका क्या किया जाय? माता-पिताके सहवासके कारण बालकमे अुसकी अुम्रके हिसाबसे ज्यादा समझदारी आ गयी दिखाओ दी। वह अकेला हिन्दुस्तान जाने और वहा किसी बोर्डिगमे रहकर आगे पढनेको तैयार हो गया। ६ वर्षका लडका अफ्रीकासे हिन्दुस्तान अकेला जानेको तैयार हो जाय और मा-बापके लौटने तक अकेला रहनेको तैयार हो जाय, यह हम लोगोके लिअे मामूली बात नही। मा बापको मैंने आवश्यक सलाह दी और अुनकी अिस हिम्मतके लिअे अुन्हे बधाओ दी। अफ्रीका जैसे दूर देशमे आकर रहनेसे कुटुम्बमें कैसे सवाल पैदा होते है और अुन सवालोंमे निपटनेकी कितनी हिम्मत हमारे लोग पैदा कर लेते है, अिसका नमूना दर्ज करनेके लिअे ही यह किस्सा मैंने खास तौर पर यहा दिया है।

जैसे मुझे श्री गिजुभाओ-अुत्सवमे भाग लेना था, वैसे ही अिस बार नैरोबीके महाराष्ट्र मडलके मकानकी कोण-शिला (कॉर्नर स्टोन) रखनेका काम भी करना था। महाराष्ट्रियोके मेरे प्रति सद्भावके लिअे मै सदा अुनका ऋणी रहूगा। बात यह है कि मेरी शिक्षा पूरी हुअी तबसे, यह कहा जा सकता है, मै महाराष्ट्रमे रहा ही नही। ज्यादातर गुजरातमें रहा हू और फिर सारे देशमें घूमता ही रहा हू। परिणाम-स्वरूप महाराष्ट्रियोके साथ मेरा सबध बहुत ही कम माना जा सकता है। महाराष्ट्रके लोग लोकमान्य तिलककी राजनैतिक कार्यपद्धतिको विशेष जानते और मानते है। गाधीजीकी पद्धति अुनके गले अुतरनेमें मुश्किल होती है। अिस कारण भी वे मेरे साथ मिलने जुलनेमें कुछ-कुछ सकोच अनुभव करते है। लोकमान्य तिलक और महात्मा गाधी दोनो

स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध थे, दोनों महान देशभक्त थे, दोनोंके मनमें अेक दूसरेके लिअे असीम आदर था। फिर भी दोनोंकी कार्य-पद्धतिमें कुछ मौलिक भेद था। यह भेद समझकर अपनी मान्यता और अभिलाषाके अनुसार स्वराज्यकी सेवा करना दोनोंके अनुयायियोंके लिअे मुश्किल नहीं था। परन्तु जहां पद्धति-भेद आया, वहां विवेक छोड़कर भी आपसमें चर्चा करना और भेद बढ़ाना जिन लोगोंका स्वभाव था, अुन्होंने दोनों ओर मामला बिगाड़ा। अिस परिस्थितिका बहुत अनुभव किया हुआ होनेके कारण मुझे जब महाराष्ट्री अपनाते हैं और किसी खास अवसर पर बुलाते हैं, तब मनमें कृतज्ञताकी भावना पैदा हुअे बिना नहीं रहती। परंतु जब अुनसे मिलता हूं, तब केवल शिष्टताकी चार बातें कहकर वापस नहीं चला आता। बहुतसी बातें साफ-साफ कहनी ही पड़ती हैं।

हिन्दुस्तानमें महाराष्ट्री मेरा यह स्वभाव समझ गये हैं, अिस-लिअे अब पहले जैसी मुश्किल नहीं होती। यहांके महाराष्ट्रियोंके साथ मेरा सम्पर्क नहींके बराबर है। गुजरातियोंने मेरा साहित्य थोड़ा बहुत पढ़ा है। मैं बीस-पच्चीस वर्ष गुजरातमें रहा हूं और वह भी गांधी युगके प्रारंभके दिनोंमें। अिसलिअे गुजरातियोंके बीच और मेरे बीच आत्मीयता पूरी तरह जम गअी है। महाराष्ट्रियोंकी यह बात नहीं है।

अैसे वातावरणमें जब यहांके महाराष्ट्रियोंने अपने मंडलकी अिमारतकी कोण-शिला रखनेके लिअे मुझे बुलाया, तब मुझे बहुत ही आनन्द हुआ। यहांके महाराष्ट्री या तो सरकारी अफसर हैं या कर्मचारी वर्ग हैं। गुजरातियोंकी तरह अुनके पास रुपयेकी बहुतायत नहीं है। मराठी भाषाकी अेकाध पाठशाला स्थापित करना भी अुनके लिअे कठिन है। न रुपया मिलता है और न काफी विद्यार्थी। बड़ी मुश्किलसे अिन लोगोंने थोड़ासा रुपया अिकट्ठा किया और थोड़ासा लोनके तौर पर ले लिया। अुनकी होशियारी और ओमानदारीकी साख अच्छी होनेसे लोन लेनेमें अुन्हें कठिनाअी नहीं होती। अच्छे

स्थान पर जरूरी जमीन प्राप्त करके अुन्होने प्रारभ कर दिया और जब मैं यह लिख रहा हू तब तो जिस हॉलकी कोण-शिला मैंने रखी थी, वह लगभग पूरा भी होने आया है।

मैंने अपने भाषणमे महाराष्ट्रियोसे अुनके अितिहास-सिद्ध स्वभावकी बाते कही। चीनी यात्री ह्यूअेनसागने महाराष्ट्रियोके बारेमें जो कुछ लिखा है, वहासे लगाकर शिवाजीके समयके मद्रासी कवि व्यकटाध्वरिके वचनो तकका हमारे देशके लोगोका मत अुद्धृत करके मैंने अुनसे कहा कि, "हमारे लोग किसीका दम्भ, कृत्रिमता या खाली बाते सहन नही कर सकते। यह सब ठीक है। परन्तु दम्भ या खाली बातो और आदर्शवादके बीचका भेद समझना चाहिये। आदर्शकी बाते अेकदम अमलमे नही आती। आदर्शवाद सदियो तक हवामे ही रह जाता है, अितनेसे ही अुसका भी विरोध करना शुरू करे, तो जीवनमें श्रेष्ठ तत्त्व रह ही नही जाता। महाराष्ट्रियोको आदर्शवादका विरोध हरगिज नही करना चाहिये। आदर्शवाद महाराष्ट्रके सतोसे मिली हुअी हमारी कीमती पूजी है। शकाशील बनकर हम अिसे खो न बैठे। नौकरीकी कारगुजारीमे ही अटके न रहकर हमे आगे बढना चाहिये," अित्यादि। अिस अुत्सवमें नैरोबीके छोटे बडे सभी महाराष्ट्री जमा हुअे थे। स्त्रियो और बच्चोकी अुपस्थिति भी अच्छी थी। अिसलिअे सारा वातावरण अेक विशाल कुटुम्बके जैसा बन गया था। मैंने अुनसे कहा कि अपने मडलकी प्रगतिके बारेमें मुझे समय समय पर लिखते रहिये और बैठे या मैदानी खेलोमे सिर्फ महाराष्ट्रियोको ही नही, परन्तु नैरोबीमे रहने वाली तमाम जातियोको शरीक कीजिये।

माननीय माथू यहाके अफ्रीकी लोगोके नेताओमे से अेक है। रातके अेक दो भोजोके समय अुनसे परिचय हो गया था। अुनकी अिच्छा थी कि हम अेक बार अुनके घर जाय और अुनके घरके लोगो और कुछ मित्रोके साथ आरामसे बाते करे। नैरोबीकी पहली यात्राके समय अैसा न हो सका, अिसलिअे अिस बार हम आग्रहपूर्वक अुनके

यहा गये। अुनका घर नैरोबीमे २६ मीलकी दूरी पर है। जाते ही अुनकी पत्नी और बच्चे बगीचेमे मिले। थोडासा खाया और पीछे अुनके बगीचेमे कुछ घूमकर खुलेमे घास पर बैठ गये।

अफ्रीकी स्त्रियोके बाल पुरुषोकी तरह ही घुघराले होनेके कारण वे अुन्हे लम्बे नही बढाती। शायद बहुत बढते भी नही होगे। अुनके अन्दर ही अुस्तरेसे तीन चार मागे निकालकर बाके बालोकी शोभा लाअी जाती है। हमें अैसे सिर देखनेकी आदत नही, अिसलिअे पुरुषोके सिर जैसे लगते है। अुनकी पोशाक कुछ कुछ हमारी कुर्ग प्रातकी बहनोकी पोशाक जैसी है। धीरे धीरे वह पूरी अग्रेजी बन जाती है। चेहरा, बाल या पोशाक कैसे भी हो, स्त्रीकी मार्दवता, विनय और शालीनता तो होती ही है। और बच्चोको लेकर जब खिलाती है, तब माताओका वात्सल्य सारी दुनियामें अेकसा ही होता है। और बच्चे तो भगवानकी मूर्ति है। अनजान मुल्कमे आये हुअे नये लोगोको देखकर अुन्हे प्रथम विस्मय होता है और पास या गोदमे बिठायें तो क्षणभर वे हम पर विश्वास नही करते। यह सकोच अेक बार छूटा कि तुरन्त गोदमें अैसे जम जाते है कि अुठनेको जी भी नही चाहता। छोटे बच्चोको भाषाकी झझट नही होती। आखोसे और मुस्कराहटसे सारा भाव समझ जाते है और व्यक्त करते है। गलतफहमीके लिअे कोअी कारण ही नही होता। हम कोअी आधा घण्टा अनजाने महाद्वीपके अैसे घरोमे बिताते है। परन्तु मै मानता हू कि घरके लोगो और आसपासके पडोसियोके लिअे भी वह महीनो तक बातो और चर्चाओका विषय बनता होगा। अुन्हे लगता होगा कि अितनी दूरसे आनेवाले ये लोग हमारे जैसे नही है। अिनके देशका जीवन कैसा होगा? परन्तु ये लोग हमारे जैसे बिलकुल नहीं, सो बात भी नही।

जब आगनमे घास पर जाकर बैठे, तब गाधीजीकी नअी तालीम यानी वर्धा-शिक्षाके बारेमे बाते हुअी। श्री माथू बीचमे ही बोल अुठे, "काकासाहब, आपकी अेक बात मेरे मन पर सोलह

आने जम गअी है। हमें हिन्दुस्तानी भाषा सीखनी ही पडेगी। हिन्दुस्तानकी भाषा द्वारा ही हिन्दुस्तानके साथ अपना सम्बन्ध हम दृढ कर सकेंगे और हिन्दुस्तानको पहचान सकेंगे। मैं गुजराती सीखना तो शुरू कर ही दूंगा।" अेक आदमीने पूछा, "हम गुजराती सीखें या हिन्दी? आपकी क्या सलाह है? कौनसी भाषासे हमें ज्यादा लाभ होगा?" मैंने कहा कि अिस चिन्तामें जितना समय बितायेंगे, अुतने समयमें दोनों भाषायें सीख सकेंगे। गुजराती भाषा आअी कि हिन्दी आधी आ ही गअी। यहां आपके देशमें गुजरातियोंकी संख्या अधिक है, अिसलिअे आपको यहां वह भाषा अधिक अुपयोगी साबित होगी। अिस कारण वहांसे आरम्भ कर सकते हैं। परन्तु हिन्दुस्तान आना हो, तो हिन्दीके बिना आपका काम नहीं चलेगा।

'अफ्रीकाके ४० विद्यार्थी आज हिन्दुस्तानमें पढ रहे हैं, अिनमें से अेक तो सारी दिल्ली युनिवर्सिटीमें पांचवां आया,' वगैरा बातें मैंने कहीं और कहा कि, "जो लोग कहते हैं कि 'आप सभ्यता-सुधारोंके मामलोंमें पिछडे हुअे हैं — हजार दो हजार वर्ष पिछडे हुअे हैं, हिन्दुस्तान या पश्चिमके लोगोंकी पंक्तिमें आकर बैठनेमें आपको हजार वर्ष बाट देखनी पडेगी', अुन पर आप विश्वास न कीजिये। अज्ञान दूर करनेके लिअे हजार वर्षकी जरूरत नहीं। २५-३० सालके अन्दर, अेक ही पीढीमें आप सबके जैसे हो सकेंगे। गलत खयाल और तंग भावनायें ('सुपरस्टिशन्स अेन्ड प्रेज्युडिसिस') छोड देनेमें बहुत देर लगती है। परन्तु अज्ञान तो पोलेपनकी तरह है। अुसे दूर करते देर नहीं लगती। किसी कमरेमें दो सौ बरसका अंधेरा हो, तो क्या वह वहां जमकर पक्का हो जाता है। दरवाजा खोलते या प्रकाश भीतर ले जाते ही अंधकार गायब हो जायगा।" श्रोता लोगों पर अिस अुपमाका अच्छा असर पडा। अुनके चेहरे अेकदम खिल अुठे। सभी कहने लगे, "हां, सच बात है।"

सयोगसे मेरी पुस्तक 'ब्रह्मदेशका प्रवास' के नये संस्करणके प्रूफ हिन्दुस्तानमें अुसी दिन मुझे मिले। हिन्दुस्तानके बाहर पूर्व दिशामें जहा तक गया था, वहाके प्रवास-वर्णनके प्रूफ हिन्दुस्तानके बाहर पश्चिमके सिरे पर बैठकर देखते समय मन बडा अुत्तेजित हुआ। ब्रह्मदेशकी माता 'औरावती' के दर्शनका वर्णन दुबारा पढ रहा था और मिश्रकी माता 'नील' नदीके अुद्गम स्थानकी ओर अुडकर जानेकी तैयारी कर रहा था! रातको प्रूफ देखे, टिप्पणिया देखी। दूसरे दिन सुबह अुठकर नये संस्करणकी नअी प्रस्तावना जब लिखी, तो अुसमें अिस अद्भुत सयोगका अुल्लेख किये बिना कैसे रहा जाता!

२२

सरोवर पर व्योम-विहार

सोमवार तारीख २६ जूनको हमने नैरोबी छोडा। नैरोबीसे कम्पाला तकका लम्बा सफर हमने सवा दो घण्टेमें पूरा किया। सुबह नौ बजे हम रवाना हुअे। रास्तेमें पहले केनिया हाअीलैंड्सकी खेती देखी। यह सुन्दर अुपजाअू प्रदेश है। यहा रहनेवाले किकूयू लोगोंकी सबसे बडी शिकायत यह है कि हमारी अिस अन्नपूर्णाको युरोपियन लोगोंने हजम कर लिया है। लम्बे-लम्बे खेत, मनोहर पहाडिया, अुनके बीच बहनेवाले पानीके झरने, गोरे जमींदारोंके बगले और बेचारे अफ्रीकियोंकी झोपडिया — ये सब देखते देखते हम आकाशमें आगे चले — चले नहीं बढे। पहले तो सब जगह बादल ही थे। मैंने आशा रखी थी कि दूर अेल्गनका पहाड दिखाअी देगा। परन्तु बादलोंमें कुछ भी दिखाअी नहीं दिया। माअुट केनियाका धवल शिखर बहुत दूर और पीछेकी तरफ होनेके कारण अुसके दीखनेकी आशा ही नहीं थी। अब हमारी नजरके सामने आता हुआ विक्टोरिया सरोवर दिखाअी

दिया। यह तालाब सारे अफ्रीका महाद्वीपके लिअे वैभवस्वरूप है। मीठे पानीका अितना बडा तालाब दुनियामे और शायद ही हो। सत्ताअीस हजार वर्गमीलका मीठे पानीका विस्तार कोअी छोटी बात है! अगस्त्यका स्मरण करके दो आखोसे अिस सारे विस्तारको पी जानेकी हमने बहुत कोशिश की। दाअी ओर दूर किसूमू शहर विक्टोरिया सरोवरसे अिस तरह लगा हुआ दिखाअी दिया, जैसे बछडा गायसे लगा रहता है, सरोवरका किनारा बडा टेढामेढा है। अन्दर छोटे बडे अनेक टापू थे और पानीके पृष्ठ भाग पर लज्जाकी झलक थी! सारा सरोवर अितना प्रसन्न–पावन दिखाअी देता था कि मुझमे शक्ति होती तो वही अेक स्तोत्र तैयार कर देता। कुछ जहाज अपने पाल फैलाकर सरोवर पर तैर रहे थे। जब कि कुछ बालक-बादलोको सरोवर पर हवामे तैरनेकी सूझी थी। किस तरह वे दौड रहे थे और किल्लोल कर रहे थे! बादलोने सरोवरकी शोभा कितनी बढा दी थी, अिसका अुन्हे खयाल होता तो वे अितनी जल्दी न बिखर जाते। असलमे अिसमे अुनका दोष नही था। हमारा विमान वायुवेगमे दौड रहा था, अिसलिअे सब बादल पीछे रह गये।

हम कितनी ही तेजीसे दौडे — हमारे साथ ठीक अुतनी ही गतिसे हमारे विमानकी छाया दौड लगा रही थी। अुसे जमीन, पानी, टापू, बादल — किसी पर भी दौडनेमे कठिनाअी नही थी। वह छाया दोनो ओर पख फैलाकर दौडती थी, क्योकि अुसे अपनी वफादारीमें कमी नही आने देनी थी। विमान बहुत ही अूचा चला जाता, तो छाया अपनी श्यामलता छोड कर अुज्ज्वलता धारण कर लेती। परन्तु सूर्यकी दिशा कायम रखकर वह रहती साथ ही। विमान बहुत ही अूचा चला जाय, तो छायाके पैर जमीनको नही छूते। अुसे अपना मयूख आकाश ही आकाशमें खीचना पडता। आगे चलकर पानी पर समानान्तर सफेद रेखाअे दिखाअी देने लगी। समुद्रमे कभी कभी छोटी छोटी लहरे फूटकर हसती है। अुनके जैसी यह बात नही थी। जाडेमें जैसे मनुष्य

नाखूनसे शरीर खुजाता है और अुस पर सफेद लकीरें पड़ जाती हैं, वैसी ही ये लकीरें दिखाअी पड़ती थीं। विमानकी गतिके साथ ये तिरछी होकर दृष्टिके पथमें आती और जाती थीं, जिससे विशेष आकर्षक मालूम होती थीं। ये लकीरें कैसे पैदा होती हैं, अिसका मैं खयाल नहीं कर सका। असा कोअी जानकार भी अभी तक नहीं मिला जिससे मैं पूछ सकूं।

हमारा समय पूरा हुआ और सामने अेन्टेबे दिखाअी देने लगा। अेन्टेबेका हवाअी अड्डा सरोवरके बिलकुल किनारे है। हवाअी जहाज नीचे अुतरे तो किनारेको ही छुअे। जरा भूल जाय तो पक्ष पानीमें भीग जाय। मछलियां पकड़नेवाले बगलोंकी खूबीके साथ हमारा विमान जमीन पर अुतरा।

विमानसे बाहर निकलते ही तुरन्त कपालाके खास खास भारतीय नागरिकोंने हम पर अधिकार कर लिया। अेन्टेबेसे कपाला १९ मील दूर है। अेन्टेबे युगांडाके अफसरोंकी अंग्रेजी राजधानी है। अंग्रेज गवर्नर वहीं रहता है। जब कि कपाला युगांडाकी व्यापारिक राजधानी है। अिस प्रदेशके अफ्रीकी लोगोंका राजा, जिसे कबाका कहते हैं, कपालामें ही रहता है। हम अेन्टेबे ठहरे बिना सीधे कपाला जा पहुंचे।

अिस हवाअी सफरके दौरानमें अिसका ठीक-ठीक खयाल न रहा कि हम भूमध्य रेखा पार करके दक्षिणी गोलार्धमें से अुत्तरी गोलार्धमें कब चले गये।

२३

नौ पहाड़ियोंकी नगरी

अेन्टेवेसे कपाला तकका १९ मीलका सारा प्रदेश बहुत ही मनोहर है। विमानमें सरोवरकी शोभा देखनेके बाद मोटरके रास्तेसे दौडते हुअे यही तालाब कअी तरहसे दिखाअी देता है, अुस समय हमें अैसा आनन्द होता है कि हम कोअी नअी ही शोभा देख रहे हैं।

पूर्व अफ्रीकामें कअी शहर देखे। अुनमें पहाडियोंके कारण अनोखी शोभा कपालाकी, समुद्रतटकी शोभा दारेस्सलामकी और अुगलियोंमें अुगलिया डालकर प्रेम करनेवाले तालाब और पहाडियोंके गूथनसे बनी हुअी शोभा कॉस्टरमनविलकी है। अिसका वर्णन आगे आयेगा। अिन नगरियोंकी शोभा भुलाअी नहीं जा सकती।

कपाला नगरी प्राचीन रोम शहरकी तरह सात पहाडियों पर बसी हुअी थी। परन्तु यह नअी नगरी जल्दी जल्दी बढती जा रही है, अिसलिअे अिसमें दो पहाडियोंकी वृद्धि हो गअी और आज वह 'नौ पहाडियोंकी नवल नगरी' बन गअी है। हम कपालाके नजदीक पहुचे और अेक पहाडी परकी मस्जिद दिखाअी दी। टेकरीके सिर पर विराजमान मस्जिद अितनी सुन्दर लगी कि हमने निश्चय किया कि पहाडी पर जाकर मस्जिदको पाससे देखे बिना कपाला न छोडेंगे। (लेकिन हुआ अैसा कि अबकी बार नहीं, किन्तु युगाडाका सारा कार्यक्रम पूरा करके रुआन्डा-अुरुण्डीवाला बेल्जियन अिलाका देखकर आनेके पश्चात् ही रवाना होते होते हम अुस मस्जिदके पास जा सके।)

अिस मस्जिदका कुछ अितिहास है। मुसलमानोंको मस्जिद बनानेके लिअे अच्छी जगह मिलती नहीं थी। अिसलिअे यहाके कबाकाके किसी रिश्तेदारने अिस पहाडी परकी अपनी जगह मुफ्त दे दी। अितनी

बढिया जगह अिस तरह गअी हुअी देखकर युरोपियन लोगोंको बुरा लगा। अुन्होंने मुसलमानोंसे कहा, "अितनी जगह लेकर क्या करोगे? मस्जिद बनानेके लिअे आपके पास रुपया नहीं है। अिसलिअे आप कुछ जगह मस्जिदके लिये रखकर बाकीकी हमें दे दीजिये। हम आपको मस्जिद बनानेके लिअे आवश्यक रुपया देंगे।" मुसलमानोंने जवाब दिया, "जमीन नहीं दी जा सकती। धीरे धीरे रुपया जमा करके हम मस्जिद बना लेंगे।" मस्जिद लगभग पूरी हो गअी है, अब थोडा ही काम बाकी रह गया है।

जैसे अेक पहाडी पर यह मस्जिद है, वैसे ही और दो पहाडियों पर दो अीसाअी गिरजे भी हैं। अेक रोमन कैथलिक मन्दिर है और दूसरा प्रोटेस्टेण्ट प्रार्थनागृह है। हम ये दोनों गिरजाघर देख आये। अेककी खिडकियोंमें बाअिबलके पौराणिक प्रसंगके चित्र थे।* मकान भव्य है और वहांसे आसपासकी शोभा भी अच्छी दिखाअी देती है।

हम कपाला पहुंचे तब स्थानीय सेवादलने हमारा पहले पहल स्वागत किया। यह कहा जा सकता है कि सारा गांव अिकट्ठा हुआ था। यहां भी अंधेरा होने पर मशालोंका कार्यक्रम रखा गया था। कवायद और व्यायामके कार्यक्रम अच्छे थे। भारतीय स्त्री-पुरुषोंकी अितनी बडी संख्या देखकर मैंने अपना मुख्य भाषण वहीं दिया। अुसके बाद कअी जगह दोपहरका भोजन, शामका खाना और समय-समय पर चाय पार्टियां छः दिन तक होती रहीं। पहली ही रातको तकासीरो क्लबमें भोज रखा गया था। यहां मेरा पहले पहल ध्यान गया कि अैसे भोजोंके समय शराबका आजादीसे व्यवहार होता है। मेरे सामने

---

* अीसाअी गिरजोंमें रंगीन कांच काममें लेकर खिडकियोंमें जो चित्र बनाये जाते हैं, वे सदा अुच्च कलाके नमूने होते हैं। अंग्रेजीमें अुसे 'स्टेण्ड ग्लास' कहते हैं।

बड़ा धर्मसंकट पैदा हो गया। हमारे सम्मानमें खाना रखा जाय और अुसी वक्त लोग क्लबके बार (दुकान) से शराब लेकर पीते रहें, यह मुझसे क्योंकर सहन हो? भारत सरकारने राष्ट्रीय नीतिके रूपमें सार्वजनिक अवसरों पर मद्यपानका निषेध किया है। फौजके कुछ लोगों या प्रसंगोंको ही अपवाद रखा है। और मैं तो आश्रमवासी हूं। मेरा यहां क्या धर्म है?

अैसा ही अेक धर्मसंकटका मौका पू० गांधीजीके लिअे भी आ गया था। अुनके सम्मानमें राजकोटके ठाकुर साहबने अेक गार्डन पार्टी दी थी। जिस मेज पर गांधीजी बैठे थे, अुसी पर अेक तरफ ठाकुर साहब और दूसरी ओर ब्रिटिश पोलिटिकल अेजेण्ट थे। बातें हो रही थीं, अितनेमें गांधीजीने ठाकुर साहबके सामनेकी शराबकी बोतल अुठाकर पोलिटिकल अेजेण्टके आगे रख दी।

धर्माधर्मका खयाल रखनेवाले किसी सामाजिक पहरेदारने गांधीजीसे अिस विषयमें पत्र लिखकर स्पष्टीकरण मांगा कि, "आपके जैसा मद्यपान निषेधक अैसे स्थान पर भोजन कर ही कैसे सकता था? आपने भोजन ही नहीं किया, बल्कि शराबकी बोतल भी पीनेवालेके सामने रख दी!" गांधीजीने अुत्तरमें अितना ही लिखा, "अैसे अवसर पर कैसा व्यवहार किया जाय, अिसका सूक्ष्म विवेक मुझे मालूम है। आपसे अितना ही कह सकता हूं कि आपके जैसे लोग मेरा अनुकरण न करें।"

मांसाहारके संबंधमें भी अैसे ही प्रश्न अुठाये जाते हैं। हम मांसाहारको व्यसन नहीं मानते परन्तु पाप समझते हैं। धूम्रपानको व्यसन मानते हैं, पाप नहीं मानते। कितने ही बावा लोग अखंड चिलम फूंकते रहते हैं। यह व्यसन है अिसमें वे भी अिनकार नहीं कर सकते। फिर भी समाज यह नहीं मानता कि अुतनी मात्रामें अुनका साधुत्व कम है। स्वामी विवेकानन्द जैसे आधुनिक साधु भी हुक्का छोड़नेकी आवश्यकता नहीं मानते थे। अिस कारण अुनके प्रति मेरा आदर तिल

भर भी कम नहीं हुआ। तथापि मैं तो मानता हूं कि धूम्रपान साधु-जीवनका अंत ही माना जाना चाहिये। जिन लोगोंका आहार ही मांस है, अुन लोगोंको जीवहत्यामें कुछ भी नहीं लगता। दुनियाकी आजकी सार्वत्रिक नीतिकी कल्पनाको देखते हुअे यह नहीं कहा जा सकता कि वे पाप करते हैं। फिर भी जीवहिंसा क्रूरता और पाप तो है ही। जो अिस बातको नहीं मानते या नहीं समझते या आदतके कारण मांसाहार जारी रखना चाहते हैं, अुनको दोष नहीं दिया जा सकता।

तो क्या हम समाजके मांसाहार करनेवाले और न करनेवाले दो भाग कर दें? और दोनोंके बीचका व्यवहार तोड़ ही डालें। वर्जितोंकी जाति अूंची और अवर्जितोंकी नीची तय करके वर्जितोंके अभिमानका पोषण किया जाय? और अवर्जितों पर घटियापनका खयाल बिठा दिया जाय? हम हिन्दू लोगोंने यह सब करके देख लिया है। अैसा करके हमने समाजकी अुन्नति नहीं की। हम यह मान लें कि वर्जितों और अवर्जितोंके बीचका व्यवहार तोड़ देनेसे वर्जितोंका निश्चय अधिक मजबूत होना संभव है। परन्तु हमें यह न भूल जाना चाहिये कि अवर्जितोंकी अलग जाति बना देनेके कारण अुनमें सुधार होनेकी संभावनाको भी हम रोक देते हैं।

गांधीजीको अीसाअी धर्मकी तरफ खींचनेकी कोशिश करनेवाले अेक पादरीने अुन्हें हर रविवारको अपने यहां खानेका निमंत्रण दे रखा था। गांधीजीने अुसे स्वीकार कर लिया। खानेकी मेज पर मिशनरीके कुटुंबी मांसाहारकी चीजें लाकर खाते, गांधीजीका आहार कट्टर परहेजका रहता। अुनसे अिस तरह पूछनेवाला वहां कोअी नहीं था कि 'मांसाहारी लोगोंकी मेज पर आप कैसे खाते हैं?' आहारमें पाप-पुण्य सम्बन्धी बात न छेड़नेका शिष्टाचार गांधीजीमें था। परन्तु मिशनरीके बच्चे पूछने लगे, "कुछ चीजें मि० गांधी क्यों नहीं खाते?" माता-पिताको कहना पड़ा, "अुनके धर्ममें यह पाप माना जाता है।"

"पाप क्यो माना जाता है?"

"वे मानते हैं कि पशु-पक्षियोके भी आत्मा है, सुख-दुःखकी अनुभूति है। जीवोको मारनेमें क्रूरता है — पाप है।"

"बात तो सच्ची मालूम होती है। तो हम अिस चीजको पाप क्यों नही समझते?"

"हम मानते हैं कि पशु-पक्षी आदि मनुष्येतर प्राणियोके आत्मा नही होती।"

"यह तो कौन जाने? परन्तु अुन्हे मारनेमें क्रूरता अवश्य है। मारते वक्त वे भागदौड करते है और जोरसे रोते हैं, अितना तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं। कलसे हम ये चीजें नही खायेंगे।"

"न खाओगे तो कमजोर हो जाओगे।"

"तो मि० गाधी क्यो नही कमजोर होते?"

अतमे पादरियोने गाधीजीसे क्षमा मागी और रविवारका भोजनका निमत्रण वापस ले लिया।

यह सारा प्रसग क्या शिक्षा देता है? अेक जमाना था जब जैन लोग मासाहारी लोगोमें जाकर धर्मप्रचार किया करते थे। जैन शास्त्रोमें अैसा अुल्लेख पाया जाता है कि कुछ जैनी मासाहार करते थे। आदतन् मासाहार करनेवाले लोगोको पहले जैन धर्ममें ले लिया होगा। वे धीरे धीरे मासाहारका त्याग कर देगे, अैसी आशा रखी गअी होगी और वह सफल भी हुअी होगी।

अिसके बाद जीवोको बचानेकी वृत्ति शिथिल हो गअी। केवल अपना धर्म बचानेकी वृत्ति बाकी रह गअी होगी। अिसलिअे जैन लोगोने मासाहारी लोगोके साथ मिलना-जुलना छोड दिया होगा। परिणाम-स्वरूप नये लोगोका जैनधर्ममे आना बन्द हो गया। यानी मासाहारी लोगोने मास छोडा हो, अैसे किस्से बद हो गये। मासाहार न करनेवाले कट्टर जैनियोमें से कोअी मासाहारकी ओर फिसला ही नही, यह कहा जा सकता तो कितना अच्छा होता!

परन्तु मांसाहारकी बात अलग है। शराब अनीतिकी ओर ले जानेवाला हलाहल व्यसन है। शराबमे जीवहिंसा नही है, परन्तु जीवहिंसासे खराब बुद्धिनाश है। अुसके साथ समझौता कैसे हो सकता है ?

अिस दलीलमे बडा तथ्य है। अिसमे शक नही कि जहा हमारे समाजमे शराबका व्यसन बहुत नहीं फैला है, वहा समाजके नियम कडाअीसे पालने चाहियें। परन्तु जहा हमारे लोग विदेशोमें जाकर बस गये हैं और धीरे धीरे बिलकुल शिथिल हो गये है, अुनमे मद्यपान फैला हुआ देखकर अुनका बहिष्कार करने लगें, तो स्वय ही बहिष्कृत बन जायगे ओर कुछ भी काम नहीं कर सकेंगे। अिसमें शक नही कि जिन्हे शराब पीनेकी आदत पड गअी है और जिन्होने अिसे सामाजिक रिवाज बना लिया है, अुन्हे हानि होती ही है। अिसमे भी शका नही कि अिन लोगोको शराबसे बचानेकी कोशिश होनी चाहिये। परन्तु यह काम अुनका बहिष्कार करनेमे नहीं हो सकता, और खास तौर पर कहनेकी बात यह है कि अैसा अनुभव भी नही कि वे और सब प्रकारसे खराब आदमी होते हैं। मद्यपानके लिअे मेरे मनमे जो तिरस्कार है, वह मद्य पीनेवाले तक नही पहुचता। अिसलिअे अैसे लोगोके साथ मै आजादीसे घुलता मिलता रहा हू। अैसे कुछ लोगोके प्रति मेरे मनमे आदर भी है। मेरे जैसोको खानेके लिअे बुलानेके बाद वहा शराब अिस्तेमाल न करनेकी सभ्यता दिखाअी होती तो मै खुश होता। परन्तु यह सभ्यता हकके तौर पर मागकर नही ली जा सकती। और हरअेक समाजमें हमसे शर्त भी नही कराअी जा सकती कि अैसी सभ्यता रखी जाय तो ही मै आपके यहा आअूगा।

यहा यह अुल्लेख करते मुझे सतोष होता है कि अेक सज्जन पारसी भाअीने (जो कभी-कभी शराब लेते भी है) हमारे सम्मानमें होटलमें भोज दिया, तब शराब अिस्तेमाल न करनेकी व्यवस्था रखी। अुस दिन मुझे बडा आनन्द हुआ।

अिसमें सन्देह नही कि मद्यपान करनेवालोंके सम्पर्कसे खुद फिसल जानेकी जिन्हे दहशत हो, अुन्हे अैसे अवसरोसे बचना चाहिये। परन्तु वह आत्मरक्षाके लिअे, न कि मद्यपान निषेधके कार्यक्रमके तौर पर।

कुछ लोग शराब पीनेके 'आदी' होते है। लुक-छिपकर पीते है और यह स्वीकार नही करते कि पीते हैं। अेक यह डर कि प्रतिष्ठा जाती रहेगी, और दूसरे यह सात्विक अभिलाषा कि अपनी छूत दूसरे लोगो तक न पहुचे। अिसे दंभ कहा जाय या नही? मिथ्याचार जरूर कहा जा सकता है।

धर्माधर्मका विचार बहुत सूक्ष्म होता है। अफीका जानेके लिअे मै रवाना हुआ अुससे पहले ही श्री नानजी सेठने मुझे चेतावनी दे दी थी कि 'पूर्व अफ्रीकामें आपको शराबका व्यवहार खुलकर होता हुआ देखनेको मिलेगा। अिससे आपको आघात लगेगा।' अुसी समयसे मैंने विचार कर रखा था कि मुझे वहा क्या करना है। शामके सात बजे बाद न खानेका अपना नियम मै पूर्व अफ्रीकामें नही चलाअूगा, यह तो मैंने पहले ही तय कर रखा था। शकर न खानेका नियम भी मैंने छोड दिया था। चीनीके प्रति पक्षपात तो मुझमे था ही नही। अिसलिअे स्वाद-जयकी दृष्टिसे अिस नियमकी जरूरत नही थी। अिसलिअे मनमें यह तय करके ही रवाना हुआ था कि अनजान समाजके लिअे यथाशक्ति दिक्कत न बनूगा और अैसा करते हुअे अपने जीवन-सिद्धान्तोंमें शिथिल न होअूगा। हरअेक भोजके समय आग्रहके साथ सब चीजोकी जाच करता था कि किस किसमें मास या अडा नही है। सिर्फ अुतनी ही चीजें खाता था। जहा भी शका होती वहा कड़ाअीके साथ काम लेकर वे चीजे छोड ही देता था। अिसमें सुधार अितना ही हुआ कि पनीर जैसी चीजको, जिसे मैं निर्दोष समझकर हिन्दुस्तानमें लेता था, पूर्व अफ्रीकामें जाकर छोड दिया। क्योकि मैंने देखा कि पनीर (cheese) बनानेमें रैनेट

नामक अेक पदार्थ काममें लेना पड़ता है जो मरे हुअे बछड़ोंकी अंतड़ियोंसे निकाला जाता है।

पूर्व अफ्रीकाके सफरमें खान-पानके बारेमें जो विचार मेरे मनमें चक्कर काटते रहे, अुनका बयान यहां पेश किया गया है। जिसमें यह सूचित करनेका अिरादा नहीं कि दूसरे लोग कैसा बरताव करें। यह विवेचन नहीं, केवल मनन है। अितना ही कहा जा सकता है कि जिन्हें अिसमें भी कमजोरी या शिथिलता लगती हो वे मेरा अनुकरण न करें।

पूर्व अफ्रीकामें हर जगह धर्मकी संस्थायें होती हैं। हिन्दुओंके आर्यसमाजी या दूसरे मंदिर सिक्खोंके गुरुद्वारे मुसलमानोंकी मस्जिदें, अीसाअियोंके रोमन कैथलिक मंदिर अथवा प्रोटेस्टेंट प्रार्थनागृह। हरअेक धर्मकी तरफसे पाठशालायें खोली जाती हैं। अुनमें बच्चोंको अपने पंथके सिद्धान्तोंके अनुसार धर्मकी शिक्षा दी जाती है। अिस धार्मिक शिक्षा या अुपदेशका असर किस पर कितना होता है क्या अिसका अन्दाज लगाया जा सकता है? कहा जाता है कि धनिक वर्गको धर्मकी जरूरत नहीं होती। अुनके व्यापारी संस्कार दिनभरके कारोबार और महत्वाकांक्षाओं द्वारा प्रेरित प्रतिस्पर्धायें अुनके लिअे काफी होती हैं। अुनमें थोड़ी बहुत धार्मिकता हो तो अुसका अुपयोग भिन्न भिन्न धर्मोंकी संस्थाओंको रुपयेकी मदद देनेमें हो जाता है।

और बिलकुल गरीब कंगाल लोगोंके लिअे धर्म कैसा? वे कैसे जीते हैं और रहते हैं, अिसकी ओर किसीकी नजर ही नहीं होती। विरासतमें अुन्हें जो वहम मिले हों वही अुनका धर्म है। निरक्षरोंकी सोहबतके कारण मुसीबतोंके वे अितने ज्यादा आदी हो जाते हैं कि अुन्हें दैव या भाग्यका धर्मशास्त्र मानकर ही चलना पड़ता है। अैसे लोग संकटके समय अेक दूसरेके प्रति जो सक्रिय सहानुभूति दिखाते हैं, वही अुनका धर्मानुभव है। अुसकी भी काफी कद्र करने जितनी मानसिक फुरसत अुनके पास नहीं होती।

अगर सच्चा धर्म कुछ भी बच गया हो, तो अुसका अस्तित्व मध्यम वर्गके लोगोमे पाया जाता है। वहा भी हरअेक धर्मके खास खास विधि-विधानो और विशेष विश्वासोका ही प्रभाव अधिक होता है। फिर भी अुसके पीछे शुभभावना और गहरे विचार जरूर होते हैं। धर्मके मानी है चैतन्यकी अनुभूति — यह अर्थ सच्चा हो तो अुसका साक्षात्कार अिन तीनोमें से किसी भी वर्गके व्यक्तियोको किसी न किसी समय अधेरेमें बिजलीकी चमककी तरह हो सकता है। अिसके लिअे मदिरो, रिवाजो या शास्त्रोकी जरूरत होती ही हो सो बात नही। फिर भी धर्मके ये तीनो वाहन मनुष्य-जातिके लिअे जरूरी माने गये है। अिनके द्वारा धार्मिक सस्कृतिकी रक्षा होती है और मनुष्य-जातिको अुसके कर्तव्य और जीवनक्रम दोनोका स्मरण रहता है।

भूलना नही चाहिये कि जब-जब समाजमे अनाचार फैलता है, तब तब लोग अिन तीनो वाहनोसे किसी अच्छे अिलाजकी अपेक्षा न रखकर किसी जीते-जागते सत्पुरुषके सत्सगकी आशा रखते है। परन्तु अिस कारण अगर सत्पुरुप स्वय सत्सगकी सस्था बनाकर साधुओके अखाडे चलाये, तो वहा भी जडता अवश्य घर कर लेती है। धर्म कभी मकान, ग्रन्थ, विधि-विधान या सस्थामें सुरक्षित नही रखा जा सका। फिर भी ये सारी चीजें धर्मकी रक्षाके लिअे खडी करनी ही पडती है। दु खकी बात है कि ये सारी सस्थाये मिल कर अेक शराबकी बुराअीको भी दूर न कर सकी।

कपालामे अफ्रीकियोकी कुछ महत्त्वपूर्ण सस्थायें देख ली। यहा अैसी दो सस्थाये है, जिन्होने अफ्रीकी लोगोको अच्छे खासे नेता मुहैया किये है। अेक है किंग्स कॉलेज बुडो, और दूसरी है मेकेरेरे कॉलेज। दोनो सस्थाओके शिक्षक शिक्षाके व्रती और अपने अपने विषयोके निष्णात जान पडे। अध्यापकोमें जो प्रसिद्धि-पराड्मुखता होती है या होनी चाहिये वह भी दिखाअी दी। बुडो कालेजमें प्रिंसिपल मि० कॉब और अुनके कअी साथियोसे हम मिले।

शिक्षाका असर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है संगीत और चित्रकलामें। अिसलिअे मैंने अिन चीजोंको ही खास तौर पर देखनेकी मांग की। अफ्रीकी बालकोंमें अपने आप चित्रकलाका विकास हो, अैसा प्रयत्न करनेवाली अेक युरोपियन अध्यापिकासे हमने बहुत कुछ जान लिया। विद्यार्थियोंके चित्र भी बहुतसे देखे। सभी चित्र प्राकृतिक दृश्यों (लैण्डस्केप्स) के थे। चित्रोंमें विद्यार्थियोंकी कचाअी तो होती ही है। परन्तु प्रकृति माताके विविध दर्शनोंकी सजीवता अुनमें अद्भुत ढंगसे प्रगट हुअी थी। हरअेक चित्रमें कुदरतके भिन्न भिन्न स्वभावोंके हृदय पर पड़नेवाले असरकी गहराअी थी। वहांके व्याख्यानमें मुझसे कहे बिना नहीं रहा गया कि अिन अफ्रीकी युवकोंका कुदरतके साथ जो गाढ़ परिचय है, अुसे व्यक्त करनेका साधन मानो आज तक अिनके पास नहीं था। अुसके मिलते ही अनुभूतियोंकी गहराअी अिन चित्रोंमें फूट निकली है। और यह बताता है कि अिन बालकोंको शिक्षा भले ही न मिली हो, परन्तु संस्कृतिकी सच्ची गहराअी अिनके पास छिपी हुअी थी। हमारे गोरे या हिन्दुस्तानी लड़के भी यहांकी कुदरतका दर्शन दिन-रात करते हैं। परन्तु अैसा नहीं लगता कि अुन्होंने यहांकी कुदरतका व्यक्तित्व अितनी शक्तिके साथ पकड़ा हो। आजकी हमारी संस्कृति ही छिछली हो गअी है।

"चित्र सब प्राकृतिक दृश्योंके ही क्यों हैं? पशुपक्षियों या मनुष्योंके चित्र लगभग नहीं क्यों हैं?" मैंने पूछा। मुझे कहा गया कि मनुष्यके चित्र बनानेमें अिन्हें डर लगता है। मुझे शंका हुअी कि कहीं अिसकी जड़में अिस्लामी मर्यादाका प्रभाव न हो। अन्यत्र जांच करने पर ये दोनों कल्पनायें सही नहीं लगीं। तो क्या यह अिन विद्यार्थियोंकी अुस होशियार शिक्षिकाका ही प्रकृतिके प्रति पक्षपात होगा? विद्यार्थी अेक क्षेत्रमें विकास करने लगे और किसीने अुन्हें दूसरी तरफ अभी तक मोड़ा न होगा।

हम गयाजा नामक अेक गावमे गये थे। वहाके सुन्दर मिशनरी स्कूलमे हमने मनुष्योके चित्र जी भर कर देखे। वे सब अफ्रीकी विद्यार्थियोके हाथके बनाये हुअे थे। औसाअी पौराणिक कहानियोकी मर्यादा तो वहा थी, परन्तु हरअेक चित्रमें मौलिकता और सजीवता तो थी ही।

सगीत और नृत्यके मामलेमे अफ्रीकी लोगोके असली नमूने मुझे आसामके मिकिरी लोगोके प्रारम्भिक श्रेणीके नृत्य-सगीत' जैसे लगे। कुछ हावभावोको शृगारिक कहनेके बजाय लैंगिक ही कहना चाहिये। अिनके सगीतमे ताल तो होती है, परन्तु रागकी खास खूबी दिखाअी नही दी। मुझे तो अरबी या युरोपियन सगीतके असरसे मुक्त शुद्ध अफ्रीकी सगीत सुनना था। जो शुद्ध माना जाता था, वह बहुत आकर्षक न लगा।

अफ्रीकी लोगोने अमरीका जाकर जिन 'नीग्रो स्पिरिच्युअल्स' का विकास किया है, अुनकी तारीफ दुनियाभर करती है। वे गीत भी हमें सुननेको मिले। औसाअी स्तोत्र भी। अिन परसे हमने देख लिया कि अफ्रीकी लडके-लडकियोके कण्ठमें विशेष माधुर्य ही नही होता, बल्कि अुनमे से कुछ तो अुस सगीतके भावमें तल्लीन भी हो जाते है।

दूसरे दो स्थानो पर, खासकर गयाजामें और नैरोबीके पासके अलायन्स स्कूलमें हमने अैसा नीग्रो सगीत सुना, जिसके अवयव सब शुद्ध अफ्रीकी थे, परन्तु जिसकी व्यवस्था—जिसका ढाचा अग्रेजी ढगका था। अिस सगीतका असर सचमुच भव्य और गहरा था। अफ्रीकी सगीतका कच्चा मसाला लेकर अुसमें थोडे बहुत सुधार करके अुसके गहने बनाये जाय, तो यह नया शृगार दुनियाके किसी भी सगीतमे चमक अुठने लायक है।

मेकेरेरे कॉलेजमे और अन्यत्र भी भाषाका सवाल मैंने विशेष गहराअीमे अुतरकर छेडा। मैंने देख लिया कि अग्रेज शिक्षक और अितर अग्रेज शासक सचमुच मानते है कि किसी न किसी दिन अफ्रीका महाद्वीपकी आमभाषा अग्रेजी ही होगी। हिन्दुस्तानका अनुभव अुनके

अिस विश्वासको शिथिल नहीं करता। वे कहते हैं कि, "हिन्दुस्तानमें अेक जबरदस्त संस्कृति थी। चाहे वह हमसे बिलकुल भिन्न हो, परन्तु संस्कृति तो थी ही। यहांके लोगोंके पास जो भाषायें हैं, अुनके लिये न कोअी लिपि है, न कोअी साहित्य। आधुनिक विचारों या विज्ञानको तेजीसे अपनाना हो, तो अंग्रेजी भाषा लेनी ही पड़ेगी।" मैंने कहा, "अिससे अिनकार नहीं कि वे अंग्रेजी भाषा सीखें। सवाल यह है कि वे कौनसी भाषामें अपना जीवन व्यक्त करें?" वे मानते हैं कि अफ्रीकामें सर्वमान्य हो सकनेवाली कोअी भाषा है ही नहीं। स्वाहिलीके प्रति कुछ जातियोंमें सख्त विरोध है। (कुछ और लोग कहते हैं कि यह विरोध सच्चा नहीं। अंग्रेजोंका पाला हुआ है।) स्वाहिली भाषाके विकासका प्रयत्न अंग्रेजोंने अपने हाथमें ले रखा है। यह काम अितना धीमा हो रहा है कि अिस ढंगसे कोअी मतलब हल नहीं हो सकता। अंग्रेजोंका कहना है कि अिस महाद्वीपमें अंग्रेजी संस्कृति लाये बिना काम नहीं चल सकता। चूंकि अिन लोगोंको अंग्रेजी सिखानेके जो प्रयत्न हमने किये अुनमें सफलता मिली है, अिसलिये अिसी नीतिको आगे बढ़ायेंगे।

सारे महाद्वीपमें अंग्रेजोंका राज्य नहीं है। बेल्जियन कांगोमें सर्वत्र फ्रेंच भाषा चलानेका आग्रह दिखाअी देता है। मोजाम्बिक और अंगोलामें पुर्तगाली भाषा चलानेका प्रयत्न हो रहा है। परन्तु यह सारी चर्चा मैंने अिन लोगोंके साथ नहीं छेड़ी। गोरे लोगोंने तय कर लिया मालूम होता है कि जैसे हिन्दुस्तानमें आर्य लोग आये और अुन्होंने अपनी संस्कृति चलाअी और यहांके दस्यु लोगोंको शूद्र जाति बनाकर रखा, अुनसे सेवा कराअी और खुद श्रेष्ठ बन गये, अिसी तरह अफ्रीका महाद्वीपको युरोपके लिअे शूद्रभूमिके रूपमें चुना जाय और यहांके अफ्रीकी लोगोंको धीरे धीरे युरोपियन संस्कृति और युरोपियन भाषाके असरमें लाकर यहां द्विवर्णी समाजकी स्थापना की जाय। यह बात कुछ गोरे स्पष्ट कहते हैं और कुछ मनमें ही रखते हैं।

अेक अग्रेजने साफ लिखा है कि अमरीकामें हम साम्राज्य स्थापित करने गये। थोडे दिन हमारा काम चला। परन्तु वहा अपने ही लोग होनेके कारण अुस साम्राज्यको हमें छोड देना पडा। दूसरा साम्राज्य हमने कायम किया हिन्दुस्तानमे। वह वहुत चला, परन्तु हिन्दुस्तानकी जनता सस्कारी थी, सख्या भी जवरदस्त थी, अिसलिअे वह साम्राज्य भी हाथसे निकल गया। अव ब्रिटिश जातिके विकासके लिअे सिर्फ अफ्रीकाकी भूमि रह गअी है। यहा अव तककी ढिलाअी छोडकर मजबूतीसे साम्राज्य स्थापित करेंगे, तो सौ डेढसौ वरस तो जरूर वह चलेगा। पीछे देखा जायगा।

मैं गोरोसे कहता था कि अफ्रीकामे ब्रिटिश सस्कृति चलानेकी वात छोड दीजिये, वह वात चलनेकी नही। अफ्रीकी लोगोके पास अुनकी अपनी सस्कृति है। अुसकी अवहेलना करनेके वजाय आदरपूर्वक अुसका विकास करे। अिस भूमि पर अफ्रीकी, हिन्दुस्तानी (या अेशियाअी कहू) और युरोपियन—तीन सस्कृतियोका सुन्दर समन्वय होगा। अगर आप अुच्चताका अभिमान छोड दे और हम यहासे भाग जानेका विचार छोड दे, तो हम तीनो मिलकर यहा अेक भव्य विश्वसस्कृतिकी स्थापना कर सकेंगे।

अनेक विचारशील अग्रेज स्वीकार करते है कि हिन्दुस्तानके लोगोकी मददके विना अग्रेजोका राज्य अफ्रीकामें टिक नही सकता। हम अुनसे कहते है कि केवल अग्रेजोका ही राज्य चलानेके सपने छोड दीजिये। तीन महाद्वीपोके लोग यही अिकट्ठे होकर जीवन-सहयोग करेंगे। आपके पास विज्ञानका वल है, सगठनशक्ति है। आपकी यह श्रेष्ठता आज सव लोग मान लेंगे। मगर अन्तमे मनुष्य मनुष्यके वीच असमानता न रहनी चाहिये, अितना आप मान ले और दूसरे लोगो पर विश्वास रखने लगे, तो यहा हम सव मिलकर विश्वराज्य स्थापित कर सकेंगे। हम यहाके लोगोके साथ अधिकाधिक घुलमिल जायगे, अुन्हे शिक्षा देंगे, और अपने जीवनमें भी जरूरी परिवर्तन कर लेंगे, तो

अिस भूमिमे से अैसी वक्तृता पैदा करके दिखा देंगे जिसने तमाम दुनियाको सवक मिले।

भाषाका प्रश्न अभी तक अनिर्णित ही है। खुद मुझे तो अैसा लगता है कि करोडोकी संख्यावाली जातिको अंग्रेजी जैसी बिलकुल पराअी भाषा देना असभव नही है, परन्तु कठिन काम है। अफ्रीकाकी ही दो चार भाषाओंको चुनकर अुनका विकास करना चाहिये। और अिन्हीमे से किसी अेक भाषाको अभीसे दूसरी भाषाके रूपमे सब जगह चलाना चाहिये। किसी भी जातिकी प्रगति अपनी भाषा द्वारा जल्दी होती है और स्वाभाविक क्रममे होती है। अंग्रेजी द्वारा यह सब करेंगे तो सामान्य जनताको बहुत वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पडेगी। अंग्रेजी या फ्रेंचका अेक अुपयुक्त भाषाके रूपमें भले ही प्रचार हो।

पूर्व अफ्रीकामे रहनेवाले हमारे लोग जैसे स्वाहिली या लुगाण्डा भाषा सीखते हैं, वैसे ही कुछ अफ्रीकी लोगोको गुजराती और हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिये। यह सुझाव मैंने अफ्रीकी नेताओंके सामने रखा है। अुन्होने अिस चीजको खुशीसे मजूर किया है। क्योकि अिसमें अुन्हे प्रत्यक्ष लाभ दिखाअी देता है। दुःखकी बात अितनी ही है कि अिसका महत्त्व हमारे लोगोकी समझमें नही आता। मैंने अपने लोगोसे कहा कि गुजराती पाठशालामें कोअी अफ्रीकी लडका पढने आये, तो आप अुसे लेनेसे अिनकार न कीजिये। अितनी छोटी बात मनवानेमें भी मुझे मुश्किल पडी। मुझे कहते खुशी है कि अन्तमे हमारे लोग अिसके लिअे तैयार हो गये।

कम्पालामे युगाण्डा शिक्षा-विभागके अेक अधिकारी मुझसे मिलने आये थे। अुन्हे गाधी कॉलेजकी कल्पना पसन्द नही थी। अुन्होने मुझसे सीधा सवाल पूछा कि, "मेकेरेरे कॉलेजके होते हुअे दूसरा कॉलेज आप क्यो खोलना चाहते है?"

मैंने कहा, "मै मानता हू कि वह कॉलेज केवल अफ्रीकियोके लिअे है।"

"आप अैसा क्यों मानते हैं? अुसमें तमाम जातियोंके विद्यार्थी आ सकते हैं।"

"अच्छी बात है। तो मेकेरेरेमें अंग्रेज विद्यार्थी कितने हैं?"

"अभी तो नहीं हैं, क्योंकि अुनके लिअे वहां कोअी आकर्षण नहीं है। यह कॉलेज बढ़ेगा तब युरोपियन विद्यार्थी आयेंगे।"

"अैसा हो जाय तो अिस चीजको मैं अभिनन्दनीय मानूंगा। आज अगर अिस कॉलेजमें हिन्दुस्तानी लड़के आयें, तो सबको अुसमें जरूर ले लिया जायगा या यह नियम बनायेंगे कि अितने फी सदी अफ्रीकी और अितने अेशियन लेंगे?"

"अैसा नियम बनाना भद्दा तो होगा ही, परन्तु किसी समय अैसा नियम बनाना पड़ सकता है।"

"तो फिर बाकीके अफ्रीकी और अेशियन अुम्मीदवारोंका क्या होगा?"

"यह मुश्किल तो है। परन्तु गांधी कॉलेज और मकेरेरे कॉलेजके बीच स्पर्धा न होने देनेके लिअे आप क्या करेंगे?"

"जैसा दुनियामें सब जगह होता है, वैसा ही यहां करेंगे। हरअेक कॉलेजमें कुछ खास विषयोंका विकास करेंगे। 'फैकल्टी वाअिज' जो भेद होगा, सो सब तरहसे वाञ्छनीय ही होगा। हरअेक कॉलेजके साथ जो छात्रालय होंगे, अुनमें मांसाहारी और अन्नाहारी अलग-अलग भोजनालय रखने पड़ेंगे। और कोअी भेद नहीं रहेगा। मुझे विश्वास है कि हमारे कालेजमें युरोपियन लड़के भी आयेंगे। अिनकी संख्या ज्यादा भले ही न हो, परन्तु अिसमें मुझे शंका नहीं कि हमारा आन्तर्जातीय वायुमण्डल पसन्द करनेवाले गोरे मां-बाप और विद्यार्थी जरूर निकलेंगे। हम प्रोफेसर चुनेंगे तो अच्छेसे अच्छे चुनेंगे, फिर चाहे वे किसी भी कौम या देश या धर्मके हों।

"मेरी अेक नअी कल्पना है। पूर्व अफ्रीकाका अपना विश्व-विद्यालय स्थापित न हो जाय, तब तक हमारा कॉलेज लदन और बम्बअी दोनो विश्वविद्यालयोसे सबधित होगा।"

"यह कैसे हो सकता है?" अुन्होंने चकित होकर पूछा।

"मुश्किल यही है न कि आज तक अैसा नही हुआ? या और कोअी कठिनाअी है? बम्बअी विश्वविद्यालयने लदनकी अुपाधियोको मान रखा है। लदन विश्वविद्यालयने बम्बअीकी डिग्रियोको मान रखा है। पूर्व अफ्रीका, ब्रिटेन और अिण्डिया तीनो अेक ही कॉमनवेल्थमे है, तो फिर अैसा दोहरा सम्बन्ध होनेमें क्या आपत्ति है?"

"आपत्ति तो कोअी नही दीखती। आपकी कल्पना सुन्दर है। अमलमें आ जाय तो अच्छा ही है।"

"हमारे कॉलेजका पाठ्यक्रम तैयार करते वक्त पाठ्यक्रम-समितिमें लदन युनिवर्सिटी और बम्बअी विश्वविद्यालय दोनोके प्रति-निधियोको लेगे और पाठ्यक्रम दोनो युनिवर्सिटियोसे पास करायेंगे। कुछ विषय लेकर जो पास हो, सो बम्बअी विश्वविद्यालयकी तरफ जाय, कुछ खास विषय ले सो लदन युनिवर्सिटीमें जाय। अिस तरहका अिन्तजाम आरामसे किया जा सकता है। हिन्दुस्तानका अितिहास, हिन्दुस्तानका तत्त्वज्ञान वगैरा विषय तीनो कौमोके कुछ विद्यार्थी जरूर सीखेगे।"

गूजरात विद्यापीठके अेक विद्यार्थी और श्री गिजुभाअीके शिष्य सोमाभाअी भावसार मोम्बासाके बालमदिरमें काम कर रहे है। अुन्होने बच्चोके लिअे 'अमर गाधी' नामक अेक बिलकुल छोटी गुजराती पुस्तक लिखी है। अिसका स्वाहिली अनुवाद झाझीबारवाले श्री रामभाअी और भानुभाअी त्रिवेदीने प्रकाशित किया है। अिसी पुस्तकका युगाण्डामें प्रचलित लुगाण्डा भाषामें हुआ अनुवाद कपालामे मेरे हाथो प्रकाशित करनेका अितजाम किया गया था। अिस छोटीसी पुस्तकका वहाके लोगो पर अच्छा असर हुआ है। अिस समारोहमे मैंने श्री काकूभाअीको पहचान

लिया। वे यहांके लोगोंकी भाषा बहुत बढ़िया बोलते हैं। यहांके लोगों पर अिनका प्रभाव भी अच्छा है। अेक बार अफ्रीकी लोगोंने दगा किया था, परन्तु काकूभाअीको अुसमें कोअी आंच नहीं आअी। अफ्रीकी लोगोंने अुनसे कहा, "आप चिन्ता न करें, आपको या आपकी अेस्टेटको कुछ नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहें।"

अेक बातकी चर्चा यहीं कर दूं। कुछ लोग कहते हैं कि अफ्रीकी मजदूर और घरोंमें काम करनेवाले नौकर लोग कृतघ्न होते हैं। अिन लोगोंके भलेके लिअे मेहनत करनेवाले कुछ सज्जन लोगोंकी भी अैसी राय सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं अैसी रायको स्वीकार नहीं कर सकता। मनुष्य स्वभाव सब जगह अेकसा ही होता है। अिन्सान तो क्या, क्रूर जानवर भी प्रेमके वश होते हैं।

कृतघ्नता बहुत ही थोड़े लोगोंमें दिखाअी देती है। अकसर अुपकार करनेवाले अधीर होकर कृतज्ञताकी अपेक्षा रखते हैं, और अधीर होकर ही दूसरे आदमी पर कृतघ्नताका आरोप करते हैं। जैसे हम कृतज्ञताकी जरूरतसे ज्यादा अपेक्षा रखते हैं, वैसे दूसरा आदमी भी हमसे जरूरतसे ज्यादा भलाअीकी अपेक्षा रखकर हमेशा असंतुष्ट रहता है। किसी नौकरको हम अच्छी तरह रखते हों, तो हम आशा करते हैं कि वह हमें छोड़कर नहीं चला जायगा। अुसके घर या बाल-बच्चोंकी स्थितिका हमें खयाल नहीं होता। ज्यादा आमदनीकी जरूरत हो तो बेचारा क्या करे? कभी-कभी अच्छा व्यवहार होते हुअे भी दोनों तरफ गलतफहमी होती है।

और हमें यह न भूलना चाहिये कि सैकड़ों वर्ष तक अरबों, गोरों और किसी हद तक हमारे लोगोंने भी अिन लोगोंको पकड़-पकड़कर निर्दयतासे गुलाम बनाकर बेचा था और रखा था। अिनके मनकी तो क्या, शरीरकी हालतका भी हमने विचार नहीं किया। अैसे लोग मनुष्य-जाति पर अभी तक कुछ भी विश्वास रखते हैं, यही आश्चर्यकी बात है। सांप अिन्सान पर भरोसा नहीं करता और

अिन्सान नापका भरोसा नहीं करता, जिसके पीछे हजारों वर्षका दोनोंका जातीय अनुभव है। अफ्रीकी लोगोंने दूसरे महाद्वीपोंके लोगोंके हाथों जितना कष्ट अुठाया है, अुतना किसी भी अन्य मनुष्य-जातिने नहीं अुठाया। अितने पर भी यह जाति क्रुद्ध नहीं हुअी, यह या तो अिसकी भलाअी जाहिर करती है या बचपन जाहिर करती है। किसी भी मिशनरीने आज तक नहीं कहा कि यह जाति कृतघ्न है।

कपालामें अफ्रीकी लोगोंके राजा रहते हैं। अुन्हें ये लोग 'कबाका' कहते हैं। रानीको 'नेबागर्दका' कहते हैं। हम कबाकासे मिलने गये। आदमी जवान, अुत्तम पढ़ा हुआ और सस्कारी लगा। चेहरा भी प्रभावशाली था। विलायतमें पढ़ा हुआ होनेके कारण वहाकी रीति-नीति अच्छी तरह जानता था। युगाण्डाके गावोंमें पचोंका राज थोडासा रहा होगा। वह अिस कबाकाकी देखरेखमें चलता है। सुना है अिस राजाकी वृत्तिया अच्छी हैं। परन्तु यह अनुभव होनेके कारण कि अुनके हाथमे कुछ भी करनेका बहुत अधिकार नहीं रह गया है, अुनका अुत्साह मन्द पड़ गया है। हम जब अुनसे मिलने गये तब अुनके महलमें कहीं कहीं अिमारती मरम्मतका काम हो रहा था, अिसलिअे हम सारा महल नहीं देख सके। राजमहलके आगनमें ही कुछ गोल गोल झोपड़िया देखीं। झोपड़िया देखकर मुझे आश्चर्य हुआ, परन्तु अेक तरहसे अच्छा लगा। अफ्रीकी सस्कृतिके स्मारकके तौर पर ये मिट्टीकी झोपड़िया राजमहलके पास ही है, यह यथायोग्य है। रानीकी बहन किसी कॉलेजमें अध्यापिकाका काम करती है। वे वहा सरोजसे मिली थीं। अुसी दिन दोपहरको अेक जगह राजाके प्रधान मत्री भी मिले। जैसे अनुभवी अधिकारी होते हैं वैसे ही ये थे।

मेकेरेरे कॉलेजके साथ अेक म्यूजियम है। वह कअी तरहसे देखने लायक है। अफ्रीकी लोगो द्वारा विकसित कअी कलायें वहा देखनेमें आती हैं। अुनके बर्तन, शिकारके साधन, तरह तरहके बाजे, जानवरोंके सींग,

अफ्रीकियोंके नाना प्रकारके जेवर, कपड़े, काठकी मूर्तियाँ और औजार वगैरा सब वहाँ देखने योग्य हैं। और अुन परसे सहज ही कल्पना होती है कि अिन लोगोंने अेक खास हद तक अच्छी प्रगति की थी और अुसके बाद अिनकी संस्कृति बीचमें ही ठहर या रुक गअी।

अपने आसपासकी कुदरत, पेड़, पत्ते, आबहवा, ऋतु, जंगलके जानवर और अपनी जरूरतें अिन सबका विचार करके अिन लोगोंने अपना जीवनक्रम और समाज-व्यवस्था बना रखी है। मन पर यह असर पड़े बिना नहीं रहता कि अुनकी परिस्थितिमें सबसे अच्छी व्यवस्था वही हो सकती है। अुनकी संस्कृतिका स्वरूप भले ही प्रारंभिक हो, परंतु अुसमें संस्कृतिके सभी तत्त्व हैं। यह बात निर्विवाद है कि नये ढंगसे सोचनेका तरीका बता देनेके बाद अुन लोगोंको आधुनिक संस्कृति अपनानेमें कठिनाअी नहीं हो सकती। बुद्धि-शक्ति और संगठन-शक्ति विकसानेमें ये लोग घटिया साबित नहीं हुअे। अुनके जीवनको नये ढंगकी तरफ मोड़नेकी ही बात है। आज वह पुरानी संस्कृति अुनके कबाड़की तरह बेकार पड़ी है।

जिन दिनों हम कम्पालामें थे, हमें अेक दिन रातके खानेके लिअे अेन्टेबे जाना था। वहाँका विक्टोरिया होटल सरकारकी तरफसे चलाया जाता है। अिन्तजाम बहुत अच्छा था। अूपर कहा ही गया है कि कम्पाला युगाण्डाकी देशी राजधानी है। जब कि अेन्टेबे सरकारी राजधानी है। यहाँ सरकारी नौकरी करनेवाले हमारे देशी भाअियोंकी तरफसे भोज था। यहाँ चर्चा भी बढ़िया हुअी थी।

अिसी स्थान पर आखिरी दिन सेठ नानजी कालीदासके लड़के धीरूभाअीकी तरफसे अेक बड़ा भोज था। अुनमें युगाण्डाके स्थानापन्न गवर्नर और बड़े बड़े अधिकारी भी आये थे। यह कहें तो कोअी हर्ज नहीं कि सारे समारंभका ठाठ बादशाही था। अुस पर कितना खर्च हुआ होगा, अिसका विचार करनेकी भी मैंने हिम्मत नहीं की। कोशिश करके दिमाग ठिकाने न रखा होता, तो पूर्व अफ्रीकामें

दावनोंकी भरमारसे मस्तिष्क फिर गया होता और मैं मान बैठता कि हम कोअी बड़े अमीर या महापुरुष हैं।

हम कम्पाला गये तब यह देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ कि वहांके मेयर पंजाबके हमारे देशी युवक भाअी थे। माननीय श्री मैनी यहांके पहले हिन्दुस्तानी मेयर हैं। अपनी होशियारीसे अुन्होंने अपने लोगों पर, और गोरों पर भी, अच्छा असर डाला है। हमारे ही अेक देशवासीके बनाये हुअे यहांके सुन्दर टाअुनहॉलको देखनेके लिअे श्री मैनीके साथ जानेमें मुझे बहुत आनन्द हुआ।

कम्पालामें हमारी सारी व्यवस्था की थी श्री नानजीभाअीके कुशल साझेदार श्री छोटाभाअी पटेलने। अपने मीठे आतिथ्यसे श्री रामजीभाअी लद्धाने हमें सहज ही अपना लिया था। अुनके घरके आल्बम क्या थे, सारे कुटुम्बका अितिहास था।

२४

अफ्रीकाके गांवोंमें

किसी भी देशमें यात्रा पर जाते हैं, तो वहांकी कला, कारीगरी और सौंदर्यके नमूनोंके तौर पर प्रेक्षणीय स्थान देखते हैं, बड़े-बड़े शहर देखते हैं, कारखाने देखते हैं और अिनके अलावा वहांके खास खास व्यक्तियोंसे मिलते हैं। अितनेसे अुस देशकी विशेषता ठीक-ठीक ध्यानमें आ जाती है। लेकिन अगर अुस देशका वातावरण, अुसकी असली हालत और लोक-स्वभाव देखना हो, तो अुसके मामूली देहातमें ही जाना चाहिये। और वह भी आम रास्ता छोड़कर यदि अेक तरफ हो, तो ही अुस देशकी आत्मा 'अपने तनका विवरण' दे सकती है।

जून महीनेके आखिरी दिन हमें अफ्रीकाके तीन गांव देखनेका अवसर मिला। कम्पालासे साढ़े नौ बजे चलकर हमने आड़े रास्तेसे बारह मीलका सफर किया और 'गयाजा' पहुंचे। वहां हमारे देशमें

जाकर बसे हुअे सादे, मेहनती और साखवाले दुकानदार देखे। हमारे स्वागत-सत्कारमे सभी कुटुम्बी जन अिकट्ठे हुअे थे। मसालेदार दूध और पेडे वगैरा स्वागतके लिअे तैयार थे। परतु हमें विशेष आनन्द यह हुआ कि वहाके हिन्दुस्तानी लोगोने हमारा आग्रह पहलेसे जानकर आसपासके अफ्रीकियोको भी अिकट्ठा कर लिया था। देहातमें रहनेवाले भारतीयो और ग्रामीण अफ्रीकियो दोनोका सहयोग प्रयागमे मिलनेवाले गगा-यमुनाके प्रवाह जैसा लगता था। गेहूवर्णी और कालेके मिश्रणके कारण ही नही, परतु रहन-सहनके भेदके कारण अलग अलग रहनेका रिवाज होते हुअे भी ये दोनो किस प्रकार कुछ न कुछ ओतप्रोत हो जाते है, यह देखनेका मौका मिलनेके कारण। सभी भारती यहाकी लुगाडा भाषा अच्छी तरह बोल सकते थे। और अफ्रीकी लोग मानो हिन्दुस्तानके जातिभेदके आदी हो, अिस ढगसे अलग रहनेमे और फिर भी सहयोग करनेमें कोअी कठिनाअी महसूस नही करते थे। यहा मैंने दोनोके लिअे छोटासा भाषण दिया।

मेरे भाषणकी स्थिति यह होती है कि मै पहलेसे तैयारी नही करता। आखिरी वक्त श्रोताओका समूह देखकर वातावरणके अनुकूल जैसा सूझता है बोल देता हू। कभी कभी हमारी पार्टीमें शरीक होकर साथ आनेवाले लोगोका खयाल मनमें रखकर भी बोलता हू। और कभी कभी अैसी क्षण अकल्पित रूपमे कोअी विचार मनमें आ जाता है, तो फिर श्रोताओका या प्रसगका कुछ भी विचार किये बिना बोल ही देता हू। या यो कहू तो कोअी हर्ज नही कि अैसे किसी विचारका अुदय हो जाता है, तब और कुछ बोला ही नही जाता। भले ही बुद्धि कहती हो कि यह विचार यहाके योग्य नही है, परतु विचार अपना सोचा हुआ ही कर लेता है।

गयाजामें मैंने प्रारभ किया कि अिस देशमें तीन महाद्वीपोकी सस्कृति अेकत्र हुअी है। अेशिया महाद्वीप महान पैगम्बरोकी आध्यात्मिक वृत्तिकी परपराका क्षेत्र है। चीनमे कन्फ्यूशियस और लाओत्जेके अुपदेशोमें

से अेक समूची सस्कृति फली-फूली। अरबस्तानमें अब्राहमसे लेकर महम्मद और अली तक कअी पैगम्बर वहाके लोगोको शिक्षा देते रहे। और पेलेस्टाअिन तो अनेक छोटे वडे नवियोका घना जगल रहा। अीसा मसीह अिसी फसलके अेक पके हुअे फल थे। मध्य अेशिया और अीरानमें अैसे ही असख्य नवी हो गये है, परन्तु अुनमें से अनोखा रास्ता वताया अशो जरथुस्त्रने। अिनकी गाथाओमें वैदिक परम्पराकी अेक भिन्न शाखा हमें देखनेको मिलती है। और हिन्दुस्तान तो मानव-जातिके अितिहाससे लेकर आज तक अखड चली आ रही ऋषि-मुनियोकी और सत-महात्माओकी परम्पराकी भूमि ही है। अिन सब धर्मप्रवर्तकोने मनुष्य-जातिको आध्यात्मिक सस्कृति दी और अुसकी आत्माको सुसस्कृत किया। यह है अेशियाकी खासियत।

युरोप महाद्वीपने विज्ञान और सगठनका अद्भुत पराक्रम वताया है। यह पुरुषार्थ अभी पूरा नही हुआ, परतु ये दोनो शक्तिया अब युरोपकी विशेषता नही रही। अिनका फैलाव सारी दुनियामें होने लगा है। विज्ञानकी साधना आत्माकी साधनासे वहुत घटिया हरगिज नही कही जा सकती। आत्माकी साधना अन्तरात्माका साक्षात्कार कराती है, जब कि विज्ञानकी साधना सृष्टिके अणु और अुनकी अनन्तता, दोनो रूपोकी गहराअी और विस्तारका दर्शन कराकर सर्जनहारकी झाकी कराती है। अिस विज्ञानने तमाम ससार पर अपना अच्छा वुरा असर डाला है।

अव अफ्रीकामें मानव जातिकी अन्तिम साधना शुरू होगी। अिसका प्रारभ गाधीजीने अिसी भूमिमें किया था। काले झुलू लोगोका शिकार करने निकले हुअे गोरोको रोका तो नही जा सकता था, परतु अुस 'युद्ध' (!) में मददगार वनकर घायल झुलूओकी सेवा करनेके लिअे गाधीजीने हिन्दुस्तानियोका अेक दल तैयार किया और विश्व-वधुत्वका प्रारभ किया। सेवा और सत्याग्रह द्वारा सज्जन दुर्जन सवकी अेकसी सेवा करनेका और मानवताका विकास करनेका सर्वोदय पन्थ गाधीजीने अफ्रीकामें शुरू किया। अव यहा युरोपके गोरो, और हिन्दु-

स्तानके गेहुआ रगके लोगो और अफ्रीकाके काले लोगोको वर्णभेद भूलकर, अूच-नीचका फर्क मिटाकर, विश्व-कुटुम्ब स्थापित करनेकी कोशिश करनी है। यह मानवता सिद्ध करनेके लिअे लोगोका मलिन स्वार्थ दूर होना चाहिये। जीवनशुद्धिके विना हृदय-समृद्धि असभव है। यह जीवनशुद्धि शुरू करनेके लिअे गाधीजीने खादीकी दीक्षा दी है। गाधीजीने कहा है कि शोपणरहित अहिंसक समाजकी स्थापना ग्रामोद्धारसे ही हो सकती है और हिन्दुस्तानमे ग्रामोद्धारका आधार खादी है।

प्रकृतिकी कृपासे, हिन्दुस्तानी लोगोकी मददसे और अफ्रीकी लोगोकी मेहनतसे युगाडामे वहुत अच्छी कपास होती है। यहाके ग्रामीण लोगोको सतत अुद्योगकी जरूरत है। गोरे लोगोकी या हिन्दुस्तानियोंकी पूजी पर आधार रखनेके वजाय देहातके लोग खादीको अपनायेंगे, तो यहा भी समय पाकर विश्व-बन्धुत्वकी स्थापना अुत्तम रूपमें हो सकेगी।

अिसी सभामें किसी अफ्रीकी जमातका अेक मुखिया हाजिर था। अिधर अिन मुखियोको अग्रेज लोग चीफ कहते हैं। अुसने हमें धन्यवाद देनेका काम अपने जिम्मे लिया। हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके वीचके स्नेह-सवधके वारेमें अुसने अितना सुदर अुल्लेख किया और अपने हृदयके भाव व्यक्त करते हुअे भी राजनैतिक जिक्र अुसने अैसी खूवीसे टाला कि मुझे खयाल हुआ कि अुचित अवसर मिले तो यह आदमी अच्छा खासा राजनैतिक पुरुष वन सकेगा।

यहासे हमारी मडलीके अधिकाश लोग वोम्बोकी तरफ आगे चले गये। हम रास्तेमें पडनेवाले अेक मिशन स्कूलको देखने गये। अिस पाठशालाको चलानेवाली युरोपियन महिला यहा सेवा करते करते बूढी हो गअी है। अफ्रीकी लोगोके वीच अकेले रहकर ये मिशनरी लोग पाठशालाओकी स्थापना करते हैं। जो जमीन मिल जाती है अुस पर सख्त मेहनत करके अुसे नन्दनवन वना देते हैं। अत्यत सादा झोपडोमे रहते हुअे भी अुनमें कोशिश करके सुघडता और सुन्दरता स्थापित कर देते हैं और हरअेक आदमीने

कहलवा लेते है कि जहा बुद्धि, हृदय, लगन और परिश्रम है, वहा लक्ष्मी और सरस्वती प्रसन्नतापूर्वक स्थायी बन ही जाती है।

अिस पाठशालामे भी हमने सगीत और चित्रकलाकी माग की। मैंने शुरूमें ही कह दिया था कि अग्रेजी राग और अफ्रीकी शब्दोंवाला सगीत मुझे नहीं चाहिये। अग्रेजी चित्रकलाकी नकलें भी मुझे नही देखनी। सस्थामें घूमते-घूमते मैंने देखा कि कागजो पर ही नहीं, बल्कि दीवार पर भी जीवन-कथा अीसाकी, परतु चित्रकलाकी आत्मा शुद्ध अफ्रीकी — अैसा कीमिया यहा सब गया है। सगीतमे भी अिन लोगोंने अफ्रीकी रागोंमे अीसाअी भाव प्रगट करनेके लिअे तरह तरहके समिश्रण पैदा किये है। सादासे सादा रागोंमें से जटापाठ और घनपाठ कानमें लेकर अिन लोगोने भावोंकी कुछ अैसी सतृप्ति की थी कि जिसने यह सब कुछ साधना की थी, अुस कलाकारको बुलाकर बधाअी दिये बगैर मुझसे रहा नहीं गया।

बोम्बोमें अेक भाषणसे निपटकर दुग्ध-पान करके हम बोबुलेन्जी गये। वहा हमें भोजन करना था। अफ्रीकाके लगभग मध्यप्रदेशके अेक मामूली गावमें गुजराती भाअियोके बीच स्वदेशी ढग पर भोजन करते हुअे मुझे असाधारण आनन्द हुआ। यहाकी सभामे आसपासके मिशनरी जाग्रत कुतूहलके साथ आये थे।

स्वाभाविक तौर पर मेरे भाषणका अेक खास भाग अुन लोगोको ध्यानमें रखकर दिया गया था। हम लोग अैसा नही मानते है कि 'हमारा ही धर्म सच्चा है। ज्ञान – सूर्य हमारे ही पास है। बाकीकी सारी दुनिया अज्ञानके अधकारमे डूबी हुअी है, भ्रममें पडी हुअी है। हमारी यह भावना है कि हम सब धर्मोको स्वीकार करते है, सभी धर्म सच्चे है, अच्छे है और अिसलिअे हमारे है। यह बात मैंने सौम्य शब्दोंमें रखी। हम लोगोको सेवा द्वारा ही साबित करना चाहिये कि, 'हमारा यहा होना अफ्रीकी लोगोके लिअे अुपकारक और मगल-दायक है', यह बात मैंने यहा भी जोर देकर कही।

लौटते वक्त श्री छोटाभाअीके साथ बहुतसी बातें कर ली। आर्य-समाजका हिन्दुस्तानमें क्या स्थान है, और यहा अुसका मिशन क्या

हो सकता है, हिन्दू-मुस्लिम सबधोमें सुधार कैसे हो ? हिन्दुस्तानी और अग्रेज मिलकर अिस देशकी सेवा किस तरह कर सकते है ? . वगैरा सवालों पर बहुत विस्तारसे जाकर हमने चर्चा की। सारी बातचीत खानगी होनेके कारण कुछ भी सकोच न रखकर गुणदोषकी मीमासाके साथ हमने सारा अूहापोह कर लिया।

शामको भाटिया चेम्बर्समें भोज था। वहा भाषणके बाद अच्छे प्रश्नोत्तर हुअे। काग्रेसका आन्दोलन, हमारा राष्ट्रीय झडा वगैरा कअी प्रश्नोका अितिहास और अिन चीजोका रहस्य स्पष्ट करनेका अिस प्रकार सुन्दर अवसर मिला। खानेसे पहले कम्पालाकी कुछ लडकिया यह कहकर मिलने आअी थी कि 'हमें आकाशके तारे दिखाअिये'। बादलोने हमें यह आनन्द नही लेने दिया, परतु लडकियोमें तारा-दर्शनका यह अुत्साह देखकर मुझे आनन्द हुआ।

२५

नीलोत्री

१

अफ्रीकाकी यात्रा करनेमें अेक अुद्देश्य था अुत्तर-पूर्व अफ्रीकाकी माता समान अुत्तरवाहिनी नील नदीके अुद्गम-स्थान 'नीलोत्री' का दर्शन। गंगोत्री और जमनोत्रीकी यात्रा करनेके बाद अभी अभी महसूस होने लगा था कि नीलोत्रीकी यात्रा अवश्य करनी चाहिये। वह दिन अब निकट आ गया। जुलाअीकी पहली तारीख हुअी और हमने कम्पाला छोड़कर जिंजाके लिअे प्रस्थान किया। अपने जरूरी कामके कारण श्री अप्पासाहब आज नैरोबी वापस चले गये और हम मोटर लेकर अपने रास्ते चल पड़े।

कम्पालसे जिजाका रास्ता बड़ा मनोहर है। कभी छोटी छोटी और चौड़ी पहाड़ियां चढ़ते-अुतरते हमारी मोटर हमारे और नीलोत्रीके बीचका ५२ मीलका अन्तर काटती गयी और हमारी अुत्कंठा बढ़ाती गयी। कितना बड़ा सौभाग्य कि जिजा तक पहुंचनेसे पहले ही हमारा संकल्प पूरा हुआ और हमें नीलोत्रीके दर्शन हुअे। दाअीं ओर विक्टोरिया अथवा अमरन्नरका सरोवर दूर तक फैला हुआ है और अुसमें से स्वाभाविक लीलासे छलांग मारकर नील नदी अस्तित्वमें आ जाती है। हम नदीके पुल पर पहुंच गये। मोटरसे अुतरे और दाअीं तरफ मुड़कर रिपन फाल्सके नामसे प्रसिद्ध छोटेसे प्रपातमें हमने नील नदीके दर्शन किये।

प्रपातके तुषारसे पैर ढक गये हैं। सिर पर मुकुट चमक रहा है और पीछे अेक हराभरा पेड़ मुकुटको अधिक सुन्दर बना रहा है। देवीके दोनों हाथोंमें धानकी पूलियां हैं और मुंह पर प्रसन्न वात्सल्य खिल रहा है। अैसी मूर्ति कल्पनाकी नजरमें आअी। मूर्ति नील रंगकी नहीं थी परंतु श्याम वर्णकी तरफ जरा झुकती हुअी गोरी ही थी। सारे शरीर परसे पानीकी धारा बह रही थी और अिससे देवीके मुख परका हास्य अधिक सुन्दर लग रहा था।

जी भरकर दर्शन करनेके बाद हमने बाअीं ओर देखा। दाअीं ओर पानी हमारी तरफ दौड़कर चला आ रहा था। बाअीं तरफका पानी हमसे दूर दूर दौड़ा जा रहा था। दोनोंका असर बिलकुल अलग था। हम जानते थे कि जैसे दाअीं ओर रिपन प्रपात है, अुसी तरह बाअीं तरफ जरा दूर ओवन प्रपात है। हमारे देशमें अुसे कोअी प्रपात कहेगा ही नहीं। पानीकी सतहमें कुछ फुटका अन्तर पैदा हो जानेसे ही कहीं प्रपात बन जाता है? प्रपात तभी कहा जा सकता है, जब पानी धमाधम पड़ता हो। जितना पड़े अुतना जोरसे वापस अुछलता हो और फेन और तुषारके मेघ आसपास नाचते हों।

यात्राके अन्तमें जब तुरन्त जाकर मंदिरोंमें दर्शन करते हैं, तब यात्रियोंकी परिभाषामें अुसे 'धूल-भेंट' कहते हैं। यात्रा पैदल की हो, सारे शरीर पर धूल छाअी हो और अुत्कठाके कारण अुसी हालतमें दौडकर अिष्टदेवके चरणोंमें गिर रहे हों या मिल रहे हों, तब अुसे 'धूल-भेंट' कहा जा सकता है। हम तो मोटरके वेगसे आये थे। सबेरे थोडीसी बरसात हो जानेके कारण रास्ते पर भी धूल नहीं थी। अिसलिअे अिस प्रथम दर्शनको 'गीली-भेंट' ही कहा जा सकता है। अिसे 'भाव-भीनी' कहें तो ही वह अधिक यथार्थ वर्णन होगा। मूर्ति गीली, जमीन गीली, आंखें गीली और अनेक मिश्रित भावोंसे सराबोर हृदय भी गीला। 'अद्य मे सफलम् जन्म, अद्य मे सफला क्रिया' यह पंक्ति जिसने पहले पहल गाअी होगी, वह मेरे जैसे असंख्य यात्रियोंका प्रतिनिधि था।

नीलमाताके ये प्रथम दर्शन हृदयमें संग्रह करके हमने जिजामें प्रवेश किया। विद्यापीठके किसी समयके मेरे विद्यार्थी अेडवोकेट श्री चन्दुभाअी पटेलके यहां हमारा डेरा था। पुराने विद्यार्थियोंके यहां आतिथ्य अनुभव करना जितना आनन्ददायक होता है, अुतना ही बडा और कठिन होता है। घरकी अच्छीसे अच्छी सुविधाअें हमें देकर खुद अडचन भुगतनेमें वे आनन्द मानते होंगे, परन्तु हमें संकोच और परेशानी हुअे बगैर कैसे रह सकती है?

अब हम नीलोत्रीके बाकायदा दर्शनके लिअे रवाना हुअे। जहां अमरसरका पानी पत्थरोंकी किनारी परसे नीचे अुतरता है और नील नदीको जन्म देता है वहां हम पहुंचे। जल्दी-जल्दी पानी तक पहुंच कर पहले पैर ठंडे किये। आचमन करके हृदय ठंडा किया और क्षणभरके लिअे अुस स्थानका ध्यान किया। मेरी आदतके अनुसार अीशोपनिषद्, माडुक्य अुपनिषद् अथवा अघमर्षण सूक्त मुहसे निकलना चाहिये था, परन्तु अेकाअेक श्लोक निकला —

ध्येय सदा सवितृ-मडल-मध्यवर्ती
नारायण सरसिजासन-सन्निविष्ट ।
केयूरवान् मकर-कुडलवान् किरीटी
हारी हिरण्मय-वपुर् धृत-शख-चक्र ॥

नील नदीके किनारे अलग अलग समय, अलग अलग जगह तीन वार नीलाम्बाका ध्यान किया और हर वार मुहसे अचूक यही श्लोक निकला। अव मुझे मिश्र देशकी सस्कृतिके पुराणोमें यह खोज करना है कि क्या नील नदीका भगवान सूर्यनारायणके साथ कोअी खास सवध है?

मै सस्कृतका कवि होता तो अिस नदीके पानीमें रहनेवाली मछलियो, अिस पानी पर अुडते हुअे वातूनी पक्षियो और अुसके किनारे लोटपोट होनेवाले किवोका (हिपोपोटेमस) की धन्यताके स्तोत्र गाता। नील नदीके किनारे जो वाटरवर्क्स हैं, अुनकी देखभालके लिअे नियुक्त अेक गुजराती भाअीसे, अुन्हींकी भाषामें ओर्ष्या प्रगट करके मैने सतोष मान लिया "आप कितने धन्य है कि आपको दिनरात नीलोश्रीके दर्शन होते हं और यहासे न हटनेके लिअे आपको वेतन दिया जाता है!" अुस भाअीको अैसी धन्यता महसूस होती थी या नही, यह देखने या पूछनेके लिअे मै वहा न ठहरा।

मेरे खयालसे नदिया दो प्रकारकी होती है जो पहाडसे निकलती है और जो सरोवरसे निकलती हैं। पहलीको मै शैल-जा कहूगा या पार्वती, और दूसरीको सरो-जा (दुनियाभरके कमल, आशा है, मुझे क्षमा करेंगे)। शैल-जा नदियोका अुद्गम वहुत छोटा, वारीक और लगभग तुच्छ जैसा होता है। अिसलिअे अुनके विषयमें आदर अुत्पन्न करनेके लिअे वडे वडे माहात्म्य लिख डालने पडते है। गगोत्रीके पास गगाका प्रवाह कभी कभी अितना छोटासा हो जाता है कि मामूली आदमी भी अेक किनारे अेक पैर और दूसरे किनारे दूसरा पैर रखकर खडा रह सकता है। सरो-जा नदियोकी यह वात नहीं है।

विशाल और स्वच्छ वारि-राशिमें से जितना जीमें आये अुतना ढेर खींचकर वे अस्तित्वमें आती हैं और अुनके चलने और बोलनेमें गर्भ-श्रीमन्ताअीका आत्मभान होता है।

नीलोत्रीकी यात्रा पर आनेका अेक और भी अदम्य आकर्षण था। महात्मा गांधीके पार्थिव शरीरको अग्निसात् करनेके बाद अुनके फूल (अस्थि) और चिता-भस्मका विसर्जन हिन्दुस्तान और संसारके बहुतसे पुण्य स्थानोंमें किया गया था। अुन्हींमें से अेक स्थान नीलोत्री है।

हम जिंजा नगरीके सार्वजनिक मेहमान होनेके कारण यहांके लोगोंने हमारी अुपस्थितिसे 'लाभ अुठाने' का निश्चय किया। जिस जगह चिता-भस्मका विसर्जन किया गया था, अुसीके पास अेक कीर्तिस्तंभ खड़ा करनेका निश्चय हो चुका था। अिसलिअे अुसकी बुनियाद मेरे हाथों रखनेका प्रबन्ध किया गया।

२ जुलाअी, १९५० अर्थात् अधिक आषाढ़ कृष्णा तृतीयाके दिन सवेरे सैकड़ों लोगोंकी अुपस्थितिमें मैंने यह विधि पूरी की। अिस अुत्सवके लिअे गांधीजीका अेक बड़ा चित्र सामने रखा गया था। अुसकी नजर मुझ पर पड़ते ही मैं अस्वस्थ हो गया। वैदिक विधि पूरी होनेके बाद मैंने गांधीजीके जीवनके बारेमें और अफ्रीका ही अुनकी तपोभूमि होनेके बारेमें थोड़ासा प्रवचन किया। फोटो वगैरा लेनेकी आधुनिक रस्मसे मुक्त होते ही किनारेके अेक पत्थर पर बैठकर नीलमाताके सुभग जलप्रवाह पर मैंने टकटकी लगाअी और अन्तर्मुख होकर ध्यान किया। अुस समय मनमें विचार आया कि अिस स्थान पर युरोप, अफ्रीका और अेशिया तीनों महाद्वीपोंके, बल्कि अमरीकाके भी, महान और साधारण आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष यहां आयेंगे, सर्वोदयके ऋषि महात्मा गांधीके जीवनकार्य और अन्तिम बलिदानका यहां चिन्तन करेंगे और मनुष्य मनुष्यके बीचका भेदभाव भूलकर विश्व-कुटुम्बकी स्थापना करनेका व्रत लेंगे। भविष्यके अिन तमाम आगामी प्रवासियोंको मैंने यहांसे प्रणाम भेजे।

२

नील नदीकी दो शाखायें हैं। श्वेत और नील। जिसका अुद्गम जिंजाके पास है वह सफेद शाखा है। नील शाखा भी सरो-जा ही है। अीथियोपिया, जिसे हम लोग हब्शियाना (अेबिसीनिया) कहते हैं, देशमें ताना नामक अेक सरोवर है। अिस सरोवरमें से नील शाखा निकलती है। ये शाखायें लाखो वरससे बहती हैं और अिनके किनारे रहनेवाले पशु-पक्षियो और मनुष्योको जलदान करती आअी हैं। परन्तु युरोपियन लोगोको जिस चीजका पता न हो वह अज्ञात ही कही जायगी! अेक तरहसे अुनका कहना सच भी है। दूसरे लोग नदीके किनारे रहते हुअे भी अिसकी खोज न करें कि वह नदी असलमें आअी कहासे और आगे कहा तक जाती है, तो यह नही कहा जा सकता कि अुन लोगोको सारी नदीका ज्ञान है। अुदाहरणके लिअे तिब्बतके लोग मानसरोवरवाली सानपो नदीको जानते हैं। वह नदी पूर्वकी तरफ बहती बहती जगलमें गायब हो जाती है। अधिकसे अधिक अितना ही वे लोग जानते हैं। अिस तरफसे हमारे लोग ब्रह्मपुत्रका अुद्गम ढूढते ढूढते अुसी जगलके अिस तरफके सिरे तक पहुचे। आगेका वे कुछ नहीं जानते। जब अनेक अग्रेज प्रतिकूल परिस्थिति होते हुअे भी अिन जगलोमें से गुजरे, तभी वे यह स्थापित कर सके कि तिब्बतकी सानपो नदी ही अिस ओर आअी है और दूसरी कअी छोटी बडी नदियोका पानी लेकर ब्रह्मपुत्र हुअी है।

नील नदीका अुद्गम ढूढनेवालोमें मि० स्पीक अन्तमें सफल हुअे और अुन्होने साबित किया कि जिंजाके पास सरोवरसे जो नदी निकलती है वही मिश्र-माता नील है।

ये स्पीक साहब भारत-सरकारकी नौकरीमें थे। अिन्हें समाचार मिले कि प्राचीन हिन्दू मिश्र अर्थात् मौजूदा अिजिप्त देशके बारेमें बहुत जानते थे। अुन्होने जाच करके मालूम किया कि सस्कृत पुराणोमें कहा है कि नील नदीका अुद्गम मीठे पानीके अमरसरमें से हुआ है।

अिसी प्रदेशमें चन्द्रगिरि है। ठेठ दक्षिणमें जाने पर मेरु पर्वत स्थित है, वगैरा। पुराणोंमें से कुछ संस्कृत श्लोकोंका अुन्होंने अनुवाद कराया और अुनके आधार पर नीलके अुद्‌गमकी खोज करनेका मनसूबा बनाया। द्रव्यबल और मनुष्य-बलके बिना अैसे पुरुषार्थ सफल नहीं हो सकते, अिसलिअे अुन्होंने हिन्दुस्तानके अुस वक्तके वाअिसरॉयसे मदद ले ली।

अिस तरह जुटाया हुआ रुपया और सैनिक आदमी लेकर वे पहले झाँझीबार गये और वहांसे सब तैयारी करके केनिया प्रदेश पार करके युगाण्डामें गये। वहां अुन्हें अमरसर वाला 'अच्छोद' सरोवर मिला। (अच्छ = सुअच्छ = स्वच्छ। अुद = अुदक = पानी। मीठे पानीके सरोवरको अच्छोद कहा जा सकता है।) और वहांसे निकलनेवाली नील नदी भी मिली। अुन्होंने यह प्रमाणित किया कि सूडान और मिश्रमें बहनेवाली यही नदी है। अिस बातको अभी पूरे १०० वर्ष भी नहीं हुअे।

अफ्रीका महाद्वीप सचमुच वहां रहनेवाली कअी अफ्रीकी जातियोंका मुल्क है। अिस प्रदेशके बारेमें अगर युरोपियन लोगोंको काफी जानकारी नहीं थी, तो यह कोअी वहांके लोगोंका दोष नहीं था। युरोपकी तरफसे और खास तौर पर अरबस्तानके लोग अफ्रीकाके किनारे जाकर वहांके लोगोंको पकड़ लेते और अपने अपने देशमें ले जाकर गुलाम बनाकर बेचते। पकड़े हुअे लोगोंमें स्त्रियां भी होतीं और बच्चे भी होते, परन्तु लुटेरे अुनका अिन्सानकी तरह खयाल क्यों करने लगे?

कुछ मिशनरी लोगोंको सूझा कि अैसे जंगली लोगोंकी आत्माके अुद्धारके लिअे अुन्हें अीसाअी बनाना चाहिये। जिस गहन प्रदेशमें लोभी व्यापारी भी जानेकी हिम्मत नहीं करते, वहां ये अुत्साही धर्म-प्रचारक पहुंच जाते और वहांकी भाषा सीखकर अीसा मसीहका 'शुभ सन्देश' अुन्हें सुनाते।

आगे चलकर युरोपके राजाओंने अफ्रीका महाद्वीपको आपसमें बाट लिया। जिसमें नियम यह रखा कि जिस देशके मिशनरियोंने जितना जिलाका ढूंढ निकाला (!), अुतना जिलाका अुस देशकी सम्पत्ति माना जाय। जिसमें अेक बार अैसा हुआ कि स्टैनली नामक मिशनरीने अिंग्लैंडके राजासे कांगो नदीके क्षेत्रका प्रदेश 'ढूंढने' के लिअे मदद मांगी। अिंग्लैंडके राजा यानी पार्लियामेण्टने यह मदद नहीं दी, अिसलिअे वह बेल्जियमके राजाके पास गया। राजा लिओपोल्ड लोभी और अुत्साही था। अुसने सब मदद दी। परिणामस्वरूप जब अफ्रीका महाद्वीपका बंटवारा हुआ, तब कांगो नदीके क्षेत्रका मुल्क बेल्जियमके हिस्सेमें गया। यह बेल्जियन कांगोका जिलाका लगभग हिन्दुस्तान जितना बड़ा है। वहांसे रबर प्राप्त करनेके लिअे गोरोंने वहांके लोगों पर जो जुल्म गुजारे हैं, अुनका वर्णन पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, अैसा कहना अल्पोक्ति होगी। भावनाशील मनुष्य वह वर्णन पढ़े, तो अुसका खून ही जम जाय। फिर भी गोरोंने वहांके लोगोंको धीरे धीरे 'सुधारा' जरूर। अब वे लोग कपड़े पहनते हैं, बालोंमें तरह तरहकी मांगें निकालते हैं, और शराब भी पीते हैं। अिस तरह अधिकांश अीसाअी बन गये हैं।

जिसके खर्चसे जो प्रदेश ढूंढा गया अुसीका वह देश हो जाय, अिस हिसाबसे नील नदीके अुद्गमकी तरफका सारा युगाण्डा प्रदेश हिन्दुस्तानके हिस्सेमें आना चाहिये था। परन्तु हिन्दुस्तान जैसे गुलाम देशको भला अधिकार कैसा? अच्छा हुआ कि अिस पापके बटवारेमें हमारे हिस्सेमें कोअी भाग नहीं आया। हमारे यहांके लोगोंने युगाण्डामें जाकर कपासकी खेती बढ़ाअी। शासकोंकी मददसे वहां बड़ी बड़ी अेस्टेटें बनाअीं और करोड़ों रुपये कमाये। हमने भी वहांके लोगोंको सुधारा है। दरजीका काम, बढ़अीगिरी, राजका काम, रसोअीका काम वगैरा धंधोंमें हमने अुनकी मदद ली, अिसलिअे धीरे धीरे वे लोग प्रवीण हो गये। हिन्दुस्तानके कपड़ेकी और विलायतसे आनेवाली

शराब आदि तरह तरहकी चीजें बेचनेकी दुकाने खोली और अुन लोगोको जीवनका आनन्द अनुभव कराया।

गोरे और गेहुअे रगके लोगोके अिस पुरुषार्थकी साक्षी स्वरूप नील नदी यहा चुपचाप वहती जाती है और अपना परोपकार अपने दोनो किनारो पर दूर तक फैलाती जाती है।

हमारे देशमे गगा नदीका जो महत्त्व है वही महत्त्व, अधिक अुत्कट रूपसे, अुत्तर-पूर्वी अफ्रीकामें नील नदीका है। दुनियाकी सबसे महत्त्वपूर्ण सस्कृतियोमे अिजिप्तकी मिश्र अथवा मिसर सस्कृतिका स्थान है। और अुसका प्रभाव युरोपके अितिहास पर ही नही, परन्तु अुसके धर्म पर भी पडा है। हमारे यहा जैसी चातुर्वर्णी सस्कृति फैली, वैसी ही सस्कृति प्राचीन मिश्र देशके अितिहासमे भी देखनेको मिलती है, और अुसका प्रतिबिंब ग्रीक तत्त्ववेत्ता अफलातूनकी समाज-रचनामें पडा हुआ मिलता है।

चार वर्णवाली सस्कृति अुस जमानेके लिअे चाहे जितनी अनुकूल हो और भव्य मानी जाती हो, परन्तु तूफानी युरोप अुसे नही पचा सका। युरोपमे जो औसाअी धर्म फैला है, अुसका पालनपोषण मिश्रमें कम नही हुआ है। परन्तु वहा विकसित हुआ वैराग्य और तपस्या और देहदमन बहुत आजमानेके बाद युरोपने छोड दिया। अैसा होने पर भी युरोपकी सस्कृतिका मूल खोजने जाय, तो वह अिजिप्तके अितिहासमे जाना पडता है और अिस अितिहासका निर्माण अेक अश तक नील नदी पर आधारित है।

जिस तरह नदीका पानी आगे बहता जाता है, पीछे नही जा सकता, अुसी तरह यह चीज हमारा ध्यान आकर्षित किये बिना नही रहती कि अिजिप्तकी सस्कृति नील नदीके अुद्गमकी तरफ युगाण्डा प्रदेशमें नही पहुच सकी। अगर अिजिप्तके लोग अमरसरके आसपास आकर बसे होते, तो अफ्रीकाका ही नही परन्तु दुनियाका अितिहास और ही तरहसे लिखा जाता।

हमारे यहा हम नदियोंके जितने अुद्‌गम देखते हैं, वे सब जगलमें या दुर्गम प्रदेशमे होते हैं। और ये अुद्‌गम छोटे भी होते है। नील नदीका अुद्‌गम चौडा है, अिसकी तो कोअी बात नही। परन्तु अुद्‌गमके काव्यमें खामीकी बात यह है कि वहा अेक शहर बसा हुआ है। हमारे यहा कृष्णा और अुसकी चार सहेलिया सह्याद्रिके जिस प्रदेशमें से निकलती है, वह प्रदेश दुर्गम और पवित्र था। सतोने वहा शिवजी महाबलेश्वरकी स्थापना की। परन्तु अग्रेजोने अुसे अपना ग्रीष्मनगर बनाकर अुस तपोभूमिको विहारभूमि या विलासभूमि बना डाला। जिजामें यह अितिहास याद आये बिना नही रहा।

और अब तो वहा ओवेन फॉल्सके आगे अेक बडा बाध बाधकर बिजली पैदा करनेवाले है। दुनियाका यह अेक अद्‌भुत बाध होगा। अिसकी शक्ति युगाण्डामे ही नही, परन्तु सूडान और अिजिप्त तक पहुचेगी। अिससे खाद्यपदार्थ बढेंगे, अकाल दूर होगा, असख्य अश्वत्थामा (हॉर्सपावर) जितनी शक्ति मनुष्यकी सेवाके लिअे मिलेगी। अिसलिअे अैसी प्रवृत्तिको तो आशीर्वाद देने पर ही छुटकारा होगा। फिर भी हृदय कहता है कि मनुष्य-जाति अिसके बदले कुछ अैसा खोयेगी कि जिसकी समानता बडेसे बडा वैभव भी नही कर सकेगा। नील नदी माता थी, देवी थी, अब यह लोकधात्री दाअी होनेवाली है।

२६

नील मैयाकी छायामें

हमारे और गोरे लोग दोनोंके द्वारा अुत्साहपूर्वक विकसित किये हुअे शहरोंमें जिंजाकी गिनती हो सकती है। अितने बडे तालावके किनारे होनेसे अुसका व्यापार जहाजो द्वारा किसुमु, म्वाञ्झा वगैरा स्थानोके साथ है ही। अिसके अलावा वहाकी कअी सस्थाओके कारण भी जिंजाका महत्त्व वढ गया है। यहा विजली लगते ही जिंजा अफ्रीकाके औद्योगिक शहरोंमें मुख्य स्थान प्राप्त कर ले तो कोअी ताज्जुव नही।

यहाकी सस्थाओमे मुझे तो जिंजाकी महिलाओकी चलाअी हुअी सस्था खास तौर पर सजीव लगी। वहा वहनोके लिअे तरह तरहके वर्ग चल रहे हैं। परन्तु दूसरी सस्थाओकी तरह यहा यह वात नही है कि वहुतसी ब्रहनें केवल अपना नाम देकर सतोप कर ले और काम दो-तीन वहनें ही करती हो। यहाकी पाठशालाओके आचार्य भी अपने कामोके लिअे विशेप अुत्साह रखते दिखाअी दिये।

अेक दिन हम पासकी अेक पहाडी पर मिशनरियोकी तरफसे अफ्रीकियोके लिअे चलनेवाली अेक सस्था देखने गये। रविवार होनेसे गोरे शिक्षक सव गैरहाजिर थे। अफ्रीकी विद्यार्थियोने हमें सव मकानात और विद्यार्थियोके लिअे रहनेकी सव सुविधायें आदि वताअी। मिशनरी सस्थाओमें जैसे अन्यत्र होता है वैसे यहा भी कक्षाके मकानोकी टीमटाम अच्छी थी। परन्तु मुझे लगा कि खाने-पीनेके मामलेमे काफी कजूसी वरती जाती है।

अुसी दिन हम श्री मूलजीभाअीके साथ अुनकी ककीरा अेस्टेट और चीनीका कारखाना देखने गये। जैसे मध्ययुगमें किसी सरदारके

गढके आसपास अुसके गढवाले और तरह तरहके कारीगर आश्रित रहते थे, वैसे ही वातावरणवाले आजकलके कारखानेदारोंके अिस स्थानको देखकर मुझे अेक प्रकारसे अच्छा लगा। अेक छोटीसी पहाडी पर शाही बगलेमे मूलजीभाअी अपने कुटुबके साथ रहते है। और अुस पहाडीकी देखरेखमें अुनके कारखाने और गन्ना, कॉफी, चाय वगैराके खेत दूर दूर तक फैले हुअे है। जगह जगह मजदूरोके लिअे अफ्रीकी ढगके झोपडे बने हो और पहाडीकी तलहटीमे कारखानेके कर्मचारियोंके छोटे-बडे बगले हो, तो अैसे सारे दृश्यमें मनुष्य मनुष्यका सम्बन्ध टूटा हुआ नही लगता।

फिर भी मुझे यहा अुल्लेख करना चाहिये कि अेक अज्ञानी अफ्रीकी मजदूरने मूलजीभाअी पर घातक हमला किया था। वे बडी मुश्किलसे बच सके। जाच करने पर मालूम हुआ कि यह कोअी मालिक-मजदूरके बीचका झगडा नही था, परन्तु शराब पीकर पागल हुअे मनुष्यका अधा आक्रमण था। जहा जीवन है और मनुष्यका समाज है, वहा अैसी दुर्घटनाअें होगी ही।

मूलजीभाअीने अेक बडी रकम खर्च करके अफ्रीकी लोगोके लिअे अेक खास कॉमर्स कॉलेज खोला है। कपालासे आते हुअे रास्तेमें हमने अिस कॉलेजके मकान बनते हुअे देखे थे।

जिजासे काफी दूर अिगागा नामक अेक गाव है। वहा हमारे यहाके लोगोकी अच्छी खासी बस्ती है। अिन लोगोने रातको हमें भोज दिया। मोटर द्वारा जगली प्रदेश पार करके हम कोअी ९ बजे अिगागा पहुचे होगे। लोगोमें अुत्साह खूब था। भोजन शुद्ध गुजराती ढगका था, यद्यपि खाना मेज पर परोसा गया था। अितना सुधार हमारे यहा सभी जगह होना चाहिये। खानेसे पहले मैंने जाच की कि आमन्त्रित सज्जनोमें कोअी अफ्रीकी है या नही। किसीको यह बात सूझी नही थी, यद्यपि बहुत जगह मेरा यह आग्रह लोगोके कानो तक पहुच गया था। हमारे लोगोने कहा कि हमें अिस बातमें आपत्ति

नही कि कोअी अफ्रीकी हमारे साथ पगतमें वैठकर खायें। परन्तु अितनी रात गये किसी अफ्रीकीको कहासे वुलाया जाय?

जवावमें मैंने अितना ही कहा कि, 'तव तो हम लाचार है। अिस मात्रामें हमारा समारोह नीरस रहा।'

खाना शुरू होते होते वे किसी अफ्रीकी शिक्षकको वुला लाये और अुसे हमारे साथ खानेको विठा दिया। खानेके वाद मै गुजरातीमें वोला। परन्तु अन्तमें दो तीन अफ्रीकी समझ सके, अिसलिअे अग्रेजीमें वोला। भापणके आखिरमे अुस अफ्रीकी शिक्षकने कहा कि, "मुझे शिक्षा देनेवाले अग्रेज थे। मुझ पर अुनके वहुत अुपकार है। परन्तु वे हमें कभी अपने साथ खानेको नही वैठाते। हमें यह वहुत खटकता है। आप लोगोके साथ भी हम वहुत मिलजुल नही सकते। आज यह पहला ही मौका है, जव मै अिस तरह समान भावसे खाने वैठा हू।"

समान भावसे साथ वैठ सकनेके कारण अुसके मन पर जो असर हुआ, अुसका मेरे मन पर गहरा असर पडा। मुझे खयाल हुआ कि हमारे लोग झूठे धार्मिक विश्वासके वशीभूत होकर अलग-थलगपन रखते है और अिन्सानियत खो वैठते है। और अिसीलिअे अिन्हे अिस देशमें यहाके लोगोके वीच विदेशियोकी तरह रहना पडता है। अग्रेज तो शासक है। चमडीका घमण्ड रखते है। अुन्हे अभिमान है कि अुनकी सभ्यता श्रेष्ठ है। अुनका अलग-थलगपन दूसरी तरहका है। हमारा सामाजिक अलग-थलगपन भिन्न है। अिसकी तहमें 'धार्मिक' भावना है। अनजान लोगोके प्रति दूर-भाव है और अूच-नीचका भाव तो है ही। हम जव तक यह दोष दूर नही कर लेते, तव तक विदेशोमें हमारे लिअे कही भी स्थायी स्थान नही है। और स्वदेशमे भी हम आअिन्दा सुरक्षित नही है। मासाहार और अन्नाहारके वडे फर्कके कारण भोजन-व्यवहारमें कुछ मुश्किले रहेगी। परन्तु अुन्हे पार करनेकी शक्ति हममे होनी ही चाहिये। परन्तु अिस तरहकी वधुताकी वृत्ति ही हम पैदा नही करते।

अंग्रेज लोग अफ्रीकी लोगोंके हाथका खाते हैं, परन्तु अुन्हें साथ नहीं बैठने देते। हम तो अब तक अफ्रीकियोंके हाथका खाते तक नहीं। अब यह घृणा बहुत कुछ मिट गअी है और हिन्दुस्तानियोंके ज्यादातर घरोंमें खाना अफ्रीकियोंके हाथका ही होता है। सारे पूर्व अफ्रीकामें कअी जगह खानेके बाद मैं कह सकता हूं कि अफ्रीकी रसोअिये हम जैसी चाहें वैसी रसोअी तैयार कर देते हैं। पंजाबी, गुजराती, महाराष्ट्री या कोंकणी। तरह तरहकी वानगियां वे हमारे लोगों जैसी ही बढ़िया बनाना सीख गये हैं। हमारे बच्चोंको भी अफ्रीकी नौकर लगनसे रखते हैं। जहां हमारे व्यापारियोंने अिन पर विश्वास रखा है, वहां अुन्होंने दुकान चलानेमें भी अपनी योग्यता साबित की है। और हमारे लोगोंने कहीं कहीं तनख्वाहके अलावा कुछ फीसदी नफा देनेकी शर्त पर अपनी दुकानकी शाखायें अनुभवी अफ्रीकियोंको सौंपी हैं। अफ्रीकियोंको समान भावसे हम अपने काम और अपने घरोंमें रखें, तो अिसमें हमारा लाभ तो है ही, परन्तु मुख्य बात यह है कि अिसमें हमारा नैतिक अुद्धार भी है।

अिगागामें लौटनेमें बहुत देर हो गअी थी, परन्तु तीनों महाद्वीपोंके समन्वयके सुन्दर सपने मनमें चक्कर काटने लगे। चांदनी अपनी कीमिया फैला रही थी। अुसीमें हमने अपनी प्रार्थना बैठा दी और रातको १२ बजे आकर सोये। अिस तरह हमारी अफ्रीकाकी कुछ प्रात सायं प्रार्थनायें अितनी गहरी और सुगंधित हो गअी हैं कि आज भी वे याद आती हैं।

२७

अिति और अथ

शुरूमें सोची हुअी पूर्व अफ्रीकाकी यात्रा अब पूरी होनेको आअी। जिन नानजीभाअी कालीदासके आग्रहसे मैं पूर्व अफ्रीकाकी यात्रा पूरी कर सका, अुनका गढ लुगाजी देखकर और वापस कपालामें अुन्हीके स्थानका आखिरी आतिथ्य लेकर यह यात्रा पूरी करनी थी। परन्तु सकल्पोका स्वभाव ही जरा लम्बा होनेका, बढनेका होता है। हम बाजारमें कोअी चीज खरीदें, तो दुकानदार हमें पूरा तौल देनेके बाद जरा अधिक देगा ही। अिसमें दोनोको सतोष होता है। तराजू-भक्त अंग्रेजोने भी डबलरोटीके लिअे १२ के स्थान पर १३ रोटीके दर्जनकी कल्पना की है।

अफ्रीकाके हमारे सभी यजमान कहने लगे कि, 'यहा तक आये हैं तो पूर्व अफ्रीकाका पश्चिमी सिरा पूरा करके बेल्जियन कागोमें माना जानेवाला रुआाडा-अुरुडीका रमणीय प्रदेश क्यो न देखते जाय? अिस देशके नकशे मैंने देखे ही थे। वुन्योनी, कीवू जैसे सरोवर देखनेको मिलेंगे। मिर्चके आकारके तग और लम्बे टागानिका सरोवरके अुत्तरी सिरे तक जा सकेंगे। सोये हुअे या बुझे हुअे ज्वालामुखी दिखाअी देंगे। घने अरण्योमें जोखमभरे सफर किये जायगे, यह सारी अुत्सुकता मनमें थी ही। अिन्सानसे ज्यादा अीमानदार जगली जानवरोके दर्शन करनेके लिअे भी लोगोने हमें ललचाया था। अिस लिअे हमने अपने पास वक्तका कितना बजट है, अिसका हिसाब लगाया और मित्रोके सुझावको स्वीकार किया। परन्तु अैसा करनेमें हमारी मडलीके सदस्योमें फेरबदल हुआ। श्री अप्पासाहब पत जिजासे पहले ही नैरोबी लौट गये थे। अब तात्या अिनामदारने वापस जाना तय किया।

अिनके स्थान पर सर्वेंट्स-ऑफ-अिण्डिया-सोसािअटीवाले मोहनराव गहाणे और अुनकी पत्नी यमुताअी हमारे दलमें शामिल हुअे। श्री कमलनयन बजाजने भी अपनी पत्नी सावित्री और बच्चोंको नैरोबी होकर हवाअी रास्तेसे हिन्दुस्तान जाने दिया। नानजीभाअीके लड़के वीठ्ठलभाअी भी हमसे विदा लेकर यूरोप जानेवाले थे। अिसलिअे ३ और ४ जुलाअीके दो दिन हमारे लिअे मिश्रित भावनाओंवाले और अुत्कट सिद्ध हुअे।

जिजासे विदा लेनेके लिअे हम खास तौर पर ओवेन फॉल्स तक गये। श्री रामजीभाअी लद्धा वगैरा मित्रोंने वहां अनेक फोटो लिये। हमारे लोगोंकी शिक्षाके विषयमें और हमारी संस्थाओंमें अफ्रीकी बच्चोंको आने और पढ़ने देनेके बारेमें बहुतसी बातें कीं और हम लुगाजी पहुंचे।

श्री वीठ्ठलभाअी और आनन्दजीभाअीने हमें सारी अेस्टेट बताअी। ककीरा और लुगाजीमें बहुत साम्य है। यहां अेक अूंची पहाड़ी पर पुराने और नये दो राजमहल जैसे मकान हैं। अिस पहाड़ीकी तलहटीमें अेस्टेटके होशियार कर्मचारी रहते हैं। दूर दूर तक खेत फैले हुअे हैं। अुन खेतोंके सिरे पर अफ्रीकी मजदूर रहते हैं। यहांके बच्चोंकी पढ़ाअीके लिअे अच्छी व्यवस्था है। मजदूरोंके लिअे दवा-पानीकी व्यवस्था भी संतोषजनक थी। मैंने यहांके डॉक्टरसे मजदूरोंको खास तौर पर किन किन रोगोंके लिअे दवा देनी पड़ती है अित्यादि कुछ महत्त्वके सवाल पूछे। अेस्टेटकी व्यवस्थामें सिर्फ गुजराती ही हों सो बात नहीं है। यहां कुछ पंजाबी हैं, महाराष्ट्री हैं, बंगाली हैं, मद्रासी हैं और अंग्रेज भी हैं।

दुःखकी बात अितनी ही है कि अिन खेतोंमें जितनी पैदावार की जा सकती है, अुतनी करनेकी यहां सुविधायें नहीं हैं। यहांकी सरकार बाहरसे मजदूरोंको आने नहीं देती और अफ्रीकी मजदूर काफी संख्यामें

मिलते नही। नानजीभाअीको आज यहा सात हजार मजदूर चाहियें। अुनके बजाय सरकार अुन्हे चार हजार ही देती है। परिणामस्वरूप जितना गन्ना बोया जाता है, अुतना पेला तक नही जाता। कुछ तो खेतोमें ही सूख जाता है।

२८

भूमध्य रेखा पार की

हमारी नअी अथवा अतिरिक्त यात्राका प्रारम्भ कपालासे हुआ। यहाके अेक गुजराती शिक्षित व्यापारीने बेल्जियन कागोके वर्णनवाला अपना लिखा हुआ अेक अुपन्यास मुझे पढनेको दिया और अुसीके साथ अेक कीमती कैमरा भी भेट किया। वे-अुसी दिन जापान जानेवाले थे। डॉ० मूलजीभाअीके दो मित्र श्री खीमजीभाअी और व्रजलालभाअी शाह हमारे साथ चलनेको तैयार हो गये। अिन दो भाअियोके बिना हमारी यात्रा अच्छी तरह हरगिज पूरी न होती। अुनकी होशियारी और अुनकी नम्रताके बीच मानो होड होती थी। वे अपनी अेक नअी सुन्दर कार लेकर आये। हमारे हाथो अुसका मुहूर्त करते हुअे अुन्हे आनन्द हो रहा था। मुझे कहना चाहिये कि अुनकी अिस कारका हमने पूरा अुपयोग किया। श्री कमलनयनने यह कार अितनी होशियारीसे चलाअी कि हिम्मत और सावधानी दोनोकी अुचित मात्रा अुनके हाथमें पूरी तरह आअी हुअी मालूम होती थी।

हमारा सफर शुरू होते ही मैं बाअी ओर विक्टोरिया सरोवरकी आशा रखने लगा। वह जरा जरा दिखाअी देता, अपनी तरह हमें भी प्रसन्न करता और फिर छिप जाता। परन्तु मैंने जितना सोचा था अुतना नजदीक वह न आया।

पहले ही दिन हम अेक अैसी जगह पहुंचे, जिसका महत्व वहाकी भूमि और वहाके लोग महसूस नही करते थे। परन्तु हम सब अुत्तेजित हो गये। क्योंकि हम अपनी धरती माताकी मध्य रेखा पर पहुच गये थे। हमारा अेक पैर अुत्तरी गोलार्धमें हो और दूसरा दक्षिणी गोलार्धमे हो, तो अैसे स्थान पर पहुच कर कौन अुत्तेजित न होगा? रास्तेके किनारे पर यहाकी सरकारने अेक खभा गाडकर दो हाथोंने बताया है कि अुत्तरी गोलार्ध अिसके दाअी ओर है और दक्षिणी गोलार्ध बाअी तरफ। मुझे ख्याल आया कि यही खभा अगर रास्तेके दूसरी ओर खडा किया गया होता तो ज्यादा अच्छा होता। दक्षिणी गोलार्धकी तरफ दाहिना हाथ आ जाता। हम अुस खभेके आस-पास हो गये, मानो बडी बहादुरी कर रहे हो। और वहा अिस तरह अपने फोटो लिये मानो अुसका दस्तावेज हमारे पास होना ही चाहिये। हमें आगे जाना था अिसीलिअे अिस स्थानको हमने छोडा।

दोपहरको मसाकामें भोजन करके थोडासा आराम किया और वहासे लगभग अुतने ही मील दौडकर रातको म्बरारा पहुचे। रातको हम अेक अैसे होटलमें रहे, जहा पहाडके अेक तरफ वृक्षोंके बीच अफ्रीकी ढगकी गोल झोपडिया बनाअी गअी थी। अिन गोल झोपडियोंमें सुविधा हो या न हो, काव्य तो है ही। अैसे स्थान पर अेक रात बिताकर अफ्रीकाका जितना अनुभव किया जा सकता है, अुतना युरोपियन ढगके बगलोंमें नहीं होता। अिसी स्थान पर किसी अपीलकी अदालतका अुस दिन पडाव था, जिस कारण मसाकाके अेक गुजराती अेडवोकेट यहा आये हुअे थे। वे हमसे मिले। अुन्होंने आते ही अपना परिचय दिया कि, "मैं भादरणका हू, विद्यापीठमें आपका विद्यार्थी था, मेरा नाम रावजीभाअी पटेल है।" अुनके साथ बहुत बाते की। खास तौर पर यहाके अफ्रीकी लोग कैसे है, अुनमें किस प्रकारके अपराध अधिक है, झगडालू है या नही, किस हद तक विश्वासपात्र

है, अुनके विवाहके नियम कैसे हैं, अुत्तराधिकारकी क्या व्यवस्था है, वगैरा।

यहाका अिलाका कम्पाला, अेन्टेबे जैसे शहरोसे दूर होनेके कारण पिछडा हुआ माना जाता है और अिसीलिअे यहा अफ्रीकाका सच्चा दर्शन होता है। दूसरे दिन सुबह होटलमें गरम पानीसे नहाये — पानी क्या था लोहेके जगका काढा (कषाय) बनाया हो, अैसा रग था। परतु सफरकी थकावट मिटानेके लिअे गरम पानीके टबमें लबे होकर सोना अितना ज्यादा सुखकर और हितकर होता है कि जब तक पानीका वह रग हमारी चमडीको नही लगता, तब तक अुसमें नहानेमे जरा भी सकोच नही होता।

होटलमे से अुतरकर हम म्बराराके लोगोसे मिले। व्याख्यानोका कर चुकाये बिना तो जा ही कैसे सकते थे? सिक्खोके गुरुद्वारेके पीछे स्त्री-पुरुषोकी सभा अिकट्ठी हुअी थी। वहा हमने भाषण दिया। श्री अप्पासाहबसे अितना सीख लिया था कि प्रस्तावना कुछ भी की जाय, परतु हरअेक व्याख्यानमे विषय अेक ही आना चाहिये। सभामे जब बहने आती तब मैं कुछ सामाजिक रीतरिवाजो पर अधिक जोर देता। सिक्ख लोग होते तो अुनके लिअे कुछ बातें मनमे खास तौर पर रखी ही रहती। यह प्रसग अच्छे अच्छे अनेक विचार लोगोके सामने पेश करके विविधता लानेका नही था, परतु सारे अफ्रीकामे हमारे लोगोको दृष्टि-परिवर्तन और जीवन-परिवर्तनका अेक ही सदेश हर जगह सुनाकर सर्वत्र अेक ही फेरबदल करानेकी बात थी। गाधीजीके नाम पर, स्वतत्र हिन्दुस्तानके नाम पर हमारे लोगोके स्वार्थकी दृष्टिसे और मानवताके कल्याणके लिअे आअिदा हमें क्या करना चाहिये यह हम हर जगह समझाते थे।

२९

कवाले

अफ्रीकाके अनेको सुन्दर स्थानोमें भी कवाले आम तौर पर सामने आता है। हम म्वरारामें भोजन करके चले। ९० मीलके कभी अुतार-चढाववाले सफरको पूरा करके शामको ५ वजे हम कवाले पहुचे। रास्तेमें दृश्योकी विविधता थी। परतु जब यह दर्शन-समृद्धि बढ जाती है, तब बहुतसे अनुभव कुचले जाते हैं और सपूर्ण चित्र मनमें नही टिकता। अभी तो अितना याद आता है कि अेक बडी राक्षसी लॉरी रास्तेके अेक तरफ औंधी पडी हुअी थी, अुसके नीचे तीन आदमी मर गये थे। हम तो केवल वह लॉरी और अुसके पास पचनामा बनानेवाले पुलिसवालोको ही देख सके। अैसी दुर्घटना अुससे होनेवाले नुकसानसे भी ज्यादा भयानक दिखाअी देती है और अिस बातका पदार्थ-पाठ देती है कि दुनियामें अैसी दुर्घटनाअें भी हो सकती हैं। आज विचार करता हू तो अैसा लगता है कि दो-चार दिन बाद ही हम जिस ज्वालामुखीके लावाके रेलेके दर्शन करनेवाले थे अुसकी वह पेशवदी ही थी।

अप्पासाहबकी सिफारिशके अनुसार हम कवालेकी 'व्हाअिट हॉर्स अिन' नामक होटलमें ठहरे। पहलेसे तार देकर सारी व्यवस्था कर ली थी। अिस होटलमें ठडे पानीसे गरम पानीकी सुविधा अधिक आसान थी। थकावटके साथ मुझे अपने सिरके बालोका भार भी अुतारना था। कवालेके अेक नाअीको बुला लाये। ये भाअी झाझीबारसे यहा आकर बस गये हैं। वहा तदुरस्ती अच्छी नही रहती थी, अिसलिअे यहा आ गये। यहा अिनका काम ठीक चलता है। अिन्हीके भाअी हमें झाझीबारमें मिले थे।

कवालेकी खास खूबी अुसकी प्राकृतिक सुन्दरता तो है ही। अूचाअी ६,४०० फुटकी होनेके कारण यहाका जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है, यह भी अिस स्थानके महत्त्वको बढानेवाली बात है। तीसरी चीज यह है कि अफ्रीकाकी दूसरी असली जातियोसे यहाके लोग ज्यादा मेहनती और होशियार है। अिसका परिचय यहाकी हरअेक पहाडी देती है। जहा हमे अैसा लगे कि अनाज अुगाया ही नही जा सकता, वहा भी अिन लोगोने मेहनत करके अन्न अुत्पन्न किया है। अिन लोगोने जमीनको कसकर खुराक सबधी स्वयपूर्णता ही प्राप्त नही की है, बल्कि वे आसपासके लोगोको भी खुराक मुहय्या करते है।

सवेरे हमारे साथियोके अुठनेसे पहले चि० सरोज और मै घूमने निकले। आसपास सब जगह धुध था। हमारे मीठी गुदगुदिया करनेमें अुसे मजा आता था। हमने आशा रखी थी कि धूप निकलनेका वक्त होने पर धुध पतला हो जायगा, परतु वह तो गाढा होने लगा। सामनेकी पहाडिया दिखाअी ही न देती थी और जब दिखाअी देती .थी तब अैसी मानो जन्मान्तरका अस्पष्ट स्मरण होता है। अैसी शका पैदा करती थी कि वे प्रत्यक्ष है या कल्पनाका अनुमान ही है। अतमें सूर्यकिरणें विजयी हुअी, धुध धीरे-धीरे नीचे दबकर घाटियोमें छिप गया और अूची-अूची प्रौढ पहाडिया प्रकट हुअी। नाश्तेके बाद पुराने अनुभवोका वितरण शुरू हुआ। बादमें हाथ देखनेका खेल चला। पता नही यह खेल दुनियामें सब जगह कैसे फैल गया है। जिन लोगोका अुस पर विश्वास नही, अैसे लोगोको भी हाथ दिखानेमें मजा आता है,, और जिन्हे अिस विद्याका कुछ भी ज्ञान नही, अैसे लोग भी हाथ देखकर मनमाने अनुमान लगा लेते है। हाथ देखनेवाले हरअेक आदमीमें अपने अनुमान अनिश्चित भाषामें पेश करनेकी कला तो आ ही जाती है।

खाना खाकर हम यहाका प्रसिद्ध और रमणीय बुन्योनी सरोवर देखने गये। वहा हमारे लिअे अेक स्टीमलाचका बदोबस्त कर रखा

था। परन्तु वह लांच शुरूमें ही नाराज हो गया। परिणामस्वरूप हम अेक नाव करके सरोवरमें थोड़ेसे घूमे। अिससे स्टीमलांच शरमाया और समझदार बनकर अुसने चलना मंजूर किया। थोड़ासा चला कि फिर अड़ियल टट्टूकी तरह ठहर गया। हममें से कुछ लोग खूब गये और नावमें चले आये। औरोंने अपनी धीरजकी परीक्षा कर लेना चाहा। अुन्हें अुसका मीठा फल मिला। वे खूब दूर तक सरोविहार कर आये। हम अपनी नाव लेकर नालानमें खिले हुअे नीले कमलोंसे मिलने चले।

कमलोंकी सुन्दरता असाधारण होती ही है। भारतीय कवियोंने तमाम फूलोंमें अिसे मुख्य स्थान दिया है। कीचड़में जन्म लेकर जीवनकी सारी अूचाअीको अपनाकर अलिप्त भावसे पानी पर तैरता रहे और अेकनिष्ठासे 'प्रजाके प्राणस्वरूप' सूर्य भगवान् पर टकटकी लगाकर ध्यान करे, अैसे अिस फूलको हमारे कवियोंने आर्य संस्कृतिका प्रतीक बनाया तो अिसमें क्या आश्चर्य है?

कमलोंका राजा लाल कमल है। अिसकी प्रसन्न प्रौढ़ता, अिसका निर्व्याज प्रफुल्ल वदन, अिसका लावण्य और मार्दव — सभी आह्लादक होते हैं। और अिसकी हलकी भीनी सुगंध तो तोड़ निकालनेके बाद मोह पैदा किये बगैर रहती ही नहीं।

अिसके बाद आता है पीला कमल। अिसका सुवर्ण वर्ण कभी कभी हलका होता है और कभी कभी गहरा। सुवर्णके सूचनसे ही अुसकी अमीरी साबित होती है।

अिन रंगोंकी शोभा तभी तक ध्यान खींचती है, जब तक सचमुच बड़ा सफेद कमल नजर नहीं आता। कौन कहता है कि सफेद रंग बिलकुल सादा होता है? अुसकी प्रतिष्ठा समझनेके लिअे बाकीके सब रंग जी भरकर देखे हुअे होने चाहियें। दूसरे रंग कितने ही सुंदर और आकर्षक हों, तो भी अुन्हें देखकर अंतमें थकावट आ जाती है। परन्तु सफेद रंग तो शुचि, शुभ, सनातन और समृद्ध होता है। सफेद कमलोंके अंदर लाल कमल अुगा हो, तो वह विशेष

शोभा देता है। परतु लाल कमलोमें जब अेक ही सफेद कमल सिर अूचा करता है, तब अैसा ही लगता है कि बाकीके कमल अिह-लोकके हैं और यह सफेद स्वर्गलोकसे अुतरकर आया है।

अैसे कमल हमारे यहा अनेक तालावो और सरोवरोमें देखनेको मिलते है। नील कमलका वर्णन हम कवितामें ही सुनते है, अिसलिअे अुसकी स्पष्ट कल्पना नही होती। नील रग शात-सुभग होता है, अिसलिअे हम अितनी कल्पना कर सकते है कि वह अच्छा ही दीखता होगा। परतु जब सचमुच नील कमल नजर आता है, तब हमारी सारी कल्पनाअें फीकी पड जाती है और हमारा हृदय बोल अुठता है कि असली काव्य तो नील कमलमें ही है। नील कमल मानो परियोकी सृष्टि है। अिसकी नजाकत और अिसकी अटूट सूचकता और किसी भी कमल या फूलमे नही आ पाती। श्वेत कमलकी तरह यह दैवी नही, लाल कमलकी तरह यह वैभवकी सूचना नही देता, पीले कमलकी तरह हमे पूजाके लिअे प्रेरित नही करता। परतु वह कहता है कि, 'मैं परी हू, और तमोगुणी या रजोगुणी नही, किन्तु शुद्ध सत्त्वगुणी अप्सरा हू। मेरा दर्शन, मेरा स्पर्श, मेरा सहवास सहज अुन्नतिकारी है। मेरी दुनियामे अेक बार प्रवेश करनेके बाद आप अुसे आसानीसे भूल नही सकते, क्योकि आप अिस दुनियाके महज मेहमान नही रहते, परतु अिसका पूर्ण अधिकार आपको मिल जाता है, हमारे कवि नीलोत्पल पर अितने मोहित हुअे है सो निष्कारण नही। नील कमलोके बीच हमने काफी सरोविहार किया।

ब्रुन्योनी देखने हम अेक रास्तेसे गये और वापस आये दूसरे रास्तेसे। दोनो मार्ग सुन्दर थे। शामको वहाके अेक अफसर मि० रसेल हमसे मिलने आये। बडे सस्कारी प्रतीत हुअे। अुनसे मालूम हुआ कि स्वाहिली भाषा पूर्व अफ्रीकामें सभी जगह काफी समझी जाती है। स्वाहिली भाषाके प्रति कही कही जो विरोध कहा जाता है, वह कृत्रिम रूपमें पैदा किया गया है। श्री रसेलसे हमने जाना कि जो

बुन्योनी सरोवर हम देखने गये थे अुसके भीतर अेक टापू है। अुस टापूमे कुष्ठ रोगियोके लिअे अेक वस्ती वसाअी गअी है। कुछ मिशनरी लोगोने कुष्ठ सेवाके लिअे फकीरी ले ली है। अुनकी सेवाका असर खास तौर पर देखने लायक है। अुस अफसरके साथ मैंने अेक प्रश्न छेडा कि अफ्रीकी लोगोकी सस्कृतिने अुसका जो स्वरूप अिस समय है वह कैसे पकडा होगा? अुसे भी अिस विपयमे दिलचस्पी थी, अिसलिअे हमारी खूब वाते हुअी।

कवालेके हिन्दू-मडलने हमारे लिअे अेक सभाका प्रवध किया था। अुसमें अफ्रीकी लोगोकी सख्या अच्छी थी, अिसलिअे मैं अुन्हें ध्यानमें रखकर अधिक विस्तारसे वोला। मेरे अग्रेजी भाषणका अेक अेक वाक्य अेक अफ्रीकी भाअी वहाकी भाषामें समझाते थे। केवल अनुवाद करनेके वजाय विस्तार भी करते थे। अुन लोगोकी भापा जाने विना भी मैंने देखा कि वे मेरे भाव अच्छी तरह समझ रहे थे और अुनका विकास करके लोगोके सामने रख रहे थे। सभाके अन्तमें थोडे प्रश्नोत्तर हुअे। अिस मार्गसे अफ्रीकी लोगोका दृष्टिकोण समझनेका मुझे अच्छा मौका मिलता था, अिसलिअे अिसका मेरे लिअे अधिक महत्त्व था। प्रश्नोत्तरकी झडी लग गअी। अुसमें अेक आदमीने जो प्रश्न पूछा, अुसका अग्रेजी भापातर करके मुझे समझानेसे हमारे दुभापियेने अिनकार किया। अुलटे अुसने सभामें अुपस्थित गोरे अफसरसे पूछा कि, 'अैसा सवाल मेहमानोके सामने जवावके लिअे रखा जा सकता है?' अफसरने कहा, 'आप मेहमानोसे ही पूछ लीजिये।' मैंने आग्रह किया कि, 'सवाल कैसा भी क्यो न हो, मुझे अुसका अग्रेजी करके कहिये। जवाव देनेवाला तो मैं हू। मुझे अवसरकी रक्षा करना आता है।' अितनी प्रस्तावनाके वाद प्रश्न आया

"आपके देशके लोग कभी कभी हमारी लडकियोसे विवाह करते है, तो आपकी लडकिया हमसे शादी क्यो न करें?" दूसरा सवाल यह था कि, "आपके लोग हमारी लडकियोसे व्याह तो कर लेते है, परतु अुनके

बच्चोको नही अपनाते। परिणामस्वरूप अुनकी स्थिति बडी विषम हो जाती है। अिन सन्तानोको आप अपने देशमें क्यो न ले जाय?"

मैंने देखा कि प्रश्नकी तहमें कडवाहट है। प्रश्न सुनकर सभाके हिन्दुस्तानी श्रोताओंने अुत्तेजना नही दिखाअी, यह देखकर मुझे सतोप हुआ। अेक गुजराती भाअीने वही खडे होकर कहा कि, "काकासाहब, आप अिन लोगोको समझाअिये कि हमारी लडकिया अिन लोगोके साथ ब्याह करनेकी अिच्छा करें तो हम अेतराज नही करेंगे। जबरन तो कोअी किसीकी शादी नही कर सकता?"

मैंने कहा कि, "भिन्न भिन्न वशोके वीच विवाह हो तो अिसमें मुझे तात्विक विरोध नही। परतु यह नाजुक सवाल है, अिसलिअे में दोनो ओर अैसे विवाहोको प्रोत्साहन नही दूगा। अिस महाद्वीपमें अफ्रीकी, युरोपियन और अेशियन तीन नस्लोके लोग अिकट्ठे हुअे है। वे अेक-दूसरेको समझने लगें, और व्यवहारमें अेक दूसरेमें घुल-मिल जाय, आज मैं अितना ही चाहता हू। आगे चलकर परिचयके परिणामस्वरूप आत्मीयता पैदा हो जानेके बाद अिस सवाल पर दूसरी ही तरह विचार होगा।

"अिन्डो-अफ्रीकी सन्तानके बारेमें आपने जो सवाल अुठाया है, अुसके बारेमें मैं अितना ही कहूगा कि अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानमे न जाते हो सो बात नही। आज भी आपके तीस चालीस विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोमे पढ रहे है। ये लोग अगर हमारे यहा शादी करें और स्थायी हो जाय, तो अुनकी सन्तानकी हम रक्षा करेंगे। यहाकी सन्तानकी रक्षा आप कीजिये।"

मेरा जवाब सुनकर अफ्रीकी श्रोता भी प्रसन्न हो गये और हमारे देशी भाअी भी खुश हो गये। परतु मेरा दिमाग जोरसे चलने लगा। अग्रेज लोग यहाके काले लोगोके साथ घुलते-मिलते नही। शासक बन कर न रहा जा सके तो वे यहासे चले जायगे। यहाके लोगोके साथ केवल प्रजाजनके रूपमें समान भावसे रहनेको तैयार नही होगे। अेक

अफ्रीकी सरदारने किसी गोरी लड़कीके साथ शादी कर ली, तो अिस पर दोनो ओरसे शोर मच गया। अमरीकामें गोरे लोगोंने नीग्रो गुलाम रखे। बादमें अुन्हें स्वतंत्र कर दिया, परंतु वहां यह सवाल अभी तक हल नहीं हुआ। गोरे बाप और काली माकी सन्तानका सवाल वहां अभी तक हल नहीं हो सका है। हमारे यहां भी यह सवाल प्राचीन कालसे खड़ा है। हमने यह घोषणा करके देख लिया कि भिन्न जाति और भिन्न नस्लके लोगोंका आपसमें विवाह करना अवांछनीय है। वर्णसंकरके विरोधमें कड़वीसे कड़वी भावना पैदा करके अिहलोकमें प्रतिष्ठा खोनेका और परलोकमें नरकका डर बताया, फिर भी हम भिन्न लोगोंको अलग न रख सके।

हमने दूसरा प्रयोग किया। भिन्न जातियों, भिन्न वर्णों, भिन्न वर्गों और भिन्न वर्गोंके बीच विवाहोंकी छूट देकर देख लिया। भावनाकी रक्षाके लिअे अिसमें अनुलोम प्रतिलोमका भेद जारी किया। तमाम जातियां चार वर्णोंसे ही पैदा हुअी हैं, यह कल्पना जमा देनेका प्रयत्न किया। जिसे अंग्रेजीमें 'लिगल फिक्शन' कहते हैं, अुसे सब तरहसे करके देख लिया। फिर भी हमें भिन्न वर्गोंके बीचके संबंधका शुद्ध हल अभी तक नहीं मिला।

अूच-नीच और अपने-परायेके भाव अिन्सानियतके पवित्र खयालके लिअे घातक हैं। परन्तु ये दोनों वृत्तियां मनुष्यके स्वभावमें ही मौजूद हैं। अिस बातका स्वीकार कर अुनमें से कोअी समाजोपयोगी रचना खड़ी करनेका भी हमने प्रयत्न किया। अिसका अितिहास पढ़ कर दक्षिण अफ्रीकाके राष्ट्रपुरुष जनरल स्मट्स बहुत खुश हो गये। परंतु अिस प्रयोगके द्वारा हम मनुष्य-जातिका कल्याण न कर सके।

जो परेशानी जातिभेद और वर्गभेदकी तहमें है, वही परेशानी धर्मभेदकी तहमें भी है।

अेक ही देश और अेक ही धर्मकी सन्तानोंमें हमने अितने ज्यादा भेद पैदा कर दिये हैं कि हमारा मस्तिष्क भेदमय बन गया है।

किसी समय सासके विना शायद जी सकते है, परतु भेदभावके विना जीना हमारे लिअे कल्पनातीत वस्तु बन गअी है।

अिस स्वभाववाले हम लोग अफ्रीकामे आकर बसे है। अिनमें भी हिन्दू-मुसलमानका भेद है। मुसलमानोमें भी तीन चार जातिया है। हमारे लोग यहाके लोगोके साथ घुलमिल नही जायगे, तो मुश्किल अवश्य पैदा होगी। परतु मिल जानेके बाद पैदा होनेवाली सतानोको हम अपनायेंगे नही, तो यह गैरजिम्मेदारी ही हमें नरकमें पहुचा सकती है। अफ्रीकामें बसे हुअे हमारे भारतीय लोगोके नेताओंको मानवधर्म पहचानकर, दीर्घदृष्टिसे काम लेकर हमारे लोगोको रास्ता बताना चाहिये।

३०

नये मुल्कमें

अब हम अफ्रीकाके सुन्दरतम प्रदेशमें प्रवेश करनेको अुत्सुक हो गये थे। कबालेके सुदर और आतिथ्यशील होटलमें मजेसे नहाये, नाश्ता किया। होटलकी भली सचालिकाने हमारी मेज पर बुन्योनी सरोवरके हमारे ही नील कमल सुन्दर रूपमे सजाये थे। वनस्पति सृष्टिकी परियोका यह अन्तिम दर्शन करके हमने प्रस्थान किया। कलका बुन्योनी सरोवर दाअी ओर फैला हुआ था। सरोवरकी असली शोभा या तो नावमें बैठकर विहार करते हुअे लूटनी चाहिये या पहाडी परसे या पहाडकी अूचाअीसे अुसके चमकते हुअे मुखडेका दर्शन करते हुअे पी जानी चाहिये। कवि वाल्मीकिने सरोवरके स्वच्छ जलको सज्जनोके पारदर्शक, निर्मल चरित्रकी अुपमा दी है। चारित्र्यको गगाजलकी अुपमा देनेवाले कवि बहुत है। परतु अुपमान और अुपमेय दोनोका अदल बदल करना तो वाल्मीकि जैसे कवीश्वरको ही सूझ सकता है। बुन्योनीका प्रसन्न दर्शन

करनेके बाद मनमें विचार आया कि अिस सरोवरका वर्णन करनेवाला कोअी वाल्मीकि या बाणभट्ट कब पैदा होगा?

आगे चलकर खेतोंवाली प्रचंड पहाड़ियोंके सिलसिलेमें पूरे हुअे और अूंचे अूंचे परन्तु पतले बांसका विशाल वन शुरू हुआ। बेळगाव और बेळगुंदी मेरे बचपनके दोनों स्थानोंका नाम 'बेळ' यानी बांबू या बांस परसे ही पड़ा है। कन्नड भाषामें बेळका अर्थ है बांस। ठेठ बचपनसे मैं फव्वारे जैसे बांसके टापुओंको देखता आया हूं। बांसके खम्भे, बांसकी दीवारें, बांसके छप्पर, बांसकी चटाअियां, बांसके बर्तन, बांसके बाजे और औजार, अितना ही नहीं परन्तु बांसका साग और बांसका अचार भी जहां पर था। अैसी संस्कृतिमें पला हुआ मैं बांसके जंगल देखकर पागल-सा हो गया तो आश्चर्य क्या? बेळगाव, धारवाड, कारवार वगैरा अनेक स्थानों पर मैं बांसके जंगलोंमें घूमा हूं। जीवित बांसकी दीवारोंवाले गांवोंकी सुरक्षितता मैंने देखी है। पतलेसे पतले और मोटेसे मोटे बांसके दर्शन ठेठ लंकामें किये हैं और दौड़ती रेलमें घंटों तक अटूट वेणुवनके विस्तार पूर्वी बंगालसे आसाम जाते-आते मैंने देखे हैं। अिन तमाम संस्मरणोंको ताजा बनानेवाला यह वेणुवन कल्पनाके लिअे कितना पौष्टिक साबित हुआ होगा, अिसकी कल्पना मेरे जैसे बांसप्रेमी ही कर सकते हैं।

दोपहर हुआ और हम किसोलो या किसोरो पहुंचे। श्री महेताके यहां भोजन करके हम आगे बढ़े। कंपालासे कबाले तक हमारा सारा रास्ता दक्षिण पश्चिमकी ओर जाता था। कबालेसे किसोलो तक हम लगभग पश्चिमकी तरफ ही जाते थे। अैसे पहाड़ी प्रदेशमें कोअी भी रास्ता सीधा तो हो ही नहीं सकता। परन्तु कहनेका आशय अितना ही है कि किसोलो कबालेके पश्चिममें है। हमारे साथी खीमजीभाअी और व्रजलालभाअी कबालेसे आराम लेनेके बजाय रुहेंगेरी चले गये थे। वे वहांसे लौटकर हमें यहां मिले। हमारे शरद पंड्या भी अुन्हींके साथ चले गये थे। अुन्होंने वहांकी सुन्दरताका वर्णन जी भरकर किया। परन्तु रुआण्डा-अुरुण्डीकी हमारी यात्रा अुसी रास्तेसे पूरी

होनेवाली थी, अिसलिअे वहा प्रत्यक्ष देखे हुअेका ही यथास्थान वर्णन करना अच्छा होगा।

अब हमने ब्रिटिश अीस्ट अफ्रीका छोडकर बेल्जियन कागोमें प्रवेश किया। असलमें बेल्जियन कागोमे नही, परतु बेल्जियन कागोके अधीन रुआण्डा-अुरुण्डी प्रदेशमें प्रवेश किया। पिछले महायुद्धके अन्तमें 'यूनो' की तरफसे युरोपियन राष्ट्रोको जो मेण्डेटेड मुल्क मिले है, अुनमें टागानिका ब्रिटिशोके हिस्सेमें आया और रुआण्डा-अुरुण्डी बेल्जियन कागोको मिला। अितने सुन्दर और समृद्ध प्रदेशका अधिकार बेल्जियमको मिला, अिसके लिअे कोअी भी अिस देशसे अीर्ष्या ही करेगा।

अब आगे राज्य अग्रेजोका नही, परतु बेल्जियन लोगोका है और हम नये ही मुल्कमे दाखिल हो रहे है, अिसके तीन प्रमाण हमे यहा तुरत मिल गये। अब तक मोटर और दूसरी सवारिया रास्तेके बाअी ओर चलानेका नियम था। अब दाअी ओरका नियम शुरू हुआ। यह नियम अगर हर क्षण याद न रखा जाय और मनुष्य पुरानी आदतके अनुसार चले तो पग-पग पर दुर्घटनाअें हो। श्री कमलनयनने ब्रजलाल-भाअीसे अनुरोध किया कि "आपकी मोटर मैं चलाअू, परतु कृपा कर आप मेरे पास बैठिये और हर मौके पर मुझे चेताते रहिये कि मोटर दाअी ओर चलानी है।"

दूसरा सबूत यह था कि मीलके बजाय मीटरका नाप शुरू हुआ। दो गावके बीचका अतर किलोमीटरोमें ही मिल सकता था। हमें याद रखना पडा कि अेक किलोमीटर लगभग पाच फर्लागके बराबर होता है।

हमने अिस प्रदेशमें प्रवेश किया और हमें अपनी सभी घडिया अेक घटे पीछे करनी पडी। अब हम अफ्रीका महाद्वीपके लगभग मध्य तक पहुच गये थे।

आगे चलकर जब रुपयेका लेनदेन करना पडा, तब पता चला कि अब शिलिगका चलन नही परतु फ्रेंकका है। और फ्रेंकके व्यवहारका अर्थ था बडी बडी सख्याओका हिसाब। यहाकी सरकारने

महगाअी काफी रहने दी है। और अुन पर भी फ्रैंककी गिनती! सौ सौ फ्रैंक, दो दो सौ फ्रैंकका व्यवहार करते समय हर वक्त यह खयाल रहता था कि हम कितने फजूलखर्च हैं।

जहां सरहद पार की थी, वहां भी हमें गुजराती भाअी ही मिले। ब्रिटिश हद पर छगनभाअी शाह नामक अेक कच्छी भाअी चुंगी अफसर थे। अुन्होंने मेरा नाम सुन रखा था। खूब ही प्रेमसे अुन्होंने हमें मोटरकी परमिट वगैरा लेनेमें मदद दी। अिसके सिवाय अुन्होंने अपने पासका अिस प्रदेशका अेक सुन्दर नकशा हमें अिस्तेमालके लिअे दिया। अिससे हमें बहुत ही मदद मिली।

अिस अिलाकेमें जब जब रास्ते दाअी या बाअी ओर मुड़ते हैं, तभी रास्तोंके बीच खूटियां गाडकर या छोटे छोटे पौदे लगाकर रास्तेके दो भाग कर दिये जाते हैं, ताकि आमने सामने आनेवाली मोटरें टक्कर खानेसे बच जाय। यह व्यवस्था हर देशमें दाखिल करने योग्य है।

अब काफी दूर तक अेक सपाट मैदान आया। सुबहसे गोलमटोल पहाडियां दीख रही थीं। धीरे धीरे हम अिन पहाडियों तक पहुंचे। हम अितने अूंचे पहुंच गये कि अुसका अभिमान होने लगा। आठ या साढ़े आठ हजार फुटकी अूंचाअी पर मोटर लेकर दौड़ना कोअी छोटीसी बात है! अितनी अूंचाअी तो पूर्व अफ्रीकाका सफर पूरा करके जब हम अीथियोपियाकी राजधानी अेडिस-अबाबा गये तभी मिली थी।

अभिमान करनेके बाद नीचे अुतरना ही पड़ता है। 'दि ग्रेट गॅप' नामसे प्रसिद्ध घाटीमें होकर हम अितने सपाटेसे अुतरे कि अुनके लिअे अधःपातके सिवाय और कोअी शब्द ही काममें नहीं लिया जा सकता! जैसे युद्धके दिनोंमें की गअी कमाअी मंदीके दिन आते ही कोअी व्यापारी खो बैठता है, वैसी ही अूंचाअीके बारेमें हमारी स्थिति हो गअी।

अब हमने अुत्तरकी दिशा पकड़ी और नकुरु पहुंचे। परन्तु रविग्डीके अभयारण्यकी तरफ जानेको हम अितने अुतावले हो गये

थे कि रुटशुरु न ठहरकर आगे ही चले गये। यहा हमने रुटशुरू नामकी नदी पार की। यह नदी अेडवर्ड सरोवर और वुन्योनी सरोवर दोनोंको मिलाती है। अब तक हमने आबोसेली और नैरोबीके ही दो अभयारंण्य देखे थे। ङ्गोरोगोरो जाते हुअे मनियाराके खारे तालावके किनारे भी हमने असख्य श्वापद देखे थे। परतु रुअिण्डीके जगलमें श्वापदोकी जो समृद्धि है, वह क्या और कही मिल सकती है? अभयारण्यमें प्रवेश करते ही दिलमे अुथलपुथल मचने लगी। दाअी तरफ देखते समय दाअी ओरका कोअी श्वापद विना देखे रह जाय तो? और बाअी तरफ देखे तो दाअी ओर हमें धोखा हो जाय तो?—अिस डरके मारे क्षण क्षण सिरको घुमाते हुअे आगे बढे। रास्तेमें हाथियोकी लीद दिखाअी देते ही विश्वास हो गया कि आसपास हाथियोका आगमन हुआ है। फिर तो हम अिसकी जाच करने लगे कि लीद सूखी है या ताजी गीली है।

रास्ते पर जहा तहा फ्रेंच भाषामें और कभी कभी अग्रेजीमें नोटिस लगे थे कि मोटरसे बाहर निकलना खतरनाक है। लेकिन जब हमने रास्तेकी दाअी ओर गरम पानीके झरने अुबलते और फुदकते देखे, तब हमसे अदर कैसे रहा जाता? छोटे बडे अनेक झरने थे। अुनसे दुर्गंध आ रही थी। कुछ समय अुनके बीच घूमने पर भापवाली हवा दिमाग तक पहुचकर अस्वस्थ करने लगी थी। मैंने अेक जगह देखा कि अुबलता हुआ गरम पानी अिकट्ठा हुआ है, परतु अुसके नीचे काअी जमी हो अैसा हरा रग दिखाअी दे रहा था। लाठीका सिरा पानीमें डालकर अुस काअीको बाहर निकाल कर देखनेकी जीमें आअी। अितनेमें किसी साथीने दूसरी ही तरफ ध्यान खीच लिया और वह बात रह गअी। आसपास देखनेसे भरोसा हो गया कि यह भाग कोअी दरार (rift)का अेक अवशेष है। हम मोटरमें बैठ रहे थे कि अितनेमें हमारे पीछेकी मोटरवाले मोटर दौडाते हुअे आ पहुचे। अुन्होने कहा कि, 'दूर हमने अेक हाथी देखा। यह लगने

डर कि वह हमारी तरफ आ जायगा हमने दौड लगाअी है। आप भी यहा अधिक समय न ठहरिये।' हम रवाना हो ही रहे थे। असलमें यहाके हाथियोका मनुष्यके पीछे दूर तक हमला करनेके लिअे आनेका अभी तक कोअी अुदाहरण नही। नजदीक जाकर छेडें या मनुष्यकी गध अुन्हे असह्य हो जाय तभी वे हमला करते है।

शाम होने आअी और हम आल्बर्ट पार्कके रुअिन्डी कैम्पमें पहुच गये। पत्थरकी नाटी दीवारसे घिरी हुअी अिस जगहमें अेक हॉटल और दस पन्द्रह गोल गोल झोपडिया थी। हरअेकमें खाट वगैराकी सुविधा थी। बिजलीका डाअिनेमा खास समय तक ही चलता था। झोपडियोकी गलीके बीचमें थूहरके पेडोकी कतार सुन्दर ढगसे लगाअी हुअी थी। कैम्पके दो तीन सिरो पर हाथीके मुहकी हड्डिया रखी हुअी थी। बरामदेसे दूरके मैदानमें दो तीन जगली भैसे चरती दिखाअी दी। यहाकी भाषामें अिन्हे मोगो कहते है। यहाके जगलमें बसनेवाले लोग और शिकारी सबके सब जगली भैसमे जितने डरते है, अुतने तो हाथी और सिहसे भी नही डरते — अकल कम और कीना बेहद।

रातको मोटरें लेकर जगलमें घूम आनेका हमारा विचार था। आम्बोसेली और नैरोबीमें भी हमने निशाचर बननेका आनद अनुभव किया था। परतु हमें यहा कहा गया कि, 'रातको तो क्या, सवेरे आठ बजे तक भी आपको कैम्पसे बाहर जानेकी अिजाजत नही।'

अितनी निराशा होनेके बाद तो खाने-पीने और आराममे सोनेकी ही सूझ सकती थी।

३१

टेम्बो, भोगो और किबोकोका अभयारण्य

हरअेक दिन २४ घण्टेका ही होता है, फिर भी 'सब दिन होत न अेक समान'। अिन २४ घण्टोमें कितने और कैसे अनुभव समाते है, अिस परसे यह तय होता है कि वह दिन छोटा था या बडा। अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जगलके जानवर देखनेके कुल दिन ५-६ ही होगे। अिन जानवरोके किसी सवालको हल करनेके लिअे हम वहा नही गये थे। हमारे जैसे लोगोसे अुन वन्य प्राणियोको लाभ-हानि कुछ भी नही थी। अुनके लिअे थोडी परेशानी मानी जा सकती थी, परन्तु यह अनुभव अुन्हे सदासे था। हम अगर मासाहारी होते, शिकारके शोकीन होते या स्थानीय खेतीवाडीकी रक्षाकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर होती, तो अिन जानवरो और अुनके स्वभाव और जीवन-क्रमको जानकर हमें कुछ न कुछ व्यावहारिक लाभ होता। हमारे लिअे अिनमें से कोअी भी कारण नही था। फिर भी अितनी दूर आकर रुपया, समय और प्रभाव खर्च करके हम अिन श्वापदोके और अुनके निवास-स्थानके दर्शनोके लिअे अुत्सुक हुअे थे। और मानते थे कि अिससे हमारी जीवनकी अनुभूतियोमे कीमती वृद्धि होगी। अिस अुत्कठामें जानकी जोखिम भी अपना भाग अदा कर रही थी। हा, हजारो लोगोका अनुभव देखते हुअे अिस जोखिमको कुछ भी महत्त्व नही दिया जा सकता। जहाज या वायुयानके सफरमें क्या जोखिम नही होती? और जिस प्रदेशमें कभी कभी भूकम्प आता है अथवा ज्वाला-मुखी फूट निकलता है, वहा भी चाहे जैसी जोखिम पैदा हो सकती है। समय समय पर अिसके अुदाहरण भी अुपस्थित न होते हो सो बात

नही। फिर भी हम अैसी जोखिमको कुछ नही गिनते। यहाकी भी यही बात मानी जाय।

आठ जुलाअीका दिन निकला। हमारी मोटरयात्रा शुरू होनेमे देर थी। साढे छ पौने सात बजे होगे। पूर्व दिशाकी लालिमा अितनी आकर्षक थी कि कैम्पमें बैठे रहना असभव हो गया। मैंने सरोजसे कहा, "चलो हम कैम्पसे बाहर जरा घूम आये। अभी सूर्योदय होगा।" मेरा वाक्य पूरा भी न हुआ कि दूर क्षितिज पर रक्त सूर्यका चमकता हुआ बिम्ब प्रगट होने लगा। पूर्वी ८०° रेखाशके आसपास रहनेवाले हम आज पूर्वी ३०° रेखाशके आसपास खडे रहकर सूर्यका दर्शन कर रहे थे। २० से २४ अुत्तर अक्षाशके आदी हम भू-मध्य रेखाके दक्षिणमें पहुच गये थे, अिस बातका भान ही अुस सूर्योदयको अधिक कीमती और हमारे लिअे अधिक दुर्लभ बना रहा था। अिस सूर्योदयसे अुत्तेजित होकर मै जल्दी जल्दी कदम आगे बढाने लगा। मेरी अैसी अुत्तेजनाके प्रति सरोजका सदा ही सहयोग होता है। अिसमें भी निसर्गकी सुन्दरता और भव्यताका आकर्षण कम नही था। परन्तु हम कैम्पसे दूर जा रहे है, अिस तरफ अुसका ध्यान गया। अुसे मेरा अुत्साह मन्द किये बिना मेरा ध्यान अिस ओट खीचना था कि हम सलामतीके क्षेत्रसे बाहर जा रहे है। अुसने हसते हसते मुझसे पूछा, "Have you an immediate appointment with the lions?" —"अभी सिंहोके साथ कोअी जरूरी मुलाकात रखी है क्या?"

मै हस पडा और ठहरकर आगे देखने लगा तो देखता क्या हू कि चार अलमस्त भोगा (वन-महिष) हमारी मुलाकातके लिअे मौजूद थे। हम कुतूहल और कुछ कुछ आश्चर्यसे अुनकी तरफ देखने लगे। अुनका भी ध्यान हमारी तरफ गया। अपने सुन्दर कान हमारी तरफ फेरकर वे हमारी ही तरह कुतूहल और आश्चर्यसे हमे देखने लगे। पहले ही क्षण हमारी तरह वे भी अन्दाज लगाने लगे कि सामने-वालोका क्या मनसूबा है। अिसी अेक क्षणमें युद्ध हो या सन्धि,

अिसका निर्णय हो जाता है। हमने अपनी नजर बिलकुल अक्षुब्ध, अहिंसक और मित्रतापूर्ण रखी। अुन्होने भी अपने चेहरेकी घबराहट अुतार डाली। फिर तो केवल दोनो ओर दर्शनानन्द ही रह गया। अुनके मनमे क्या व्यापार चल रहा होगा, अिसका हमें क्या पता? जीभर कर देख लेनेके बाद अुन्होने फिर चरनेकी तरफ ध्यान लगाया और हम वापस कैम्पकी तरफ मुडे। ङ्गोरोगोरो जाते हुअे रातको अेक भोगो नजदीकसे देखा था, परन्तु अुस समय मोटरकी रोशनीकी मददसे जितना दिखाअी दिया अुतना ही देखा। अिस समय तो सूर्य भगवान सारे प्रदेशको प्रज्ज्वलित कर रहे थे और हमसे कह रहे थे कि 'पश्याद्य सचराचरम्'। और सचमुच अुस दिन 'बहूनि अदृष्ट-पूर्वाणि आश्चर्याणि' सूर्य भगवान्की कृपासे देखनेके हम भाग्यवान बने।

अितने शुभ-शकुनसे हमारा दिन शुरू हुआ। अेक अेक मोटरमे अेक अेक अस्कारी (सिपाही) लेकर हम चले। आज कितना घूमेंगे, अिसका हिसाब न होनेके कारण हमने अपनी मोटरोको अुनका पेय कण्ठ तक पिला दिया। बहुत समय तक हमे यो ही घूमना पडा। फिर दूर अेक जानवर दिखाअी दिया। पिछले भाग परसे यह यकीन नही होता था कि यह हाथी है या गेंडा? यहाकी भाषामें कहे तो टेम्बो है या फारु? हम थोडेसे आगे निकले तो देखा कि वह अिनमे से अेक भी नही था। वह था किबोको (हिप्पोपोटेमस)। गेंडा (फारु) अिसके बाद दिखाअी दिया। तत्पश्चात् यत्रतत्र अनेक जानवर दिखाअी दिये। अेक हाथी घास अुखाडकर अुसकी जडोकी मिट्टी अपने सिर पर बिखेर लेनेमे आनन्द मान रहा था। कभी-कभी मक्खियोको हटा देता होगा। अिसके बाद अेक प्रकारके सूअर दिखाअी दिये। अुनके दोनो ओरके बाहर निकले हुअे दात सीधे आनेके बजाय कौंस जैसे बिलकुल टेढे थे!

नैरोबीके अभयारण्यमें हिप्पो बहुत कम है। अेक ही जगह पानीमें लोटपोट होते हुअे अेक हिप्पोका मुह और अुसके गुलाबी कान मैंने

देखे थे। अिसलिअे जीमें यह लग रही थी कि हिप्पो कब देखा जायगा — कब देखा जायगा ? यहाके अभयारण्यमें अितने अधिक हिप्पो देखनेमें आये कि हमारे कुतूहलमे अुनका भाव अेकदम घट गया। परन्तु वह फिर बढ गया — जब हम अिस अरण्यके अेकदम सिरे पर पहुच गये और वहाकी नदीमें बहुतसे हिप्पो जलक्रीडा करते हुअे देखनेको मिले।

यह जानवर भी जीमें आ जाय तो पागल हमला कर देता है, अिसलिअे अुससे डरकर ही चलना पडता है। अिन लोगोको नजदीकसे देखनेके लिअे हमें अपनी मोटरोंसे अुतरकर नदीके किनारे तक पहुचनेमें काफी चलना पडा। और वह भी अूचेसे नीचे अुतरना था। हिप्पो हमला कर दे तो मोटर तक सहीसलामत दौडा जा सकता है या नहीं, अिसका हिसाब क्षण क्षण करना पडता था। मैंने सरोजसे कहा, "तुम अूपरसे ही देखना। हमे नीचे जाने दो।" परन्तु कमलनयनने हमारा यह विचार बदल दिया। अुसने कहा, 'हमे अैसी जगह जिन्दगीमें अेक ही बार आना है। थोडीसी जोखिम अुठा लें और सरोज बहनको साथ ले चलें।' हिम्मत कहा तक की जाय, और जोखिम किस हद तक अुठाअी जाय — अिस बारेमें कमलनयनकी दृष्टिके प्रति मुझे विश्वास होनेके कारण अुसकी बात मैंने झट मान ली और सरोजको साथ ले लिया। हमारी तरफके हिप्पो पानीमें लगभग सो गये थे। अेकाध हिप्पोको करवट बदलने या स्थानान्तर करनेका अिरादा हो जाता तो बाकीको यह अच्छा न लगता। वे अुसकी जरा भी मदद न करते। नदीके सामनेवाले किनारेकी तरफ जो हिप्पो पानीमें लोट रहे थे वे ज्यादातर अुत्पाती थे। अुनकी जल-क्रीडा देखना ही अधिक मजेदार था। सामनेके किनारेके अूचे पेड पर अेक सफेद पक्षी था। वह भी हमारी ही तरह तटस्थ भावसे यह क्रीडा देख रहा था और आनन्द ले रहा था।

हमने अस्कारीसे कह रखा था कि वाकीके जानवर कितने ही दिखाओ दें या न दे, हमें अफ्रीकाका अच्छासा अुम्दा सिंह देखना है। और वह भी सिंहनी नही वल्कि अयालवाला वडा सिम्बो। हमारी यह ख्वाहिश सुननेके बाद अस्कारियोकी तीखी नजर सब जगह घूमने लगी। अेक खास जगह हम पहुचे और दोनो अस्कारी गरज अुठे 'सिम्बा, सिम्बा, सिम्बा।' दूर दूर —दो तीन फर्लांग दूर झाडियोके वीचकी अेक खुली जगहकी तरफ अुन्होंने अुगली की। पहले तो कुछ दिखाओ ही नही दिया। परन्तु वे लोग विश्वासके साथ कहते थे कि वहा वडा सिंह जरूर है। धीरे धीरे घासमें मिट्टीके ढेर जैसी कोओ चीज दिखाओ दी। अेक धब्बेसे ज्यादा वडी नही थी। हम दूरवीनसे देखने लगे। अितनेमें शका हुअी कि धब्बा सिर हिला रहा है। फिर तो छाती अूची निकालकर वैठे हुअे सिंहकी समूची भव्य आकृति वन गअी। वह बीच बीचमें सिर घुमाकर देख रहा था। मोटर लेकर अुसकी तरफ जा तो सकते ही नही थे, अिसलिअे अितनी दूरसे अुस वनराजको देखकर सन्तोष मानना पडा। अुसे जीभर देखनेके बाद हम अन्यत्र देखने लगे। अितनेमें दूरवीनसे ताककर देखनेवाले शरद पडघाने घोषणा की कि 'सिंह अुठ गया है, अब चलने लगा है।' मैंने तुरन्त अपना दूरवीन चढाया। क्या शोभा और शान थी अुस सिंहके चलनेमें!

वन्दर, हिरण, नीलगाय, तरह तरहके जानवरोंको देखते देखते हमने सारा अभयारण्य छान डाला। असली शोभा तो हाथियोंकी ही थी। कअी जगह हमने कअी जगली हाथी देखे। और सब तरह जी भरनेके वाद लौटे। थूहरके पेडोंकी शोभा अिस अरण्यकी खासियतोंमें वृद्धि कर रही थी। जल्दी वापस जानेके लिअे हमने बीचकी दिशा ली। यह तो कहा ही कैसे जाय कि रास्ता लिया? हमारे पहले गअी हुअी किसी मोटरकी लीकको रास्ता कहे तो रास्ता जरूर था। हमारी मोटर आगे थी। सावधानी और जल्दीके बीच रास्ता काट

रही थी। अितनेमें सामने वाअीं ओरसे रास्ता लांघता हुआ जंगली भैंसों — भैंसों — का अेक झुण्ड दिखाअी दिया। डेढ़ सौ दो सौ जरूर होंगे। हम अेकदम ठहर गये। यह भी कहा जा सकता है कि ठंडे हो गये। ये लोग सोच लेते तो अेक क्षणमें हमारी दोनों मोटरोंका चूरा कर डालते। अुनका रुख भी दोस्ताना नहीं मालूम होता था। मैंने कमलनयनसे कहा, "नाजुक प्रसंग है। भोंपू तो बजाया ही नहीं जा सकता। अिस झुण्डमें अुनके छोटे-बड़े बच्चे हैं। अुन्हें जरा भी शंका हो जाय कि बच्चोंको जोखिम है तो सारा झुण्ड ही हम पर टूट पड़ेगा। हमारी पीछेवाली मोटर भी नजदीक आ पहुंची थी। हमने अुसे रुक जानेका अिशारा किया। वे भी समझ गये कि रुके बिना चारा नहीं है! अुस समयका हर क्षण कितना अधिक लम्बा था!

हमें निश्चल देखकर बड़े-बड़े भैंसोंने रास्ते पर अपनी कतार खड़ी कर दी। सींगोंवाली अिस फौजको देखकर बड़े-बड़े सिंह भी हिम्मत हार जाय। अिस व्यवस्थित पंक्तिके पीछेसे बाकीके सब भैंसे और अुनके बच्चे रास्ता लांघकर दाअीं ओर दूर तक पहुंच गये, तब कहीं रक्षक वीरोंकी कतार जरा ढीली पड़ी। ये लोग भी रास्ता छोड़कर दाअीं ओर पहुंच गये। जब हमें विश्वास हो गया कि रास्तेके बाअीं तरफ अेक भी प्राणी अब नहीं रह गया है, तभी हम आगे बढ़े और तुरन्त अैसी दौड़ लगाअी कि सारा झुण्ड हमारे पीछे पड़ जाता तो भी हमें न पहुंच सकता।

अैसे समय रास्तेमें न कोअी खड्डा आया न अिंजन बिगड़ा और न सामनेसे कोअी हाथी आया। यह अीश्वरकी कम कृपा नहीं थी। सचमुच आज वन्य श्वापदोंको देखकर हमारा जी भर गया था। पशु किस परिस्थितिमें रहते हैं, जोखिमके बारेमें वे कितने लापरवाह रहते हैं और खाने और जीने दोनोंकी मुश्किलके बीच जीवनका आनन्द किस तरह लूटते हैं, यह देखकर सचमुच ही जीवनकी अनुभूतियोंमें अेक अपूर्व वृद्धि हुअी थी। अितने सारे प्राणी किसी भी नियमके बिना,

राज्य या सरक्षक दलके विना यहा रहते है, वढते है, घटते है, और प्रकृतिकी योजनाको पूरा करते है। न अुनके पास कोअी अितिहास है, न कोअी परम्पराओका स्मृतिशास्त्र है। प्रकृति देवी जैसी प्रेरणा दे और सुविधा या असुविधा पैदा कर दे अुसीके अधीन रहते है। प्रकृतिसे अलग क्रम पैदा कर लेनेकी अुनमें अिच्छा नही है। जीनेके बारेमें अुन्हे विषाद या थकावट या निर्वेद नही। अिन श्वापदोका कोअी कमीशन मनुष्यजातिके बारेमें अपनी राय अिकट्ठी कर ले, तो अुसमें हमारे बारेमें क्या क्या होगा?

अनुभवोंके भारी भारी गुच्छे बटोरकर हम अेल्वर्ट नेशनल पार्कसे लौटे। रुअिटी और रुटशुरु दोनो नदिया फिर पार की। अेडवर्ड सरोवर दिखाअी नही दिया अिसका पछतावा रहा। आसपासके पहाडोंको "पुनरागमनाय" कहकर नमस्कार किया। छोटी दरारको पार कर लिया। गबकके झरनेको 'क्या हाल है?' कहकर खैरियत पूछी और देखते देखते रुटशुरु गाव तक आ पहुचे। यहासे हमें तिलोत्तमा या अुर्वशी जैसे रूपराशि कीवू सरोवरकी तरफ जाना था।

३२

कीवूमरकी आधी प्रदक्षिणा

आगेका प्रवास सचमुच अेक सुन्दर सरोवरकी अुलटी परिक्रमा थी। अिसके लिअे हम पहले रुटगुरूसे गोमा गये। वहा कीवू सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे। गोमाके पास ही किसेनी नामका छोटासा अेक सुन्दर स्थान कीवूके किनारे है। वहा अेक दिन आनन्द लेकर हम अपनी अुलटी प्रदक्षिणा करनेके लिअे वापस गोमा गये और सरोवरकी बाअी ओरकी सारी यात्रा पूरी करके कालेहे होकर कॉस्टरमन-वील तक गये और वहासे रुझीजी नदीका सारा दाहिना प्रदेश पार करके टागानिका सरोवर तक पहुचे। जैसे कीवूके किनारे किसेनी है, अुसी तरह टागानिकाके किनारे अुसुम्बरा है। वहा अेक दिन रहकर हम लौट आये और फिर अुत्तरकी दिशा लेकर कीवू सरोवरको बाअी ओर रखकर नये नये सुन्दर प्रदेशोंमें से कुदरतका अद्‌भुत दर्शन करते हुअे कबाले लौटे। अिस प्रकार हमारी विशाल परिक्रमा पूरी हुअी।

रुटगुरूसे गोमा तकका रास्ता बहुत ही रमणीय था। वनश्री अितनी घनी थी कि अुसमें से रास्ता कैसे तैयार किया होगा अिसका हमें आश्चर्य होता था। कौन जाने कहासे सारे रास्तेमें पीली तितलिया अिधर अुधर दौड रही थी। अिस रास्तेमें अेक और बडा अभयारण्य है और सुना है कि अुसके अेक सिरे पर मनुष्य-कल्प गोरिला वानर रहते हैं। पहाडियोंकी शोभाके बीच कॉफीकी खेती शोभा दे रही थी। और बीच बीचमें पेरेथ्रमके सौम्य सफेद फूल अमावसकी रातके तारोंकी तरह घनी बस्ती बनाकर अुगे हुअे थे। यह फूल चमडा रगने और कमानेके काममें आता है, अिसलिअे यहाकी सरकारने अिसकी खेतीको बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

जिस सिकोना पेडसे वुखारकी दवा क्विनाअिन निकलती है, अुसे भी यहाकी सरकारने खूब वोया है। अिस नयन-मनोहर मार्गका अन्त नयी नगरी गोमाके दर्शनसे हुआ। गोमाकी पहाडी परसे कीवू सरोवरका विस्तार अच्छा दिखाओ देता है। यहाके छोटे छोटे मकान भी वडे सुन्दर है।

गोमाके पास ही अगर अुसका प्रतिद्वन्द्वी किसेनी न फैला होता, तो गोमाका वैभव हमेशा वढता ही रहता। सुन्दर मकान, अच्छे रास्ते, तरह-तरहके फूल और नावमें वैठकर सरोवरमें सैर करनेका आनन्द — ये सब किसेनीके आकर्षण है। सीधे अूपर जानेवाले पेड वीच वीचमे खडे होकर अिस स्थानके लालित्यमें गाम्भीर्यका मिलान कर रहे थे।

व्हाअिट रशियाकी अेक महिला फ्रासमें रहकर फ्रेंच वन गअी होगी। वह वहाकी सरकारकी तरफसे कलकत्तेमे रह चुकी थी। यह महिला किसेनीमें वुगोअी नामका अेक होटल चला रही है। हम अुसीमें ठहरे थे। यहा भी सब सुविधाओवाली गोल झोपडिया वनाकर अुनमें मुसाफिरोको रखा जाता है। यह महिला कअी युरोपियन भाषायें जानती है। दुवारा हिन्दुस्तान आने और हिन्दुस्तानके विदेश-विभागमें काम करनेकी अुसकी वडी अिच्छा है। दूसरे दिन अिस स्थानके गोरे कर्मचारी हमसे मिलने आये थे। स्थानीय भारतवासियोने अिन्हे चाय-पार्टी दी थी। गोरे सिर्फ फ्रेंच जानते थे। मै जितना अग्रेजीमें वोला वह अुस महिलाने अुनके लिअे फ्रेंच करके सुना दिया। सरोजको थोडी वहुत फ्रेंच आती थी। अिसलिअे वह भाषान्तर कैसा हुआ, अिसकी अुसने मुझे कल्पना करा दी। यहाके भारतीयोको हमारे आनेका पता था, अिसलिअे हिन्दू और मुसलमान दोनो अिकट्ठा होकर मिलने आये। अुनके साथ वहुत वाते हुअी। हिन्दू-मुसलमानोकी मित्रताके वारेमें, यहाकी सरकारके साथ अच्छे सम्वन्ध रखनेके वारेमें, और अफ्रीकी लोगोकी अच्छीसे अच्छी सेवा करनेके

बारेमें बात की। हमें मालूम था कि किसेनीके पास अेक 'सजीव' ज्वालामुखी है। हमने अिस बातकी जांच की कि वहां तक जाया जा सकता है या नहीं। यह नयी खोज हमारे कार्यक्रममें बैठ नहीं सकती थी, अिसलिअे रातको अंधेरा हो जानेके बाद गांवके बाजारमें से हमने अुस ज्वालामुखीका शिखर देखा। अंधेरेमें भूतकी तरह अपना शिखर अुठाकर अुस पर अेक विराट अंगीठी अुसने धारण की हो, अैसा वह दृश्य था! ज्वालाके कारण आसपासका आकाश भी लाल लाल दिखाअी देता था।

सुना है अफ्रीकामें अैसे दो तीन ज्वालामुखी हैं। बाकीके सब या तो मृत हैं या सो रहे हैं। हरअेकके सिर पर गहरा और विशाल द्रोण या ज्वालामुख तो होता ही है। अैसे सुप्त-शीतल शिखरोंकी शोभा भी कम नहीं होती। अैसे शिखरोंके दर्शन मेरे खयालसे केवल प्राकृतिक शोभा नहीं होते, भगवानकी विभूतिके दर्शन ही होते हैं। अुस दिन शामको सरोवरके किनारे की गअी प्रार्थनामें जैसे प्रशांत सरोवरने अपना भाग अदा किया था, अुसी तरह दूसरे दिन सवेरे जब अुसी जगह प्रार्थना करने गये तब प्रार्थनामें सरोवरके अलावा रातका ज्वालामुखी भी अुपस्थित हुआ था। सचमुच प्रार्थना द्वारा ही चेतन और अचेतनके बीचका अैक्य अनुभव किया जा सकता है।

प्रार्थना और नाश्तेसे फारिग होनेके बाद हम स्थानीय मार्केट देखने गये। हमने देखा कि हमारे लोग अफ्रीकी लोगोंको तरह तरहके कपड़े बेचते हैं। खुले मैदानमें जहां अफ्रीकी लोगोंके बीचमें ही लेन-देन होता था, वहां सब चीजें अितनी थोड़ी और सादी होती थीं कि हमें यही खयाल होता था कि अितनी-सी बातके लिअे वे बाजार तक क्यों आते हैं? कुछ अफ्रीकी लड़कियां रंगबिरंगे फैशनके कपड़े और मुश्किलसे दो तीन दिन चलनेवाले सस्ते गहने पहनकर अिधर अुधर टहल रही थीं। भगवानने अुन्हें जैसे बाल दिये हैं अुनमें अुस्तरे और कैंचीकी मददसे तरह तरहकी शोभा पैदा करनेके लिअे भी वे

पच रही थी। बुढियायें सब पुराने ढगकी थी। अुनकी पोशाक और व्यवहारसे ही अफ्रीकी लोगोकी पुरानी रूढ सस्कृतिकी कल्पना हो सकती थी। अेक वृद्ध अफ्रीकीने अपने कानकी लोलक अितनी बडी कर ली थी कि अुसकी अडचन मिटानेके लिअे वह अुसे अुठाकर जनेअूकी तरह कान पर रख सकता था।

अैसे अफ्रीकी लोगोके बीच खडे रहकर हमने फोटो लिवाये। अैसे फोटोकी तरफ हम अेक नजरसे देखते है। अफ्रीकी लोगोकी नजर दूसरी ही होती है।

सब देख लेनेके बाद अेक बार मोटरमें बैठकर किसेनीका सारा किनारा देखनेकी जीमें आअी। पहले हम बाअी तरफ जहा तक रास्ता जा सकता था वहा तक गये। फिर बाअी तरफ गोमाके बदरगाह तक गये। वहासे पासकी पहाडी पर जाकर सारा दृश्य आखें भरकर देखा। अिससे ज्यादा कुछ नही किया जा सकता था, अिसीलिअे हम वापस आ गये।

अब हमारी कीवू सरोवरकी परिक्रमा शुरू हुअी। गोमा तक अुत्तरमें जाकर हमने मुडकर दक्षिणका रास्ता लिया। अुतार-चढाव तो होता ही है। घडीभरमें रास्ता सरोवरके पास आ जाता, घडीभरमें दूर चला जाता। अैसा लगता था कि दाअी तरफकी पहाडियोको अिस बातका दुख हो रहा है कि वे सरोवर तक नहाने नही आ सकती।

थोडेसे आगे गये और हमने देखा कि दो अढाअी वर्ष पहले (सन् १९४८ मे) अेक ज्वालामुखीने अुबलकर सरोवर तक आनेका प्रयत्न किया था। अुबलते हुअे लावाका रेला अितनी दूरसे और अितने जोरसे आया कि अुसका अेक बडा राक्षसी जत्था सरोवरमें अुतर पडा। सरोवरका पानी जल गया। अुसने हाहाकार किया। आखिरकार लावाको सरोवरका अेक खासा बडा टुकडा मूल तालाबसे अलग करके ही सतोष मानना पडा। कोयलेकी तरह काले चमकते हुअे लावाके अिस जत्थेको देखकर जी घबरा गया। सुलगते हुअे

रसकी लहरें अेकके बाद अेक आ रही थी। सूखनेसे पहले अुसमें सलवटें पडती थी। किसी किसी जगह यह रस गोल चक्कर काटता और जहा तहा फट जाता। अब ठण्डा हुआ यह सारा दृश्य भयानक और विषाद अुत्पन्न करनेवाला था। पेड, पत्ते, सादी मिट्टी या पत्थर कुछ भी नही दीखता था। सब जगह काला स्याह लावा और अुसमें से जाता हुआ हमारा रास्ता था।

हम विषण्ण मनसे आगे बढे। वहा अैसा ही परन्तु दूसरी तरहका दृश्य देखनेको मिला। सन् १९३८ अीस्वीमें अेक और लावेका रेला कीवूमें नहाने आया था। अिसका विस्तार भी पहलेकी तरह फैला हुआ था। परन्तु १२ सालकी धूप, बरसात और हवासे अुसका चूरा हो गया था। अुसके अूपर जगह जगह मिट्टीने अपना राज्य जमा लिया था। और मिट्टी आअी अिसलिअे बच्चे वनस्पतिने अुसके अूपर अपनी हरी हरी ध्वजायें फहराअी। मनमें विचार आया — मरण और विनाश चाहे जितने भीषण और दुर्धर हो, परन्तु जीवन अुसके अूपर विजयी होता ही है। विनाश अुत्पाती परन्तु क्षणजीवी है, जब कि जीवन सौम्य-सनातन है।

सरोवरकी शोभा देखकर चाहे जितने तृप्त हुअे हो परन्तु अुससे पेट नही भरता। अिसलिअे कालेहेमें हमने खाया-पीया और आगे चले। शामको साढे छ बजे हम गधर्व नगरी जैसे अेक शहरमें आ पहुचे। अुसका पुराना नाम बुकाफू था। आजकल अुसे कॉस्टरमन-वील कहते है।

३३

बच्चा शहर और प्रवाही कन्या

महात्मा गाधीजीने अेक जगह लिखा है कि आकाशके तारे जहा है वहा भयकर गर्मी है। वहा सभी चीजें पिघलकर द्रवरूप ही नही वायुरूप हो जाती है। हजारो डिग्रियोकी अुनकी गर्मीकी हम कल्पना भी नही कर सकते। परन्तु अिन्ही तारोका प्रकाश जब करोडो मीलोकी सफर करके हमारे पास आता है, तब कितनी शीतलता प्रदान करता है! अैसे ही आश्चर्य हमारी पृथ्वी पर भी जहा तहा फैले हुअे है। अफ्रीकाके सभी सरोवर और फटी हुअी दरारें भयानक ज्वालामुखीके आभारी है। कीवूका सरोवर समुद्रकी सतहसे ४८२९ फीट अूचा है। अितना अूचा सरोवर दुनियामे दूसरा नही है। अूपर कहे अनुसार ज्वालामुखियोकी अिस सरोवरके साथ खास दोस्ती है। वे देर-सबेर अिसमे नहाने अुतरते है।

प्राचीन कालमे — किसीको यह पता नही कि कब — अिसी तरह कोअी ज्वालामुखी दौड आया होगा। अुसने कीवू सरोवरके दक्षिणमें अेक बडी पहाडी सरोवरमे घुसेड दी है। अुस पहाडी पर वनस्पतिने अपनी बस्ती बसाअी। अुसके बाद मनुष्यको अुनके बीच जाकर रहनेका सूझा। अिस तरह बुकाफूका गाव पैदा हुआ। अितना रमणीय स्थान गोरोकी नजरसे कैसे बचता? बढिया पानी, स्वास्थ्यप्रद हवा, रमणीय दृश्य और सुविधापूर्ण बन्दरगाह — यह सब देखकर अुन्होंने यहा कॉस्टरमन-वीलकी स्थापना की। मध्य अफ्रीकामे अितना छोटा और अितना सुन्दर दूसरा शहर शायद ही हो। अफ्रीकामें हम सबसे अधिक पश्चिममें अिसी स्थान पर पहुचे होंगे। यह नगरी लगभग २८ रेखाश पर स्थित है।

हम अेक अच्छेसे अच्छे यानी महगेसे महगे होटलमें जाकर रहे। हमारे देशके लोगोमें से जान-पहचानवाले यहा कोअी नही थे। होटलमें जाकर हमने समझाया कि हम मास नही खाते, मुर्गे नही खाते. मछली नही खाते, अडे भी नही खाते और चरवी भी हमें नही चलेगी। शराबको तो हम छू भी नही सकते। अगर अभक्ष्य भक्षणसे बचना हो तो अितनी बाते बताये बिना छुटकारा नही होता। हमारी सेवाके लिअे तत्पर और चेहरे व कपडोंसे अत्यन्त गभीर व्यक्ति हमारी यह बात सुनकर भौंचक्का ही हो गया। महगेसे महगे होटलका खर्च देकर ये लोग अेक रात रहने आये हैं और कहते है कि ये-ये चीजें खायगे नही, तो अिनको खाना क्या है? शराब? वह भी अिन लोगोको पीनी नही है! अुसे लगा होगा कि यह सारा दल पागलखानेसे भागकर यहा आ गया है। अुसने हमारे मि० शहाणेसे पूछा, "ये सब चीजें आप क्यो नही खाते? किसीको भी ये माफिक नही आती?" शहाणेने कहा कि, "हमारे धर्मके अनुसार ये चीजें नही खाअी जा सकती।" बेचारा शहाणे! हमारे कारणसे अुसे भी यह परहेज रखना पडा! यह कहकर मैंने कमी पूरी की कि, "मै पनीर भी नही खाअूगा।" शहाणे बोला, "मै तो खाअूगा।" होटलवालेको लगा कि अिन लोगोका यह धर्म कैसा? वह मनमें चिढा। परन्तु कुछ न कुछ खाना दिये बगैर छुटकारा भी नही था। और हम अुगाही करने बैठे हुअे पठानकी तरह मेजके आसपास जमकर बैठ गये। अुठनेका नाम भी नही लेते थे। कडाकेकी भूख और खानेके कष्टसे निपटनेके लिअे हममें से कुछ लोग विनोद करके हसने लगे। वह ज्यादा चिढा। खाली सोडा या ऑरेन्ज स्क्वेश लें, तो भी रुपये दो रुपये देने पडें।

खैर, हमने ज्यो त्यो करके खाया और थकावट मिटानेको अपने कमरोमें चले गये। नहाने-सोने वगैराकी सब सुविधायें शाही थी। हमारे खयालसे खानेकी सहूलियतसे नहानेका सुभीता ज्यादा महत्त्वका

था। मनुष्य जब अपने बूतेसे अधिक खर्च करता है, तब अिन सुविधाओंका अधिकसे अधिक अुपयोग करके क्षणभरके लिअे अुसके जीमें यह मान लेनेकी आती है कि 'मैं बादशाह हूं।' अरेबियन नाअिट्स वाले अबूहसनकी मनोदशा समझनेके लिअे यह अनुभव काफी था।

सुबह जल्दी अुठकर सरोज और मैं सैर करनेको निकले। हमारे साथी निद्रानन्द लूट रहे थे। शरद पड्याको भी अुठाये बिना हम चुपचाप बाहर निकल गये और सारे टापूका चक्कर लगा आये। नीचे पानीके किनारे तक गये तो वहां कुछ लोग अेक छोटीसी नावमें आ रहे थे। वे हमारी ओर आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। अुनकी कल्पना यह थी कि जिन्हें गरीबीका दुर्दैव भुगतना पड़ता है, वे ही अितने जल्दी अुठ सकते हैं। अूंचे अूंचे पेड़ोंके बीच घूमते घूमते हम अेक पुराने गिरजे या महलके पास पहुंच गये। अेक कोनेमें रास्तेके अेक तरफ अेक खंभे पर माता मरियमका छोटासा देवस्थान था। परम भागवत बालब्रह्मचारी अीसाकी माता मरियमको हमने प्रणाम किया और पासकी बड़ी बड़ी सीढ़ियोंसे अुतरकर फिर सरोवरके पास गये।

मैंने सरोजसे कहा कि, "मध्य रात्रिके बाद यहां थोड़ासा भूकंप हुआ होगा। मैं नींदसे चौंककर जागा था। पहले अैसा लगा कि कोअी मोटर गुजरी होगी।" सरोजने कहा, "अपने कमरेमें मुझे भी अैसा ही अनुभव हुआ।" यह धक्का हमारे कुंभकर्णकी जातिवाले साथियोंकी नींद भंग न कर सका। अिसलिअे अुनसे हमारे अनुभवका समर्थन प्राप्त न हो सका।

सुबहके समय आसपास सब जगह घूमकर हमने अनेक स्थान देखे और आगे बढ़े।

कोपू तालाबकी लम्बाअी ६२ मील है। जब कि अुसके दक्षिणमें स्थित टाटानिका सरोवरकी लम्बाअी ४५० मील है। दोनोंकी अूंचाअीमें

भी अेक हजार तीन सौ फुटका अंतर है। और कुदरतकी खूबी यह है कि अेक सुन्दर नदी कीवूके दक्षिणसे निकलकर टागानिका सरोवरसे अुत्तरी सिरे पर जाकर मिलती है। अिस छोटी नदीको लगभग अस्सी मीलके अन्दर तेरह सौ फुट नीचे अुतरना पडता है। अुसका प्रवाह कितना वेगवान होना चाहिये? अिस रुझीजी नदीका अुद्‌गम हमारे होटलसे बहुत दूर नहीं था, परन्तु वहा तक जानेके लिअे अेक बहुत बडा चक्कर काटनेकी जरूरत पडती थी।

कीवूके किनारेसे रास्ता निकालकर जहा रुझीजी छलाग मारती है, अुसी जगह पर अेक अूचा पुल है। हम वहा गये। नदीका अुद्‌गम सबमें पवित्र स्थान होता है। कितनी अुत्सुकतासे हम अुसका दर्शन करने गये! परंतु हमारा अुत्साह क्षण भरमें विषादमें बदल गया। अेक सुन्दर चमकती हुअी पुष्ट गाय अुस पुल परसे जा रही होगी। सामनेसे कोअी बडी लॉरी आअी होगी। अुसने जान बचानेके लिअे पुलकी बाजूकी तरफ जानेकी कोशिश की। वह पुलकी किनारा थी। वापस लौटे तो कुचली जाय। आगे बढे तो अुतनी अूचाअीसे पानीमें कूदना ही पडे। भगवान् जाने अुस जानवरको क्या सूझी। अुसने छलाग मारकर अपनी तकदीर आजमानेका विचार किया होगा। 'या तो बच जाअूगी या नीचेके पानीमें फसे हुअे पत्थरोंसे टकराकर चूर चूर हो जाअूगी।' बेचारी गायके भाग्यमें दोनोंमें से अेक भी अन्त नहीं था। अुसने छलाग मारी तो सही, किन्तु अिसमें पुलकी किनारके लोहेकी दो बडी पटरियोंके बीच अुसका पिछला पैर फस गया। वह पिछले अेक पैरसे वहा लटकती ही रह गअी। अिस स्थितिमें अुसने कितनी वेदना सहन की और वह कब मर गअी, सो कौन जाने? हम गये तब वह गाय पुलकी अूचाअीसे नीचेकी नदीकी तरफ मुह करके अेक पावसे निश्चेष्ट लटक रही थी। किसी भी जानवरकी अैसी दशा देखकर हृदय विदीर्ण हो जाय, फिर वह तो अेक गाय थी। अुसे देखकर कितना बुरा लगा! हम पुल पर गये। नजदीकसे देखा

कि पैर कैसे फसा है। गाय मर गअी थी, अिसलिअे अुसकी मदद करनेके लिअे चार आदमियोको जमा करनेका सवाल ही न था। हमने पुलको दोनो सिरोसे और नीचेकी नदीको ठीक बीचसे देखा। अुत्सवके दिन हम अैसे विषादके साथ लौटे, मानो सूतक आ गया हो।

अब हमारी यात्रा अिसी रुझोजी नदीकी दिशामें अुसके अुद्गमसे अुसके मुख तक की थी। किनारे किनारे जानेकी बात थी ही नहीं। परतु नदीके दाअी ओरके छोटे बडे अूबड-खाबड पहाडोके बीचमे जो जोखम-भरा रास्ता तैयार किया गया था अुसी रास्तेमे हम अुतरे। अकेला अुतरना ही न था। अनेक बार चढते, अनेक बार अुतरते। कअी बार जान मुट्ठीमे लेकर विचार करते कि, 'अरे! अब क्या होगा?' अिस तरह करते करते हम अुबोराके रास्ते चले। बीच बीचमें रुझोजीके दर्शन होते तब दार्जिलिंग कालिंपोगकी तरफकी तिस्ता नदीकी याद आती थी। अैसे रास्ते पर श्री कमलनयनकी सारथ्य कलाकी अुत्तम परीक्षा होती थी। सचमुच वह अेक होशियार सारथी है।

अिस रास्तेमें कुछ भाग अितना तग है कि दो मोटरे अेक दूसरीको पार करके नही जा सकती। अिसलिअे वहा 'वन वे ट्रैफिक' (अेकतरफा यातायात) का प्रबध है। कुछ मोटरोको अुत्तरसे दक्षिण जाने देते है और वे सिरे पर पहुच जाय, तब दक्षिणकी मोटरोको अुत्तरकी तरफ जाने देते है। कितनी मोटरे छूटी है और कहा तक आअी है, अिसकी खबर दोनो सिरो पर पहुचानेके लिअे यहा टेलीफोनकी सुविधा भी नही है। अिसलिअे जगलके लोगोको बिठलाकर अुनकी पद्धतिसे ही समाचार पहुचाये जाते है। अनुकूल स्थानो पर लोहेके बडे बडे डब्बे या पीपे रखकर अुन पर नगाडेकी तरह आवाज की जाती है। यह आवाज कुछ मील तक पहुचती है। वहासे अिसी तरहका समाचारोका आदान-प्रदान होता है। और अिस जगली ढग पर सुघरी हुअी मोटरो और अुनके मुसाफिरोको सलामत रखा जाता है। अिस प्रकार पहाड अुतर जानेके बाद सीधी भूमि आअी। वहा

बायीं ओर नदीके किनारे अेक छोटीसी रेलवे जाती देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। रुझीज़ी नदी पहाड़से निकलनेके बाद जिस घाटीमें प्रवेश करती है, वहांकी जमीनकी पैदावारको यह रेलवे लुवुंगी स्टेशनसे चढ़ा कर अुवीरा ले जाती है। और वहां जहाज पर चढ़ाकर किगोमा, आल्बर्ट-वील या ठेठ दक्षिणमें कासंगा तक ले जाते हैं। किगोमासे अेक रेलवे ठेठ दारेस्सलामके बन्दरगाह तक जाती है। हमारे लोगोंके लिअे यह रेलवे बहुत महत्वकी है यह मैं पहले ही लिख चुका हूं।

पहाड़ परसे अुतरते अुतरते जब टांगानिका सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे तब अिस ओर आये हुअे बर्टन और स्पीक जैसे यात्रियोंको जैसा आनन्द हुआ होगा, लगभग वैसा ही आनंद हमें हुआ। हमने माना था कि अुवीरा तक पहुंचनेके बाद ही अुसुंबरा तक जाया जा सकेगा। मगर नाथके नक्शोंने हमारा भ्रम मिटा दिया। अुवीराका बन्दरगाह दो अेक मील दूर रहा होगा कि अितनेमें अेक रास्ता बायीं ओर फटा। अुसने हमें अुसुंबरा तक पहुंचानेका भार सिर पर लिया — सिर पर क्या, छाती पर लिया। यह रास्ता टांगानिका सरोवरके अुत्तर किनारे पर जाता था और सरोवरकी सतहसे बहुत अूंचा तो था ही नहीं। सरोवरका पानी चार छ फुट चढ़ जाय तो यह रास्ता डूब ही जाय।

अेक दो छोटे प्रवाह पुलकी मददसे लांघनेके बाद रुझीज़ी नदीका बड़ा पुल आया। सवेरे जिस सरो-जा नदीके अुद्गमकी तरफके विषादमय दर्शन किये थे, अुसी नदीको यहां सरोगामिनी होती देखकर मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। पानी भी नाचता कूदता दौड़ता था और टांगानिका सरोवर प्रसन्न और शान्त-वदन होकर अुसका स्वागत कर रहा था। सरोवर-सुता और सरोवर-कान्ता अिस रुझीज़ी नदीको कैसे भुलाया जा सकता है ?

थोड़े ही समयमें हम अुसुंबरा जा पहुंचे।

३४

अुसुम्बरा और अुसके बाद

हम शामको अुसुम्बरा पहुचे। रुआन्डा-अुरुन्डीके सफरमे हमारा यह सबसे सिरेका यानी दक्षिणका स्थान था। अुसुम्बराका निमत्रण लगभग अेक महीने पहले दारेस्सलाममें ही मिल गया था। अगर केवल अुसुम्बरा ही जानेकी बात होती तो रास्ता आसान था। दारेस्सलामसे किगोमा ट्रेन द्वारा और वहासे जहाज द्वारा अुसुम्बरा। हमारे लोग जब बम्बअीसे आते हैं तब कहते हैं कि अुसुम्बरा भले ही दूर हो परतु जानेकी झझट कम है। बम्बअी जहाजमें बैठे सो दारेस्सलाम अुतर गये। वहासे रेल पकडी और किगोमा अुतर गये। फिर जहाजमे बैठे और घर आ गये। परतु हमे कम्पालासे अुसुम्बरा तकका मुल्क देखना था। हमारे लिअे पहुचना महत्त्वकी बात नही थी। आनन्द तो जाने और देखनेका ही था।

यह शहर अेक पहाडीकी तलहटीमें अति दीर्घ सरोवरके किनारे बसा हुआ है। चूकि यह सरोवर प्राग्-अैतिहासिक कालकी अेक दरारसे बना है, अिसलिअे अिसकी गहराअी दूसरे किसी भी सरोवरसे बढकर है। अेक जगह तो अिसकी गहराअी ३१९० फुट है। भूगर्भ-शास्त्री कहते हैं कि अिस सरोवरका पृष्ठ भाग आजकी अपेक्षा हजार-सवा हजार फुट अधिक अूचा था अर्थात् कीवू सरोवर और टागानिका सरोवरके पृष्ठ भागोमे ज्यादा फर्क नही था।

यह सरोवर जैसे अुत्तरमे रुजीजीसे पानी लेता है, वैसे दक्षिणमें लुकुगा नदीको वह पानी देता भी है।

अुसुम्बरामे हम डेढ दिन रहे। हमारे यजमान श्री जूठाभाअी वेलजीकी पुत्रवधू प्रतिभा जब छोटी थी तब कराचीमे हमसे मिली थी। हिन्दुस्तानके अेक सिरे पर जिस लडकीको हमने अपनी स्वाक्षरी

(ऑटोग्राफ) दी थी, अुन्हींको अुनुम्बरा जैसे दूरके स्थान पर दुबारा नये सिरेसे स्वाक्षरी देते वक्त आनन्दके साथ आश्चर्य भी हुआ। बादमें मैंने देखा कि अिस जूठाभाअी वेलजीकी लड़कीने ही जगबारके मणिभाअी मूलजी वेलजीकी पत्नीके रूपमें हमारा आतिथ्य किया था। अिस प्रकारके सबंधोंके कारण अिस घरमें प्रवेश करते ही हम घरके जैसे हो गये। रातको मिलने आनेवाले लोगोंके साथ ही सारा वक्त पूरा हो गया। अिस शहरमें नीचेकी आबादी और अूपरकी आबादी, अिस प्रकारका भेद है। गोरे सब अूपरकी बस्तीमें रहते हैं। हमारे लोग सरोवरके किनारे नीचेकी बस्तीमें रहनेमें सुविधा समझते हैं। और बेचारे अफ्रीकी लोगोंकी झोंपड़िया तो पासकी अेक पहाड़ी पर अिधर अुधर फैली हुअी दिखाअी देती है।

सवेरे अुठकर हमारा पहला काम तालाबके किनारे बैठ कर प्रार्थना करना था। बन्दरगाह जरा दूर था। हमारे साथ प्रतिभा, सुलभा, कमला वगैरा घरकी महिलाअें प्रार्थनामें शरीक हुअी थीं। अुन्होंने प्रार्थनाके अन्तमें जो भजन गाया, अुसमें निराशाके विषादमय स्वर अितने ज्यादा थे कि मुझे अैसा महसूस हुआ मानो अफ्रीकाकी तमाम कौमें अिकट्ठी होकर अपने पिछले सौ दो सौ बरसके अनुभवोंका निचोड़ यहा अुड़ेल रही हैं। अपनी संतोष और सादगीवाली संस्कृतिसे निकलकर पश्चिमी प्रगतिशील परन्तु अुत्पात-परम्परावाली सभ्यताकी जबरन दीक्षा लेनेमें अुन्हें कितना कष्ट अुठाना पड़ता है, मानो यही वे हमारे सामने पेश कर रही थीं।

जूठाभाअीके यहा निरजन भट्ट नामक अेक शिक्षक हमसे मिले। वे अकसर दारेस्सलाममें रहते हैं। अफ्रीकाके बारेमें अुन्होंने बहुत साहित्य पढ़ा है। बड़े अध्ययनशील हैं। बहुत जानते है और अपने पासकी जानकारी व्यवस्थित ढगसे पेश भी कर सकते हैं। यह दुर्भाग्यकी बात है कि अैसे लोग हमारी भाषाओंमें यात्राका साहित्य नही बढ़ाते और अिस महाद्वीपकी आदिवासी जातियोंका जीवनक्रम हमें नही समझाते। अैसे

लोगोकी कद्र करनेकी बात तो दूर रही, कुछ गृहस्थाश्रमी लोग अिनका अिकट्ठा किया हुआ साहित्य भी खो बैठते है।

हम यहाकी पाठशाला देखने गये। हमारे लोगोकी शिक्षाके प्रश्नोकी वहा कुछ चर्चा की। हमारे लोग वर्तमान परिस्थिति समझकर और भविष्यके कालप्रवाहकी दिशा पहचानकर योजनापूर्वक जीवनक्रम नही बनाते। जो कुछ पुराना है, वह—भला और बुरा सब कुछ कायम रखनेका प्रयत्न करते है। अिसमे भी सिद्धात—प्रेम कम होता है। जो रूढि पड गअी है अुसे बनाये रखना और अैसा करनेमे जो कष्ट अुठाने पड़ें सो अुठाते रहना, परतु परिवर्तनका पुरुषार्थ जहा तक हो सके न करना, यह हमारे लोगोका स्वभाव है। परिस्थितिके मजबूर करने पर कुछ फेर-बदल करते है जरूर, परतु मौका हाथसे निकल जानेके बाद ही सब कुछ सूझता है। अिसलिअे अुससे फायदा नही अुठा सकते।

जूठाभाअीने समाजमें होनेवाले परिवर्तनका वर्णन अेक ही वाक्यमें कर दिया। अुन्होंने कहा कि, "पुराने जमानेमे हमारे लोग बहुत जल्दी और कदम-कदम पर अपवित्र हो जाते थे। अब नही होते।"

लोगोको धर्मकी परवाह हो तो वह पाठशालामें बोली जानेवाली प्रार्थनामे ही दिखाअी देती है। अिससे हिन्दू-मुसलमान वगैरा कौमी झगड़े पैदा होते है। मुसलमान पाठशालाओमे अगर कोअी हमारे बच्चोको कुरान सुनाये तो हम नाराज होते है। परन्तु हमारी पाठशालाओमे मुसलमान बालकोको हम अपनी प्रार्थना सिखाते है और अिन बालकोको कोअी कठिनाअी नही होती तो अिसके लिअे आनन्द प्रगट करते है। मुसलमानोमे भी यही दोष दिखाअी देता है। अीश्वर-भक्ति और सदाचार, ये दो मुख्य चीज सभी धर्मोमें समान रूपसे होती है। परन्तु हमारे खयालसे यह वस्तु गौण है। हमें अपने चौगटे और अपने फिरकेकी परवाह होती है। हमारे लोगोमे यह दोष पहले अितना अधिक नही था। ज्यो ज्यो राजनैतिक जाग्रति बढी, त्यो त्यो अैसे झगडे बढते गये।

भिन्न जाति, भिन्न धर्म और भिन्न वर्णके लोगोंके साथ घुलमिल जानेकी आवश्यकताके बारेमें यहांके लोगोंके साथ मैंने बहुत बातें कीं। अफ्रीकाके मूल निवासियोंका मूलधर्म कैसा था, अुस पर अिस्लामका क्या असर हुआ और मिशनरी लोगोंने अीसाअी धर्मके साथ कैसी संस्कृति फैलाअी है, अुसकी भी चर्चा की।

दोपहरको बाजारमें जाकर कुछ चित्र और बेल्जियन कांगो सम्बन्धी अेक सुन्दर फ्रेंच पुस्तक खरीद ली। सार्वजनिक बागमें जाकर चिम्पाजी जैसे बन्दर, मोर जैसे दिखाअी देनेवाले विचित्र प्राणी और मगर वगैरा देखे। पहाड़ पर जाकर शहर और सरोवर दोनोंकी शोभा देखी। शामको पार्कोदास होटल नामक युरोपियन होटलमें अेक बड़ी पार्टीका प्रबंध किया गया था। प्रांतीय कमिश्नर वगैरा गोरे अधिकारियोंको आमन्त्रित किया गया था। अरब और खोजे भी थे। न थे तो सिर्फ अफ्रीकी। अफ्रीकियोंको अैसे सामाजिक व्यवहारमें शरीक करनेकी हमने बहुतसी बातें कीं परंतु सफल नहीं हुये।

यहांके हमारे लोगोंको गोरे अधिकारियोंके साथ मिलने जुलनेका ज्यादा अभ्यास दिखाअी नहीं दिया। अलबत्ता, जूठाभाअीकी सरकारमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। अरब तटस्थ थे। गोरे अफसर केवल फ्रेंच जानते थे। अंग्रेजी नहींके बराबर जानते थे और अिस बारेमें मनमें डर रखते थे कि विदेशसे आये हुये ये प्रतिष्ठित अतिथि हमारे विषयमें क्या लिखेंगे?

रातको पाठशालामें अेक सभा हुअी। अुसमें बहुतसे मुसलमान आये थे। बहनें भी बहुत आअी थीं। मैंने अिस बारेमें विस्तारपूर्वक कहा कि हम सब अेशियाअी हैं और हमें मिलजुलकर अेक होना सीखना चाहिये। प्रश्नोत्तरके अन्तमें मुसलमानभाअी खुश हुअे दिखाअी दिये।

किसेनीसे अुसुम्बरा तक हमारे लोगोको अेक ही सवाल चिंतित करता जान पडा। यहाकी सरकार हमारे लोगोको यहासे निकाल देना चाहती है। जिसे फ्रेंच आती हो अुसीको स्थायी निवासका प्रमाण-पत्र मिल सकता है, वगैरा अनेक कष्ट है। कही कही हमारे लोगोको अेक जगह लम्बे समय तक नही रहने देते। यहासे अुठो और दूसरी जगह जाकर बसो, अिस तरहके हुक्म निकलते रहते हैं। अिसलिअे लोगोकी अच्छे मकान बनानेकी हिम्मत नही होती।

अग्रेज लोग तरह तरहके विचित्र कानून घडकर हमारे लोगोको खूब तग करते हैं। यहाकी सरकार यह कानूनी बुद्धि तो काममे नही लेती, परतु अधिकारी मनमाने हुक्म जारी करके अुनका अमल करते हैं। शराबके प्रति अफसरोकी कमजोरी और रिश्वतकी सम्भावना वगैरा बहुतसी बाते सुननेमें आती थी। हममें से कुछ स्पष्टवक्ता लोग हमारे लोगोके दोषोकी भी खुलकर बातें करते थे। सचमुच सब तरहके लोगोसे मिलकर दुनिया बनती है। यहाके प्रान्तके गवर्नरने जब देखा कि रुआन्डा-अुरुन्डीके बारेमें मुझे आवश्यक जानकारी मिल नही रही, तो अुन्होने बडी आस्थाके साथ श्री जूठाभाअीके मार्फत मुझे अेक खास पुस्तक 'मोनोग्राफी अेग्रीकोल द्यु रुआन्डा-अुरुन्डी' भेजी। मुझे फ्रेंच आती होती तो मैं अुसका बहुत अुपयोग करता। अुसमें नकशे, चित्र और आकडे भरपूर हैं। मैंने देखा कि अिस अिलाकेमें बडे बडे होटलोंमें पार्टिया देनेसे हमारे लोगोकी प्रतिष्ठा बढती है। दक्षिण अफ्रीकामें गाधीजीने माननीय गोखलेके लिअे जिन अनेक भोजोंका प्रबध किया था, अुनका महत्त्व मैं अपने अफ्रीका आनेके बाद ही समझ सका।

हमने १३ जुलाअीको प्रातःकाल अुसुम्बरा छोडा और अेक नया ही रास्ता लेकर अस्ट्रीडा, रवगये और रुहेंगेरी आदि सुन्दरसे सुदर प्रदेशोमें होकर वापस यहाँ पहुचे। अुनके आनन्दका यहा अुल्लेख किये बगैर अिस यात्रासे विदा नही ली जा सकती।

सवेरे जल्दी यानी साढे छ बजे हम रवाना हुअे। यहाकी शोभा कुछ अलौकिक ही थी। सरकारी विभागने यहाके रास्तोकी तरफ खास ध्यान दिया है। पहाडकी पगदडीसे जव रास्ता जाता है, तव अेक तरफ पहाड और दूसरी ओर घाटी, अैसी हालतमे गाडियो और मोटरोके घाटीमे गिर जानेका भय रहता है। वरसात होने पर रास्तेकी मिट्टी वह जानेसे वडा छेद पड जाता है। यह जोखिम सवसे वडी है। घाटीकी तरफ अूची दीवारे वना देनेका रिवाज होता है, परतु सैकडो मील तक दीवार वनानेका खर्च कैसे किया जा सकता है? वीच वीचमे पत्थर जमा देनेमे भी सुरक्षितता नही रहती, और अगर दीवारके नीचेकी मिट्टी वह जाय तो दीवारकी सलामती भी नही रहती। अिन सव मुश्किलोका अेक अच्छा अुपाय ढूढ निकाला गया है। सीधे अूचे अुग सकनेवाले चीड जैसे पेड घाटीकी ओर पास पास लगा दिये जाय तो शोभा भी वढे और जडें मिट्टीको अिस तरह पकड ले कि रास्ता सदाके लिअे सुरक्षित हो जाय।

रास्ता मोड खाते खाते अितना अूचा चढ गया कि वडे वडे पहाड छोटी पहाडियोकी तरह घाटियोमें छिपते हुअे दिखाअी देने लगे। अिधर भी पहाडोके अुतार पर खेती होती है। घाटियोमे वहनेवाले पानीका भी ये लोग अधिकसे अधिक अुपयोग करते है।

यहाके सफरमे अेक वात देखकर हमे ग्लानि हुअी। रास्ते परसे कोअी भी अफ्रीकी जाता होगा, तो मोटरमे वैठे हुअे लोगोको सलाम जरूर करेगा। हमारे जैसे मुसाफिर, सज्जनता हो तो, सलामके वदलेमें सलाम करेगे। कुछ लोग अफ्रीकियोके प्रति तुच्छताकी नजर डालकर आगे चले जाते है। अिस रिवाजकी तहमे जो अितिहास है वह समझने लायक है।

पश्चिमके लोग व्यक्तिके अधिकारो और अुसकी स्वतत्रताका ज्यादा खयाल रखते है। हमारे लोग नम्रतामें ही सस्कारिताकी निशानी

देखते हैं। अिसलिअे कोअी अनजान आदमी सामने दिखाअी दे, तो अुसे भगवानकी तरफसे आया हुआ अेक फरिश्ता समझकर अुसे नमस्कार करेंगे। और अगर कोअी घरमें अतिथिके रूपमे आ जाय, तो अिस वृत्तिसे कि अुसने हम पर अनुग्रह किया है धन्यता दिखाकर अुसकी सेवा करेंगे। अिसी किस्मकी भलमनसाहत अिन अफ्रीकी लोगोमें होगी। अग्रेज लोग जहा जाते है अपनी धाक जमानेकी कोशिश करते है। कोअी अिन्हे 'साहव' न कहे तो अुसे मारते है। जो सलाम न करे अुसे 'फसादी' ठहरा देते है। धाक जमानेके लिअे पेटके वल भी चलाते है। जो सलाम पहले सस्कारिताकी निशानी थी, वह अव गुलामीका चिन्ह वन गअी। आगे चलकर जव स्वाभिमानकी भावना वढी, तव लोगोने अिस प्रकार सलाम करना छोड दिया।

हमारे देशमें कुछ सज्जन अग्रेज लोगोको यह सलामकी प्रथा अच्छी नही लगती थी। कर्नाटकमें अेक कलेक्टर अपने वगलेसे रोज शामको पैदल घूमने निकलता और अपने मनचाहे रास्ते पर घूम आता। थोडे दिन वाद अुसने वह रास्ता छोड दिया और अेक कम सुन्दर रास्तेसे जाने लगा। अुसके अेक अग्रेज दोस्तने रास्ता वदलनेका कारण पूछा। अुसने कहा, "पुराने रास्तेसे जाने पर वीचमें फला रायवहादुरका घर आता है। मेरा समय जानकर वह रोज विला नागा अुसी समय रास्ते पर आकर खडा रहता है। मुझे देखते ही जमीन तक झुककर सलाम करता है और खुद धन्य हुआ हो अैसा मुह वनाकर वापस जाता है। रोजकी अिस कवायदसे मैं तग आ गया हू। अिसलिअे मैंने वह रास्ता ही छोड दिया।"

दोपहर तक हम आस्ट्रीडा पहुचे। वहा खाया और आगे न्याजा होकर कवगये तक पहुचे। यहा मिशनरी लोगोका अेक वडा केन्द्र है। कवगयेसे हमने वडा रास्ता दाहिनी तरफ छोड दिया और कच्चे रास्तेसे रुहेगेरीकी तरफ मुडे। यह रास्ता जितना रमणीय था अुतना ही जोखिमभरा भी था।

रुहेगेरीमे पोपटभाअी नामके अेक दुकानदार रहते थे। अुनके यहा हमने थोडा आराम किया, खाया, और आगे चले। अिन भाअीके यहा कितनी ही साहित्यिक किताबें देखी। अुन्होने बहुतसी पढी भी थी। अुनसे मालूम हुआ कि अुन्होने अनेक अफ्रीकी लोगोको अपनी दुकान पर बैठाकर शिक्षा दी है और विश्वास जम जाने पर अपनी दुकानकी शाखायें खोलकर वहा अुनको बैठा दिया है। कुछ वेतन और कुछ आने मुनाफा — अिस शर्त पर ये शाखा-दुकानें अच्छी चलती है।

यहासे थोडी दूर पर हम सोडावाटरका झरना देखने गये। टूटे हुअे हौज जैसा यह स्थान था। अुबलते हुअे पानीमें से बुदबुदे अुठते हो अैसा पानी बिलकुल ठडा था। हमने प्याले भर भरकर पानी पीया। मुझे डर था कि अुस पानीमें दूसरे क्षार होगे, जिससे स्वाद विचित्र लगेगा। थोडा पीते ही मुहसे खुशीका यह अुद्गार निकला कि अिससे अच्छा सोडावाटर कही पीया हो, अैसा याद नही पडता।

यहासे आगे जाने पर तीन बडे सुप्त ज्वालामुखी अपने रुपहले शिखर अूचे करके श्रेणीबद्ध खडे दिखाअी दिये। अेकका नाम मुहाबुरा, दूसरेका सेबिनियो और तीसरेका गहिंगा। शाम हुअी, अधेरा होने लगा और ये तीनो ज्वालामुखी भयानक राक्षस जैसे दिखाअी देने लगे। हमें अेककी तलहटीमें होकर ही जाना था। ठीक याद नही है, परन्तु वह मुहाबुरा होगा। अुसे बाअी तरफ छोडकर हम आगे बढे। अब तो मोटरकी लाअिट दिखाती थी अुतना ही रास्ता दिखाअी देता था। सारा प्रदेश अितना भयानक था कि डाका डालनेवाले डाकू भी यहा आना पसन्द नही करेंगे।

अतमें हमने कस्टमकी सीमा पार की। अुस कच्छी भाअीका नकशा अनेक धन्यवादके साथ वापस दिया। हमारी घडियोको चाबुक लगाकर अेक घण्टे आगे दौडाया और मोटरोको दाहिनी तरफ रखनेका नियम भुलाकर बाअी तरफ किया और जैसे तैसे बाकीका रास्ता काटकर

साढे नौ, या दस बजे कबालेके होटलमें अिकट्ठे हो गये। वहाकी भली बाअीने हमारे लिअे अच्छा खाना बनाकर रखा था। बिस्तर भी तैयार कर रखे थे। अितने लम्बे सफरके अतमे अितनी अच्छी सुविधायें मिलनेके बाद नीदमें स्वप्न भी आनेकी हिम्मत कैसे करते? मुर्दे भी हमसे अीर्ष्या करे, अितनी गहरी नीदमे हम सोये।

३९

कबालेसे कंपाला

जिस रास्तेसे गये हो अुसी रास्तेसे वापस लौटने पर शोभा कम नही होती। हरअेक दृश्य अुल्टी दिशासे देखनेको मिलता है, अिसलिअे नयेकी तरह ही लगता है। आगे क्या क्या आनेवाला है, अिसका खयाल रहनेके कारण नवीनता चाहे न हो, परन्तु अुत्सुकता मरी हुअी नही होती। अिसलिअे रसकी दृष्टिसे यह प्रवास जरा भी घटिया नही होता। फिर भी मन तो कहता ही रहता है कि 'यह सब तो अेक बार हो चुका है।' और अिससे ध्यानकी कमानी ढीली हो ही जाती है।

रुआण्डा-अुरुण्डीवाली अिस अतिम यात्रामें श्रीमती यमुनाताअी शहाणे हमारे साथ थी। अिन्हे तरह तरहके सवाल छेडनेमें मजा आता था। महाराष्ट्रकी सामाजिक परिस्थिति सबधी श्री मोहनरावके और मेरे विचार मिलते रहे है। अिसलिअे हम थोडेसे अनुभवोका आदान-प्रदान करनेके सिवाय अधिक चर्चा नही कर सकते। यमुनाताअी ठहरी विद्वान पतिकी बहुश्रुत पत्नी। कअी लोगोकी कअी रायें पेश करके अुनके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करने और चर्चा द्वारा नअी नअी जीवनदृष्टि पैदा करनेका अुन्हे बडा शौक है। अिसलिअे चर्चा खूब चलती। ब्राह्मण जातिके गुण-दोष, अुसका हुआ पतन और

अिस जातिके अुद्धारकी योजनायें आदि बहुतसे प्रश्नोंकी चर्चा होती। रास्ता काटनेके लिअे सबसे अुपयोगी अिलाज चर्चा ही है। ग्यारह बजे कबाले छोडकर दो बजे हम स्वरारा पहुचे। वहा हमारे मेजबान श्री छगनभाअी ठक्करने हमसे ठहर जानेके लिअे बहुत अनुरोध किया,परन्तु हमने जानेका ही आग्रह रखा। अितनेमें हमारे साथ सारी यात्रा वफादारीके साथ करनेवाली मोटरने अैलान कर दिया कि, "मेरे हाथ पैर अब नहीं चलते।" हालत अैसी हो गअी जैसे सारी लडाअी लड चुकनेके बाद आखिरी दिन सेनापतिका घोडा घायल हो जाय।

स्वरारा अैसा कोअी बडा शहर नहीं है कि जहा मोटरको कारखानेमें भेजकर तुरन्त ठीक करा लिया जाय। पहियेके पासका अेक क्लिप ही टूट गया था। स्थानीय कारीगरने कहा कि मोटर अढाअी घण्टेमे तैयार हो जायगी। अढाअी घण्टेके अन्तमें देखा कि अुसने हमारा काम हाथमें ही नहीं लिया था! जिसका आरम्भ ही नहीं हुआ अुसका अन्त कब होगा, अिस प्रश्नका जवाब कोअी वेदान्ती भी नहीं दे सकता। अिस सम्बन्धकी तरह तरहकी विडम्बनाओंका वर्णन करनेसे क्या लाभ? श्री कमलनयनका रसोअिया गोपी बीमार पड गया। अुसे चक्कर आये और कुछ न सूझा तो किसीने अुसे ब्राडी पिला दी। अुसे पीछे छोडकर कमलनयन आगे जानेको तैयार होते, परन्तु शहाणेने अैसा नहीं करने दिया। बहुतसी चर्चाके अन्तमे हमने तय किया कि जो अेक मोटर अब भी सेवा करनेको तैयार है अुसे लेकर कुछ लोग आगे जाय। कमलनयन, यमुनाताअी, शरद पड्या और गोपी, अिन चार आदमियोको साथ लेकर शाह बन्धु अपनी मोटरमें रवाना हुअे। और हम अपनी बीमार मोटरके अच्छी हो जानेकी राह देखते रहे।

फिर तो हमने स्थानीय पाठशालाके व्यवस्थापकोमे मतभेद कैसे शुरू हुआ, अुससे दो अलग अलग पाठशालायें कैसे बनी आदि सब बाते विस्तारपूर्वक सुनी। लिंडीमे हम अैसे किस्से

सुनते आ रहे थे। सवाल अेक ही हो तो भी स्थानीय तफसीलोंमें नवीनता होती ही है। अफ्रीकामें अिस्लामका स्थान क्या है, अिस बारेमें मैंने लम्बा विवेचन किया। फिर भी मोटर अच्छी होती ही नही थी। सवेरे नाश्ता करके जानेको तैयार होनेवाले हम लोग ज्यो त्यो करके रातके साढे आठ बजे चले। परन्तु वह भी अपनी मोटरमे नही। हमारे साथ दिनभर भागदौड करके थके हुअे छगनभाअीकी मोटरमें। वह अगर ठीक होती तो हम कभीके म्बरारासे निकल गये होते। हमारा यह आग्रह देखकर कि किसी भी जोखिम पर रात-बसेरा टालना ही चाहिये, छगनभाअीने अपनी मोटर तैयार की। अुसे तैयार होनेमें भी देर तो लगी ही। म्बरारासे बाहर निकले। दाअी तरफ पहाडमें भारी आग लगी हुअी थी। अुसका प्रकाश हमारे रास्ते तक आया था। हमारी मोटर बडी बहादुरीसे तीस मील तक चली और फिर अटक गअी। अुसे खयाल हुआ होगा कि अेक बीमार मेहमान मोटरको घरमे छोडकर मेरा अिस तरह जाना अनुचित है।

अुसका पचर ठीक करनेके लिअे हमने जैक ढूढा। हमारे परोपकारी शोफरने बीमार मेहमान मोटरकी सेवामे अुसे पीछे रह जाने दिया था! अब क्या हो? सारी रात जगलमे बितानेके सिवाय कोअी चारा नही था। किसीने कहा कि यहाके जगलमे शेर तो होते ही है। रातको अेकाधसे भेट हो जाय तो आश्चर्य नही। शेरकी मुलाकातके हम आदी हो गय थे। मोटरके खिडकी दरवाजे बन्द करके हम बैठ सकते थे। परन्तु सारी रात मोटरमे बैठे बैठे हाथ पैर रह जाय, अिसका क्या किया जाय?

बहुत अिन्तजार करनेके बाद सामनेकी तरफसे अेक मोटर आअी। अुन लोगोको अेक खास वक्त तक कबाले पहुचना था। हमारी प्रार्थना वे स्वीकार नही कर सकते थे। हमने कहा, 'अच्छा तो जाअिये। जो कुछ होना होगा, हो जायगा।' अिस अतिम वचनका अुन लोगो पर असर पडा। अिस बातका भी खयाल आया कि हम कौन है।

हमारी मोटरका लगड़ाता हुआ पैर जैककी मददसे अुठाकर अुनकी जगह दूसरा पहिया बिठाया। परन्तु हमारा शोफर कहने लगा, 'अभी ६० मीलका सफर है। मेरी हिम्मत नहीं कि मैं आपको सहीसलामत आगे ले जा सकूंगा।' हमारे सामने अेक समस्या खडी हो गअी। वापस लौटें तो मोटर अच्छी तरह चलेगी ही, अिसका क्या भरोसा? वह कोअी जानवर नहीं थी कि घरका रास्ता देखकर अुमगमें आ जाय। फिर भी हमने हिसाब लगाया कि ६० मीलकी जोखिमसे ३० मीलकी जोखिम कम है। हम लौट गये। अितनेमें हमारी अपनी मोटर भी अच्छी होकर आ पहुंची। अब मसाका जानेमें आपत्ति नहीं थी। परन्तु सभी सारथी हिम्मत हार गये थे। हमने दूसरा ही हिसाब लगाया। वापस जाते हैं तो वहाके गृहपतिको ११ बजेके पहले ही जगाना पडेगा। मसाका जाते हैं तो पिछली रात दो, ढाअी या तीन बजे वहाके गृहपतिको अचानक जगाना पडेगा। अिस हिसाबसे वापस जानेमें ही कम हिंसा थी। हम वापस लौट गये। जाकर सोनेमें बारह बज गये। यह सारा दिन हमें बडा महगा पडा।

दूसरे दिन मसाका जानेके लिअे हमें भाअी हसनअली और भाअी रजबअलीका साथ मिल गया, क्योंकि हम अुन्हींकी मोटरमें जा सके। अिनमें से हसनअलीभाअी बम्बअीके पास घोलवड-बोर्डीकी स्कूलमें पढे हुअे थे। यह साबित करनेके लिअे कि वे राष्ट्रीय वृत्तिवाले हैं, अुन्होंने जोर देकर कहा कि, "मैं बोर्डी स्कूलका विद्यार्थी हूं।" अुनसे स्वराराज स्कूलका विभाजन कैसे हुआ, अिसका दूसरा पक्ष सुना।

मसाका पहुचते ही हमने कपाला फोन करनेका प्रयत्न किया परन्तु अुसमें सफल न हुअे। अितनेमें वहासे कमलनयनका फोन आया कि हम मरच्युसन फॉल्स देखने जा रहे हैं। ज्यादा लोगोंके लिअे सुविधा नहीं हो सकती। आपके लिअे मोटर भेज रहे हैं।

अब अिस मोटरके लिअे हमें ठहरना ही पडा। हमने विचार किया, "बैठेसे बेगार भली! मसाकाके लोगोंकी हमेशाकी शिकायत

हैं कि जितने नेता, मेहमान और साहसी यात्री अिधर आते हैं, वे सब मसाका भोजनके लिअे ही ठहरते हैं। जबानका दूसरा अुपयोग देते ही नही हैं।" हमने भी जाते हुअे अैसा ही किया था। कमलनयनकी मोटर म्बरारासे जब हमने आगे भेजी, तब आशा रखी थी कि कमलनयन मसाकामे डेढ दो घण्टेका भाषण देकर लोगोको सन्तुष्ट करेंगे। परन्तु अुन्होने हमारा हवाला देकर कम्पालाका रास्ता पकड लिया था। अिसलिअे मसाकाका अुलहना दूर करनेका फर्ज मेरे सिर आ पडा। गावके जमा होनेमे देर नही लगी। श्री अमृतलालभाअी असामान्य होशियार आदमी है। केवल मसाकाके ही नही परन्तु आसपासके सारे अिलाकेके लोग अुनकी रायको आदरपूर्वक मानते हैं। ३ बजे सिनेमा-हॉलमें सभा हुअी। "हम सब अेशियाअी हैं। हममें अेकता होनी चाहिये। गाधी-शिक्षा द्वारा हमें अफ्रीकी लोगोकी सेवा करनी चाहिये।" अित्यादि बाते मैंने विस्तारसे समझाअी। अुन लोगोको मेरा भाषण पसन्द आया। मुसलमान अधिक प्रसन्न हुअे। अुनमें अेक अलीभक्त कोअी अिस्माअिली भाअी थे। अुन्होने अलीमाहात्म्यके बारेमें थोडासा भाषण दिया।

खीमजीभाअी और व्रजलालभाअीके भाअी हीराचन्द हमारे लिअे कपालासे मोटर ले आये। मोटरकी दुर्घटनाके कल हम अितने आदी हो गये थे कि अिस नअी मोटरमें कपाला तककी ८२ मीलकी यात्रा बेखटके पूरी की, अिसका हमें आश्चर्य हुआ। यह कहे कि अपेक्षाभग हुआ तो भी हर्ज नही। कम्पाला जाकर छोटाभाअी पटेलके यहा भोजन किया और रातको नानजीभाअीके यहा आराम किया।

लबी यात्रा पूरी करनेका सतोष लेकर सोना था, परन्तु वह हमारे भाग्यमें न था। यह समाचार मिलनेसे दिल गभीर हो गया कि श्री आर० अेस० शाहकी बहनकी छोटी लडकीने कुनैनकी बहुतसी गोलिया खा ली और डॉक्टरी अिलाज होनेसे पहले ही अुसका देहान्त हो गया। वर्धा, सेवाग्राममें हमारे आर्यनायकम्‌के लडकेका अैसा ही

किस्सा याद आया और मन अुस तरफ दौड गया। और अिस विचारने कि मरनेके लिअे कैसे सादा कारण भी काफी होते हैं और गफलतें कअी वार कितनी महगी पडती हैं, लम्बे समय तक नींद न आअी।

रविवारका दिन पुराना कर्जा चुकाने और पुराने सकल्प पूरे करनेके लिअे विताना था। छोटाभाअी और छोटूभाअी दोनोंको साथ लेकर हम अुस मस्जिदको देख आये। वह मस्जिद दूरसे ही वडी अच्छी लगती थी। अूपर चढनेके वाद आसपासका प्रदेश दूर दूर तक देखनेको भी मिला। वह मस्जिद दिखानेके लिअे मेजर दीन हमारे साथ आनेवाले थे, परन्तु अुनकी तदुरुस्ती अच्छी न होनेसे हमी अुनसे मिलने गये। अुनकी सज्जनता, सस्कारिता और मिलनसारी तीनो मामूलीसे ज्यादा थीं।

दोपहरको जॉर्ज सली नामक अेक अफ्रीकी युवक हमसे मिलने आये। अुनके साथ अुनके वडे भाअी और पिता भी थे। भारत सरकारकी तरफसे अुन्हे छात्रवृत्ति मिली है। दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी पत्नीको भी हिन्दुस्तान ले जानेका अुनका विचार था।

रुआण्डा-अुरुण्डीकी सारी यात्रामे अपनी मोटर लेकर सेवाभावसे हमारे साथ घूमनेवाले शाह वन्धुओंके यहा हम भोजन करने गये। घरके लोगोसे मिलकर हमें वडा आनन्द हुआ। यह परिवार लम्वा-चौडा है। सव मिलाकर वावनकी सख्या है। अितने लोग मिलजुलकर रहते हैं, अिसकी तहमें कितनी अधिक सस्कारिता और कुशलता होनी चाहिये ! श्री खीमजीभाअीने गैडेका अेक वडा सीग मुझे भेंट किया। मै अुसे अपने साथ न ला सका। वादमें अुसके लानेके लिअे सारी व्यवस्था करनी पडी थी।

कनालाके महाराष्ट्र मडलसे मुझे कभीसे मिल लेना चाहिये था। परन्तु यह गफलतमे रह गया था। महाराष्ट्र मडलका कार्यक्रम वहुत ही मजेदार था। सगीत तो अुसमें था ही। श्री गोवळेकरसे हमने वेल्जियमके वारेमें कुछ जानकारी प्राप्त की। मेरे भाषणके वाद थोडेसे

प्रश्नोत्तर हुअे। अुसमे हिन्दुस्तानके ही सवाल पूछे गये थे। "भाषावार प्रान्त रचना होगी तब बम्बअीका क्या होगा ? " यह था अेक सवाल। और दूसरा यह कि "हिन्दुस्तानके राजनैतिक आन्दोलनमें महाराष्ट्रका स्थान कहा है ?" दोनो सवालोकी तहमे शुद्ध जिज्ञासा और हितेच्छा थी, अिसलिअे मैंने भी विस्तारसे जवाब देकर अुन लोगोकी चिन्ता दूर कर दी।

कपालामें जिन अेक भाअीसे मिलना रह गया था, वे थे श्री धीरूभाअी मारफतिया। वे भारतसे हाल ही मे लौटे थे। अपनी लडकी आशाकी शिक्षाके लिअे काफी परिश्रम कर रहे है। यहाके सार्वजनिक जीवनमे भी अुनका हाथ है। वे हमारे साथ लुगासी तक आये। रास्तेमें गाधीस्मारक कॉलेजके बारेमे हमने बहुतसी चर्चा की। श्री धीरूभाअी मारफतिया चाहे तो कॉलेजकी योजनामें बडे मददगार हो सकते है।

३६

मांग कर ली हुअी मीठी कैद

दो मासकी अद्भुत यात्रा पूरी करके हमने अितने अधिक सस्कार जुटा लिये थे कि अुनका सग्रह न करे तो वे बादलोकी तरह अुड जायगे, यह डर मनमें घर कर बैठा। रुआण्डा-अुरुण्डी जानेसे पहले ही मैंने छोटूभाअीसे कहा था कि अफ्रीका छोडनेसे पहले ही यात्राका वर्णन न लिख डालूगा, तो हिन्दुस्तानमें जानेके बाद लिखना नही होगा। वहा जाते ही वहाके कामोसे और चिन्ताओसे घिर जाअूगा। मुझे किसी अैसे अेकान्त स्थान पर बन्द रहने दीजिये, जहा आरामसे कुछ लिख सकू। छोटूभाअीने यह जिम्मेदारी सिर पर ले ली और अुन्होने तय किया कि मै श्री नानजी सेठके लुगासीके भवनमे आठ दिन बिताअू।

अितनेमे श्री अप्पासाहबने अेतराज किया "यह न भूल जाअिये कि नैरोबीमें कमिश्नरका दफ्तर नये बने हुअे मकानमे जानेवाला है, अुसका प्रवेश-समारोह आपके हाथो होगा। हम आपको नैरोबीमें भी शाति दे सकेंगे।" सदाकी भाति अिन दोनो मेजबानोने 'त्वयार्धम् मयार्धम्' का सिद्धान्त लगाकर समझौता कर लिया। यह निश्चय हुआ कि चार दिन लुगासी रहकर हम नैरोबी जायें। अिस निर्णयके अनुसार हम कपालासे लुगासी पहुचे। कमलनयनने मरच्युसनसे लौटकर नैरोबीका रास्ता लिया। चि० सरोजिनी, मै, शरद पड्या ओर हमारा हिन्दी करमुद्रण-यत्र — अितने लुगासी रह गये। वहा जाते ही श्री आनदजीभाअीने हम पर अधिकार कर लिया। हमारी रहने-सहनेकी सब सुविधा कर दी और हमें किसी भी समय कोअी मिलने न आये, अिसकी चौकीदारी अपने हाथमें ले ली। फिर भी कपालासे या और कहींसे कोअी न कोअी मिलने आते ही। अुनके लिअे आनदजीभाअीने खानेका समय खुला रख दिया। हम अितनी 'कैद' में रहे, अिसीलिअे काफी लिख सके।

लुगासी स्थान ही अैसा है कि अेक बार देखनेके बाद मन पर अुसका चित्र जम ही जाता है। ककीरा और लुगासीकी सुन्दर जोडी है। मैंने यह नही पूछा कि अिन दोनोमें किसने किसका अनुकरण किया है। लुगासीकी पहाडी पर दो मकान है। अेक पुराना, जो पुराना भी है और सादी सुविधाओवाला है। दूसरा नया अैश-आराम वाला है। पहला मकान पुरुषार्थी मनुष्यकी सादी अभिरुचिवाला है। दूसरा मकान धनी पिताके भाग्यशाली लडकोके रहने लायक है। हमने छोटे (अलबत्ता, कदमें छोटे) मकानमें रहकर अेकाग्रतासे लिखना पसन्द किया। रोज सुबह और शाम हम आसपासके दृश्यका — सूर्योदय सूर्यास्तका सौंदर्य देखकर और दोनो सध्याओके सूर्यनारायणका अुपस्थान करते हुअे पक्षियोका गान सुनकर, हृदयको अुसकी खुराक देते और बाकीका सारा समय लिखनेमें बिताते।

पहला दिन अेक दो पत्र लिखनेमें, वर्णनके अध्याय बनानेमे और प्रस्तावना लिखनेमें गये। रातको खानेके बाद शिक्षको-विद्यार्थियोके साथ थोडीसी बातचीत हुअी। ‘गुजराती पाठशालामे अफ्रीकी विद्यार्थी आपकी भाषा सीखने आयें, तो आप अुन्हे लेनेको तैयार होंगे या नही?’ मैंने यह सवाल पूछा। मुझे अिस बारेमे विद्यार्थियोकी राय जाननी थी। शिक्षकोसे यह सवाल पूछनेका कोअी अर्थ न था, क्योंकि अिस कारखानेकी पाठशालाकी सारी व्यवस्था मैनेजरके ही हाथमें होती है। भाअी जाजल यहाके जनरल मैनेजर है। अुन्होने परिस्थितिके सम्बन्धमें बडी छान-बीन की। मुझे जो कुछ कहना था सो सब मैंने चर्चा द्वारा कह दिया।

श्री छोटाभाअी कपालासे तात्याका अेक पत्र लेकर आये। अुन्हे यह भी जानना था कि हम नैरोबी कब पहुचेंगे और अुनका तैयार किया हुआ आगेका कार्यक्रम हमें मजूर है या नही। अपने स्वभावके अनुसार मैंने अुनका कार्यक्रम मजूर कर लिया, क्योंकि कामकी दृष्टिसे वह ठीक था। अिसका अेक परिणाम यह हुआ कि मुझे मरच्युसन फॉल्स देखने जानेका मौका छोडना पडा और विक्टोरिया सरोवरके किनारेका मशहूर बन्दरगाह किसूमू देखनेकी अिच्छा भी दबानी पडी।

श्री नानजीभाअीने अपने कारखानेमें जगह जगहसे लोगोको लाकर बसाया है। अिनमें से अेक महाराष्ट्री भाअी श्री भोमे है। ये असलमें फल्टन और सताराकी तरफके हैं। शकरके मामलेमें निष्णात हैं। यहा अुन्होने तीन साल तक काम किया है। लडका घरका काम सभालने लायक हो गया है, अिसलिअे ये निवृत्त होकर गुजारे लायक लेकर राष्ट्रसेवा करना चाहते है। अुनकी मैंने यह खासियत देखी कि सिद्धान्त या व्यक्तिगत सम्बन्ध कायम रखनेमें व्यावहारिक नुकसान हो जाय तो अुन्हे अिसका जरा भी पछतावा नही होगा। अुनकी मातृभक्ति देखकर मुझे अुनके प्रति विशेष आकर्षण हुआ।

अुसी रात कमलनयन और महाणे दम्पती मरच्यूसन फॉल्सकी यात्रा पूरी करके मोटरके रास्ते नैरोबी जानेके लिअे अिधर आये। रातको लुगासी आनेके बाद कच्चे रास्ते पर कीचड़में फंसकर खूब परेशान हुअे। दूसरे दिन सवेरे अिसीकी बातें मजाकका विषय बन गयीं।

तीसरे दिन किसूमूसे वहांके लोगोंका लम्बा तार आया कि 'हमारे यहां जरूर आअिये।' मनाकाका बदला चुकानेका निश्चय करके मैंने यह काम कमलनयनको सौंप दिया और किसूमूके लोगोंको अेक मीठा पत्र लिखकर माफी मांग ली। कमलनयन व्याख्यानमें हारनेवाले हैं ही नहीं और विनोदके फव्वारे हमेशा अुनके पास मौजूद ही रहते हैं। अुन्होंने जाते ही कह दिया कि, "महादेव खुद न आ सके, अिसलिअे अुनका नादियां आया है।" अपना ही मजाक अुड़ाकर अुन्होंने जो वातावरण पैदा कर दिया, अुससे वे लोगोंमें मान्य बन गये। अेक बार अपना ही मजाक अुड़ा लिया कि यह औजार औरों पर आजमानेकी तो छूट मिल ही जाती है!

कमलनयनके साथ लुगासीमें ही हमने तय कर लिया कि मुझे भी मिस्र न जाते हुअे अदिस-अबाबा तक जाकर जीबूटी और अदनके रास्ते हिन्दुस्तान लौट जाना चाहिये।

मेरा मिस्र जानेका अिरादा छोड़ देने पर बहुतोंको आश्चर्य हुआ। खर्चकी कठिनाअी भी नहीं थी। वह नानजी सेठकी तरफसे आसानीसे मिल जाता। परन्तु अितने दिन साथ सफर करके आखिरी वक्तमें कमलनयनको छोड़कर आगे चला जाना मुझे पसन्द नहीं आया। और अिससे भी अधिक या मुख्य विचार यह था कि मिस्रकी संस्कृति दूसरी है। वहांके सवाल अलग हैं। वहांके पिरामिड देखेंगे, काहिराका अद्भुत संग्रहालय देखेंगे और अल-अजहरकी यूनिवर्सिटी देखेंगे, तो अितने अधिक भिन्न और विविध संस्कार मन पर होंगे कि पूर्व अफ्रीकाके संस्कार दब जायेंगे। मुझे अैसा नहीं होने देना था।

हिन्दुस्तानका पूर्व अफ्रीकाके साथ जिस किस्मका सम्बन्ध है वैसा मिस्रके साथ नही। पूर्व अफ्रीकामे सेवाकी पुकार थी। मिस्रमें सस्कार-समृद्धि और अद्भुत परम्पराओका आकर्षण था। नील नदीका जीवनचरित्र पढे बिना, मिस्रकी मिश्रित सस्कृतिके बारेमें ज्ञान ताजा किये विना और मिस्रमें नैपोलियनसे लेकर पश्चिमके अनेक लोगोने जो पुरुषार्थ फैलाया है, अुसकी जानकारी प्राप्त किये विना जाना मुझे जरा जल्दवाजीका कदम मालूम हुआ। अीसाअी धर्मके प्रारभके दिनोमे मिस्रने अिस धर्मको जो आश्रय दिया, अुसका अितिहास भी फिरसे याद करने लायक था ही। मै नही जानता यह सब कब कर सकूगा और मिस्र कब जाअूगा। और जब जाअूगा तब यह सारी तैयारी करनेका वक्त मिलेगा या नही, अिस बारेमे भी मुझे शका है। हमारे भाग्यमें जितना होता है अुतना ही हमसे बनता है और अुसी मात्रामे हमें लाभ मिलता है। मेरा यह विश्वास दैववादसे अुत्पन्न नही हुआ, परन्तु जीवन-परिचयसे अुत्पन्न हुआ है — जिसे लोग कर्मका सिद्धान्त कहते है।

अुसी दिन अेक सज्जन और सेवापरायण वृद्ध व्यक्तिका परिचय हुआ। डॉक्टर हण्टर अपनी युवावस्थामें कर्णाटकमें हमारे बेलगावकी तरफ रह चुके थे। अुनके पिता भी वही थे। बेलगावके पास जिस हिन्डलगा जेलमे मै रहा था, अुसीके गावमे अुन्होने अेक कुष्ठाश्रम चलाया था। हमारे बेलगावकी तरफके डॉक्टर हण्टर यहा अफ्रीका कैसे आये और कब आये, यह मैने अुनसे नही पूछा। अुन्होने कहा हो तो याद नही। आज अुनकी अुम्र ७२ बरसकी है। थोडे ही वर्ष हुअे अुनकी पत्नी और अुनका लड़का पूर्व अफ्रीकामें ही गुजर गये। अब वे अकेले ही है। नानजी सेठ अुन्हे खर्चके लायक देते है, परन्तु वे यह रकम पेन्शनके रूपमे न लेकर लुगासीके कारखानेमे मजदूरोकी स्वास्थ्य-सेवा करके सन्तोष मानते है। जब मैने यह कहा कि "अितनी अुम्रमे आप काम करते है यह आश्चर्य-कारक है", तो अुस वृद्धने बिलकुल मुग्ध

भावसे कहा. "After all it is better to wear away than to rust away." (जंग लगनेसे घिस जाना अच्छा है।)

अैसे सत्पुरुषको श्री आनन्दजी मेरे पास ले आये, जिसके लिअे मने अुन्हें धन्यवाद दिया। अफ्रीकामें स्वदेश लौट आनेके बाद खबर मिली कि वे डॉक्टर हण्टर जहा अुनकी पत्नी और लडका गया है वहीं पहुच गये है। परन्तु कितनी सुगन्ध पीछे छोड गये!

सारे दिन लिखनेके बाद विनोदके रूपमें आनन्दजीभाअीसे पूर्व अफ्रीकाके अमिग्रेशन कानूनकी बहुतसी पेचीदगिया जान ली। रातको लुगासीकी सस्थाकी तरफसे रिक्रिअेशन क्लबमे थोडेसे प्रश्नोत्तर हुअे।

अतिम दिन कम्पालासे श्री काकूभाअी और रमाकान्त आये। अुनके साथ अनेक बाते हुअी। २१ जुलाअीको हम लुगासी छोडकर कपाला गये और अेन्टेबे होकर ४ बजे वायुमार्गसे नैरोबी पहुच गये।

परन्तु कम्पाला हमें आसानीसे छोडनेवाला नहीं था। खोनजीभाअी कहने लगे कि "आप मेरे भाअीके यहा भोजन कर चुके है। मेरा घर आपने कहा देखा है?" अिसलिअे २१ तारीखको हमने अुनके यहा नाश्ता किया। सविल स्टोर्समें जाकर कपालावाले सब भाअियोंसे मिले। वे सब अब घरके लोगों जैसे हो गये थे। श्री शाह, काकूभाअी, रामजीभाअी लड्ढा — सबने कम्पालाकी यादगारके तौर पर कअी फोटो दिये। रामजीभाअी तो अितने प्रेमी कि अेन्टेबे जाकर जब तक हमने विमानमें प्रवेश न किया, तब तक अुन्होंने तरह तरहके फोटो देना जारी ही रखा। कोअी खास शब्द काममें लिये बिना आतिथ्य और स्नेह दिखानेकी अुनकी कला सचमुच अनोखी है। अुन्होंने हमें बिल्कुल अपना ही बना लिया।

अिन सब मित्रोंके साथ हम अेन्टेबे जानेके लिअे रवाना हुअे। १९ मीलका रास्ता था। हमारा विमान ११ बजकर २० मिनट पर

चला और १ बजकर १० मिनट पर नैरोबी पहुंचा। अिस बार हमने विशाल विक्टोरिया सरोवरका अंतिम दर्शन किया। अुसके भीतर दिखाअी देनेवाले अेक अेक टापू पर कल्पनामें घर बनाकर अुनमें काफी रहे। सरोवर परसे दौड़ते हुअे बादलोंके साथ बुजुर्ग बनकर बातें कीं, क्योंकि हम अुनसे भी अूंचाअी पर थे। फिर केनियाकी असंख्य पहाड़ियां देखीं। गोरे और अफ्रीकी लोग अुन पहाड़ियोंका किस प्रकार सेवन करते हैं, यह ध्यानपूर्वक देखा। आखिरी समय हमारा विमान खूब हिला। विमान जब अिस तरह हिलता है, तब मुझे वह अधिक सजीव मालूम होता है। और अुसके साथ मेरी कल्पना भी हिलने लगती है। नहीं तो सारा प्रवास अलोना ही होता है। मुसाफिरोंको सोने न देनेके लिअे ही विमान थोड़ेसे अूपर नीचे दचके लगाये तो अिसमें क्या होता है?

नैरोबी अुतरते ही तात्या अिनामदार हमसे मिले और अपने घर ले गये।

३७

अुत्कट और समस्त

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्राके निचोड़के तौर पर नैरोबीमें हमने ११ दिन बिताये। अिन दिनोंमें जितना सोचा अुतना लिखा नहीं गया। परन्तु ग्यारहों दिन अनुभव, सत्कार, जानकारी, परिचय और सेवाकी दृष्टिसे पूरी तरह भरे थे। अिन ग्यारह दिनोंमें यात्राके सभी तत्त्व अेकत्र हो गये थे। जमीनकी रचनाका अध्ययन, प्रपात जैसे प्राकृतिक दृश्योंका दर्शन, वन्य श्वापदोंकी मुलाकात, गांवोंके दर्शन, अफ्रीकी नेताओंसे भेंट, देहातमें अुनके बनाये हुअे समृद्धिशाली घर, अफ्रीकी जनता, अुसके नृत्य, अुसकी महत्त्वाकांक्षाअें, हमारी संस्थाअें, हिन्दू-

मुस्लिम प्रश्न और राजनैतिक विष्टिया, हिन्दुस्तान जानेके वाद करनेके कामोका अन्दाज, सस्कृतिके अध्ययन और प्रचारके लिअे शिक्षा सम्वन्वी और धर्मप्रचारके काम, महाराष्ट्रियोके मीठे परिचय, अुनके पुरुपार्थका परिचय, मिशनरियोकी चलाअी हुअी सस्थाअें और अुनकी तहमें अुनकी गहरी नीति, आगाखा और आर्यसमाज दोनोके शिक्षा सम्वन्वी आन्दोलन, अफ्रीकियोके लिअे साहित्य निर्माणका प्रारभ, खादी और चरखेका प्रचार और नये मिले हुअे मित्रोके साथ प्रेमका वार्तालाप — सभी चीजे अिन ११ दिनोमें अुत्कटतासे अिकट्ठी हुअी थी। मेरा अव भी खयाल है कि अिन ग्यारह दिनोमें मै अेक वर्ष जितना जिया होअूगा।

शामको थियोसॉफिकल लॉजमें निमत्रण था। धन कमाने और जीवनके मजे लूटनेसे कुछ अधिक विचार करनेवाले लोग अिकट्ठे होते है तव अच्छा तो लगता ही है। मोम्वासामें श्री मास्टर, दारेस्सलाममें जयतीलाल द्वारकादास शाह और नैरोवीमें श्री शिवाभाअी अमीन और पारसीभाअी वहेरामजी जैसे लोगोने सात्विक आध्यात्मिक वातावरण अुत्पन्न करने और रखनेका अच्छा प्रयत्न कर रखा है। आम तौर पर पाया जाता है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवनके शोरगुलमें अैसे लोग केन्द्रमे नही होते, परन्तु ये सव प्रवृत्तिकी किनार पर लग जाते है और लोगोकी सत्प्रवृत्तियोका सगठन करके धार्मिक सुगध फैलाते है। जिस प्रदेशमें हमारे लोगोने वडे वडे हाअीस्कूल वनाये है, अस्पताल और टाअुनहाल खडे किये है और जातिवार वडे वडे हॉल भी वनवा दिये है, अितना ही नही परन्तु मदिर और गुरुद्वारे भी स्थापित कर दिये है, अुस प्रदेशमें थियोसॉफिकल सोसायटीका अपना अेक भी मकान नही, यह चीज ध्यान खीचे वगैर नही रहती। अिस प्रवृत्तिमें तेज ही नही या वह अति सात्विक है? यह मध्यमवर्गके गरीव लोगोकी सात्विक प्रवृत्ति होती है। अिसमें शक नही कि अिन लोगोको अैसी जगह हृदयका आश्वासन

मिलता है। और चारित्र्यका अच्छासा आदर्श मन पर जमानेमें भी ये स्थान अपयोगी ही है। असाधारण स्वार्थत्याग, जातीय आत्मोत्सर्ग या रजोगुणी वैभव, — अिनमें से अेकका भी ससर्ग न होनेसे अिस प्रवृत्तिका विकास नही होता, यह मै मानता हू।

अेक छोटेसे मकानमे कुछ लोग जमा हुअे थे। अुन सबका परिचय सुनकर अुनके प्रति मनमे सद्भाव जम गया। अिसलिअे मैंने यहा बडी अुत्कटतासे बाते की। सत्य, सर्वधर्म-समभाव, सब धर्मोका लघुतम भाज्य (L C.M.) और महत्तम भाजक (G.C.M.) निकालनेके बारेमें और जप तथा प्रार्थनाके बारेमें भी तफसीलसे बाते की। मनको तैयार करनेमें जो गूढ शक्तिया ('ऑकल्ट पावर्स') प्रगट होती है, वे स्वाभाविक होने पर भी अुनके पीछे पडनेके खतरेके बारेमें भी मैंने अिशारा किया। मैंने ये खतरे बताये कि अिन शक्तियोके पीछे पडनेसे मनमें विकृति आती है, समतुला नही रहती और ध्येयसे हम हट जाते है। रातको श्री ठाकुरके यहा भोज था, तब पता नही कैसे मेस्मेरिजम और अैसे ही अन्य विषयोकी चर्चा चल पडी थी।

पूर्व अफ्रीकाका सारा सफर पूरा करके हमने नैरोबीमें दस दिन बिताये यह अेक तरहसे अच्छा ही हुआ। दो अढाअी महीनेके प्रवासके बाद नैरोबीकी अनेक अफ्रीकी पाठशालाअे देख ली — कुछ सरकार अथवा मिशनरियोकी चलाअी हुअी और कुछ दूसरी अफ्रीकी नेताओकी अपने ही पुरुषार्थसे चलाअी हुअी। दोनो तरहके स्कूलोकी विशेषतायें अलग अलग थी। ये सस्थाये देखनेके बाद अिसकी काफी कल्पना हो गअी कि अफ्रीकी लोगोका भावी किस प्रकार बन रहा है। अिस तरह ये दस दिन अढाअी महीनेकी सारी यात्राका सक्षिप्त सस्करणकी तरह थे, क्योकि अढाअी महीनेमे जितनी विविधता अनुभव की गअी थी अुस सबका प्रतिनिधित्व अिन दस दिनोमे सामने आया था। अुदाहरणके लिअे, अफ्रीकाके वन्य पशुओका दर्शन लीजिये। हम लगातार दो दिन अभयारण्यमें हो आये। अब तो वह सारा प्रदेश

और अुसके भीतरके स्वतंत्र प्राणी परिचित जैसे प्रतीत होते थे। और वहांके दीर्घग्रीव जिराफ तो मानों हमें खास तौर पर पहचानते हों, अिस प्रकार हमारी मोटरके सामने फोटोके पोजके लिअे आकर खड़े रहते। श्री जगभाओको यह अुत्सुकता थी कि हम अफ्रीका आकर नैरोबीके सिंहदर्शनसे वंचित न रह जायें।

अेक बार शामको गये तब अिसका निश्चित पता लगने पर भी कि सिंह कहां हैं वनराजसे हमारी भेंट नहीं हो सकी। अुनके रहस्य मंत्रियोंने हमसे कहा कि, "महाराजके यहां आज अच्छी दावत हुअी है, अिसलिअे कहीं आराममे सो रहे हैं। आज आपको दर्शन नहीं होंगे।" हम घण्टों तक खूब भटकते रहे। परन्तु महाराजके दर्शन किसीको नहीं हुअे सो नहीं हुअे। दूसरे असंख्य पशुओंको हमने अुनकी प्राकृतिक अवस्थामें देखा होगा, परन्तु मुख्य मुलाकातके अभावमें मनमें ग्लानि ही रही।

दूसरे दिन सवेरे अिसका बदला मिल गया। हम बहुत जल्दी आकर अभयारण्यमें पहुंच गये। अेक अस्कारीके साथ अिन्तजाम कर रखा था। ये अस्कारी लोग दुपाये मनुष्य तो जरूर होते हैं, परन्तु पशुओंकी रीतिनीति वगैरा सब बातें खूब जानते हैं और जहां हमारी नजर न पहुंचे वहां वे अचूक किसी भी पशुको ढूंढ निकालते हैं। फर्क अितना ही है कि हवा किस तरफकी है, अिसका ज्ञान पशु नथने फुलाकर कर लेते हैं और ये लोग थोड़ीसी मिट्टी अुड़ाकर यह ज्ञान कर लेते हैं। हमारा अस्कारी दस पांच मीलकी दौड़में ही हमें सिंहकी दो रानियोंके सामने ले गया। सूखे हुअे घासमें पीली चमड़ीवाले शेर आसानीसे नजर नहीं आते, परन्तु अेक बार आनेके बाद आप अुन्हें नजरसे हटा ही नहीं सकते। सिंह प्राणी, खासकर मादा, दीखनेमें असाधारण नहीं होती, परन्तु अुसकी चालढाल देखनेके बाद तुरन्त विश्वास हो जाता है कि यह राजवंशी प्राणी है।

मोटर लेकर हम काफी नजदीक चले गये। दोनो रानियोने हमारी तरफ जरा नजर डाली और 'होगा कोअी मानव प्राणी' अिस लापरवाहीसे नजर फिरा ली। अेक क्षणके लिअे भी हमारा विचार करने लायक महत्त्व अुन्हे न लगा। दोनो रानिया अेक ही फोटोमें आ सकें, अिसके लिअे हम अपनी मोटर दूसरी ओर ले गये। वहा हमारी अिस धृष्टताके प्रति तिरस्कार दिखानेके लिअे अेक रानीने हमारी तरफ देखकर अेक जमाही ली। अिन्सानकी हैसियतमे अैसा अपमान सहन करना किसे अच्छा लगता? परतु अभयारण्यमें यह सब सहन करनेके सिवाय हम और कर भी क्या सकते?, हम जहा थे वहासे आगे नही जाया जा सकता था, अिसलिअे वापस लौटकर अर्ध चन्द्राकार रास्ता निकालकर हम अुसी सिहनीको दूसरी तरफसे देखने पहुचे। हमें बार बार अिस तरह पास आते देखकर अुस सिहनीको न आश्चर्य हुआ, न सताये जानेका क्रोध आया। अुसके खयालमें हमारा कोअी महत्त्व ही नही था। अेक सिहनी धीरे धीरे वहासे चली गअी और दूसरी आडी होकर सो गअी! अिस प्रकार अुनके आगे अपनी प्रतिष्ठा खोकर हम वापस आ गये। सिहकी भयानकताके बारेमें कितनी सारी कहानिया पढी थी और अजायबघरोके पिंजरोमें बन्दी हुअे सिहोको मनुष्यो पर क्रुद्ध होते देखा था। परतु यहा तो अिन प्राणियोकी अुदासीनता और बेपरवाही ही देखनेमें आअी। अिसका विचार करते करते हम दस-बीस मील दौडकर जगलके दूसरे सिरे पर पहुचे। वहा अचानक लम्बे लम्बे बालोवाला अेक सिह दिखाअी दिया। अुठकर जा रहा था। 'ठहर, ठहर' हमने बहुतेरा कहा, परतु अुसे कही समय पर जाना होगा। वह चला ही गया। परतु जो दो चार पल हम अुसे देख सके, अुसीसे अुसकी तसवीर हमारे मन पर पूरी तरह अकित हो गअी। 'यह सारा राज्य मेरा ही है', अिस स्वाभाविक दबदबेके साथ सिह जब लम्बे लम्बे डग भरते है, तब अुनके बारेमें आदर पैदा हुअे बिना नही रहता।

मैंने कहा, ‘सिंह कुछ बूढा मालूम होता है’।

अिस पर चर्चा हुअी। ‘आपने कैसे जाना?’ साथी पूछने लगे। जशभाअीने भी मेरे साथ मतभेद प्रगट किया। अन्तमें अुन्होंने अस्कारीसे अुसकी भाषामें पूछा। जवाब मिला कि ‘बात सही है। सिंह बूढा है। हम बीस वर्षसे देख रहे हैं। वह यहीं रहता है। पहले जितना अुत्साह अब नहीं है।’ सबने मुझसे पूछा, ‘आपको कैसे पता चला?’ मैंने कहा कि, ‘जानवर जवान होते हैं तब अुनके बालों पर तेलकी-सी चमक होती है। वे जब बूढे हो जाते हैं, तो अुनके बाल सूखे हुअे घासकी तरह बेचमक हो जाते हैं। अिस सिंहके बालोंकी चमक घटती दिखाअी दी। अिसके सिवाय अिस सिंहके गलेके पासकी अयालके कुछ बाल मैंने गिरे हुअे देखे। अिसलिअे अनुमान लगाया कि अिस सिंहका बुढापा शुरू हो गया है।’ अुस दिन हम कृतार्थ होकर लौटे। राजा और रानी दोनोंसे मुलाकात हो गअी। फिर भी लौटते समय जरखोंके बड़े झुण्डसे भेंट कर ली। चित्राश्व, बुद्दू और अिसी तरहके कितने ही जानवर दिखाअी दे, तो भी अब वहां ध्यान कैसे जमे? हमारी अिस तृप्ति पर आशीर्वादकी मुहर लगानेको किलिमांजारोने हमें अन्तिम दर्शन दिये।

जिन्हें राजनैतिक माना जा सकता है, अैसी तीन प्रवृत्तियोंका यहां अुल्लेख कर देना चाहिये। २३ जुलाअीको श्री अप्पासाहबका दफ्तर अुसके लिअे खास तौर पर बनाये हुअे मकानमें पहुंच गया। पंजाबी ठेकेदार श्री मगतने नैरोबीके दो मुख्य रास्तोंके कोने पर अेक भव्य मकान बनाकर अुसकी अूपरकी सारी मंजिल अप्पासाहबके लिगेशनके लिअे किराये पर दे दी है। अिस मकानका नाम ‘अिंडिया आफिस’ रखा गया है। अिस मकानका अुद्घाटन मेरे हाथसे हुआ। १९ तारीखको होनेवाला था सो २३ को हुआ। अिसलिअे संगमरमरकी लिखावटमें तारीखकी गड़बड़ी रह ही गयी। अिस शुभ अवसरके लिअे लोग दूर दूरसे आये थे। भारत स्वतंत्र हो गया, अिसीलिअे

यहाके हिन्दुस्तानियोको अेक कमिश्नर मिले। और वे भी अप्पासाहव जैसे! अिसलिअे लोग वेहद खुश थे। अेक आदमीने प्रासगिक कविता सुनाअी। श्री मगतका, अप्पासाहवका और मेरा अिस तरह तीन भाषण हुअे। अिस अवसरका लाभ अुठाकर मैंने अप्पासाहवके वारेमें, अुनके प्रकाशन मत्री (अिन्फर्मेशन ऑफिसर) श्री शहाणेके वारेमें और अुनके निजी मत्री श्री तात्यासाहव अिनामदारके वारेमें थोडासा कहा। रातको श्री मगतके यहा ही भोजन किया। अिन भाअीकी होशियारी अनेक क्षेत्रोमें काम कर रही है।

दूसरे दिन यहाके अमेरिकन कौन्सल जनरल मि० ग्रॉथके यहा हम दोपहरको भोजन करने गये। हल्की हल्की वातोमें और हसी-मजाकमें हरअेक मनुष्यका रुख पहचानने और आवश्यक जानकारी निकलवा लेनेकी कलामें ये लोग कुशल होते है। हिन्दुस्तानके लोग धर्मचर्चासे खिलते है और योगके वारेमें अुन्हें आस्था होती है अित्यादि भारतीयोकी ख्याति अमरीका तक पहुच गअी है। अिसलिअे अमरीकी लोग हमारे साथकी वातचीतमे अैसे विषय जरूर लाते है। परतु मुझे लगा कि मि० ग्रॉथको अिन विषयोमें सचमुच ही दिलचस्पी होगी। अफ्रीकियोकी सेवा करनेवाले मिशनरियोके वारेमें, कम्युनिस्ट लोगोके वारेमे और स्वीडनके वारेमें तरह-तरहकी वाते हुअी। हम मासादि नही खाते, अिसलिअे हमारे वास्ते रोचक निरामिष आहार तैयार करानेकी तरफ मि० ग्रॉथने काफी ध्यान दिया था। सामाजिक समानताके असरके कारण अमरीकी लोग अग्रेजोसे अधिक मिलनसार होते है। अेक वार जव हम नैरोवीमे नही थे, तव मि० ग्रॉथने हमारे शरद पण्ड्याको अपने यहा नाश्तेके लिअे वुलाया था और अुनके साथ भी योग, प्राणायाम और सूर्य नमस्कारके वारेमे वहुत वातें की थी।

तीसरा राजनैतिक प्रसग २९ तारीखको आया। श्री कुरेशी नामके पजावके अेक पाकिस्तानी भाअी अुस दिन मिलने आये। ताजा

ही कराचीसे वापस लौटे थे। किसी समयके शिक्षक, अब राजनैतिक बातोंमें प्रमुख भाग लेते हैं। अुन्होंने पूर्व अफ्रीकामें हिन्दू-मुस्लिम झगडे सबंधी सारा अितिहास अपनी दृष्टिसे विस्तारपूर्वक बताया। अुनकी बडी शिकायत आर्यसमाजियोंके खिलाफ थी। झगडा अुन्होंने शुरू किया। मना करने पर मानते नही थे। अिसलिअे मुसलमानोंने 'ऑब्जरवर' नामक अखबार निकाला। अुन्होंने भी अुतना ही बिगाडा। कुरेशी खुद तटस्थ रहे। फिर निवृत्त हो गये — वगैरा प्रारभिक हालात अुन्होंने बताये। आगे चलकर सबब कैसे बिगडते गये और अुन्होंने समझौता करनेके लिअे क्या क्या निष्फल प्रयत्न किये, यह भी कहा। अन्तमे अुन्होंने मुसलमानोंके लिअे अलग निर्वाचक मडल तैयार करनेकी सरकारसे माग की। 'आप गाधीजीके आदमी, तटस्थ और देवता-पुरुप हैं। आप बीचमें पडकर हिन्दुओंको समझायें तो हमारा झगडा निपट जाय।' वगैरा अुन्होंने बहुतसी बातें की। मैंने अुनसे पूछा कि, "अप्पासाहबसे तो आप मिले ही होंगे। वे भी हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे पच रहे हैं। अुन्होंने आपसे क्या कहा?" "अप्पासाहब तो अुच्च कोटिकी ('हायर लेवल'की) बातें करते हैं। मुझे तो तुरत समझौता चाहिये।" मैंने अुनसे कहा कि "सच्ची और स्थायी अेकता 'हायर लेवल' पर ही होगी। दूसरी तरह कामचलाअू दोस्ती नही हो सकती सो बात नही। स्वार्थी लोग भी कअी बार सघर्पके बाद सहयोग करते ही हैं। परन्तु अुसके लिअे दूसरे लोग चाहिये। मैं गाधीजीका आदमी हू। सर्वधर्मी हू। केवल हिन्दुओंका नेतृत्व मुझसे नहीं होगा। पूर्व अफ्रीकामें हिन्दुओं और मुसलमानोंके हितोंमें कोअी भी फर्क नही। कुछ बेच खानेकी भी बात नही।"

फिर मैं आगे बढा, "मुझे अेक अत्यत व्यावहारिक अुपाय सूझता है। हिन्दुस्तानमे आये हुअे हम हिन्दू-मुसलमान सब यहाकी सरकारसे लड-लड कर यहाके राजकाजमें आखिरकार कितने स्थान जुटा सकते हैं? अग्रेजोंकी सत्ता और अफ्रीकियोंकी सख्या दोनोंके आगे हमारी बिसात ही

क्या ? हमारे पास जब अैसी छाप है ही नही कि हम यहाकी राज्यव्यवस्था पर असर डाल सके, तो हम आपसमे खीचातानी करनेके बजाय यह क्यो न तय कर लें कि हिन्दुस्तानी लोगोके लिअे जितनी सीटें (जगहें) मिले, अुनके लिअे हम अच्छे अफ्रीकी लोगोको ही चुनकर भेज दे ? अैसा करके हम अफ्रीकी लोगोको साबित कर देंगे कि अुन पर हमारा विश्वास है, अुनके हाथोमें हम अपनेको सुरक्षित मानते है और वे अपने देशमे हमें जैसे रखें वैसे रहनेको हम तैयार है । हम यहाकी धारासभामे अपने ही आदमी भेजेंगे, तो हम दरियामें खशखशकी तरह गुम हो जायगे। अिस पर भी आपसमे लडे, तो दुनियामें हसीके पात्र बनेंगे। अिसके बजाय अफ्रीकियोको ही हम अपने प्रतिनिधि बना लेंगे, तो सभी अफ्रीकी मत (वोट) हमारे लिअे अनुकूल हो जायगे। अपने मत देकर अुनके बदलेमें अफ्रीकी मत प्राप्त कर लेना कोअी बुरा सौदा नही।

"मै यह नही कहता कि हम धारासभामें जाय ही नही। अगर अफ्रीकी लोग अपने प्रतिनिधिके रूपमें हममे से किसीको चुनें, तो अुस चीजका हम जरूर स्वागत करे। दक्षिण अफ्रीकामे कानूनकी रूसे काफरो और हिन्दुस्तानियो दोनोको अपने प्रतिनिधिके तौर पर गोरोको ही चुनना पडता है। अिसके बजाय अगर अफ्रीकी लोग स्वेच्छासे हममे से किसीको सेवाके कारण चुन लें, तो यह नया ही अुदाहरण बनेगा।"

मेरी बात भाअी कुरेशीके गले नही अुतरी। आजकी स्थितिमें किसीके भी गले नही अुतरेगी, यह मै जानता हू। क्योकि अिसके लिअे अुच्च भूमिकावाली कल्पनाशक्तिकी जरूरत है।

अुसके बाद हिन्दुस्तानकी स्थितिके बारेमे बातें हुअी। अुन्होने कहा कि, "हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक हो जाय, यह तो आप जरूर चाहेगे।" मैने कहा, "नही। हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक राज्य हो या न हो, अुसकी मुझे परवाह नही। मुझे अेकदिली चाहिये। भारत और पाकिस्तानके अेक राज्य बननेके लिअे मै प्रयत्न नही करूगा। अितना ही नही, परतु अैसी प्रार्थना भी नही करता। जो अेक बार दे दिया सो दे दिया।

अव अगर पाकिस्तानके मुसलमान ही अेकताका विचार करे और अैसा सुझाव मेरे सामने लायें, तो ही अिस दिशामें मेरा दिमाग काम करेगा। अेकता रखनेके लिअे हम लोगोने वहुत प्रयत्न किये। वे आपने माने नही। अव प्रयत्न करेंगे तो आप कहेंगे कि देखिये, ये लोग पाकिस्तानकी हस्तीके दुश्मन है'। और आपको अैसी शका रहेगी तो दिलकी अेकता नही होगी।"

भाअी कुरेशीके विदा लेकर जानेसे पहले केनियाकी किकूयू जातिके दो अफ्रीकी नेता — श्री जोमो केन्याटा और श्री पीटर कोयनागे मुझसे मिलने आये। मैंने अुनसे हमारे वीच हुअे सवादका सार कहा। मेरा सुझाव स्वीकार हो या न हो, परतु मुझे अिसका अेक नमूना पेश करनेका सतोष मिला कि तीन महान जातियोके वीच सम्मानपूर्वक अेकता करनी हो तो किस दिशामें प्रयत्न करना चाहिये। मैंने अपना यह विचार नैरोवीके कअी नेताओके सामने रखा। और आज तो अितना ही कह सकता हू कि मैंने अुन्हें विचार करनेमें लगा दिया।

अिसके वाद जोमो केन्याटा और पीटर कोयनागेके साथ वहुत वातें हुअी, परतु वे सव खास तौर पर शिक्षा और रचनात्मक कार्योके विषयमें थी। मैंने अुन्हें अपना चरखा चलाकर दिखाया और अुन्हें भेंट कर दिया। काममें न लेनेके कारण वह जरा भारी चलता था। श्रीमती ताअी अिनामदारने अुसे हलका कर देनेका काम अपने जिम्मे ले लिया। समाज-सेवाके कार्यमें (१) कष्ट-निवारणका काम और (२) समाज-निर्माणका रचनात्मक काम अिन दोनोके वीच गाधीजी जो भेद वताते है अुसकी भी वात मैंने की।

अफ्रीकामें 'अिन्डिपेन्डेन्ट अफ्रीकन्स' नामक अेक आन्दोलन चल रहा है। अिसे चलानेवाले लोग अफ्रीकी अीसाअी होते है। गोरे मिशनरियोके प्रति कृतज्ञता रखते हुअे भी अुनके विरुद्ध अिन लोगोकी अेक शिकायत होती है। वे अुन्हें कहते है, "हम सव अीसाअी जरूर है, परतु जव तक हमारे प्रति होनेवाले दो अन्याय आप दूर नही

करा सकेंगे, तब तक हम अेक जगह बैठकर प्रार्थना कैसे कर सकते हैं ?

"अेक तो यह कि चमडीके रंगके कारण सफेद और कालेका जो वर्णभेद आपके लोग करते हैं अुसे दूर करा दीजिये, और दूसरा यह कि हमारी सर्वोत्तम अुपजाअू और ठंडी आबहवावाली जमीन गोरे हजम कर बैठे हैं वह हमें वापस दिलाअिये। अितना प्रायश्चित्त कीजिये, तभी हम साथ साथ प्रार्थना कर सकेंगे।"

अफ्रीकाकी भूमिके पुत्रोंके हृदयका यह रुदन गोरे क्यों नहीं समझते होंगे ? अन्यायकी बुनियाद पर खडी की गअी अुनकी सभ्यता और संस्कृति कहां तक कल्याणकारी सिद्ध होगी ? जब जब गोरोंसे मिलनेका मुझे मौका मिला, तभी मैंने अुनसे यह अनुरोध अवश्य किया कि 'हिन्दुस्तानमें अुच्च वर्णके लोगोंने आप जैसी ही जो भूलें की थीं और जिनके बुरे फल हम भोग रहे हैं, अुनका अितिहास आप देखिये और अुससे कुछ सबक लीजिये।'

अप्पासाहबके साथ सारी यात्राका सांस्कृतिक परिणाम जोडनेके लिअे मैंने अेक दिन बिताया। हमारी चिन्ताके तीन चार विषय थे। अफ्रीकामें क्या क्या करना चाहिये, अिस सिलसिलेमें, और हिन्दुस्तानमें क्या क्या होना चाहिये, अिस विषयमें।

छात्रवृत्तियां लेकर जो अफ्रीकी विद्यार्थी हिन्दुस्तान जाते हैं, अुन्हें अच्छी तरह रास्ता दिखाकर यहांके अच्छेसे अच्छे परिवारोंमें रहनेका अवसर दिलाना, अुन्हें हमारी संस्कृतिका परिचय करानेके प्रसंगोंका प्रबंध करना, रचनात्मक कार्यका स्वरूप और अुसके भीतर जो दृष्टि है अुसे समझानेके लिअे अुन्हें हमारी संस्थाओंमें घुमाना, और हमारे लोगोंको अफ्रीकाकी स्थितिसे वाकिफ करना वगैरा बहुतसी बातें अिसमें आ गअीं। अफ्रीकामें कॉलेज खोलनेकी बात सबमें मुख्य थी। अुसके हरअेक पहलू पर हमने चर्चा की।

हमने यह भी सोचा कि अिस देशमें हम अपनी तरफसे आश्रम खोलने न बैठ जाय। हमारे आश्रम देखकर आये हुअे अफ्रीकी लोग अपने देशके अनुकूल पडनेवाली आश्रम जैसी सस्थाअें खोलें, यही ठीक है। हमें अितनेसे सतोष कर लेना चाहिये कि गाधीजीके विचार और अुनके कार्यक्रम आदि सब बातें यहाके नेता और महत्त्वाकाक्षी युवक जान ले। फिर यह तो यही लोग खुद निश्चय और अमल करें कि यहाके लोगोको लाभ पहुचानेके लिअे क्या क्या करना चाहिये। बाहरसे लादी हुअी चीज बोझ बन जाती है। भीतरसे पैदा हुअी चीज ही प्राणदायक होती है। अफ्रीकी लोगोकी भाषामें साहित्य पैदा करनेके बारेमें भी हमारा यही दृष्टिकोण होना चाहिये। जैसे अग्रेजी पढाअी द्वारा अफ्रीकियोको युरोपियन सस्कृतिका परिचय होता है, वैसे ही अेशियाअी सस्कृतिके बारेमें भी अिन्हे ज्ञान होना चाहिये। अभी वह ज्ञान अग्रेजी द्वारा ही हो सकता है। हमारे देशकी थोडीसी अच्छी पुस्तकोका स्वाहिलीमें अनुवाद करा कर अिन लोगोको अिस चीजका स्वाद चखायें। अिसके बाद अिच्छा हो तो ये लोग भले ही हिन्दी वगैरा भाषाअें सीखें। किसी दिन ये सस्कृत भी सीखेंगे। अभी तो अुनके पास हिन्दी और गुजराती भाषा सीख लेनेकी स्वाभाविक सुविधा है। हम अपनी भाषाका खास तौर पर प्रचार करने न निकलें। परतु जिन लोगोको सीखना हो अुन्हें सिखानेकी तैयारी हमारी सस्थाओको रखनी चाहिये। हमारे लोग यहा जो अिडियन अेसोसियेशन चला रहे हैं, अुसे बदल कर अेशियन अेसोसियेशन कर दिया जाय, तो हिन्दुस्तान-पाकिस्तानका अलगाव यहा न रहेगा। अरबस्तानके लोग भी हमारेमें शरीक हो सकते है। गोआके लोगोको भी हम खुशीसे ले सकते है और कोअी अेकाध चीनी होगा तो वह भी सस्थाके बिना नही रहेगा। अफ्रीकाकी परिस्थिति अच्छी तरह जान लेनेके लिअे और अपनी सेवाशक्ति बढानेके लिअे हमारे लोगोका अेक बडा सेक्रेटेरियट यहा होना चाहिये। अुसमें सब प्रकारकी पुस्तकें, मासिकपत्र,

रिपोर्टें, जनगणनाके विवरण वगैरा सब कुछ रखा जाय और यहाकी तीनो जातियो सम्बन्धी सवालोका गहरा अध्ययन करनेवाले कुछ निष्णात तैयार किये जाय।

हमने अिसकी भी चर्चा की कि पीटर कोयनागेके हाथो चलनेवाली अनेक पाठशालाओमें बुनियादी शिक्षा कैसे जारी की जा सकती है। हमारी अिस चर्चामे से क्या क्या अमलमें आता है, यह तो भगवान् जाने। हमारे देशकी कार्यशक्ति बढनी चाहिये और कोअी काम करना चाहता हो तो अुसका विरोध करनेके बजाय अुसे भरसक मदद देनेकी नीति सब धारण कर लें, तो ही हमारा देश दूसरे देशोकी पक्तिमे खडा रह सकेगा और विदेशोमें वहाके लोगोकी सेवा करनेमें समर्थ होगा।

२३ जुलाअीको डॉ० कारमन नामक अेक बडे मशहूर डॉक्टर मिलने आये। क्लोरोफार्म आदि दवाअें सफल ढगसे देनेमें अिस आदमीकी ख्याति विशेष है। अुनके साथ अढाअी घटे बाते हुअी। युद्धविरोधी शातिवाद, साम्यवाद, गरीबोको होनेवाली तकलीफ, अग्रेजोका अफ्रीकामें मिशन वगैरा अनेक विषयो पर हमने चर्चा की। आदमी बहुत ही सज्जन है, परतु बाअिबलके अक्षरार्थसे चिपटे रहनेवाले। अीसाअी लोगोकी जो अेक यह भविष्यवाणी है कि अीसा मसीह फिर अिस दुनियामें आयेंगे और सारी पृथ्वीके राजा बनकर सर्वत्र शाति और बधुता फैलायेंगे, अिसमें अुनका बडा विश्वास है। चर्चामें अपनी दृष्टि क्षणभरके लिअे भी अलग रखनेकी अुनकी तैयारी नही थी।

अिसी दिन अेक महाराष्ट्र परिवारके साथ भोजन करने गया। वहा भी लोगोने भाषाका प्रश्न छेडा। हिन्दीके बजाय मै गुजरातीका अितना पुरस्कार क्यो करता हू, अिस बारेमें मुझसे पूछा गया। मैंने दुबारा समझाया कि हिन्दीका प्रचार तो मै करता ही हू। परतु यहाके हिन्दुस्तानियोमें ८० फीसदी लोगोकी जन्म-भाषा गुजराती है।

अुसी भाषाके द्वारा यहाका विविधधर्मी सामाजिक जीवन वगैर झगडेके विकसित किया जा सकता है।

अनेक मिशनो द्वारा मिलकर अफ्रीकियोके लिअे चलनेवाला अेक अलायन्स हाअीस्कूल हम देख आये। अिसे सरकारकी तरफसे सहायता मिलती है। हर विद्यार्थी पर साठ पाअुण्ड वार्षिक खर्च आता है। अिसमें सब कुछ आ जाता है। अिस स्कूलकी खसूसियत यह थी कि यहाके विद्यार्थी अग्रेजी सगीत तो सीखते ही थे, परतु अुन्होने शुद्ध अफ्रीकी सगीतके कुछ राग शामिल करके अैसा सुन्दर सगीत तैयार किया है कि अुसमें युरोपीय सगीतकी सारी भव्यता आ गअी है और फिर भी वह अफ्रीकी गूढ भाव अच्छी तरहसे व्यक्त कर सकता है। दो सस्कृतियोके समन्वयका यह असर देखकर मुझे मदुराका तिरुमल नाअीकका राजमहल याद आ गया, जिसमें हिन्दू, अिस्लामी और अीसाअी तीनो स्थापत्योका अच्छा मेल हुआ है। स्वाभिमान और आत्मीयता नष्ट किये विना जब अेक सस्कृति दूसरी सस्कृति पर असर डालती है, तभी अैसे सुदर परिणाम पैदा होते है। अैसे अनोखे प्रयोग करनेके लिअे मैंने अिन अफ्रीकी गायकोकी प्रशसा की और अिस प्रयोगको अुत्साहके साथ आगे बढानेका सुझाव दिया।

अुसी रातको अिडियन जिमखानेमें भोज था। यहा जातिपाति और धर्मके भेदके बिना लोग सदस्य बनते हैं और जिमखाना ही होनेके कारण अैशआराम करते है। हर जगह जातीय सगठनोसे घबराये हुअे हम यहा खुश हुअे और खुलकर बोले। कमलनयनका यहाका भाषण विनोदपूर्ण आलोचनाका था। वह सभीको पसद आया।

दूसरे दिन हम जीन स्कूल देख आये। केवेटेवाली सरकारी सस्थासे अिसका सबध है। प्रिंसिपल मि० अेस्क्विथ अफ्रीकी लोगोके प्रति सद्भाव रखते हैं। अफ्रीकी जीवनका अुन्होने गहरा अध्ययन किया है। हमने सस्थाकी सारी व्यवस्था देखी। बहुत कम सस्थाओमें अितनी सुन्दर व्यवस्था और अितनी सुविधाअें होती है। अपनी ही मोटरबस रखकर विद्यार्थियोंको अनेक प्रवृत्तिया बताने ले जाते हैं। अिस सस्थाकी

विशेषता यह है कि अफ्रीकी लोगोके नेता, अुनकी पत्निया और अुनके बालक यहा शिक्षा पाते है --- कुटुम्बीजनसे अलग हुअे बिना यहा शिक्षा पाते हैं, अिसलिअे यहा होनेवाला जीवन-परिवर्तन सदाके लिअे टिकता है।'

प्रिंसिपल अेस्क्विथ धुरधर विद्वान और समाजशास्त्रके विद्यार्थी होनेके कारण अुनके साथ चर्चा करनेमें बडा आनद आया। अफ्रीकी भाषाओके विकासके बारेमे और अग्रेजीके बजाय स्वाहिलीके जरिये कब पढाया जा सकता है, अिस बारेमें बहुतसी बाते हुअी।

युरोपियन लोगो द्वारा सचालित अैसी सस्थाअे देखनेके बाद यह विचार मनमे आये बिना नही रहता कि हमारे लोग अपने ही बालकोके लिअे भी अैसी व्यवस्था क्यो नही करते।

आर्यसमाजी लोगोका शिक्षा सबधी अुत्साह प्रशसनीय होता है। आगाखानी सस्थाओमे कअी जगह युरोपियन शिक्षको और व्यवस्थापकोको रखा जाता है। और अिससे कुछ व्यवस्था, टीमटाम और दक्षता आ ही जाती है। फिर भी कहना पडता है कि भारतीय सस्थाओके व्यवस्थापकोकी दृष्टि सकुचित और अुनका हस्तक्षेप बाधक होनेके कारण जितनी होनी चाहिये अुतनी प्रगति नही होती। शिक्षक जब जब दिल खोलकर बातें करते है, तब सारी परिस्थिति ध्यानमे आती है। और फिर यह कहे बिना नही रहा जाता कि 'हमी अपनी शिक्षाके शत्रु हैं।'

आर्यसमाजका रवैया कैसा होना चाहिये, अिस बारेमें आर्यकन्या पाठशालामें खास बातें की। क्योकि वहाके शिक्षक और व्यवस्थापक अैसे थे, जो अिस सारी वस्तुको ग्रहण कर सकते थे। अुसी दिन हम स्थानिक आगाखानी कन्या पाठशालामें गये। लडकियोने हमारे देखते देखते कुछ सुन्दर वानगिया तैयार की और हमें खिलाअी। ड्रिल, कवायद, सगीत वगैरा सारे काम और वर्ग विस्तारपूर्वक बताये। और खूबी यह कि अुन्होंने हममे से किसीसे भाषण देनेका आग्रह नही किया! यहाकी मॉण्टेसोरी पद्धतिवाली छोटीसी शिशुशाला बडी आकर्षक थी।

नैरोबीके जिस महाराष्ट्र मण्डलके मकानकी नींव मैंने रखी थी, अुसकी अिमारत अब लगभग पूरी होने आयी। यह यहांके महाराष्ट्रियोंकी कार्यकुशलताकी अच्छी निशानी थी।

अुसी स्थानके पीछे श्री शिवाभाअी अमीन रहते थे। मुझे अुनसे फुरसतसे मिलना था, क्योंकि पूर्व अफ्रीकाकी तरफ मेरा ध्यान पहले पहल खींचनेवाले वही थे। शुरूके दिनोंमें हमारे लोगोंका पथप्रदर्शन करनेका काम और अुनके पक्षमें अखबारोंमें लिखनेका काम शिवाभाअीने ही किया था। तारीख २७ को अुनके यहां खानेका निमंत्रण स्वीकार किया। हमें बहुतसी बातें करनी थीं, परन्तु दोनों स्वभावसे ठहरे हिन्दू। अेक युरोपियन महिला अुनके घर पर मेहमान बनकर आअी हुअी थी। वे बीमारीकी कमजोरी अुतार रही थीं। हमने अुन्हींके साथ बातें करनेमें वक्त बिता दिया। अुनके कुशल शिक्षाशास्त्री और मानस-शास्त्रज्ञ होनेके कारण बातें जम गअी और हमें जो आपसमें विचार-विनिमय करना था सो रह ही गया। अुन्होंने हमें अितनी चेतावनी दी कि पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके मनमें शिक्षाका महत्त्व जम तो गया है, परतु अभी अिस मुल्कमें आर्थिक मंदी है। साधारण आदमी खुले हाथों रुपया नहीं दे सकता।

जैसे विक्टोरिया सरोवरके किनारे पर स्थित किसुमु देखना रह ही गया, अुसी प्रकार हमें डर था कि रिफ्ट वेलीमें स्थित नकुरु भी रह जायगा। परतु हमारा हवाअी जहाज हमें पहली अगस्तसे पहले नहीं ले जा सकता था। अिसलिअे आखिरी दिनोंमें २९ जुलाअीको हम तात्याके साथ नकुरु हो आये। कोअी मनुष्य अफ्रीका जाय और यह रिफ्ट वेली न देखे, तो कहा जायगा कि अुसने बहुत कुछ खो दिया। नैरोबीसे हम दो अढाअी हजार फुट अुतर कर रिफ्ट वेलीमें पहुचे। अेक बार नीचे अुतरनेके बाद सारा रास्ता सीधा सपाट है। अितनी बड़ी लम्बी-चौड़ी घाटीमें सुदरसे सुदर रास्तेसे गुजरना ही अेक आनदका विषय था। आसपासकी पहाडियोंके सिर पर अनेक ज्वालामुख — द्रोण थे। ज्वालामुख पहचाननेकी

कला हमारे हाथमे — या असलमे आखोमें — आ गअी थी। रास्तेमें अेकके बाद अेक हमने तीन सरोवर देखे — नैवाशा, गिलगिल और नकुरु। चमकते हुअे पानीका प्रसन्नवदन किसी भी मनुष्यको (और पशुपक्षियोको भी) अवश्य प्रसन्न करता है। सपाट भूमि पर स्थित ये सरोवर देखते-देखते अपना सकोच भी कर सकते है और विस्तार भी कर सकते है। जब सकोच करते है तब अुनका खुला हुआ पेंदा अध्ययन करनेवालोंके लिअे बडा आकर्षक होता है। लोभी मनुष्य वहासे तरह-तरहके क्षार भी ले सकता है। नैवाशाके बारेमे दूसरी आकर्षक बात यह थी कि अफ्रीका और युरोपके बीच आने-जानेवाले समुद्री विमान यहीसे रवाना होते है।

समुद्री विमान जमीन पर पैर नही रखते। अिस तालाब जैसे पानीके विस्तार ही अुनके लिअे अड्डेका काम देते है। पानीमें तैरते-तैरते पख फड फडाकर अुड जानेवाले बतख, बगुले और हस या राजहसकी जातिके ये समुद्री विमान देखनेमें बडा मजा आता है। चढते है तब नहाकर निकले हुअे प्राणियोकी तरह पानीके रेले नीचे छोडते है। परतु जब अूपरसे आकर पानी पर अुतरते है, तब शात पानीको अैसा विलोते है कि मछलियोको खयाल होता होगा कि यह क्या आफत आ गअी ?

नकुरुमें हम श्री मगनलाल ठाकरके यहा पहुचे। वक्त थोडा होने पर भी हमें दो जगह थोडा-थोडा खाना ही पड़ा। सिक्ख गुरुद्वारेमें सभा की गअी। अुसमे थोडेसे गोअन भाअी भी थे। अुनका नाम आगे करके लोगोने मुझसे अग्रेजी भाषणकी माग की। मै पहले हिन्दीमें बोला, बादमें अग्रेजीमें। सब जगहोकी तरह यहा भी हमारे लोगोमें दो दल है। खसूसियत अितनी ही थी कि अिन्होने अिन दलोके लिअे अद्यतन नाम रखे हैं — अेक पूजीपतियोका दल और दूसरा मजदूरोका दल। मै नही मानता कि पूजीपति दलमें सभी लक्षाधीश है। मजदूर दलमें थोड़े भी अगर हाथसे काम करते होगे तो मै अुन्हें बधाअी दूगा।

वापस घर पहुचनेमें रातके पौने नौ बज गये। फिर भी श्री गुलाबभाअी देसाअी और ललिताबहनका आतिथ्य स्वीकार करना बाकी ही था। खाते-खाते भगिनी समाजके बारेमें थोडी-सी बाते की। श्री कुरेशीके साथ हुअी चर्चाका सार डॉ० अडालजासे कहा। और अुन्होने भी कहा कि आपका सुझाव अत्यत व्यावहारिक होने पर भी मुझे आशा नही कि अुस पर आज अमल हो सकता है।

श्री तात्या अिनामदार और अुनके कुटुम्बके साथ हम अितने दिन रहे, परतु अुनके साथ अेकाध दिन फुरसतसे बितानेकी भूख रह ही गअी थी। अिसलिअे सार्वजनिक कामोसे पूरी तरह छुट्टी लेकर रविवारके दिन हम "चौदह प्रपातो"वाली जगह गोठ करने चल दिये। विनयकुमार (भाअू) हमारे साथ नही आ सके। तात्याके कुटुम्बके बाकी सब लोगोके साथ हम रवाना हुअे। श्री सूर्यकान्त पटेल और अुनकी पत्नी भारती भी साथ थी। घरसे बयालीस मील दूर यह स्थान है। थीकासे चौदह मील है। वहीकी अेक नदी यहा पालके अर्धचन्द्रमें चौदह धारोसे गिरती है और आसपासके प्रदेशके लोगोको विनोद करनेका आमत्रण देती है। थीका और चनिया — ये दो नदिया अितनी छोटी है कि हमारे यहा अुन्हे नदीका नाम शायद ही कोअी दे। चौदह प्रपातोंके स्थान पर हमे बहुत शाति मिली। हम नीचे अुतरे, अूपर चढे, अनेक पालें रौंधीं, फोटो लिये, पेटभर खाया, बे-सिर-पैरकी बातें की और वहा नही रहा जा सकता था अिसीलिअे अन्तमे लौट आये।

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जो चीज मुझे सबसे आकर्षक और महत्त्वपूर्ण लगी, वह थी पीटर कोयनागेके घरमें अुनके पिता और दूसरे कुटुबियोकी मुलाकात और गियुगुरी तथा अन्य अेक स्थान पर पीटरकी तरफसे खोली हुअी पाठशालाओका अवलोकन। गियुगुरीका अवलोकन केवल अेक पाठशालाका अवलोकन नही था। परन्तु अफ्रीकी समाजके समस्त जीवनका, अुसके भूत, वर्तमान और भविष्यका अेक शुद्ध दर्शन था। श्री पीटर कोयनागे, अुनके वृद्ध पिता, अुनके साथी

लोकनेता जोमो केन्याटा और दूसरे बहुतसे अफ्रीकी वृद्ध और युवक यहा अिकट्ठे हुअे थे। अनेक पाठशालाओके विद्यार्थियोके विशाल समूहके बीच हमने तरह-तरहके अफ्रीकी नृत्य देखे। हरअेक जातिके छात्र अपने अलग-अलग नृत्य दिखायें, चाहे जब अलग हो जाय, अव्यवस्थित रूपमें घूमते फिरते बातें करने लग जाय और देखते देखते किसी कप्तानके हुक्मके बिना सुन्दर रचनामें गुथ जाय। कुछ विद्यार्थी किकूयू जातिके थे। कुछ कुबा जातिके थे। बाकी जातियोकी सख्या कम थी। अिन सब नर्तकोने अपनी प्राचीन सस्कृतिकी प्रणालीके अनुसार चित्र-विचित्र पोशाकें पहन रखी थी। तरह तरहकी बूदोसे मुह रगे थे। घुटनोसे टिनके डब्बोमें ककर डालकर बनाये हुअे घुघरू बधे हुअे थे। ठेका लगाकर नाचते तब घुघरूका मन पर बडा असर होता था। अिस सारे नाचका नशा अितना चढा कि हम सब अपने-अपने आसन छोडकर अुनके बीच जा खडे हुअे। तात्याकी अुषा और लता स्त्रियोके बीचमें शरीक होकर खुद भी नाचने लगी।

आखिरी नाच वृद्धाओका था। नियमानुसार जिनकी ६० बरससे कम अुमर हो, वे अिसमे सम्मिलित नही हो सकती थी। अिन सब बहनोने पुराने ढगकी रगबिरगी पोशाकें पहनी थी। तरह-तरहकी पीछिया बाधी थी। अुस्तरेसे सिर साफ करके तेल लगाकर चमकदार बनाये थे। गलेके हार छाती पर ही नही परन्तु पीठ पर भी लटक रहे थे। कमर पर आगे और पीछे कोलोबसके चमडे बाधे थे। यह नृत्य प्रार्थना-नृत्य था। वृद्धाओके नृत्यका अेक नियम यह था कि वे किसी भी तरह नाचें, परन्तु पैरका अगूठा जमीनसे लगा ही रहना चाहिये। (मुझे तुरन्त याद आया कि हमारे यहाके सितार बजानेवाले खानदानी लोग हाथका अगूठा सितारसे लगा हुआ ही रखते है।) अेक वृद्धाकी अुम्र नब्बे सालसे ज्यादा थी। परन्तु नाचनेमें अुमका अुत्साह जरा भी कम नही था। अिन लोगोका अेक नियम बडा मजेदार लगा। अगर किसी लडकीकी किसी बूढेसे शादी हुअी हो,

तो अुसकी अुम्र कम होने पर भी अुसे अिस वृद्धाओके नृत्यमें भाग लेनेकी प्रतिष्ठा मिलती है। नृत्यमें भाग लेनेवाली वुढियाओमें अैसी 'वृद्ध-युवती' है या नही, यह हमने नही पूछा। हमीको लगा कि अैसा पूछना असभ्यता होगी।

अिन तमाम राष्ट्रीय नृत्योके अन्तमे दो वृक्ष लगानेकी धर्मविधि हुअी। अुस विधिका हमारे मन पर गहरा असर हुआ। खुले मैदानमें छोटे-छोटे पत्थर जमाकर अेक तरफ अफ्रीका महाद्वीपकी अेक मोटी आकृति वनाअी गअी थी और थोडे अन्तर पर अुचित दिशामें अैसे ही पत्थरोसे हिन्दुस्तानका नकशा खीचा गया था। हिन्दुस्तानसे आये हुअे दो मेहमानोके हाथो अिन दो आकृतियोके भीतर दो धर्मवृक्ष ('सेरिमोनियल ट्रीज़') वोये जानेवाले थे। यह सारी कल्पना देखकर मै गद्गद हो गया। अफ्रीकाकी आकृतिमें पेड वोनेका काम मेरे हिस्से आया। हिन्दुस्तानके नकशेमें कमलनयनका । अफ्रीकाके नेताओने कहा कि, "दोनो देशोंके वीच सौहार्द्र और शाति रहे, अिसके ये दो वृक्ष द्योतक है। हम अिन वृक्षोको अुत्साह और लगनसे वढायेंगे, क्योकि ये वृक्ष महात्मा गाधीके साथ रहे हुअे लोगोके हाथसे वोये जा रहे है।" यह विधि पूरी होनेके वाद मै जो कुछ वोला, अुसके अेक-अेक वाक्यका अनुवाद स्वय श्री जोमो केन्याटाने किया। अपनी जातिमें वे वडे वक्ता माने जाते है। अुन्होने हमारी वाते थोडा विस्तार करके लोगोको समझायी। अपनी पसन्दका वाक्य आता, तो वृद्धायें अपने गाल वजाकर 'हुलुलू' शब्द करती। जो लोग पूर्वी भारतमें घूमे हो, अुन्हे 'हुलुलू' जय ध्वनिके वारेमें विस्तारसे कहनेकी जरूरत नहीं। मैंने अन्तमें जव अुन वृद्धाओसे हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके वीचकी हार्दिक अेकताके लिअे अुनके आशीर्वादकी याचना की, तव अुन्होंने वहुत ही अुत्साहसे मिनिट दो मिनिट चलनेवाला लम्वा 'हुलुलू' शब्द किया। यह प्रसग कभी भी नही भुलाया जा सकता।

अिसी स्थान पर कमलनयनने अपने भाषणके अन्तमें 'जय अफ्रीका' का नया जयघोष शुरू किया, जिसे वहांके जवान-बूढे, स्त्री-पुरुष, सबने अुत्साहके साथ अपना लिया। यह जयघोष अिस महाद्वीपमें चल पडे, तो वह गाधीजीके विश्वप्रेमी अहिंसा धर्मका प्रतीक होगा।

गिथुगुरीके अिस अनुभवसे हम अितने अधिक प्रभावित हुअे कि हमने श्री पीटर कोयनागेसे अुनकी कोअी और पाठशाला चलती हुअी देखनेकी माग की। तदनुसार हम २७ ता० को रवाना हुअे। पीटर खुद हमे साथ ले गये। यहा लडके-लडकी साथ पढते है। कुल मिलाकर १०३० विद्यार्थी पढते थे। हमने कअी कक्षाओमे जाकर अुनका काम देखा। यहा भी सभी विद्यार्थियोके अक्षर अच्छे थे। व्याख्यान सुननेके लिअे जब विद्यार्थियोको सामने बैठाया गया, तब मैंने माग की कि जो लडकिया पीछे बैठी है, वे सामने आ जाय। अवश्य ही यह बात लडकियोको खूब पसन्द आअी। जो लडके पुराने ढगके कपडे पहनकर नाच रहे थे, वे भी तुरन्त शर्ट और हाफपेन्ट पहनकर और सिरके बाल ठीक करके सामने आकर खडे हो गये, और अग्रेजीमें जवाब देने लगे तब मुझे अिस बातका खयाल आया कि अिन लोगोने दो युगोके बीचका अन्तर कितना जल्दी काट दिया है। बढअीके कामकी कक्षा चलानेवाले भाअीका परिचय कराते हुअे श्री पीटरने कहा कि, 'ये भाअी हमारे बढअी भी है, राज भी है, और धर्मोपदेशक ('प्रीस्ट') भी है।' मेहनत-मजदूरी करनेवाले अिस पादरीको देखकर मुझे सेन्ट पॉलका स्मरण हो आया।

अिस स्थान पर अफ्रीकी लोगोको सबोधन करके मैंने कहा कि 'अन्न, वस्त्र और घर मनुष्यकी मुख्य आवश्यकताओमें से अन्न और घरके मामलेमें आप स्वावलम्बी है। जब आप अपने कमाये हुअे वल्कल और चमडे पहनकर फिरते थे, तब आप स्वावलम्बी यानी सुघरे हुअे थे। आज अच्छीसे अच्छी रुअी पैदा करके भी आप कपडेके

मामलेमें परावलम्वी हैं, यह दयाजनक स्थिति है। आप जिम दिन चरखा चलाकर हाथके करघेसे कपडा तैयार कर लेंगे, अुस दिन स्वावलम्वी हो जायेगे। अैसा हो जायगा तो हम अपने देशका अेक वडा ग्राहक जरूर खो वैठेंगे। परन्तु अपग पडोसीसे व्यापार करके वनवान् वननेके वजाय स्वावलम्वी और ममर्थ पडोसीके साथ दोस्ती पैदा करना दोनोके लिअे श्रेयस्कर है।' अपने पासका चरखा अुन्हें दे देनकी वात मैंने यही की, जिसका महत्त्व पीटर कोयनागेने विद्यार्थियो और शिक्षकोको विस्तारपूर्वक समझाया।

श्री पीटर अपनी ये दो और अैसी दूसरी वहुतसी पाठशालायें किसी सरकारी मददके वगैर चला रहे हैं। अुनकी कार्यपद्धतिका नमूना नीचे लिखे किस्सेसे ध्यानमें आ जायगा।

अेक जगह भाअी पीटर पाठशालाके लिअे चन्दा कर रहे थे। वहा अुपस्थित अेक देहाती वुढियाके पास देनेको कुछ नही था। अिसलिअे अुसने आगे आकर अनाजकी अेक फली चन्देमें दी। पीटरने अुसकी अिस भावनाका गौरव मानकर वही अुस फलीको नीलाम किया। (वापूजीकी यह कला अिस देशमें भी पैदा हो गअी!) नीलाममें अेक भाअीने अच्छी रकम देकर वह फली खरीद ली! परन्तु खूवी तो अुसके वादकी है। श्री पीटरने अिस रकमकी रसीद दी तो अुस भाअीके नाम पर नही, परन्तु वुढियाके नाम पर! और सभामें ही अुन्होने अुससे कहा कि, 'अव तुम्हें हमारी सस्थाका हिसाव जव चाहो आकर देखनेका अधिकार है।'

यहासे हम श्री जोमो केन्याटाका घर देखने गये। अुनके पास वहुत जमीन है। पास ही अुनके ससुरकी भी जमीन है। कोलोवस नामक अेक किस्मके काले और लम्वे वालोवाले वन्दर होते हैं। अुसके कमाये हुअे चमडे घरमें जमीन पर विछे हुअे थे। अुनमें से अेक वढिया चमडा अुन्होने मुझे भेंट किया। अेक वार अिस प्रदेशमें अफ्रीकी लोगोने क्रोधमें आकर दो युरोपियनो और पुलिसवालोको मारा था।

अिसका वटा काण्ड हो गया था। अुसी स्थान पर लोगोके लगाये हुअे दो वृक्ष हमें वताये गये।

अफ्रीकी लोगोके साथ अिस प्रकारकी दोस्ती और माननीय माथूके यहा अफ्रीकी युवकोके साथ हुअी मुलाकात मेरे खयालसे पूर्व अफ्रीकाकी यात्राकी अधिकसे अधिक हार्दिक आनन्द देनेवाली घटनाये है। किलिमाजारोकी गोदमे मुखिया पेट्रोके यहा गये थे, वह प्रसग भी मै अुतने ही महत्त्वका मानता हू।

नैरोवीके दस दिनके अनुभवोकी कितनी ही वाते मैने जानवूझकर छोड दी है। भाअी जाल द्वारा हमारे सम्मानमे दिया गया वे-शराव खाना, 'फ्रेण्ड्स सर्कल' (मित्र-मडल) मे हुआ वार्तालाप, श्रीमान् और श्रीमती कौलके यहा चखी हुअी काश्मीरी वानगिया, अरुशावाले नरसी-भाअीके साथ हुअी चर्चाअें वगैरा अनेक मीठे प्रसग मैने छोड दिये हैं। अलवत्ता, भाअी जालके दिये हुअे भोजके समयके नृत्योकी सुन्दर कलाके वारेमे वहुत कुछ लिखा जा सकता है। जानेका दिन ज्यो-ज्यो नजदीक आने लगा, त्यो-त्यो हमे अैसा ही लगने लगा कि मानो वह सजाका दिन आ रहा है। किसी दिन यमुना-ताअीका गाधी अलवम देखा करता, तो किसी दिन तात्याके कुटुवीजनोके साथ कागोके तोते किसुकुके साथ फोटो खिचवाता, किसी दिन सूर्यकान्त और अुनके डॉक्टर भाअीके साथ तरह तरहकी वाते करता। भाअी वद्देरामजीके साथ अुनका समाजसेवाका काम देख आता, अदीस-अवावाकी ठडसे डरकर थोडे गर्म कपडे खरीद लेता, अिस तरह करते करते जानेका दिन अनिवार्य रूपमें आ ही गया। मन अुदास हो गया, खुशमिजाज अप्पासाहव भी गमगीन दिखाअी देने लगे। अिस प्रकार जुलाअी महीना विदा लेकर चला गया और पहली अगस्त अुदय हुअी।

जिस हवाअी अड्डेके नजदीक रेडियो पर मैं अेक भाषण दे आया था, अुसीसे हमे रवाना होना था। सवेरे जल्दी अुठकर हम तैयार हुअे। हमे कल्पना नही थी कि हवाअी अड्डे पर अितने अधिक

लोग जमा होंगे। सिर्फ नैरोवीके ही नही परन्तु कम्पालाके भी कुछ भाअी अचानक आ पहुचे थे। हरअेक यात्रीके भाग्यमे विदाअीकी घटनायें होती ही है। नये स्थान पर नये मित्र और नये अनुभव मिलनेकी अुत्सुकतामे विदाअीका दुःख अिन्सान भूल जाता है। आज अैसा नही हुआ।

जब हम पहले पहल नैरोबी पहुचे थे, तब हिन्दुस्तानसे आये हुअे मेहमानके तौर पर हमारे सम्मानमे बहुत लोग स्टेशन पर जमा हुअे थे। आज जब हम नैरोबी छोडकर जा रहे थे, तब अुससे भी अधिक लोग हवाअी अड्डे पर अेकत्रित हुअे। परन्तु आदर करनेकी भावनासे नही बल्कि प्रेमके आकर्षणसे। कितने ही लोग हमारे स्थायी मित्र जैसे बन गये थे। कितने ही कुटुबोमें हम स्वजन सदृश हो गये थे। सवेरे ७ से ८ बजे तकका सारा समय विदाअीकी बाते करने और अलग-अलग टोलियोके फोटो लेनेमें ही हमने बिताया। कअी लोगोने प्रेमके चिन्हस्वरूप हमें फूल और फोटो दिये, परन्तु अडालजा दम्पतीने मुझे 'दी अकिकूयू' नामक कीमती पुस्तक भेंट की। पीटर कोयनागे, जोमो केन्याटा वगैर पूर्व अफ्रीकाके नेता अिसी किकूयू वशके है। कैथोलिक मिशनरियोकी तरफसे लिखी गअी अिस पुस्तकमे अिस जातिका जीवन सुन्दर रूपमें प्रतिबिंबित हुआ है और चित्र अितने ज्यादा है कि सारा जीवन प्रत्यक्ष होते देर नही लगती। अिन लोगोके घरोमें जाकर हमने जो कुछ आखो देखा, अुसका असर सबसे ज्यादा था। अुनकी पाठशालाओ और अुनके म्यूजियमोमें हम जो देख सके, वह अुसमें मूल्यवान वृद्धि थी, और अुसमे जो कुछ कमी रह गअी होगी, वह अिस पुस्तक द्वारा पूरी हो जाती थी। हमारी यात्राकी सफलता चाहनेके लिअे अिससे अधिक सुन्दर भेंट क्या हो सकती थी?

'पुनरागमनायच' कहकर भारी हृदयके साथ हमने पूर्व अफ्रीकासे विदा ली।

३८

जूड़ा केसरीके देशमें

अगर हम मिस्र गये होते, तो रास्तेमे अिथियोपियाकी राजधानी अदीस-अबाबा (नवपुष्प) जाना क्रमप्राप्त था। मिस्र जाना मौकूफ करनेके बाद अदीस-अबाबा जानेका विशेष प्रयोजन नही था। परन्तु कमलनयनकी अिच्छा थी कि हम वहा होकर जाय।

सारे अफ्रीका महाद्वीपमें युरोपियन लोगोका ही राज्य या आधिराज्य है। फक्त अिथियोपिया या अेबिसिनिया ही अुसमें अपवाद है। यहाका राजा या बादशाह धर्मसे ओसाअी है, अिस कारण हो या यहाका मुल्क पहाडी और दुर्गम होनेसे फौज या व्यापार यहा तक ले जानेमे कठिनाअी होगी अिस कारण हो, परन्तु यह राज्य स्वतन्त्र जरूर रह गया। बीचमें अिटलीकी नियत बिगडी। अुसने १९३५ के अरसेमे अिथियोपिया पर चढाअी की और यह देश जीत लिया। वहाके सम्राटको स्वदेश छोडकर अिंग्लैंडमे जाकर रहना पडा। युरोपका दूसरा महायुद्ध शुरू होते ही अिंग्लैंडने अिटलीको हराकर अिथियो-पियाका राज्य वहाके बादशाहको लौटा दिया और अपनी राजनीतिके अनुसार अुसके हर विभागमे अेक अेक ब्रिटिश सलाहकार नियुक्त कर दिया। बादशाहने यह व्यवस्था तीन वर्ष तक निभाअी। अुसके बाद अुसने हरअेक महकमेके लिअे युरोप और अमरीका दोनो खडके अलग अलग देशोके गोरोको सलाहकारके तौर पर मुकर्रर कर दिया है। अिस प्रकार अुसे पश्चिमके होशियार आदमियोकी सलाह भी मिलती है और किसी अेक देशके प्रभावमे अुसका राज्य आता भी नही। अिथि-योपियामें वहाके बादशाहने रूसियोको अलग नही रखा, अिसलिअे अंग्रेज अुस पर नाराज रहते हैं। परन्तु आजकी स्थितिमें कुछ कर नही सकते।

अिथियोपियाके बादशाह हाअिले सेलासी शिक्षाको अितना ज्यादा महत्त्व देते हैं कि अुन्होंने यह विभाग खास तौर पर अपने ही अधीन रखा है। अिस विभागमें विदेशियोंकी मदद काफी मात्रामें ली जाती है। अुनमें हिन्दुस्तानी शिक्षकोंकी संख्या खासी है।

अिथियोपिया देश अितना पिछड़ा हुआ है कि सारे देशमें अेक भी कॉलेज नहीं है। अदीस-अबाबामें बादशाहकी तरफसे अपने खर्च पर अेक हाअीस्कूल चलाया जा रहा है। दूसरे दो-चार शहरोंमें छोटे छोटे हाअीस्कूल हैं। शिक्षा वहांकी आम्हारिक भाषा और अंग्रेजीके द्वारा दी जाती है। मैंने मान रखा था कि आम्हारिक भाषाके लिअे अुर्दू जैसी ही कोअी लिपि होगी। परन्तु आम्हारिक लिपि नागरी या रोमनकी तरह बाअीं ओरसे दाअीं ओर लिखी जाती है।

तमाम अफ्रीका महाद्वीपमें अिथियोपिया ही अेक स्वतंत्र देश होनेके कारण मैं मानता था कि अफ्रीकी लोगोंमें जो स्वतंत्रताकी भूख जगी है और गोरोंका जुआ अुतार फेंकनेकी जो तमन्ना कुछ अफ्रीकी लोगोंके दिलोंमें है, अुसका नेतृत्व प्रगट या गुप्त रूपमें अिथियोपियन लोग करते होंगे। परन्तु अिस देशमें प्रत्यक्ष पहुंचनेके बाद अैसा कुछ महसूस नहीं हुआ। अिथियोपियाके लोग अपने ही सवालोंके नीचे दब गये हैं। शायद पूर्व, पश्चिम या दक्षिण अफ्रीकाके लोगोंके साथ अिथियोपियन लोगोंके वंशका मेल भी न हो। जब मिस्र जाअूंगा और वहांके हालातकी जांच करूंगा, तब अिस सवाल पर अधिक प्रकाश पड़ेगा।

अिथियोपियाका मौजूदा राज्य ३५,००० वर्गमीलका है। और जनसंख्या पौन करोड़से जरा ज्यादा है। अिस हिसाबसे प्रति वर्गमील आबादीका अनुपात बाअीस भी नहीं है। फिर भी यहांकी सरकार बाहरके लोगोंको अपने राज्यमें आकर बसने देनेको रजामंद नहीं है। युरोपियन लोगोंने दुनियामें जहां तहां जिस प्रकार पैर फैलाये हैं, अुसे

देखते हुअे सभी लोगोका दूसरे देशोंके प्रति सशक रहना आश्चर्यकी बात नही है।

अिटालियन लोगोके अिथियोपिया जीतनेसे पहले अिस देशमे हमारे हिन्दुस्तानी लोगोकी सख्या लगभग चार हजार थी। अिटालियन लोगोने अिन सबको यहासे निकाल दिया। आज अिस देशमे हमारे लोगोकी तादाद पाच सौसे ज्यादा नही। अिनमें से साढे तीन सौ तो अदीस-अबाबामे ही रहते है। अिनमे ज्यादातर गुजरात-काठियावाडकी तरफके हिन्दू-मुसलमान ही है। शिक्षकोमें कुछ महाराष्ट्री है, जब कि अधिकाश गोआ या कोचीनके किरिस्ताव (अीसाअी) है। कुल मिलाकर सत्तरसे ज्यादा नही। यहाका साठसे सत्तर फीस दी व्यापार हमारे लोगोके हाथमें है। हा, अुद्योगमे गोरोका अनुपात अधिक है । यहाकी सरकार बहुत चाहती है कि हिन्दुस्तानी लोग अपनी पूजी लगाकर अिथियोपियाकी खेतीवाडी, अुसका व्यापार और अुसके अुद्योग बढानेमें मदद दें। कपडेकी मिलें, शकरके कारखाने, सीमेण्ट, दियासलाअी, चमडा कमानेका काम वगैरा बहुतसे अुद्योगोके विकासके लिअे यहा सुविधा है। मकअी, कॉफी, शहद, मोम और तरह तरहके फलोके बगीचे — ये सब कमाअीके अुत्तम क्षेत्र है। मुश्किल अेक ही है कि यहा कानूनका नही, परन्तु बादशाह और अुनके अधिकारियोकी मर्जीका राज्य है। अिसलिअे हमारे लोग यहा पूजी लगानेमें हिच-किचाये, तो अिसमे जरा भी आश्चर्य नही।

अैसे अिस देशके लिअे हमने पहली अगस्तको नैरोबी छोडा। नैरोबीसे अदीस-अबाबा, वहासे दिरेदवा, जीबुटी, अदन, कराची और बम्बअी — अितने हवाअी जहाजके सफरका टिकट १९०० शिलिगका था।

हमारा हवाअी जहाज ठीक आठ बजे अुडा। हमें ७१२ मील तुरन्त जाना था। हम ज्यो ही अुडे कि थोडे ही समयमें बादलोमे फस गये। अूपर, नीचे, आसपास — सर्वत्र क्षीरसागर! अिस स्थितिकी अद्भुतताके आदी हो जानेके बाद अुसमें बहुत मजा नही रहता। अिसलिअे

जब हमारा वायुयान अिन बादलोंमें से अूपर निकला तब हमें सन्तोष-सा हुआ। बादमें तो हमारा विमान मानो अिन बादलोंकी गद्दी पर लोट-पोट होता ही चला — परन्तु गद्दीके किनारेसे। सारे बादल दाअी तरफ फैले हुअे थे, बाअी ओर केनियाकी अुपजाअ जमीन दिखाअी दे रही थी।

थोड़े समय बाद दाअी ओर माअुण्ट केनियाका गर्वोन्नत शिखर अपने लम्बे-चौड़े आसन पर विराजमान दिखाअी दिया। अुस शिखरके पीछे अनेक बादल होनेसे सारा दृश्य बहुत ही अुठावदार दिखाअी देता था। जो पर्वत हम नजदीककी तरफसे जाकर देखनेवाले थे, वह अब हमने आखिर विमानमें बैठकर देख लिया। किलिमाजारोकी अूचाअी १९,००० फुटसे ज्यादा है। केनियाकी १७,००० से कम नही। हवाअी जहाजसे जहा तक केनियाकी चोटिया दिखाअी दी, वहा तक और कुछ देखनेको जी ही नही चाह सकता था। कअी छोटे बडे शिखरोंके बीच अेकदम आकाशको छेदनेवाला केनियाका मुख्य शिखर अैसा लगता था, जैसे साधारण मनुष्योंके बीच किसी महात्माकी विभूति खडी है। दुनियाके बडे बडे पहाडोंमें भी केनियाका पर्वत पुराण-पुरुष माना जायगा। वह अितना पुराना है कि अुसका सिर घिसते घिसते अुसकी अूचाअी तीन हजार फुट तक कम हो गअी है। अुसके सिर पर ज्वालामुखीका जो द्रोण (मुह) था, वह भी कभीका घिस गया और फिर भी आज वह १७,००० फुटकी अभ्र-भेदी अूचाअी दिखा सकता है। अैसे पहाडका ही नाम आसपासके मुल्कको दिया गया तो अिसमें आश्चर्य क्या? गोरे लोग तो अिस पहाडके चारो तरफ लिपट गये है।

अन्तमें महान केनिया भी पीछे रह गया और आखिरमे ओझल हो गया। अब केवल बादल ही रह गये। अुसके बाद सादी जमीन आअी। यह सब देखकर आखे थक गअी और हमसे पूछे बिना ही नीदमें डूब गअी।

ताज़ा होकर आसपास देखा तो दारेस्सलामकी तरफका अेक गोरा वकील हिन्दुस्तानके बारेमें कोअी पुस्तक पढ रहा था। अुसके साथ बाते शुरू हुअी। रोजगारके सिलसिलेमें अुसे कराची और औरानकी खाडीकी ओर जाकर वापस आना था।

और कुछ न सूझनेके कारण मैंने हवाअी जहाजमे फिरसे नाश्ता किया। अितनेमे दाअी ओर सुन्दर सुन्दर सरोवर अेकके बाद अेक अस्तित्वमे आने लगे। कुल मिलाकर कोअी पाच सरोवर हमने पार किये होगे। नकशेमे देखने पर अिनके नाम चामो, अबाया, औसा, शाला, लागाना और जवाअी थे। अिन सरोवरोके पीछे मेण्डेबो पहाडकी कतार दिखाअी दे रही थी। सरोवरोके कारण अिथियोपियाकी भूमिके बारेमे मनमे विशेष आकर्षण पैदा हुआ। नकशेमे सरोवरोके नाम ढूढते ढूढते पता नही चला कि हम अदीस-अबाबाके नजदीक पहुच रहे है। परन्तु हवाअी जहाज जल्दी जल्दी अूचा ही अूचा चढने लगा, तब विश्वास हुआ कि अब अदीस-अबाबा आना ही चाहिये। यह दुनियाके अूचेसे अूचे शहरोमे से अेक है। समुद्रकी सतहसे नौ हजार फुटकी अूचाअी पर बसे हुअे शहर संसारमें कितने होगे? सचमुच अदीस-अबाबा अेन्टोटो पहाड पर खिला हुआ मनोहर और खुशबूदार नया फूल ही है। अदीस-अबाबाका वहाकी भाषामें अर्थ होता है — नया फूल। खुशबूदार अिसलिअे कि सारे शहरमें जहा तहा युकेलिप्टसके अूचे अूचे पेड है।

ठीक साढे बारह बजे हम अदीस-अबाबाके हवाअी अड्डे पर पहुचे। हमारी सरकारकी तरफसे हाल ही में अेलचीके रूपमे नियुक्त हुअे सरदार सतसिंह, अुनकी प्रौढा पत्नी और बहुतसे हिन्दुस्तानी हमें लेने आये थे। सरदार साहबने पूछा कि, 'मेरे मेहमानके तौर पर मेरे यहा रहेंगे या यहाकी सबसे बढिया होटलमे ठहरना है? तैयारी दोनोकी की गअी है।' मैंने कहा, 'मैं तो आश्रमवासी हू। कहीं भी अेक कोना मिल जाय तो आरामसे रह सकता हू और हम

असुविधा-जनक मेहमान सावित नही होगे। शाकाहारी है।' अितनेमें विनोदके साथ हमने तय किया कि सरदार सतसिंहके यही रहना है। अुनकी पत्नी खुद अन्नाहारी ही थी। अिसलिये खुराकके वारेमें कोअी कठिनाअी नही थी। हमारे डेढ दिनके कयाममें तीन चार जगह खाना था, अिसलिये होटलमें ठहरनेमें कोअी अर्थ नही था। और होटलमें ठहरनेमे प्रतिष्ठित वहिष्कार भुगतना पडता है। किमीके माथ खुलकर वाते करनेका समय ही नही मिलता।

मुझे सरदार सतमिहके माथ अिथियोपियाकी ही नही, परन्तु हिन्दुस्तानकी स्वराज्यकी लडाअीके विपयमें भी वहुतसी वाते करनी थी। वे दिल्लीकी वडी धारासभाके अेक सदस्य थे। आठ वर्प तक मरकार-विरोधी दलके नेता थे। अग्रेज कर्मचारियोंके साथकी नोकझोंकमें दिखाअी हुअी अुनकी वुद्धिकी तीक्ष्णता मैं अखवारोमे दिलचस्पीके साथ पढता था। अिसलिये वे नारे प्रसग दुवारा याद करनेमें मुझे वडा रस आ सकता था।

अिथियोपियामे वे भारतके राजदूत मुकर्रर हुअे, अुमने पहले भारत सरकारकी तरफ्मे १९४८ में अिस देशमे जो सौहार्द मडल ('गुडविल मिशन') भेजा गया था, अुसके वे प्रमुख थे।

हमारे कार्यक्रममें खाना, वोलना, देखना और खानगीमे चर्चा करना अितना ही था। शामको अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे म्युनिसिपल हालमें वडी सभा रखी गअी थी। जहा तहा अिथियोपियाके झण्डे दीवारो पर शोभा दे रहे थे। अिथियोपियन झण्डेके रग और हिन्दुस्तानके झण्डेके रग लगभग अेकमे ही है। सरदार साहव स्वय ही अुस सभाके अध्यक्ष थे। मैं जानवूझकर गुजरातीमे वोला, क्योकि श्रोताओंमें करीवन् सभी स्त्री-पुरुष — हिन्दू और मुसलमान — गुजराती थे। दूसरे लोगोंके साथ खानगीमे अग्रेजीमें वात करके काम चलाया जा सकता था। सरदार सतसिंह गुजराती ज्यादा नही समझते थे। परन्तु मेरे वाद श्री कमलनयन वजाजका भापण हिन्दीमें हुआ।

सरदार साहबको वह बहुत ही पसन्द आया। सभाके बाद अिंडियन अेसो-सियेशनकी तरफ़से अिम्पीरियल होटलमें भोज था। कोअी बीस आदमी होंगे। शाकाहारी भोजन बड़ा अच्छा तैयार किया गया था।

अदीस-अबाबा पहुंचने पर मुझे विशेष आनन्द यह हुआ कि यहांकी भारतीय जातिके अेक कुशल सेवकके रूपमें जिन रतिलाल सेठका नाम मैंने कअियोंके मुंहसे सुना था, वे मेरे अेक पुराने युवक मित्र निकले। अेक बार मैं कराची गया था, तब करसनदास माणेक, फोटोग्राफ़र जीवराज महेता वगैरा मेरे किसी समयके विद्यार्थियोंके संग युवक रतिलाल सेठ भी हमारी मनोराकी सैर पर आये थे। अितने पुराने सम्बन्धके बाद दिल खोलकर बातें करनेमें मुश्किल क्या हो? अुनसे वहांकी सब परिस्थितिके बारेमें भी बहुतसी बातें अधिकृत रूपमें जान ली।

अैसे ही आनन्दका अेक और विषय यह था कि सरदार साहबके मंत्री श्री गुणवंतसिंह मलिक भी चि० सरोजिनीके बालमित्र निकले। ये लोग भी बचपनमें सिन्धमें ही अेक दूसरेसे मिले थे। मनुष्यका स्वभाव अैसा विचित्र है कि नये अनुभव प्राप्त करनेकी अुसे जितनी अुत्सुकता होती है, अुतनी ही पुराने संस्मरण ताजा करनेकी होती है। नव-कुसुम-पुरमें हम दोनोंको दोनों प्रकारका आनन्द पूरी तरह मिला।

हिमालयकी निवृत्ति छोड़नेके बादकी मेरी तमाम यात्राअें हमेशा जल्दीमें ही हुअी हैं। कहीं भी जाना हो तो पहलेसे अुस स्थानके बारेमें पढ़ा होगा बस अुतना ही ज्ञान होगा। अुस प्रदेशमें बैठकर अुसके बारेमें फ़ुरसतसे पढ़नेका वक्त ही नहीं मिलता। अदीस-अबाबा या अिथियोपिया जानेका विचार ही नहीं था, अिसलिअे अुसके बारेमें कुछ भी नहीं पढ़ा था। सरकारी दृष्टिसे लिखी गअी परन्तु बहुत अच्छी दो अेक पुस्तकें सरदार सतसिंहने मुझे दीं। परन्तु अुन्हें पढ़ूं कब? समयाभावकी खीजमें सुबह तीन बजे अुठा और जितना पढ़ सकता था अुतना पढ़ लिया। हमारे ऋषि-मुनियोंने अेक समझदारीका नियम

बनाया है कि प्रात ब्राह्ममुहूर्तमें अुठकर वेदब्रह्मका अध्ययन करनेके बाद थकनेके कारण वापस नही सो जाना चाहिये। 'न निशान्ते परिश्रान्तो ब्रह्माधीत्य पुन स्वपेत्'। कारण स्पष्ट है। सुबहके अध्ययनके बाद सो गये, तो पढी हुअी चीजें भी सो जाती हैं। मैं यह नियम जानता था, अिसलिअे फिर सोनेका विचार छोडकर प्रार्थना वगैरासे निपटकर हम यहाका गुजराती स्कूल देखने गये। प्रधान अध्यापक रोगशय्या पर थे। अुनकी पत्नीने पाठशाला दिखाअी। मेरे खयालसे हमारी पाठशालाओमें सिर्फ अच्छे शिक्षक रखनेसे काम नही बनता। बच्चोके लिअे घरका वातावरण सुधरे और घर पर अच्छे सस्कार जड पकडें, तो ही पाठशाला पर की गअी मेहनत सफल हो। आगेसे पाठशालाओमें कक्षाओके शिक्षकोके सिवाय अेक अधिक शिक्षक रखनेका नियम होना चाहिये। अुसका काम बच्चोके मा-बापसे मिलकर अुन्हे अधिक खर्चमें डाले बिना घरका वातावरण बदलनेमें मदद देना हो।

यहासे हम दो मोटरोमें घूमने निकले। अदीस-अबाबासे अदीस-आलम ---पुरानी राजधानीके रास्ते दूर तक खुले प्रदेशमें हम सैर कर आये। रास्तेकी हरियाली, आसपासके पहाड, अुनमें बाअी ओरके अेक पहाडका सुडौल आकार---सभी कुछ आकर्षक था। सरदार सतसिहकी मोटर परका तिरगा झडा अिथियोपियन झण्डे जैसा ही दूरसे लगता था, अिसलिअे रास्ते पर भोले लोग नीचे झुककर अुस झण्डेको सलाम करते थे। अुस सलामकी तहमें सरकारी हुकूमतका डर नही, परन्तु अपने राज्य और राजपुरुषोके प्रति भक्ति स्पष्ट दिखाअी देती थी।

रास्तेमें भी सरदार साहबके साथ ज्यादातर हिन्दुस्तानके बारेमे ही बाते हुअी। अितना सुन्दर और अितना विस्तृत रमणीय प्रदेश अितनी अूचाअी पर है, अिस पर मनमें अीर्ष्या तो होती ही थी। यहाके लोग सोच ले तो यहाकी जमीन और यहाकी आबोहवाकी अिस सुविधामे आला दर्जेकी समृद्धि जुटा सकते है।

दोपहरको सरदार साहबकी तरफसे रास होटलमें भोज था। अिसमें अिथियोपियन सरकारके खास खास मंत्री थे। बादशाह हाअिले सेलासी बाहर गये हुअे थे, अिसलिअे अुनसे मिलना न हो सका। अुनके प्राअिवेट सेक्रेटरी आये थे। अर्थमंत्री और व्यापार-अुद्योगके मंत्रीके साथ थोड़ीसी बातें हुआी। अिस देशमें शहद और मोम भी आयके अच्छे साधन हैं, यह मैंने सुबह ही पढ़ा था। अिसलिअे मैंने अिसकी भी यहां बातें कीं। हिन्दुस्तान और अुसके स्वराज्यके बारेमें अुन लोगोंका बातें करना और अनेक प्रश्न पूछना स्वाभाविक था। दो मंत्री अपनी अपनी पत्नियोंके साथ आये थे। अंग्रेजी भाषा और रीत-रिवाजसे वे परिचित थे, अिसलिअे अुनके साथ बातें करनेमें मुश्किल नहीं हुआी। अुनमें बहन अेलिजाबेथ अितनी ममतावाली थीं कि अुन्होंने हमें अदीस-अबाबाके बड़े बड़े प्रसिद्ध अीसाअी गिरजे दिखानेका जिम्मा लिया। शहरके भीतर अेक बड़ा गिरजा हमने बाहरसे ही देखा। दूसरा अन्दरसे देखा। अुसके पूजा और अुपदेशके स्थान और बैठनेकी सुविधायें बिलकुल दूसरे ही ढंगकी होनेके कारण मुझे बहुत आकर्षक लगीं। यह भी विचार आया कि अैसी रचना हमारे यहां क्यों न जारी करें ?

अदीस-अबाबाके पासकी अेक अूंची पहाड़ी पर अेक पुराना अीसाअी गिरजा और अुसके साथ अेक मठ है। हमारे जंगलोंमें स्थित किसी मंगल मंदिर जैसा यहांका वातावरण था। अूपरसे आसपासका अिलाका दूर दूर तक दिखाअी देनेके कारण मंदिरकी अूंचाअी भव्य लगती थी। हमने अंदर जाकर प्रदक्षिणा की। दीवार परके चित्र — अीसा मसीहके और साथ ही अुनके अनेक शिष्यों और संतोंके चित्र — बिलकुल हिन्दू ढंगके थे। मंदिरके अुत्सव, पूजाविधि वगैरा बहुत कुछ हमारी ही पद्धतिसे हैं, जिसलिअे अिस देशके कॉप्टिक चर्चका अितिहास जान लेनेका कुतूहल बढ़ गया।

अीसाअी लोगोकी आधुनिक सस्कृतिका श्रेय ज्यादातर विज्ञान और विशाल सगठनको है। अुसकी जडमें अीसाअी धर्मकी अपेक्षा यूनानी लोगोका तत्त्वज्ञान और रोमन लोगोकी साम्राज्यप्रियता ही है। असली अीसाअी धर्म अेशियाअी वृत्तिका है। अुसके भी कितने ही नये नये सस्करण हो चुके है। पीटर, मेथ्यु, जॉन वगैरा शिष्योको ताकमे रखकर सेण्ट पॉलने अीसाअी धर्मको नया ही रूप दे दिया। अिसके बाद अुसके अनेक सस्करण होते गये। मै तो मानता हू कि अीसाअी धर्मका असली स्वरूप अच्छी तरह समझकर अुसमें वेदान्त और अभेद भक्तिकी बुनियाद डालनेका काम किसी दिन हिन्दुस्तानके अीसाअी ही करेंगे। बगालके ब्रह्मबाधव अुपाध्यायने अैसा थोडासा प्रयत्न किया था। यहाके मठमें रहनेवाला अेक अीसाअी साधु वहा आया। अुसके कपडे, अुसकी दाढी, बाते करनेका तरीका, सब कुछ हमारे यहाके देहाती साधु जैसा ही था। आसपासके लोगोके मनमे अिस साधुके प्रति बडा आदर था। साधुके व्यवहारमे अुस आदरकी जरा भी कद्र दिखाअी नही देती थी।

रातका भोजन घर पर ही था, अिसलिअे मै तो जल्दी खाकर सो ही गया। कमलनयनने अफीकाके वन्य जीवन सम्बन्धी अपनी लाअी हुअी फिल्में दिखाअी और अिथियोपियामें रहनेवाले हमारे लोगोको आनन्द दिया।

अितनी दूर, विदेशमें रहनेवाले हमारे भारतीय लोगोको जब पता चलता है कि स्वदेशसे कोअी आया है, तब वे अुससे मिलनेके लिअे बहुत ही आतुर होते है और निमत्रण भेजनेकी अुखाड पछाड करते है। अदीस-अबाबामें ही दिरेदवाके भारतीयोंके पत्र आ गये थे। हमारा कार्यक्रम पहलेसे ही निश्चित हो चुकनेके कारण दिरेदवामे अेक दिन बिताना भी असभव था। हमने अुनसे अितना ही कहा कि हवाअी अड्डे पर जो दस-पाच मिनट मिल सकेंगे, अुन्हींमें स्वदेशके भाअियोसे मिलनेका आनन्द प्राप्त कर लेंगे।

दूसरी अगस्तको हमने अदीस-अबाबा छोडा। परन्तु अुस राजधानीकी नीयत हमे आसानीसे जाने देनेकी नही थी। सवेरे जल्दी अुठकर नाश्ता वगैरा करके चले। सरदार साहबकी तबीयत अच्छी नही थी। अुन्हे हवाअी अड्डे तक न आनेके लिअे मैंने बहुतेरा कहा परन्तु वे क्यो मानने लगे? अड्डे पर सबके साथ आनन्दसे बाते की। भाअी रतिलाल सेटने यहाकी यादगारके रूपमे अेक छडी मुझे दी। यहाके खुशबूदार युकेलिप्टसकी ही यह पतली छडी थी और अुसके हाथीदातकी मूठ थी। बिलकुल सादी छडी परन्तु सुन्दर थी और प्रेमकी सुगन्ध धारण किये हुअे थी।

हमारा हवाअी जहाज रवाना हुआ। वह कोअी मुसाफिरोके लिअे आरामकी बैठकोवाला जहाज नही था। भारवाही भी नही कहा जा सकता। अेक तरफ थैले और तरह तरहका माल बडे बडे रस्सोसे बाध रखा था और सामनेकी ओर टिनकी बेंच पर हम चौदह यात्री बैठे थे। मेलगाडीमे बैठनेके आदी लोगोको मालगाडीके डब्बेमें कोअी बन्द कर दे, तब अुनके चेहरे जैसे दिखाअी देते हैं वैसे ही हमारे हो गये थे! हम रवाना हुअे और हमारे मेजबान अपने अपने घर गये। हमारा जहाज कोअी २५ मिनट चलकर नीचे अुतरा। रास्तेमे खूब ही बादल होनेके कारण अितना ही दिखाअी दे सकता था कि किस बादल पर सूर्यप्रकाश अधिक है। सूर्यप्रकाशकी दिशा बदली तब मुझे जरा अटपटासा तो लगा, परन्तु मेरा ध्यान अुस तरफ नही था। दिरेदवा अितना जल्दी आ नही सकता था। मैं चिन्तामे पड गया कि बीचमें कोअी छोटासा स्टेशन है या क्या? विमान ठहर गया और सीढियोसे अुतर कर बाहर देखता हू तो सामने अदीस-अबाबा!! जाग रहे हैं या स्वप्नमे है? यह हुआ क्या!

अितनेमें विमानवालोंने कहा कि, "हम कोअी पचास मील गये होंगे कि अितनेमे हमारा अिंजन जरा आवाज करने लगा। हमें विश्वास नही रहा कि यह जहाज दिरेदवा तक सही-सलामत जायगा। अदन तक

पहुचनेकी तो हिम्मत ही कैसे की जा सकती थी? अिसलिअे आगे सौ मील जानेके वजाय वापस पचास मील जानेमें ही समझदारी है, अैसा निश्चय करके हम गोल चक्कर काटकर वापस लौटे। आप मुसाफिरोंको जोखिममें कैसे डाला जा सकता है?" पच्चीस मिनटकी सैर करके हम जहा थे वही आ पहुचे! कपनी दूसरा हवाअी जहाज लाअी और अुसमें सारा माल वदलकर रख दिया और दूसरी वार हम रवाना हुअे।

यह जहाज भी कैसा निकला? आप कहें अुतना जमीन पर दौडनेको वह तैयार था, अड्डेके मैदानमें अुसने दो चक्कर लगाये, परन्तु अुडनेका नाम ही न ले! चालकोंने अुसकी वहुत खुशामद की परन्तु वह माना ही नहीं। हम फिर नीचे अुतरे। कपनीवालोंने हमसे कहा कि, 'अव आप जरा आराममे नाश्ता कीजिये। अिसके दाम कपनी देगी।' गुदाममें शेष अव अेक ही विमान था। अुसे अच्छी तरह जाच करके यह भरोसा किया कि वह अच्छा है, फिर अुसे ले आये। मालका ढेर अुसमें रखा और फिर हम भी तीसरी वार सवार हुअे। विश्वास नही था कि यह जहाज रवाना होगा। परन्तु ठीक साढे नौ वजे जहाज रवाना हुआ और कोअी आनाकानी किये विना डेढ घण्टेके भीतर दिरेदवा पहुच गया।

वहाके लोगोंने अड्डे परका अेक हॉल गलीचो, झडो वगैरासे खूब सजाया था। अड्डा गावसे काफी दूर था। वहासे सव चीजें लाना आसान नहीं था। दिरेदवाके सभी हिन्दुस्तानी अिकट्ठे हुअे थे। और दो घण्टेसे वैठे हमारी राह देख रहे थे। अीश्वरने खाने और वोलनेके लिअे हमें अेक ही अिन्द्रिय दी है। अिसकी असुविधा यहा स्पष्ट दीख रही थी। लोगोका वडा आग्रह था कि हम कुछ खायें। और अिसके लिअे भी अुत्सुक थे कि हम दो शब्द वोले। अच्छा हुआ कि मुख्य मेहमान हम दो थे। सरोजिनीके पास खाने या वोलने अेकका भी अुत्साह नही था! हमने श्रमविभाग किया। कमलनयनने नगर-निवासियोका आतिथ्य स्वीकार किया और मैंने अुनके कान भर दिये।

दिरेदवासे अेकाध घण्टे आगे अुडे और जीबुटी पहुचे। अिसे अफ्रीकाका मिरा कह सकते है। विमानसे अुतरकर अेक मोटरमे बैठकर सभाके लिअे अेकाध फर्लांग गये। वहाके लोगोके सामने मैने कोअी दस मिनट गुजराती भाषण दिया। लोगोने कहा कि, "यहाके मुसलमान हमारे साथ शरीक नही होते। पाकिस्तानी मनोवृत्ति रखते है।" मैने अुन्हे समझाया कि हमारी वृत्ति कैसी होनी चाहिये। मैने देखा कि कहीके भी हो, गुजराती लोग गाधीजीकी दृष्टिको आसानीसे समझ लेते है और यथाशक्ति अुस पर अमल भी करते है।

जीबुटीसे रवाना हुअे और मेरी अुत्कठा बहुत ही तीव्र हो गअी। क्योकि अदनकी खाडी पार करने पर हम अैसी जगह पहुचे, जहासे अेक ओर अफ्रीका महाद्वीपकी भूमि दिखाअी देती थी और दूसरी तरफ अेशियाकी। और नीचे छोटे छोटे द्वीपोसे सजा हुआ हरा पानी! हवाअी जहाजका आविष्कार न हुआ होता, तो अैसा विराट-भव्य काव्य मुझे आखो देखनेको कहासे मिलता? मैने मनमे प्रार्थना शुरू की कि भगवान्! दो महाद्वीपोका अिकट्ठा दर्शन करने जितनी अूचाअी पर मै पहुचा हू। दोनो महाद्वीपोकी पक्षपात-रहित सेवा करनेकी वृत्ति और शक्ति मुझे दीजिये।

समुद्रकी शोभा देखते देखते हम आगे चले। अफ्रीकाने — अढाअी महीनेसे परिचित अफ्रीकाने — हमसे विदा ली और हम अेशियाके मेहमान बने।

हमारे खयालसे दो महाद्वीपोका अर्थ है दो अलग दुनिया। परन्तु दो महाद्वीप जहा पास आते है, वहा रहनेवाले लोगोके लिअे वे दो नाम सुनकर बहुत बडा अन्तर या फर्क जैसा नही लगता। जीबुटीके लोग और अदनके लोग अितने नजदीक है, अुनका जीवन अितना अधिक ओतप्रोत है कि यहासे वहा और वहासे यहा आनेमें अुन्हे अैसा लगता ही नही कि हमने कोअी भारी देशान्तर या खडान्तर किया है। और अगर मनुष्यका जीवन राजनैतिक सगठनमे विभक्त न हुआ होता, तो आज जो

थोडासा अन्तराय है, कचहरियोका, शिक्षण सस्थाओका और कानूनका, वह भी न रहता। यह विचार आया और मेरा मन, जो महाद्वीपोका अन्तर हो जानेकी कल्पनासे अूचा अुडा था, भी मानवताकी विशाल भूमि पर नीचे अुतर आया। अदनके सिर पर आने पर नीचे नमक पकानेके 'आगर' दिखाओी देने लगे। अदनके वनस्पतिहीन पहाड, अुनके बीचका बडा ज्वालामुख और अदनको अरबस्तानके साथ जोड देनेवाली रेतीली सयोगभूमि — ये सब देखते देखते अढाओी बजे हम अरबस्तानकी जमीनका स्पर्श कर सके।

और देखते देखते यहाके भारतवासियोने हमे घेर लिया।

३९

पैगम्बर साहबके देशमें

अदनकी भूमि पर पैर रखनेसे पहले मनमें दो-चार विचार आये। सबसे पहला यह कि हमारा कितना भाग्य है कि जिस भूमि पर मुहम्मद पैगम्बरने दीन और ओमानका प्रचार किया अुस पर हम पैर रख रहे हैं। दूसरा खयाल यह आया कि अदनकी भूमि अरबस्तानके प्रदेशके साथ पहलेसे जुडी हुअी थी या दोनों ओरके समुद्रकी लहरोंने रेत फेंकनेका खेल खेलते खेलते यह सयोगभूमि तैयार कर दी? अदनके ज्वालामुख देखकर अैसा ही लगता है कि असलमें यह द्वीप अफ्रीकाका ही भाग होगा। अफ्रीकाकी भूमिमें प्राग्-अैतिहासिक कालमें जो दो दरारें पड़ी, अुन्हींका अेक सिरा लालसमुद्र होकर जॉर्डन नदी तक पहुंचा होगा। और तीसरा विचार यह आया कि राजनैतिक दृष्टिसे अदनकी भूमि किसी समय (मेरे बचपनके दिनोंमें) हमारे बम्बअी अिलाकेका ही अेक भाग था। अुन दिनों में कह सकता था कि मैं अपने ही प्रान्तकी भूमि पर पैर रख रहा हूं। अमरीका और युरोपका सफर पूरा करके स्वामी विवेकानन्द जब स्वदेश लौट रहे थे, तब अदनमें आते ही स्वदेशकी भाषा हिन्दुस्तानीमें बात करनेका अवसर प्राप्त करनेके लिअे अेक पानवालेकी दुकानके आगे बैठ गये थे और पान खाते खाते अुन्होंने अपने युरोपियन शिष्योंसे कहा था कि अितने दिनों बाद स्वदेशके आदमीसे बातें करनेमें अनोखा आनन्द आ रहा है।

विमानसे बाहर निकलते ही श्री नवनीत, जोशी, भट वगैरा स्वकीय लोग मिले। भारत सरकारकी तरफसे यहां रहनेवाले हमारे

कमिश्नर श्री थडानी, अुनकी पत्नी सावित्री और लडकी शीला, सब मिले। विमानमें से सामान सभालना, चुगीवालोकी जाचसे गुजरना वगैरा सब झझटोंसे हम बिलकुल बच गये। मित्रोंने यह सारा काम अपने जिम्मे ले लिया।

यहाके अिंडियन अेसोसियेशनके प्रेसिडेंट श्री दीनशा अदनवाला यहाके पुराने निवासी है। चि० सरोज १८ वर्ष पहले जब पिताके साथ युरोप गअी थी, तब अिन्ही भाअीके पिताने अुनका स्वागत किया था। अिसलिअे अिस खानदानने मानो सरोज पर अधिकार ही कर लिया।

अरब सागर यहासे शुरू होनेके कारण अैसा लग रहा था, मानो अुसे अपने सारे रंग यहा खिलाकर बतानेका खास शौक हो। नअी अथवा प्रतिष्ठित बस्ती समुद्रके किनारे पर फैली हुअी है। हा, पुरानी साधारण लोगोकी 'नेटिव' बस्ती ज्वालामुखके भीतर तग मकानोमे बसी हुअी है। यह सारा भाग यहा क्रेटरके नामसे ही मशहूर है। हमें अपना डेरा यहाके समुद्र तटके सबसे बढिया 'क्रेसेंट' होटलमें रखना पडा। अितने अधिक आतिथ्यशील स्वदेशी लोगोके होते हुअे भी सिर्फ प्रतिष्ठाके खयालसे हमें होटलमें धकेल दिया गया। यह हमें अच्छा तो नही लगा परन्तु हमारे कमिश्नर अुसी होटलमे रहते है, अिसीलिअे अुनकी सूचनाके आगे झुकना शहरियोके लिअे अनिवार्य था।

अदनमें हमें छब्बीस ही घण्टे बिताने थे। नहाकर तैयार होते होते थडाणीके यहा चायकी व्यवस्था हो गअी। चुनिंदा अरब और भारतीय — हिन्दू, मुसलमान, पारसी और अीसाअी नेता अिकट्ठे हुअ थे।

सार्वजनिक सभाके लिअे हम तैयार होगे या नही, अिस विषयमें सन्देह होने पर भी यहाके लोगोने सभाकी घोषणा कर ही दी थी।

ज्वालामुखके अेक कोनेमें अिगलाज देवीका मंदिर है। अुस मंदिरके सामने बड़ी सभा हुअी। लोगोंकी संख्या देखकर मैं तो दंग ही रह गया। अधिकांश गुजराती भाअी-बहन ही थे। थोड़ेसे अरब और दूसरे लोग थे। मैंने गुजराती और अंग्रेजी, अिस प्रकार दो टुकड़े करके भाषण दिया। और हिन्दीमें बोलनेकी जिम्मेदारी कमलनयन पर छोड़ दी।

मैंने कहा : "अदन तो अित्तिफाकसे, अनायास ही आना हो गया है, परन्तु पैगम्बरकी भूमि पर पैर रखते हुअे धन्यता महसूस करता हूं। आजकल देश-देशके बीच अविश्वास बढ़ गया है। और लोग स्व-पर-भाव प्रयत्नपूर्वक पैदा करते हैं। हिन्दुस्तानका स्वभाव अिससे भिन्न है। हमने अरबस्तानसे आये हुअे अिस्लामका स्वागत किया। हिन्दुस्तानमें जिस अिस्लामका विकास हुआ है, वह दूसरे धर्मोंके साथ दोस्तीकी भावना रखता है। हमारे स्वराज्यकी लड़ाअी जब पूरे जोरसे चल रही थी, तब अरबस्तानसे आये हुअे अेक विद्वान मुसलमानको हमने अपनी कांग्रेसके अध्यक्षके आसन पर बिठाया था। आज हमारे देशका शिक्षा-विभाग हमने अुनके हाथोंमें सौंप रखा है। हम चाहते हैं कि अरब-स्तानके साथ हमारी हमेशा दोस्ती रहे और बढ़ती जाय। यहां रहने-वाले भारतीयोंको महात्माजीका सन्देश है कि आप यहांके लोगोंके साथ अिस तरह घुलमिल जाअिये जिस तरह दूधमें शक्कर।"

सभाके बाद रातको हमने सबनीसके यहां भोजन किया। अुनके यहां खूब बातें हुअीं। भूगोलकी शौकीन मेरी आंख दीवार परके अेक नकशे पर पड़ी। वह नकशा अरबसागरका था। अेक सिरे पर अफ्रीकाका सींग और दूसरे सिरे पर हिन्दुस्तान। अूपरकी ओर विशाल अरबस्तान और बीचमें सारा पश्चिम महासागर। अैसा सुन्दर नकशा देखकर मेरी नीयत बिगड़ी। आज वह नकशा मेरे कमरेमें दीवार पर रहकर अदनमें बिताये हुअे अेक दिनकी आनन्ददायी घड़ियोंकी याद दिला रहा है।

क्रेसेण्ट होटलमें हमने सिर्फ अेक ही रात विताअी और दो वार नहाये। खाना तो मित्रोके यही था। फिर भी रहनेके लिअे २५ रुपये देने पडे। सुवह श्री जोशीके यहा नाश्ता किया। अुनका घर मानो समुद्रके विलकुल किनारे पर लटक रहा था। महाराष्ट्रियोके साथ खानेमें वानगियोकी विविधता तो होती ही है, परन्तु देखते देखते लोग अेक दूसरेके साथ घुलमिलकर हसी मजाक तक पहुच जाते हैं।

सुवहका सारा वक्त अदनके भ्रमणका होनेके कारण हमने अुसकी पूर्व तैयारी की और निकले। मुख्य वस्ती क्रेटरके द्रोणमें ही है। यह नीचेवाला क्रेटर है। अुसके आसपास जो पहाडी दीवार है, अुसके अूपर अेक और क्रेटर है। क्रेटरम से वाहर निकलनेके लिअे अेक घाटी और दो वोगदे (टनेल) है। पहाडकी ओर पुराने जमानेके राजाओने वडे वडे तालाव वनाये हैं। अिसीलिअ अिन तालावोका महत्त्व है। यहाँसे दस वारह मील दूर शेख अुस्मान नामक अेक स्थान है। वहा मौजूदा सरकारने जो पाताल कुअें—'टचूव वेल'—खोदे हैं, वे भी हम देख आये। अिस तरफ अेक सादा मामूली वाग है। यहाके अुजड प्रदेशमें अैसे वागकी भी प्रतिष्ठा और कद्र कम नही है।

क्रेटरमें हम देशी लोगोकी पुराने ढगकी वस्ती देख रहे थे, तव वीच वीचमें कुछ घर विलकुल जले हुअे और लुटे हुअे मालूम होते थे। मुझे आश्चर्य हुआ। जाच करने पर पता लगा कि कुछ ही समय पहले यहाके अरव लोगोने यहूदी लोगो पर क्रोध करके अुन्हे यहासे निकाल दिया। अुनके घर जला दिये। अुसी अत्याचारका यह अवशेष है। अव अदनमें यहूदी नही रहे। दो चार वचेखुचे होगे तो वे डरके मारे जान हथेली पर रखकर रहते है।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तानकी तनातनीका भयानक अनुभव होनेके कारण यह दृश्य मुझे आश्चर्यकारक नही लगा। दुःख वहुत हुआ। मुसाफिर देखें सव कुछ, परन्तु अुसके वारेमे जहाँ तक हो सके वोले नही, अिस सूत्रका पालन करनेमें ही श्रेय था।

हमारा दोपहरका भोजन कुछ मित्रोंने रखा था और वह भी पारसियोंकी अेक अगियारीके हॉलमें। मैंने सोचा नहीं था कि अितने ज्यादा लोग जमा होंगे। चौबीस घण्टोंके भीतर हम कितना अधिक देख सके, कितने संस्कार जुटा सके! अदनके जीवनके लगभग सभी पहलुओंके साथ हमारा परिचय हुआ।

अब हम चार बजे हिन्दुस्तान जानेके लिअे रवाना हुअे। हवाअी अड्डे पर बहुत लोग आये थे। वहा स्थानीय अरब लोगोकी तरफसे अेक संदेश मिला कि, "कलके आपके सार्वजनिक व्याख्यानका हमें पता नहीं था। जो थोडेसे अरब लोग अुपस्थित हो सके थे, अुनकी जबानी आपके व्याख्यानका सार सुना। हमें वह खूब पसन्द आया। हम आपका अेक व्याख्यान रखना चाहते हैं। आजके दिन ठहर जाय तो अच्छा।"

रह तो सकते ही न थे। "हिन्दुस्तानके बनिये हमें लूटते हैं। ब्रिटिश सरकारको चाहिये कि अुनसे वह हमारी रक्षा करे।" अिस किस्मका आन्दोलन कुछ अरबोंकी तरफसे हो रहा है। अैसे समय अरब लोगोंका यह निमंत्रण! रह सकता तो यहांके अरबोंके साथ जरूर परिचय पैदा करता। मैंने अितना ही कहा कि, "मिस्र देखने जानेका संकल्प है। अुस समय अदन अेक दिन ठहरूंगा और आपसे खास तौर पर मिलूंगा।"

हमने चार बजे जमीन छोडी। जब तक प्रकाश था हमारा हवाअी जहाज अरबस्तानके दक्षिणी भागके अूपरसे जा रहा था। नीचेके भागमें बीरान पहाडियां ही थीं। न कोअी पेड़ था, न घास या मिट्टी। पत्थर और रेतके सिवाय कुछ भी नहीं दीखता था। कभी कभी अेकाध घाटीमें पानीकी लकीर दिखाअी देती थी। अुसके किनारे थोडीसी झोंपडियां और हरीभरी पहाडियोंकी बानगी बहुत ही सुन्दर लगती थी। धूपकी छाया जैसे-जैसे लम्बानी गअी, वैसे वैसे यह बानगी और भी अुठावदार दीखने लगी।

हम पश्चिमसे पूर्वकी ओर जा रहे थे, अिसलिअे हमे अपनी घडिया अेकदम अढाअी घण्टे आगे करनी पडी। अिग्लैडमें अेक वार पचाग सुधारनेके लिअे वहाकी सरकारने अेक महीनेमे ग्यारह दिनकी छलाग मारी (२ तारीखके वाद अेकदम १३ तारीख कर दी), तव अपढ लोगोने झगडा मचाया और 'हमें अपने ग्यारह दिन लौटा दो' के नारे लगाये। मुझे अपनी घडी आगे करते समय अिस घटनाकी याद आ गअी, परन्तु वह सूर्यास्तके वादके अधेरेमें डूव गअी।

हमारा हवाअी जहाज टाटा कपनीके अेर अिन्डिया कास्टेलेशन वाला था अर्थात् दुनियामें सर्वोत्तम अमीरी हवाअी जहाजोमे से अेक था। यात्रियोकी भीड न थी। सूर्यास्तके वाद अच्छा भोजन किया। टाटा कपनीके नैरोवीके अेजेन्टकी सिफारिशसे कास्टेलेशनमे मेरे सोनेकी सुविधा वहुत अच्छी कर दी गअी थी। जमीन और पानीसे हजारो फुटकी अूचाअी पर किसी फरिश्ते या गधर्वकी तरह आकाशमें सो जानेका अनुभव अनोखा ही था।

रातको डेढ वजे कराची पहुचे। अव वह हमारा पुराना कराची नही रह गया था, जो कराची काग्रेसके दिनोमें हमने देखा था। आज वह पाकिस्तानकी राजधानी थी। कोअी डेढ घन्टा वहा विताकर हम फिर चल दिये और ५ अगस्त १९५० को सवेरे ठीक ५-२० वजे स्वराज्यनगरी वम्वअीमें आ पहुचे। तीन महीनेमें तीन दिन कम — अितना समय स्वदेशसे दूर रहे। परन्तु अितनेसे समयमे अितने अधिक अनुभव और सस्मरण अिकट्ठे हो गये थे मानो वरसो वीत गये हो!

वम्वअी पहुचने पर वडा आनन्द हुआ। मेरे साथ हाथीदातकी अफ्रीकी कारीगरीकी तीनेक चीजे थी, जिन पर मुझे पचहत्तर फीसदी जकात देनी पडी। चूकि मै जानता था कि यह रुपया स्वराज्य सरकारके ही खजानेमें जा रहा है, पचहत्तर रुपया देनेमे मुझे जरा भी वुरा न लगा।

जिन्दगीमे पहली बार विदेश जाकर आया था। पूर्व अफ्रीकामे स्वतत्र भारतके स्वतत्र नागरिककी हैसियतमे भ्रमण कर सका था। वहाके हिन्दुस्तानियोका आतिथ्य चख सका था। और खास तौर पर अफ्रीकानिवासी अफ्रीकी लोगोके कुछ नेताओंका विश्वास सम्पादन कर सका था। ये सभी धन्यताके विषय थे। हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके बीच स्नेह-सम्बन्ध बढानेकी जिम्मेदारी सिर पर लेकर स्वदेशको आया हू, असीलिअे हिन्दुस्तानकी आजादीकी गहराअी भी अधिक अनुभव करने लगा हू।